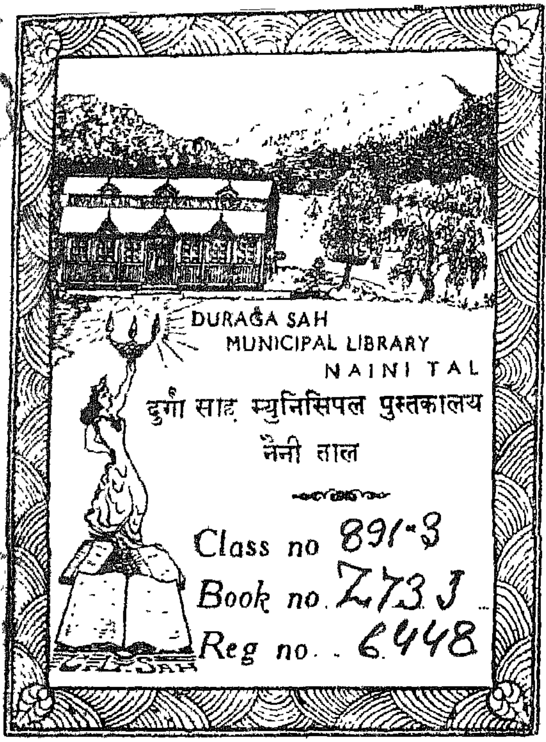


[illegible]

'जीने के लिए' एमाइल ज़ोला कृत 'जोई द विव्र' का भावानुवाद है। घटनास्थल नार्मण्डी का एक टूटा फूटा गाँव है। जहाँ एक तेज़ तर्रार परन्तु निराशावादी युवक है। उसमें अनेक सम्भावनाएँ हैं, मगर अन्त में वह कुछ नहीं कर पाता। पालिन एक स्वस्थ [illegible] है। [illegible] से भरपूर, [illegible] अनेक कामों में एक प्रकार [illegible] है।

[illegible] ज़ोला के चरित्र [illegible] है। [illegible] प्रायः [illegible] नहीं [illegible] मानो [illegible] की [illegible] डूब कर [illegible] है।

[illegible] पालिन की होती है। उसके नेक [illegible] आत्मत्याग में ओजस्विता है, [illegible] है। [illegible] वह १९ वीं सदी के कथा साहित्य की सर्वाधिक [illegible] है।

[illegible] केवल एक सहज साधारण जीवन को [illegible] चित्रित करना ही [illegible] था। [illegible] जो कुछ कहना था, वह [illegible] है। इसका आस्वाद तो पाठकों को [illegible] पढ़ने पर ही मिलेगा।

जीने के लिए

एमिल ज़ोला
कृत

'ज़ेस्ट फ़ार लाइफ़' का हिन्दी रूपान्तर

अनुवादक
श्री सूर्यनारायण

संपादक
श्रीकृष्ण दास

मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रकाशक :
मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद

मूल्य
चार रुपये

मुद्रक :
वीरेन्द्रनाथ घोष,
माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद।

यह उपन्यास

उन्नीसवीं शताब्दी के उपन्यासकारों में एमिल जोला का अत्यन्त प्रमुख स्थान है। जोला आशावादी कलाकार थे। वह दर्शन अथवा धर्म के पचड़ों से दूर रहकर, दिव्य दृष्टि सम्पन्न कलाकार एवं विचारक होने के कारण, केवल समकालीन मानव समाज के जीवन की सच्चाइयों को जानने, समझने, परखने और उसकी व्याख्या करने में ही अपने कौशल का परिचय देते थे। वह पाप और पीड़ा को अच्छी तरह समझते थे! परन्तु वह पाप और पीड़ा को समझते हुये भी पापी और पीड़क से घृणा नहीं करते थे। जिन्दगी के कृष्णपक्ष की ओर से वे अपनी आँखें मूंद नहीं लेते थे, क्योंकि उनको जीवन के उज्ज्वल शुक्ल पक्ष पर अटूट विश्वास था। वह मनुष्य के सहज उत्साह, सहज दुर्दमनीयता, सहज सृजन शक्ति और सहज उत्क्रमणशीलता पर विश्वास करते थे।

'नाना' जैसे चरित्र का निर्माण कर लेने के बाद भी उनके व्यक्तिगत जीवन में निराशा और अवसाद का घेरा पड़ा रहा। ग़रीबी और निराशा के कारण कभी कभी ऐसा लगता था कि उनका सबल आशावाद ध्वस्त हो जायेगा। परन्तु ऐसा हो न सका। उनका वैवाहिक जीवन असफल था। लगता था कि जीवन के प्रति उनकी आस्था डगमगा रही है और मृत्यु का अवसाद धीरे धीरे उनके ऊपर हावी हो रहा है। 'जीने के लिये' उनकी इसी मानसिक स्थिति की रचना है।

'जीने के लिए' एमिल जोला कृत 'जेस्ट फार लाइफ़' का भाषानुवाद है। घटनास्थल मछलीहारों का एक टूटा-फूटा गाँव है। लज़ारे एक तेज तर्रार परन्तु निराशावादी युवक है। उसमें अनेक संम्भावनाएँ हैं, परन्तु अन्त में वह कुछ नहीं कर पाता। पॉलिन एक स्वस्थ समझदार कामिनी है। वह जीवन से सन्तुष्ट है। वह सेवा और नेक कामों में एक प्रकार की सार्थकता पाती है। लज़ारे के चरित्र में स्वयं जोला के चरित्र

का एक पक्ष दिखाई देता है। लजारे उन्नीसवीं शताब्दी की सम्पन्नता के पतनशील अन्त का प्रतीक है। वह प्रायः किसी वस्तु में विश्वास नहीं करता; मानो आस्था रखने की उसकी क्षमता ही टूट बिखर गई है। कुछ ऐसी ही मानसिक स्थिति में रह कर एमिल ज़ोला ने इस उपन्यास की रचना की थी। विजय पालिन की होती है। उसके नेक काम और उसके आत्मत्याग में ओजस्विता है, प्राणवन्त शक्ति है। संभवतः वह १९वीं शताब्दी के कथा-साहित्य की सर्वाधिक 'सम्पूर्ण' महिला है। मगर ज़ोला को केवल इस सहज त्यागमय जीवन की विजय चित्रित करना ही अभिप्रेत न था। उन्हें जो कुछ कहना था, वह इसके अनन्तर है। उसका आस्वाद तो पाठकों को उपन्यास का अन्तिम परिच्छेद पढ़ने पर ही मिलेगा।

लूसी मृतप्राय थी। सारी देह पसीने से भींग गई थी। उसकी आंखें मुंदी थी और सांस बंद थी, "शायद बच्चा मर गया है!" डाक्टर दबी ज़बान से बोला।

"यह जा चुका है।" कैज़नोव ने कहा, "शायद सहलाने और इसके भीतर साँस फूंकने से कुछ फ़ायदा हो, लेकिन मेरे ख्याल से यह सब बेकार ही रहेगा।...इसे छोड़कर माँ की ओर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है।"

पालिन सुन रही थी।

"बच्चा मुझे दे दो!" वह बोली। "कोशिश करूंगी...इसकी सांस न चली तो समझूंगी कि मुझमें ही सांस नहीं रह गई है।"

ब्रांडी की बोतल और कुछ कपड़ा साथ लेकर वह बच्चे को बग़ल के कमरे में उठा ले गई।

प्रसव के कारण लूसी को नये सिरे से दर्द होने लगा। श्रीमती बोलान्द ने उसकी जांघ धोकर चादर उढ़ा दी। मुंह तक चादर ओढ़े वह निश्चेष्ट लेटी रही। डाक्टर अब भी नाड़ी की परीक्षा कर रहा था।

श्रीमती शैन्ते के पुराने कमरे में पालिन अभागे नवजात शिशु के श्वास अवरोध से जूझ रही थी। आग के सामने आराम कुर्सी पर उसने बच्चे को लिटा दिया और शराब में डुबाये फाहे से उसके बदन पर मालिश

करने लगी। बच्चा इतना कमज़ोर और दुबला-पतला था कि तेज़ हाथ चलाने से मर जाने की आशंका थी। प्रत्येक नन्हें अवयव में जीवन का संचार कराने के लिए पेट के बल उसे लिटा दिया। फिर भी उसमें स्पन्दन नहीं हुआ। मालिश से बदन गरम हो गया, लेकिन सीना खोखला ही बना रहा।

चिपचिपे, बिना धोये मुंह के स्पर्श से हिचके बिना उसने अपना मुंह बच्चे के नन्हें मुंह के भीतरी हिस्से से लगा दिया। उसके सँकरे फेफड़े की क्षमता के अनुसार लम्बी और धीमी साँसें छोड़ने लगी। अपना दम घुटने का अनुभव करने पर कुछ क्षणों को रुक जाना पड़ा, इसके बाद पुनः वही क्रिया आरम्भ कर दी। खून सिर पर चढ़ गया, कान भन्नाने लगे और वह मूर्छा का-सा अनुभव करने लगी। फिर भी प्रयत्न से मुंह नहीं मोड़ा।

किन्तु नन्हें से शिशु को जन्म देने के लिए प्रसव पीड़ा सहन करने वाली जननी की अडिग दृढ़ता के साथ वह अपने कर्तव्य का पालन करती रही। बच्चे को वह जीवित करना चाहती थी। उसकी अदम्य आकांक्षा की विजय हुई। जीवन के उस क्षीण लक्षण ने उसके रोम रोम में स्फूर्ति उंडेल दी। छोटे-छोटे अंगों की पुनः मालिश करने लगी। तनिक सी भी कोताही किये बिना प्राण दान के उन्माद में वह अपनी सांसे फूंकती रही।

वह चाहती थी विजयनी बनना, जीवन का निर्माण करना।

एक बार पुनः उसे तीव्र ऐंठन दिखाई पड़ी। बहुत धीरे-धीरे सांस भीतर जा रही थी। स्वयं अपने सीने के भीतर उसने अनुभव किया कि उसका दिल नियमित रूप से धड़कने लगा और उसका मुंह बच्चे के नन्हें मुंह के साथ चिपक गया है। उस नन्हें से प्राणी के जीवन में उसका भी भाग था। विभाजित आत्मा की भांति उनके बीच एक ही सांस-प्रवाहित हो रही थी।

क्षीण, दीन रुदन सुनकर वह हर्ष-विह्वल हो आराम कुर्सी के सामने

फैल कर बैठ गई। पालिन ने अभी तक उसे बहुत ध्यान से नहीं देखा था। कितना मरियल था वह, भाग्यहीन, अधबना प्राणी! उसका खून उबलने लगा। लूसी ने लजारे को कैसा बच्चा दिया है! उसका दीप्तमान स्वास्थ्य चारों ओर से विद्रोह करने लगा अपने कूल्हों और उदर को वह हसरत की निगाह से देखने लगी। हृष्ट-पुष्ट शिशु के जन्म देने के लिए उसकी देह कितनी सुघड़ और मजबूत थी। अपने शापित जीवन और वन्ध्या बने रहने का दण्ड पाये हुये नारीत्व का ध्यान आते ही अथाह अनुताप से वह अविभूत हो उठी। नवजात शिशु को देखकर वही उन्माद भड़कने लगा जो कि विवाह की रात को उसके दिल के टुकड़े टुकड़े कर गया था।

प्रातःकाल जागने पर उसने देखा था कि मैं खून-सी भींग गई हूँ। जीवन की उरवर्त्ता, व्यर्थ ही स्खलित हो गई है। मैं कभी माँ नहीं बनूंगी। अच्छा होता कि शरीर का सारा रक्त इसी तरह बह जाता। जीवन के निर्माण में इसका उपयोग तो होगा नहीं। मेरा मांसल यौवन किस काम आयेगा? रस से आप्लावित यह अंग, ये मांशपेशिया क्यों है? बिना जुते खेत की तरह मैं पड़ी रहूंगी। उपेक्षित रह कर अपने आप ही सूख जाऊँगी। कुर्सी पर पड़े नंगे कीड़े की तरह दयनीय शिशु के स्थान पर वह उस हृष्ट-पुष्ट बालक की कल्पना करने लगी जो कि उसके विवाह के बाद पैदा हुआ होता। निराश होकर वह उस बच्चे के लिए रोने लगी जिसे कि वह कभी जन्म नहीं दे सकेगी।

बच्चा अब भी बिलख रहा था। वह हाथ पैर फेंकने लगा। स्वयं को भूल कर पालिन ने बच्चा गोद में उठा लिया। अब भी अपने अतृप्त मातृत्व के लिये विलाप करते हुये और समस्त जीवों की पीड़ा के प्रति करुणा का अनुभव करते हुये उसे पुचकारने लगी।

"इसके जीवन के लिये हम तुम्हारे ऋणी हैं। मुझे सदैव तुम्हारा ऋणी बना रहना है।" लजारे ने अपलक पॉलिन की ओर निहारते हुये कहा।

"मेरा ऋणी ? मैंने तो केवल वही किया जो खाली रहने पर कोई भी दाई करती।"

"क्या मैं इतना नीच हूँ कि तुम्हारा उपकार भी भूल जाऊँगा ? जो कुछ मेरे पास है तुम्हारा ही दिया हुआ है। इस घर में पाँव रखते ही तुम निरन्तर बलिदान करती चली आ रही हो। मुझे लूसी के हवाले करते हुये भी तुम्हारे दिल में मेरे लिए प्रेम बना हुआ था। यह रहस्य मुझ पर अब प्रकट हुआ। उफ़! तुम्हारा ही कहना ठीक है। दयालुता और प्रसन्नता के अतिरिक्त सब कुछ नगण्य है, स्वप्न मात्र है।"

प्यार से उसे अपने निकट खींचती हुई पॉलिन संजीदा होकर बोली, "तुम न बेवकूफ़ हो और न नीच, केवल अप्रसन्न हो...मुझे चूम लो, लज़ारे।"

अभागे छोटे प्राणी के सामने, जो कि सम्भवतः सो गया था, ओंठ से ओंठ मिल गये।

यह चुम्बन था एक बहन और भाई का, जहाँ वासना का वह तनिक भी पुट नहीं था जिसने अभी कल ही उन्हें लोलुप बना दिया था।

श्री सूर्यनारायण ने रस में डूब कर इस उपन्यास का अत्यन्त सफल और सरस भावानुवाद किया है। इस उपन्यास का समस्त औचित्य है जीवन के प्रति वह गहरी आस्था जो मानव जाति को और उसकी सहज करुणा को अमरत्व प्रदान किये हुए हैं। एक निर्धूम ज्योतिशिखा सी वह अवसाद-ग्रस्त प्राणी को आशा, प्रेरणा और ज्योति प्रदान कर रही है।

आशा है, हमारे पाठकों को प्रस्तुत उपन्यास से पर्याप्त संतोष होगा। इसी में अनुवाद का परिश्रम और उसकी सफलता भी निहित है।

संपादक

जीने के लिये

घड़ी में ज्यों ही छः बजने की आवाज हुई, शैन्ते की रही-सही उमीदों पर भी पानी फिर गया। आराम कुर्सी पर बैठा हुआ वह अपने गठिया से पीड़ित पैरोंको कोथलेकी आगसे सेंक रहा था। कराहता हुआ अचानक वह उठ कर खड़ा हो गया। पिछले दो घण्टों से वह बड़ी बेकरारी से श्रीमती शैन्ते की वापसी का इन्तजार कर रहा था। वह पेरिस गयी थी, अपनी नन्हीं भतीजी पालिन क्वेनू को साथ ले आने के लिये। शैन्ते-दम्पति को अब उसके अभिभावक की जिम्मेदारी निभानी थी। पाँच हफ्तोंकी गैर हाजिरीके बाद आज श्रीमती शैन्तेको वापस आना था।

रसोई घर का दरवाजा खोलता हुआ वह बोला—"बेरोनिक, अचरज की बात है। वे जरूर किसी दुर्घटना में पड़ गये।"

नौकरानी अपने काम से लगी थी। उसका चेहरा गुस्से से कुछ तमतमा आया। भुनभुनाती हुयी बोली—"मेरे ख्याल से मालिकिन पेरिस में ही रुक गयीं। अच्छी आफत खड़ी कर दी।"

"नहीं, नहीं।" शैन्ते ने जवाब दिया—"कल तार आया था न! लिखा था कि सब काम रफा-दफा हो गया है। मालिकिन को आज सुबह केन पहुँच जाना था। वहाँ दवाइने से मिलने के लिये रुकना था। कुछ और मुकामों पर रुकते-थमते चार बजे यहाँ पहुँच जाना था, ज्यादा से ज्यादा साढ़े चार बजे तो जरूर ही।"

एक क्षण शान्त रहने के बाद वह बोला—"वेरोनिक, तुम सड़क के नुक्कड़ तक जाओ। जरा देखो तो!"

गुस्से को दबाते हुये वह कुछ देर तक घूरती रही—"सच? मैं क्यों जाऊँ? लजारे तो पहले से ही उन्हें लाने के लिये गया है। कीच-काच में लथपथ होना मुझे अच्छा नहीं लगता।"

शैन्ते आजिज़ी से बोला—"देखो, अपने साहबजादे के बारे में भी मुझे अन्देशा हो रहा है। उसका भी कुछ पता नहीं। घण्टे भर से वह सड़क पर कर क्या रहा है?"

बिना कुछ बोले वेरोनिक शाल ओढ़ कर बाहर निकल गयी। शैन्ते भी बाहर चलने को हुआ। उसे पीछे देखकर नौकरानी चिढ़ गयी—"भगवान् के लिये तुम लौट जाओ। तुम कल दिनभर हाय-हाय करोगे। जाकर अंगीठी के सामने अपना पैर सेको!"

शैन्ते चुपचाप बैठ गया। नौकरानी की झिड़कियों का वह आदी हो चुका था। उसके बाहर चले जाने पर उसे थोड़ी राहत मिली। स्कूली बच्चे की तरह चुपके से वह बाहर की पगडण्डी पर चला आया। एक जगह खड़ा होकर वह समुद्र का नज़ारा देखने लगा। उसकी उम्र अभी सिर्फ छप्पन साल थी, लेकिन गठिया की बीमारी ने उसे असमय में ही वृद्ध बना दिया था। उम्मीद की एक नयी किरण से उसे अपनी चिन्तायें भूल गयीं। भीतर ही भीतर वह अपने मन को समझाने लगा कि नन्हीं पालिन जरूर ही वेरोनिक का दिल जीत लेगी और इधर-उधर की फजीहतों से फुर्सत मिल जायगी।

दोषी कहा किसे जाय? जब पेरिस के उस वकील ने लिखा कि भाई क्वेनू अपनी औरत के छः महीने बाद ही चल बसा तो उसकी बात पर यकीन करना ही पड़ा। यह बात सच थी कि वे एक दूसरे से ज्यादा हिल-मिल नहीं सके थे। परिवार की गिरानी आ गयी थी। शैन्ते का पिता दक्षिण फ्रांस छोड़ कर तमाम मुल्क में चक्कर लगा रहा था, एक घुमन्तू बढ़ई होकर आखिर केन में उसने इमारती लकड़ी का

रोजगार शुरू किया। फ्रांस के उत्तर से वह लकड़ी मँगाता था। छोटा क्वेनू, अपने पिता की मृत्यु के बाद पेरिस में बस गया था। दो तीन बार ही उनकी एक दूसरे से मुलाकात हुयी थी। शैन्ते को अपने रोग के कारण रोजगार छोड़ देना पड़ा और बड़े डाक्टरों से सलाह लेने के लिये पेरिस जाना पड़ा। दोनों एक दूसरे की बड़ी इज्जत करते थे और शायद मुमर्षु क्वेनू ने यह कामना की थी कि उसकी कन्या स्वस्थ्य पूर्ण समुद्री जल वायु का आनन्द ले। किसी भी हालत में लड़की उनके ऊपर आर्थिक बोझ नहीं बनेगी। इसके विपरीत विरासत में वह अपनी अच्छी खासी मालियत लेकर आयेगी।

लेकिन वे दोनों इतनी देर क्यों कर रहे हैं? उमड़ते-घुमड़ते बादलों को देखकर उसकी शंकाएँ बढ़ने लगी। ऐसा न हो कि कहीं वे तूफान की मुसीबत में पड़ जाँय! उसने सोचा आगे बढ़ कर उन्हें देखा जाय। नंगे सिर वह रास्ते पर निकल पड़ा। उसके चेहरे पर पानी की बौछारें पड़ रही थीं। दो चट्टानों को काट कर सड़क बनायी गयी थी। बोनीविले के पच्चीस या तीस घरौंदे थोड़ी दूर से दिखायी पड़ रहे थे। समुद्र के ज्वार की प्रत्येक लहर उसका दिल दहला देती थी। बाईं ओर एक रेतीला मैदान था। कोई एक दर्जन नावों के साथ कुछ लोग शोर गुल मचा रहे थे। पूरी बस्ती में मुश्किल से करीब दो सौ निवासी थे। समुद्र से ही वे अपनी स्वल्प जीविका अर्जित करते थे। बिखरी हुयी छतों से परे दाहिनी ओर सिर्फ गिर्जाघर और बाईं ओर शैन्ते का मकान दृष्टिगत हो रहा था। चट्टानों के बीच सड़क एक खोह सी प्रतीत होती थी। बोनीविले की यही सारी छोटी सी दुनियाँ थी।

"वाकई बड़ा गँदला मौसम है!" एक आवाज़ सुनायी पड़ी।

शैन्ते वापस लौट पड़ा। वह पूरी तरह पानी से भीग गया था। उसने अपने बगीचे की ओर दृष्टिपात किया। समुद्री हवासे पेड़ों की पत्तियाँ लहरा रही थीं। हवा का झोंका निकल जाने पर एकबार उसने

सड़क पर निगाह दौड़ायी। वेरोनिक अपना हाथ हिलाती हुयी वापस लौट रही थी।

"यह क्या तमाशा है? तुम बाहर निकले थे? फौरन लौट चलो!"

उसका हाथ पकड़ कर बच्चों की तरह वह उसे झिड़कने लगी। कल दर्द बढ़ जाता तो उसे ही देख भाल करनी पड़ती। और किसे फुर्सत ही थी?

"तुमने कुछ देखा नहीं!" उसने बड़े नम्र स्वर में पूछा।

"सच, मैंने कुछ नहीं देखा...मालिकिन जरूर कहीं रुक गयीं।"

उसे यह कहने की हिम्मत नहीं हुयी कि कुछ और कोशिश करो। वस्तुतः इस समय उसे अपने लड़के की अनुपस्थिति ज्यादा खल रही थी।

नौकरानी कहने लगी—"मैंने देखा कि हर जगह हाव-तौबा मचा है। सब लोग डर रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि इस बार पूरी सफाई हो जाय!"

ठीक उसी समय एक उन्नीस वर्षीय लम्बा छोकरा दौड़ कर आता हुआ दिखायी पड़ा।

"ओह, अच्छा हुआ। लजारे आ रहा है।" शैन्ते ने राहत की साँस ली—"मेरे प्यारे बच्चे, तुम कितने भीग गये हो? कुछ पता चला?"

"कहीं कोई नहीं!" लजारे ने उत्तर दिया—"मैं वर्चेमएट तक गया। सराय के पास सड़क पर टकटकी लगाये रहा कुछ पता न चला आप परेशान होंगे, सोच कर लौट आया।"

महीनों चट्टानों के गिर्द भरमने के बाद पिछले अगस्त से उसने केन का भी काम छोड़ दिया था। कोई धन्धा निश्चित् न कर पाने से संगीत में ही डूबा रहता था। माँ को इससे बड़ी निराशा हुयी। जाते समय वह नाराज हो गयी थी, क्योंकि लजारे ने उसके साथ पेरिस जाने से इन्कार कर दिया था। गया होता तो वह उसके लिये कोई काम धन्धा ठीक कर देती। समूची गृहस्थी तितर-बितर हो चुकी थी। कड़वाहट इतनी आ गयी थी कि पारिवारिक जीवन का संबंध दिखावा बनकर रह गया था।

"सब बातें बताकर अब मैं कुछ और आगे तक जाना चाहता हूँ। देखूँ आखिर क्या बात हुई ?" लजारे आगे बोला।

"नहीं, नहीं, अँधेरा होने लगा है" "शैन्ते चिल्लाया—"तुम्हारी माँ हमें कुछ खबर तो जरूर ही भेजेगी। जरूर तार-वार आएगा...सुनो! गाड़ी की सी आवाज आ रही है।"

वेरोनिक ने दरवाजा खोला—"यह डाक्टर केज़नोव की गाड़ी है, उसने कहा"क्या उसके आने की उम्मीद थी ? नहीं-नहीं, कितना अच्छा हुआ यह तो मालिकिन हैं।

सब लोग आनन-फानन नीचे उतर आए। हाल के कोने में एक कुत्ता सो रहा था वह भी भूँकता हुआ दौड़ पड़ा। आवाज़ सुन कर सफेद बिल्ली भी उठी लेकिन जब देखा कि बड़ा किच-किच है तो गुर्राते हुए पूँछ सिकोड़ ली।

पचास वर्ष के आयु की एक महिला गाड़ी से नीचे उतरी। साथ में एक सुकुमार लड़की थी। छोटा कद, पतली देह, घने काले केश और मोहक मुखाकृति पर कुछ लम्बी नाक उसके महत्वाकांक्षी स्वभाव का परिचय दे रही थी।

लजारे अहाते से दौड़कर आता हुआ चिल्लाया—"माँ, कोई दुर्घटना तो नहीं हुई ?"

"नहीं, नहीं, "श्रीमती शैन्ते ने उत्तर दिया।

"बड़ा अच्छा हुआ, हम कितने परेशान थे!" बेटे के बाद उसका बाप बोला—"सफ़र कैसा रहा ?"

श्रीमती शैन्ते ने जवाब दिया—"उफ़, सब जगह गड़बड़ी थी। सड़कें इतनी खराब हैं कि बेयुक्ससे आनेमें ही करीब दो घण्टे लग गए। एक जगह मैलीवोरे के एक घोड़े की टाँग टूट गयी। दूसरे घोड़े का इन्तजाम नहीं हो सका। मैंने सोचा, रात भर रुकना पड़ेगा, पर डाक्टर था रहमदिल, अपनी गाड़ी दे दी। बेचारा मार्टिन हमें यहाँ ला रहा है।"

श्रीमती शैन्ते बोलीं—"मार्टिन, बच्ची को नीचे उतारो!"

अभी तक उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं था। कोचवान की मदद का बिना इन्तजार किए, वह अपने आप ही नीचे उतर आई। हवा के झोंके में उसके कपड़े लहरा रहे थे। हैट की काली क्रेप के नीचे काले बालों की लटें लटक रही थीं। वह दस साल की बड़ी बच्ची थी। मोटे ओठों वाला चेहरा इतना गहरा पीला था, जितना कि पेरिस में पले हुए किसी बच्चे का हो सकता था। हरएक आदमी उसे निहार रहा था।

श्रीमती शैन्ते ने उसे सबका परिचय दिया—"देखो, ये हैं तुम्हारे चाचा, इसलिए कि तुम मुझे अपनी चाची कहती हो; और यह तुम्हारा चचेरा भाई है, बहुत आवारा, उतना अच्छा नहीं, जितनी कि तुम हो!"

लड़की लजाई नहीं खुलकर वह सब लोगों से मिली। सबने उससे प्यार जताया।

लजारे विस्मयपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर निहार रहा था। उसका अन्दाजा था कि वह काफी छोटी होगी, बिल्कुल नटखट और शैतान...।

श्रीमती शैन्ते सब के चेहरों की ओर ताकती हुई बोलीं—"हम लोग यहाँ कर क्या रहे हैं? और भीगने की जरुरत नहीं। बारिश फिर शुरू होने वाली है!"

वेरोनिक बगल में खड़ी थी। श्रीमती शैन्ते उसे उदास अकेली खड़ी देखकर ताना मारती हुई बोलीं—"कहो, नमस्कार, क्या हाल चाल है? अगर तुम्हें मेरी कुशल क्षेम पूछने की फुर्सत नहीं है तो मार्टिनी के खान-पान का ही प्रबन्ध करो।"

सहसा गाड़ी की ओर मुड़कर वह चिल्ला पड़ीं—"हाय राम, मेरी पेटी!...मैं तो उसे बिल्कुल ही भूल गयी थी। डर रही थी कि वह रास्ते में ही गिर गयी होगी।"

काले रँग के चमड़े की बड़ी सी पेटी थी जिसके किनारे रगड़ से सफेद हो गये थे। श्रीमती शैन्ते ने अपने बेटे को उसे उठाने से मना कर दिया।

भीतर पहुँचकर श्रीमती शैन्ते ने आराम की साँसली—"ओफ़, अपना घर कितना अच्छा लगता है। मैं सोचने लगी थी कि अब कभी वापस नहीं लौट सकूँगी!"

वेरोनिक की ओर मुखातिब होकर शैन्ते बोला—"देखो, सात हो रहे हैं। मालिकिन और छोटी बच्ची अपने कपड़े बदल लें, फिर कुछ खाने-पीने की चर्चा चलें!"

नौकरानी ने पालिन के कपड़े बदले। मालिकिन ने अपनी पेटी से उसके लिये नए कपड़े और जूते निकाले। फिर कपड़े बदलती हुई बोलीं—"पालिन, चलो रसोई में। जल्दी जल्दी मुँह-हाथ धो लो... बहुत जोर की भूख लगी है।"

रसोई घर में, सब लोग मेज के चारोंओर बैठ गये। शैन्ते ने आग के पास अपना स्थान ग्रहण किया। आराम कुर्सी में धँसा हुआ वह पैरों को भी सहलाता जा रहा था। डर था, कहीं दर्द का दौरा फिर न आ जाय। छोटी पालिन भोजन के सामानों को हैरत से देख रही थी। इधर-उधर कोई एक दर्जन कुर्सियाँ पड़ीं थीं। आखिरकार एक पुराने बैरोमीटर से हटकर उसकी निगाह काँच के डिब्बे में रखे एक अजीब तरह के सामान पर पड़ी। वह एक खिलौना जैसा लगता था—जैसे लकड़ी का कोई छोटा सा पुल हो, फिर भी बहुत अजीब बनावट थी।

"यह तुम्हारे बड़े चाचा का बनाया हुआ है", शैन्ते ने बताया। खुश था कि बातचीत का विषय मिल गया—"मेरे पिता शुरू में बढ़ई का काम करते थे। उनकी बनाई हुई इस बढ़िया चीज को मैंने सँभालकर रख लिया है।" उसे अपने खानदान के बारे में बताते हुए कोई संकोच नहीं हुआ। श्रीमती शैन्ते को झुँझलाहट के साथ वह पुल दूसरी जगह

रख देना पड़ा। उसे देखकर यह ख्याल ताज़ा हो उठता था कि उन्होंने एक मजदूर के लड़के के साथ शादी की है। पालिन इसके पहले से ही अपने चाचा की बातें अनसुनी कर रही थी। उसकी निगाहें बाहर दूर तक फैले क्षितिज पर जा टिकी थीं। वह खिड़की के पास जा खड़ी हुई। पेरिस छोड़ने के बाद से ही, समुद्र के विचारों से उसका मानस आक्रान्त था। वह इसका स्वप्न देख रही थी। गाड़ी में बार-बार अपनी चाची से सवाल करती। हरएक पहाड़ी के पास से गुजरते हुए, वह जानना चाहती कि क्या समुद्र इन्हीं पहाड़ों के पीछे है! ऐरोमांशे से बोनीविले तक वह तेज हवा के बावजूद गाड़ी की खिड़की से बाहर अपना सिर निकाले रही, ताकि समुद्र को देख सके। इस समय उसकी दृष्टि में समुद्र लहरा रहा था। अब वह हमेशा उसे देख सकेगी-अपनी निजी सम्पत्ति की भांति। धीरे-धीरे, अपनी आंखों से वह उसे अपना, बिल्कुल अपना बनाती जा रही थी।

नीले आसमान से रात उतर रही थी। हवा के झोंके आवारा बादलों को इधर-उधर उड़ा रहे थे। क्रमशः अन्धकार सघन हो उठा। उमड़ते हुए समुद्र के पीलेपन के अलावा और कुछ देख पाना मुश्किल था। दूर, बहुत दूर तक सफेद फेन का साम्राज्य फैला था। लहरों का शोर तेज होता जा रहा था। चट्टानों के पास असंख्य घोंघे और सीपियाँ इकट्ठा हो रही थीं। सारे गाँव पर मृत्यु की सी नीरवता छा गयी थी। बस्ती बहुत उजाड़ सी लगती थी, क्योंकि सारे निवासी मजबूती से बन्द दरवाजों के भीतर विश्राम कर रहे थे। समुद्र के किनारे पड़ी हुई नावें बड़ी-बड़ी समुद्री मछलियों-सी जान पड़ती थीं। बरसात के कारण समूचे गांव पर धुँधली नमी फैल गयी थी और केवल गिर्जाघर ही इससमय भी बस्ती के एक सिरे पर, तूफानी कुहरे के बीच साफ-साफ देखा जा सकता था।

पालिन मौन रूप से सब कुछ निरख-परख रही थी। एक बार पुनः उसका नन्हा सा दिल धड़क उठा—जैसे उसका गला घुट रहा हो

ौर उसने एक जोर की निःश्वास ली, इतनी जोरकी मानो अपनी ़री साँस ओठों से ही निकाल देना चाहती हो।

"यह सीने से ज्यादा चौड़ा है न ! लजारे ने, जो कि उसके पीछे खड़ा हो गया था, कहा।"

वह इस बच्ची को देखकर अब भी हैरान था। जबसे उसका आगमन हुआ, तभी से वह बड़ी लज्जा और संकोच का अनुभव करने लगा था।

"हूं...!" वह पीछे मुड़े बिना ही धीमे स्वर में बोली। लजारे उसे 'तू' कहकर सम्बोधित करना चाहता था, किन्तु ऐसा न कह कर, बोला—"तुम्हें डर नहीं लग रहा है ?"

पालिन ने उसकी ओर हैरत से देखा—"नहीं तो, डरने की क्या बात है ? पानी इतनी दूर तक तो आ नहीं सकता !"

"हूं...! तुम जानो !" वह उसे कुछ चिढ़ाने के मकसद से बोला—"कभी-कभी पानी चर्च के सिरे तक आ जाता है !"

वह ठठाकर हँस पड़ी। जैसे खेल में होता है, लजारे का हाथ पकड़कर वह अपने लिये 'तू' का प्रयोग करती हुयी चिल्ला पड़ी—"मेरे भाई, तुम सोचोगे कि मैं कितनी नटखट हूं ! अगर पानी चर्च के सिरे तक चढ़ जाय, तो तुम यहाँ नहीं खड़े रह सकोगे !"

बच्ची का हाथ पकड़े हुए लजारे भी हँसने लगा। इसी क्षण से वे एक दूसरे के मित्र बन गए। उनके गुल गपाड़े के बीच में ही श्रीमती शैन्ते आ गयीं। उन्हें बहुत प्रसन्नता हुयी। अपना हाथ पोंछती हुयी बोली—"अच्छा, तुम लोगों में दोस्ती कायम हो गयी...मैं जानती थी कि तुम हिल-मिल जाओगे !"

"मालिकिन, खाना परसा जाय" वेरोनिक ने रसोई के दरवाजे पर खड़ी होकर हस्तक्षेप किया।

"हाँ, हाँ, मेरी बच्ची ! पहले बत्ती जलाओ। अँधेरे में कुछ सूझ नहीं रहा है।" सचमुच, इतनी रात हो चली थी कि रसोई में

कोयले की आग की रोशनी के अलावा, घुप अँधेरा छाया था। नौकरानी ने बत्ती जलाई। सब लोग भोजन की मेज पर बैठ गए। पालिन अपने चाचो के सामने, चाचा और भाई के बीच में बैठ गई। श्रीमती शैं को एकबार पुनः उठना पड़ा। उन जैसी वृद्ध महिला के लिए का शान्त रहना बहुत कठिन था।

हास-हुलास के साथ भोजन समाप्त हुआ। वेरोनिक ने मेज साफ की। पालिन जा कर खिड़की के सामने खड़ी हो गई और बाहर की ओर देखने लगी। घने अंधेरे की परतों में सब कुछ डूब गया था। आसमान,समुद्र,गाँव,चर्च-सभी खो गये थे। वह समुद्र देखना चाहती थी। यह जानना चाहती थी कि पानी कितनी ऊँचाई तक बढ़ता है किन्तु उसकी हरहराहट के अलावा, कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता था। लहरों का खौफ़-नाक शोर हर क्षण बढ़ता ही जाता था। हवा के झोंके और बारिश की बौछारें शोर शराबे को और भी ज्यादा तेज़ बना रही थीं।

'हाय राम' शैन्ते बोला, "हरहराहट तेज होती जा रही है। ज्वार आने में दो ही घन्टे बाकी रह गए हैं।"

लजारे ने समझाया,"अगर हवा उत्तर से आई तो, मेरे ख्याल से बोनीविले की सफाई हो जायगी। खुशकिस्मती से चौ-वायु चल रही है!"

पालिन बड़े विस्मय से ये बातें सुन रही थी।

श्रीमती शैन्ते बोलीं—"वाह, हम यहाँ सुरक्षित हैं। और लोग अपनी-अपनी फिकर करें...। हर आदमी का अपना-अपना जंजाल है...। हाँ, मेरी बच्ची, तुम एक प्याली गरम-गरम चाय पी लो और चुपचाप सो जाओ।"

भोजन की मेज साफ करने के बाद वेरोनिक ने उसपर एक पुराना लाल कपड़ा बिछा दिया। इसी के चारोंओर परिवार के लोग शाम को बैठा करते थे। सब ने पुनः अपना-अपना स्थान ग्रहण किया। लजारे दवात कलम और कागजों का एक पूरा बंडल ले आया। बत्ती

के सामने आ गया और संगीत की प्रतिलिपियाँ उतारने लगा। श्रीमती शैन्ते को यह बहुत नागवार गुज़रा—"फिर वही संगीत का खटराग! तुम केवल एक रात्रि भी, यहाँ तक कि जिस दिन घर लौटी हूं, मुझे राहत न दोगे?"

"लेकिन माँ, मै ज्यादा वक्त नहीं लूँगा। मैं तुम्हारे सामने ही काम खत्म कर देता हूं। तुम तो जानती हो, तुम्हारे बातचीत करने से मेरा कोई हरज नहीं होगा। बोलती जाओ। मुझसे कोई भी बात पूछो, मैं तुम्हें जवाब देता जाऊँगा।"

मेज के आधे हिस्से पर कागज फैलाए हुए, उसने अपना काम जारी रखा। शैन्ते आराम कुर्सी पर फैलकर बैठ गया था। उसके हाथ अगल बगल लटक रहे थे। पीतल की लालटेन से मद्धिम रोशनी फैल रही थी। पालिन इस नये परिवार के लोगों के साथ अब तक अधमुँदी आखों से मुस्कुरा रही थी। थकावट और कमरे की गरमाहट के सुकून से वह ऊब रही थी। जल्दी ही उसे नींद आ गई। लालटेन की चमकती रोशनी में उसका सिर एक ओर लुढ़क गया। उसकी मुलायम पलकें उसकी आँखों पर खिंचे हुए रेशमी घूँघट-सी मालुम होती थीं। मासूम होटों से हल्की और नियमित सांस निकल रही थी।

"यह जरूर बहुत थक गई होगी।" श्रीमती शैन्ते दबी जुबान से बोलीं—"हमें उसे चाय पिलाने के लिए जगाना होगा और फिर बिस्तर पर लिटा दिया जायगा।"

थोड़ी देर के लिए खामोशी छा गई। तूफ़ान की पृष्ठ भूमि में सिर्फ लजारे की कलम की खुरचही सु[illegible]कती थी। सब लोग [illegible] के संध्या की तरह खामोश बैठे रहे, के साथ [illegible] बाद पति [illegible] दवाइने कुछ बोले हुए एक दूसरे की ओर दे[illegible] [illegible] मकान ले लेने हुए पूछा—"और, क्या केन में तुम्हें [illegible] [illegible]क धन-संचय आरम्भ मिल गया था?" [illegible] केन में किसी ऊँचे ओहदे [illegible]स सके। शैन्ते हर बात से

पत्नी डरावने ढंग से अपने कन्धे हिलाती हुई थी—"सन्तोष-जनक बयान ? क्या मैंने तुम्हें आगाह नहीं किया था कि तुम बेवकूफ बनाए जा रहे थे ?"

इस समय चूँकि बच्ची सो गई थी, वे लोग बातचीत कर सकते थे। वे फुसफुसा कर ही अपनी बातें कह रहे थे, ताकि मुख्तः में एक दूसरे की खबरों से वाकफियत हो जाय। किन्तु शीघ्र ही उनकी भावनायें उत्तेजित हो उठीं और क्रमशः सारे पारिवारिक विवाद सामने आ गये।

उसके भ्रमणशील बढ़ई बाप ने साहसिक प्रवृत्ति और अदम्य उत्साह के साथ इमारती लकड़ी का व्यवसाय चालू किया था। उसकी मृत्यु के बाद शैन्ते को कारखाना बड़ी डाँवाडोल हालत में मिला। काहिल और आरामतलब होने की वजह से काम की ओर उसका बहुत कम झुकाव था। वर्तमान हालत को बरकरार रखते हुआ केवल नियमित आय से ही वह सन्तुष्ट था। उसके जीवन का एक मात्र रस था, एक अध्यापिका से विवाह हो जाना। मूजिनी से उसकी मुलाकात एक अपने दोस्त के घर में हुई थी। वह एक उजड़े हुए भद्र परिवार की अनाथ युवती थी। उसकी महत्वाकाँक्षाओं के कारण ही वह उससे बहुत अधिक प्रभावित हो उठा था। लेकिन शैन्ते को कभी भी पूरी शिक्षा नहीं मिल सकी थी। एक प्राइवेट बोर्डिंग स्कूल में वह बहुत देर से दाखिल किया गया था। इसीलिए किसी बड़े पैमाने के काम से वह हमेशा जी चुराया करता था। उसकी पत्नी को उसके इस स्वभाव से बड़ी निराशा हुई। पुत्र उत्पन्न होने पर, माँ की भाग्य निर्माण सम्बन्धी आशायें उसी पर [illegible] त हो गईं। उसने उसे एक स्कूल [illegible] दिया। [illegible] हर शाम को उसकी पढ़ाई का [illegible] भी, एक अन्तिम दुर्भाग्य से उसकी [illegible]। चालिस साल की उम्र में शैन्ते गठिया [illegible] और बीमारी इतनी बढ़ गई कि वह अपना

रोजगार बेच देने की बात सोचने लगा। इसका मतलब था जीवन स्तर को निम्न करना, मामूली आमदनी में ही गुजर-बसर करना और आगे चलकर अपने लड़के को बीस हजार फ्रैंक की बुनियादी हैसियत से भी कम के सहारे दुनियाँ में खड़ा कर देना।

श्रीमती शैन्ते ने फरोख्त की खुद देखरेख करने का फैसला किया। रोजगार से करीब दस हजार फ्रैंक की आमदनी होती थी और इसी पर उनका सारा ठाट-बाट निर्भर था। श्रीमती शैन्ते वैभवपूर्ण जीवन पसन्द करती थीं। उन्होने ही दवाइने की तलाश की और यह तै पाया कि दवाइने इमारती लकड़ी का व्यवसाय एक लाख फ्रैंक में खरीद लेगा, लेकिन वह केवल पचास हजार ही अदा कर सकता था। बाकी पचास हजार के लिये शैन्ते दम्पति को उसका साझीदार बने रहना पड़ा और उसके मुनाफा में हिस्सा बाँट लिया जाया करता था। दवाइने कुछ बुद्धिमान और उद्योगी था। वह मुनाफा न बढ़ा सकता, तो भी उन्हें अपना पचास हजार फ्रैंक पा जाने का यकीन था। अपने पुत्र की सफलताओं की प्रतीक्षा करते हुए वे इतने से भी काफी सन्तुष्ट थे।

चीजें इस तरह एक ढर्रे पर आ गई थी। शैन्ते ने दो वर्ष पूर्व बोनीविले में समुद्र के किनारे एक मकान खरीद लिया था। यह सौदा एक दिवालिए ग्राहक से पटाया गया था। श्रीमती शैन्ते ने इसे दुबारा बेच देने के बजाय, जैसा कि उसने एकबार प्रस्ताव किया था, यह निश्चय किया कि वहीं रहा जाय। लजारे जब तक कमाना न शुरू कर दे तब तक ऐसा जरूरी ही था। ठाट-बाट को तिलाँजलि देकर अपने को इस एकान्त स्थान में दफना लेना उसके लिए आत्महत्या के समान था, लेकिन चूंकि वह रोजगार के साथ ही मकान भी दवाइने को सौंप देनेवाली थी, इसलिए किराए पर कोई दूसरा मकान ले लेने की बात सोच रही थी। इसीलिए उसने उत्साह पूर्वक धन-संचय आरम्भ कर दिया था। ताकि आगे चलकर जब उसका बेटा केन में किसी ऊँचे ओहदे पर पहुँच जाय तो वह वहां फिर से जाकर बस सके। शैन्ते हर बात से

रजामन्द रहता था। उसके गठिया के मर्ज के लिए समुद्री आबोहवा बहुत मुफ़ीद थी। तीन में से दो डाक्टरों ने, जिनसे कि उसने सलाह ली थी, यह बहुत जोर देकर सुझाया था कि शक्तिदायिनी समुद्री हवायें उसके साधारण स्वाथ्य पर बलवर्द्धक औषधि सा प्रभाव डालेगी। इस प्रकार मई के महीने में एक दिन शैन्ते अपनी पत्नी के साथ चौदह वर्षीय लजारे को लीसी में छोड़कर बोनीविले चला आया और वहीं हमेशा के लिए बस गया।

इस वीरतापूर्ण विस्थापन के बाद से पांच साल बीत गए थे और परिवार के हालात बद से बदतर होते जा रहे थे। दवाइने बड़ी कल्पनाओं का आदी था। इसलिए हमेशा नये कर्ज मांगता रहता था और मुनाफे को बराबर खतरनाक व्यवसायों में लगाता रहता था। नतीजा यह हुआ कि हिसाब में बराबर घाटा आने लगा था, बोनीविले में शैन्ते-परिवार को अपनी तीन हजार फ्रैंक की आमदनी पर ही गुज़र करना पड़ता था, इतनी किफायतशारी से रहे कि उन्हें अपना घोड़ा तक बेच देना पड़ा था और वेरोनिक को रसोई के बाद में भी काम करना पड़ता था।

"देखो यूजिनी, शैन्ते ने कहा, अगर मैं इस काम में उलझा तो यह अंशतः तुम्हारा ही कुसूर था!"

लेकिन अब वह इस उत्तरदायित्व को नहीं अनुभव करती थी। इस समय उसने यह भुला दिया कि उसीने दवाइने से सम्बन्ध स्थापित कराया था।

"मेरे अपराध से तुम्हारा क्या मतलब है?" उसने तीखेपन के साथ जवाब दिया—"क्या मैं रोगिणी हूँ? अगर तुम रोगी न बनगए होते, तो हम लखपती हो जाते!"

हरबार जबकि उसकी पत्नी की तीक्ष्णता इस प्रकार छलक पड़ती तो वह व्यग्रता और लज्जापूर्वक यह सोचता हुआ कि अपने शरीर के कारण ही परिवार का शत्रु बन गया है, अपना सिर झुका लेता।

"हमें सब्र करना चाहिए !" वह धीरे से बोला—"दवाइने इस बार की योजना के प्रति काफी आश्वस्त है। अगर देवदार की लकड़ी के भाव बढ़ जायेंगे तो हमारी किस्मत चमक जायगी !"

"हूं, और फिर उसके बाद ?" लजारे ने संगीत की प्रतिलिप उतारते हुए हस्तक्षेप किया—"हमारे खाने भर के लिये अभी बहुत है! वास्तव में आपको इस तरह परेशान होने की जरूरत नहीं ! जाती तौर पर मैं रुपए के लिए इस तरह बदहवास नहीं होता ?"

श्रीमती शैन्ते ने एक बार पुनः अपना कन्धा सिकोड़ा।

"बेहतर है कि तुम और ज्यादा परवाह करना सीखो और इस तरह की फालतू चीजों में अपना समय मत बर्बाद करो !"

यह ख्याल आने पर कि उसी ने उसे पियानों बजाना सिखाया था, उसे बड़ी झुंझलाहट होने लगी। उसकी पहले की उमीदें चकनाचूर होती जा रही थीं। यह लड़का जिसके बारे में उसका ख्याल था कि आगे चलकर प्रिफेक्ट या जज बनेगा, संगीत, नाटक लिखने की बात कर रहा था। वह सोचने लगी कि किसी दिन कीचड़ से भरी सड़कों पर प्राइवेट ट्यूशन पढ़ाने के लिए घूमता फिरेगा, जैसा कि खुद उसे करना पड़ा था !

अपनी सारी मौजूदा परेशानियों के बावजूद श्रीमती शैन्ते ने खुश होकर अपनी पेरिस यात्रा का विवरण सुनाया। इस धनी लड़की का अभिभावकत्व उनके लिए बड़े गौरव की बात थी। थोड़ी देर शान्त रहने के बाद उन्होंने अपने थैले से निकाल कर पति और बेटे को एक बड़ा सा पार्सल दिखाया। यह प्रतिभूतियों का पार्सल था जो कि एक पुराने रजिस्टर के आवरण की दफ्ती से बन्द किया गया था। पिता और पुत्र दोनों इस बेशकीमती पार्सल को हैरत के साथ देखते रहे !

सहसा पालिन जाग पड़ी। वह भी चकित होकर पार्सल की ओर निहारने लगी, जैसे कि उन कागजों और उस पुरानी कैशबुक को वह पहले से ही पहचानती रही हो !

जाओ। वेरोनिक बगल में है इसलिये अगर डर लगे तो दरवाज़ा खटखटा देना !

"और फिर मैं भी तो यहीं हूँ।" लजारे बोला—"भूत निकलने पर मैं अपनी बड़ी तलवार लेकर आ जाता हूँ।"

आमने सामने के दोनों कमरों के दरवाजे खुले थे। पालिन एक के बाद दूसरे को देखती हुई खड़ी थी।

"यहाँ कोई भूत-प्रेत नहीं है !" वह हँसती हुई बोली—"तलवारें चोरों के लिये हैं अच्छा, चाची नमस्कार, भैया, तुम्हें भी नमस्कार।"

"नमस्ते बिटिया...क्या तुम खुद ही अपने कपड़े उतार लोगी !"

"हाँ हाँ, क्यों नहीं ? अब मैं नन्हीं—मुन्नी नहीं हूँ। पेरिस में मैं सब चीजें कर लेती थी।"

[२]

पहले ही हफ्ते के भीतर, पालिन की उपस्थिति से घर में खुशियाँ लौट आईं। उसके दीप्तिमान स्वास्थ्य, ऊँची समझदारी और प्रशान्त मुस्कुराहट ने उस गुप्त कड़ुवाहट को हल्का कर दिया, जिसके बीच शैन्ते परिवार रहता आ रहा था। पिता को एक परिचारिका मिल गई। माँ यह देखकर खुश थी कि उसका बेटा अब घर में ज्यादा रुका करता था। डेस्क में बन्द १५०,००० फ्रैंक यद्यपि अछूते पड़े थे, फिर भी उसके बल पर परिवार के लोग अधिक धन सम्पन्नता का अनुभव करने लगे थे। उनकी सारी बदनसीबियों के बीच स्नेह के नये सूत्र निर्मित हो गये थे। एक नयी आशा ने जन्म ले लिया था। किन्तु उसके क्षणिक रूप से सब लोग अपरिचित थे।

एक दिन, रात के समय, शैन्ते के प्रत्याशित गठिया के दौरे ने हमला बोल दिया। पूरे सप्ताह तक उसके जोड़ों में सनसनाहट होती रही। कुछ आराम की हालत में वह सो गया था लेकिन प्रातःकाल तीन बजे उसके बायें पैर के अंगूठे में बहुत तेज दर्द शुरू हुआ और एड़ियों से होता हुआ उसके टखनों तक पहुँच गया। भोर तक पसीने से सराबोर दुलाई के नीचे वह धीरे-धीरे कराहता रहा, ताकि दूसरों का हर्ज न हो सके। उसके रोग के दौरे से पूरे परिवार में मुर्दनी फैल गई, लेकिन वह भरसक खामोश रहने और दूसरों की मदद न मांगने की कोशिश में रहता था। क्योंकि बदले में दूसरों से उसे खौफ़नाक झिड़कियाँ ही मिल पाती थी। बहरहाल, जब कि करीब आठ बजे, वेरोनिक उसके दरवाजे से गुजरने लगी, वह अपनी कराहट को वश में नहीं रख सका और गला फाड़ कर चिल्लाने लगा।

"हाय राम! यह हाल है!" नौकरानी बड़बड़ाई—"इन्होंने चिंघाड़ मारना शुरू कर दिया है!" वह उनके बिस्तर के पास गई और उनका सिर हिलाते हुए कुछ इधर-उधर पूछा और सान्त्वना के रूप में इतना ही बोलकर रह गई—"ठीक है, अगर तुम समझते हो कि इससे मलिकिन खुश होंगी तो अच्छा ही कर रहे हो!"

और सचमुच, जब मलिकिन ने सुना और खुद पास आई तो तुरन्त बरस पड़ीं—"फिर वही रीं-रीं! मुझे आने देर नहीं हुई कि तुम्हारा दुखड़ा शुरू हो गया!'

उसके गठिया के प्रति वह अपना पन्द्रह साल पुराना रोष उतारने लगी। इस रोग को वह अपना जानी दुश्मन समझती थी। इसी से उसकी जिन्दगी चौपट हो गई थी, उसका लड़का बर्बाद हो गया था और उसके सारे मंसूबों पर पानी फिर गया था। इसी गठिया की वजह से उन्हें इस सुदूर गाँव में निर्वासित होना पड़ा था। अपने सम्पूर्ण दयालु स्वभाव के बावजूद, वह अपने पति के गठिया के दौरे

के प्रति बहुत निर्मम व्यवहार करती थी, अपने को बेहद फूहड़ और उसकी सेवा सुश्रूषा के प्रति अत्यन्त निरपेक्ष बना लेती थी।

"हाय राम, कितना तेज दर्द है!" बीमार शैन्ते कराहते हुए बोला—"यह दौरा पिछले वाले से भी ज्यादा बुरा है। लगता है कि अब जान नहीं बचेगी। अगर तुम्हें इससे चिढ़ है तो यहाँ मत आओ, लेकिन डाक्टर कैजनोव को फौरन बुला दो!"

पूरे घर का वातावरण अशान्त बन गया। लजारे डाक्टर के लिए ऐरोमांशे दौड़ा गया, वैसे डाक्टरों पर किसी को भरोसा नहीं रह गया था। पिछले पन्द्रह वर्षों से शैन्ते ने हर तरह की दवाओं की आजमाइश कर ली थी और हर नये प्रयोग के साथ मर्ज बढ़ता ही गया। मर्ज का हमला शुरू में मामूली और हल्का था लेकिन जल्द ही प्राणघातक बन गया। अब तो दोनों ही पैर रोग ग्रस्त हो गये थे और एक घुटने के बिल्कुल बेकार हो जाने का भय था। तीन-तीन बार दवायें बदलीं गईं और धीरे-धीरे उसका पीड़ित शरीर विभिन्न विज्ञापित दवाओं का प्रयोग-स्थल बन गया, लेकिन लाभ के नाम पर केवल नाउम्मीदी ही हाथ लग रही थी।

"हाय, भगवन कितना तेज दर्द है!" शैन्ते बार-बार चिल्लाता रहा—"लगता है, जैसे कुत्ते मेरा पैर नोच रहे हैं!"

करवट बदलने में भी उसे बड़ी तकलीफ महसूस हो रही थी। शीघ्र ही पीड़ा अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई। तेज़ बुखार से वह काँप रहा था और गले में जलन तथा प्यास का अनुभव कर रहा था।

इसी बीच पालिन उसके कमरे में आई। अपने चाचा की ओर संजीदगी के साथ निहारती हुई वह उसकी चारपाई के पास खड़ी थी। उसकी आँखें वीरान थीं, न उनमें घबराहट थी और न आंसुओं की छलक। श्रीमती शैन्ते मरीज की चीख पुकार से आजिज़ आकर अपना सिर इधर-उधर झटक रही थी। वेरोनिक ने कम्बल लाकर ओढ़ा दिया, लेकिन उसकी तीमारदारी के ढंग से शैन्ते की परेशानी और ज्यादा बढ़

गई। वह उससे बहुत भयभीत था। उसने एलान किया कि वह ऐसा बर्ताव कर रही थी, गोया रोगी मनुष्य न होकर सन की गठरी हो!

"फिर मुझे मत बुलाया करो!" बाहर जाती हुई गुस्से से बोलीं—"अगर तुम दूसरों को कोसते रहोगे, तो तुम्हें अपनी देखभाल स्वयं ही कर लेनी पड़ेगी!"

धीमे से पालिन उसके पास आ गई थी। अपनी कोमल और नरम ऊँगलियों से उसने कम्बल हटा दिया। शैन्ते को थोड़ी राहत मिली। उसकी सहायता की प्रशंसा करता हुआ बोला—"जीती रहो बेटी...वहाँ उस तह को देखो। उसका वजन पाँच सौ पौन्ड है! उफ्! इतनी जोर से नहीं, तुमने मुझे चौंका दिया!"

बहरहाल, उसका दर्द पहले से और भी ज्यादा तेज हो चला था। उसकी पत्नी कुछ करने के बहाने कमरे में इधर से उधर घूम रही थी। कभी जाकर खिड़की का पर्दा खींच लेती। कभी मेज के पास आकर एक प्याला रख देती। शैन्ते उसकी हरकतें सहन नही कर सका। पुनः चिढ़कर बोला—"मेहरबान, यह भाग दौड़ रहने दो। तुम हरएक चीज को कँपा देती हो। तुम्हारे हर कदम के साथ लगता है कि मुझ पर हथौड़ी की मार पड़ रही है।"

उसने माफ़ी माँगने की कोशिश नहीं की। इन प्रसंगों का अन्त बस इसी प्रकार होता कि शैन्ते चीखने चिल्लाने के लिए अकेला छोड़ दिया जाता।

वह सिर्फ इतना ही बोली—"पालिन, इधर आओ, देख रही हो न, कि तुम्हारा चाचा हम लोगों का अपने पास खड़ा रहना भी बरदाश्त नहीं कर सकता!"

लेकिन पालिन वहीं रुकी रही। वह इतनी आहिस्तगी से चलती थी कि उसका पैर फर्श पर फिसलता सा जान पड़ता था। बड़ी मुस्तैदी से मरीज की तीमारदारी करने लगी। उसे बाहर की हवा अच्छी लगती थी। उसकी ख्वाहिशों के मुताबिक वह कमरे की खिड़कियाँ खोल देती।

वेरोनिक मांड़ का पानी तैयार कर दरवाजे तक ले आती और वह उसे मरीज के पास रख देती। बेचारे शैन्ते को सबसे ज्यादा यही अच्छा लगता था कि पालिन उसकी आंखों के सामने खड़ी रहे। बिल्कुल शान्त और निश्चल खड़ी रहे या कुर्सी पर बैठी रहे। अपने दर्द की चर्चा उसे बहुत कड़ुवी और अप्रिय लगती थी।

पूरे एक हफ्ते तक शैन्ते चिल्लाता रहा। वेरोनिक रसोई में ही अपने को बन्द रखती, ताकि मरीज की चीख पुकार से मुक्ती मिली रहे। श्रीमती शैन्ते और लजारे भी परेशान होकर कभी-कभी बाहर चले जाते। सिर्फ पालिन कभी भी मरीज के कमरे से बाहर नहीं हुई। विशेष कर रात में दर्द बहुत तेज हो जाता। वह मुश्किल से सिर्फ दो या तीन घन्टे सो पाती फिर भी उसकी परिचर्या अथवा कर्तव्य परायणता में तनिक भी अन्तर नहीं आ पाता था।

अन्ततः रोग का उपशमन हुआ, पालिन को अपनी स्वच्छन्दता पुनः वापस मिल गई। और उसके तथा लजारे के बीच एक घनिष्ट मित्रता स्थापित हो गई! लजारे पहले दिन से ही पालिन को एक बालक के रूप में मानने लगा था। उसे ऐसा लगता था जैसे वह उसका छोटा भाई हो, उससे नौ साल छोटा उसका अनुज हो। अपनी बड़ी-बड़ी तीखी आँखों के साथ वह इतनी सजीव और मनमोहक लगती थी कि उसके साथ वह बहुत घरेलूपन महसूस करता था। वह उसके सामने ठाट के साथ अपना सिगार पीता, कुर्सी पर बैठकर किताबें पढ़ता अथवा लम्बे-लम्बे पत्र लिखता और उनके साथ रंग-बिरंगे फूल भी चिपका देता, पालिन उसके खेल की साथी कभी-कभी नाराज होकर झगड़ा करने लगती। अचानक वह मेज पर चढ़ जाती या उसके पुराने परदे के छेद के बीच से कूदने फांदने लगती।

फिर दोनों संगीत से उलझने लगे। लजारे का पियानों बहुत पुराना था। उसकी पालिश जगह जगह उधड़ गई थी। लजारे अपनी माँ को नया पियानो खरीदने के लिए राजी नहीं कर सकता था, इसलिए अपनी

पूरी शक्ति से उसीसे मधुरध्वनि निकालने का प्रयत्न करता, और जब बाजे से वैसा न हो पाता तो अपना मुँह ही बजाने लगता। ऐसे अवसरों पर पालिन उदासी के साथ ऊब जाती, लेकिन फिर भी ख़ामोशी के साथ बैठकर सुनती रहती, ताकि उसके भाई की भावनाओं को कोई ठेस न लग सके।

इसी प्रकार कभी-कभी गोधूलि बेला आ जाती। लजारे संगीत के नशे में उससे अपने बड़े-बड़े स्वप्नों की चर्चा करता। वह एक महान् संगीतज्ञ बनने की तैयारी कर रहा था। केन में उसका एक वायलिन शिक्षक था, जिसने उसके उज्जवल भविष्य के बारे में भविष्यवाणी की थी, कुछ दिनों तक उसने संगीत रचना की गुप्त शिक्षा ली और अब स्वयं स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहा था। कुछ स्वरलिपियाँ वह तैयार कर चुका था, उनमें से दो एक को पालिन को सुनाता। वह उसकी प्रशंसा करती फिर वह उसके साथ बहस करने लगती, सुन्दर संगीत रचना अवश्य ही अच्छी चीज है, किन्तु उसके लिए कदाचित अपने माता-पिता की आज्ञाओं का पालन करना अधिक श्रेस्यकर था। उनकी इच्छा थी कि वह प्रिफेक्ट या जज बने। माँ और बेटे के इस झगड़े से पूरे परिवार में कुहराम मच जाता था। बेटा पेरिस जाकर कुछ और काम सीखने का इरादा ज़ाहिर करता और माँ की जिद थी कि अक्तूबर तक 'वह कोई न कोई सम्मानित जीविका आरंभ कर दे। पालिन अपनी चाची की ही योजना का समर्थन करती। सबसे उसने कह दिया था कि वह जरूर अपने भाई का इरादा बदल देगी। लेकिन यह एक अच्छा-खासा-मज़ाक बन गया था। लजारे कभी-कभी गुस्से में वायलिन पटक देता और पालिन को 'घृणित दक़ियानूस' कह कर चिढ़ाने लगता।

तीन दिनों तक उनकी बोल चाल बन्द रही। और उसके बाद फिर से दोस्ती कायम होगई।

पालिन को संगीत की ओर आकर्षित करने के लिए लजारे ने उसे पियानो सिखाने का निश्चय किया। वह घन्टों तक उसकी पतली ऊँगलियाँ पकड़ कर बाजा सिखाने की कोशिश करता, किन्तु उसकी उत्साह-हीनता से वह मर्माहत होकर रह जाता।

"मुझे अकेला ही रहने दो, तुम बहुत बेवकूफ और बेहद दकियानूस हो!" लजारे एक दिन झुंझलाकर बोला—"माँ अगर चाहे तो तुम्हें पियानों सिखा सकती है लेकिन यह मेरे बस की बात नहीं है!"

"तुम्हारे संगीत से कोई लाभ नहीं है।" पालिन ने तमतमा कर जवाब दिया—"अगर मैं तुम्हारी जगह पर होती तो मैं डाक्टर बनती!"

लजारे हैरत के साथ उसका मुँह ताकने लगा। डाक्टर? कहां से यह भावना इसके मन में आई?

वह चिल्लाया—"सुनो, अगर वे लोग मुझे संगीतकार बनने से रोकेंगे तो मैं आत्महत्या कर लूंगा!"

गरमी में शैन्ते पूरी तरह से चंगा हो गया और पालिन लजारे के साथ बाहर घूमने फिरने के लिए स्वतंत्र हो गयी। बड़ा कमरा वीरान रहता और दोनों मित्र स्वच्छन्द विहार के लिए बाहर निकल जाते।

श्रीमती शैन्ते यद्यपि पालिन की ऊँची समझदारी से आश्वास्त थी, फिर भी वे उन दोनों के घर पर रोक रखने की कोशिश करतीं। इसी लिए, वे कभी भी अहाते के रास्ते से बाहर नहीं निकलते थे, क्योंकि वहाँ वेरोनिक उन्हें देख लेती। वे चुपचाप रसोई के बाग के रास्ते से बाहर निकल जाते और शाम के झुटपुटे तक एकदम गायब रहते।

दिन गुजरते गए और अगस्त का महीना आ गया। लेकिन लजारे अपने बारे में अभी तक कोइ फैसला नही कर सका था। पालिन वेयुक्स के एक बोर्डिंग स्कूल में भेजी जाने वाली थी, समुद्र की रेत पर बैठकर कभी-कभी वे अपने इरादों के बारे में वार्तालाप करते पालिन लजारे को डाक्टर बनने के लिए प्रेरित करती। वह कहती, यदि मैं पुरुष होती तो मनुष्यों को रोग मुक्त करने से, बढ़ कर कोई

दूसरा काम मेरे लिये रोचक न होता। लजारे के सिर में समाया हुआ संगीत का झक धीरे-धीरे समाप्त होने लगा और वह आखिरकार पेरिस जाकर डाक्टरी पढ़ने के लिए राजी हो गया। उसने सोचा कि इसके द्वारा वह इस दकियानूस लड़की के और अधिक निकट आ सकेगा।

श्रीमती शैन्त इस बात से बहुत प्रसन्न हुईं। वे अपने पुत्र को यद्यपि प्रशासक अथवा न्यायाधीश बनाना चाहती थीं लेकिन डाक्टर भी हर एक हालत में सम्मानित व्यक्ति समझे जाते थे और अपार सम्पति अर्जित कर लेते थे। हर एक बात निश्चित हो गयी। लजारे पहली अक्तूबर को रवाना होने वाला था, इसीलिए सितम्बर में दोनों दोस्तों के सैर सपाटे और अधिक उत्साह के साथ पुनः प्रारम्भ हो गए और मुँह अँधेरे तक वे समुद्र के किनारे स्वच्छन्दता पूर्वक क्रीड़ा और कल्लोल करते रहते।

उस शाम को भोजन के कमरे में उनकी मुलाकात एक नये अतिथ से हुई। पिछले हफ्ते से ही घर में लूसी के आने का इन्तजार किया जा रहा था। उसकी उम्र साढ़े ग्यारह साल के करीब थी। हर साल बोनी-विले में वह एक पखवारे के लिए आया करती थी। लूसी की माँ की मृत्यु श्रीमती शैन्ते की गोद में ही हुई थी। मरते समय उसने अपनी बच्ची का हाथ श्रीमती शैन्ते के हाथ में दे दिया था। उसके पिता थिबादीर ने, जो कि केन में एक बैंकर था, छः महीने बाद अपनी दूसरी शादी कर ली थी और अबतक उसके तीन बच्चे हो चुके थे। अपनी नयी पत्नी और उसके तीन-तीन बच्चों के कारण वह लूसी को बोर्डिंग स्कूल में रखता और छुट्टियों में उसे अपने दोस्तों के घर भेज कर निश्चिन्त हो जाता था।

"दौड़ आओ लजारे," शैन्ते चिल्लाया—"यह रही तुम्हारी नयी बहन!"

लूसी मुस्कुराती हुई बड़े प्यार से उससे मिली। उनकी जान-पहचान सिर्फ पिछली छुट्टियों से ही शुरू हुई थी और तब सचमुच उनका बर्ताव काफ़ी रस्मी था, इसलिये कि वह बचपन के भोंडे खिलवाड़ों से बहुत नफरत करती थी।

"अरे पालिन, क्या तुम इससे नहीं मिलोगी? श्रीमती शैन्ते भीतर आती हुई बोली। यह तुमसे डेढ़ साल बड़ी हैं। तुम दोनों की दोस्ती बहुत अच्छी रहेगी।"

पालिन ने लूसी की ओर दृष्टिपात किया। वह पतली-छरहरी और काफी सुन्दर थी। बाल बहुत आकर्षक और चमकीले थे और प्रौढ़ महिला के बालों की भाँति गूँथे और सँवारे गये थे। उसे लजारे के गले से मिलते हुए देखकर पालिन का चेहरा पीला पड़ गया और जिस समय लूसी ने एक हर्षपूर्ण चुम्बन दिया, उसके ओंठ बहुत धीमे से हिलकर रह गये।

"क्या बात है?" उसकी चाची ने पूछा "क्या तुम्हें सर्दी लग गयी है?"

"हाँ, थोड़ी-सी हवा बहुत सर्द थी!" झूठ बोलने की लज्जा से लाल होते हुए उसने जवाब दिया।

शाम के समय वह बिना कुछ खाये ही रह गयी। उसकी आँखें दूसरे लोगों के ऊपर जमी थी और उस वक्त उनमें एक खौफ़नाक काली चमक आ जाती जबकि उसके भाई, चाचा या यहाँ तक कि वेरोनिक में से कोई भी लूसी की ओर ध्यान देने लगता।

लूसी की उपस्थिति से पालिन को बहुत अधिक पीड़ा सहनी पड़ी। पहली बार उसके आगमन की चर्चा सुनकर बड़ी उत्सुकता से वह उसकी प्रतीक्षा कर रही थी और अब बड़ी बेसब्री से उसके जाने के दिन गिन रही थी। लूसी अपनी सौम्यता, अपनी प्रौढ़ जानकारी से उसे आकर्षित भी करती थी लेकिन लजारे के उपस्थित रहने पर सब कुछ हवा में उड़ जाता था और एक अज्ञात घृणा और झुँझलाहट से

उसका खून खौलने लगता था। लजारे उसी का अधिक पक्ष लेता, लूसी का प्रायः मज़ाक उड़ाता फिर भी उसका असन्तोष ज्यों का त्यों बना रह जाता था। बाहर के सारे खेलकूद ताक पर रख दिये गए और वे लोग घर के अन्दर ही तस्वीरें देखते या कुछ इधर-उधर करते हुए पड़े रहते थे। पूरा एक पाख इसी तरह बर्बाद हो गया!

एक दिन लजारे ने एलान किया कि वह अपनी पूर्व योजना के पाँच दिन पहले ही प्रस्थान करना चाहता है। वह पेरिस में, जहाँ कि उसके केन के एक पुराने सहपाठी से मुलाकात होने वाली थी, अपना पूरा बन्दोबस्त कर लेना चाहता था। पालिन यद्यपि अपने भाई के बिछोह की बात सोच कर पिछले महीने से काफी रंजीदा थी। फिर भी उसने उसके निर्णय का उत्साहपूर्वक समर्थन किया और हँसी खुशी के साथ सामान वगैरह बाँधने में अपनी चाची की मदद करती रही। जिसदिन लजारे मैलीवोरे की पुरानी बग्घी में बैठकर घर से रवाना हुआ; वह भाग कर अपने कमरे में बन्द हो गयी और बहुत देर तक फूट-फूट कर रोती रही। उस शाम को वह लूसी के प्रति अत्यन्त मधुर बनगयी और बोनीविले में लूसी का अन्तिम सप्ताह बड़ी हँसी खुशी के साथ समाप्त हुआ। जब उसके पिता का नौकर यह संदेसा लेकर उसे लेने आया कि वे अपने बैंक से छुट्टी लेने में असमर्थ हैं, दोनों छोटे-छोटे मित्र एक दूसरे की बाँहों में सिमट गये और अत्यन्त हार्दिक अनुराग व्यक्त करते रहे।

उसके बाद धीरे-धीरे एक साल गुजर गया। श्रीमती शैन्ते ने अपना इरादा बदल दिया। पालिन को बोर्डिंग स्कूल में भेजने के बजाय उन्होंने उसे घर पर ही रहने दिया, खासतौर से शैन्ते के विलाप से प्रभावित होकर, क्योंकि वह उस बच्ची के बिना जिन्दा नहीं रह सकता था। फिर भी उन्होंने इस स्वार्थपूर्ण भावना को स्वीकार नहीं किया और स्वयं अपने सिर पर ही पालिन की शिक्षा की जिम्मेदारी ले ली। स्कूल में छोटी लड़कियाँ हर तरह की भयंकर बातें सुनती हैं। वे

चाहती थीं कि पालिन का सम्पूर्ण भोलापन बना रहे। लजारे की आल्मारी से किताबें निकाल कर उन्होंने हर रोज उसे सबक देना शुरू कर दिया। उसका बड़ा कमरा अध्ययन-कक्ष के रूप में परिणत हो गया। पालिन ने फिर से पियानो सीखना शुरू कर दिया। उसकी चाची हर रोज उसके बजाने का तारीका सख्ती के साथ समझाया करती। वह मेहनती और दिमाग की काफी तेज थी और अरुचिकर विषयों को भी हृदयगंम करने के लिये संकल्प पूर्वक जुट जाती थी। केवल प्रश्नोत्तर रुप में धार्मिक शिक्षा की पुस्तक ही उसे उबा देनेवाली थी। वह इस बात को नहीं समझ पाती थी कि क्यों उसकी चाची प्रत्येक रविवार को चर्च ले जाने का झंझट करती थी। इसका क्या तुक था? पेरिस में यद्यपि चर्च उसके घर के नजदीक ही था, फिर भी उसे वहाँ कोई नहीं ले जाता था। सूक्ष्म भावनाओं का आत्मसात् करना उसके लिए दुष्कर था। इसलिए उसकी चाची को उसे यह समझाना पड़ता था कि इस देश में सम्भ्रान्त समझी जानेवाली युवती के लिये धार्मिक आचारों का पालन अनिवार्य है। स्वयं श्रीमती शैन्ते ही कभी भी ज्यादा धार्मिक नहीं थीं। लोकाचार का पालन ही उनके लिए काफी था शिष्टाचार की भाँति अच्छी शिक्षा का इसे वे अंगमात्र ही स्वीकार करती थीं।

पूरा वर्ष काफी सौभाग्य पूर्ण रहा। घर में पालिन की उपस्थिति के फलस्वरुप एक अन्य शुभ लक्षण के रूप में शैन्ते-दम्पत्ति को दवाइने से पांच हजार फ्रैंक की अप्रत्याशित रकम प्राप्त हुई। शैन्ते ने उससे अपना साझा तोड़ लेने की धमकी दी थी और वह इससे बचना चाहता था। तभी यह रकम उसके हवाले करनी पड़ी। श्रीमती शैन्ते बड़ी सावधानी के साथ हर चौथे महीने पालिन की आमदनी वसूल करने के लिने केन जाया करती थी। वे खुद अपने निजी व्यय और पारिवारिक कौंसिल द्वारा निर्धारित रहन-सहन के खर्च में कमी कर देती थीं और बचे हुए रुपयों से नयी प्रतिभूतियां खरीद लेती थी और जब वापस आती तो पालिन को अपने सोने के कमरे में ले जाकर अपने

डेस्क का मशहूर दराज़ खोलतीं और बार-बार कहती "देख रही हो, मैं इसे और सबके ऊपर रख रही हूँ...ढेर बढ़ता चल रहा है, है न ? घबराने की कोई बात नहीं। यह सब का सब यहाँ तुम्हारे लिये महफूज़ रहेगा, एक दमड़ी में भी बट्टा नहीं लग सकेगा।"

अगस्त में एक दिन लजारे यह खबर लेकर घर आ गया कि पहले साल के इम्तहान में वह पूरी कामयाबी के साथ पास हो गया है। एक हफ्ते बाद उसके आने की सम्भावना थी लेकिन अपनी माँ को चकित करने के लिये ही आ धमका। घर के हरएक आदमी को बेहद खुशी हुई। अपने हर पखवारे के पत्रों में उसने चिकित्सा शास्त्र के प्रति अपना बदला हुआ अनुराग व्यक्त किया था। अब चूँकि वह घर आया था। इसलिये अपने को बहुत बदला हुआ प्रदर्शित कर रहा था। संगीत की चर्चा भूलकर वह अपने व्याख्यानों और वैज्ञानिक आविष्कारों की अन्तहीन कहानियाँ सुनाने लगता। उसे एक नयी धुन सवार हो गयी थी और पूरे दिल से, पूरे जोश-खरोश से उसने डाक्टर बनने और अपनी प्रतिभा से दुनिया में तहलका मचा देने का संकल्प कर लिया था।

खास तौर से पालिन उसके परिवर्तन से बहुत चकित थी। इस बात से प्रायः उसे बहुत क्लेश होता कि अब वह मनबहलाव के लिये भी संगीत की चर्चा नहीं करता था। क्या कोई सचमुच अपनी पसन्द को इस तरह छोड़ सकता है ? जब उसने उसकी स्वर-साधना के विषय में अपनी जिज्ञासा प्रकट की तो यह कहते हुए कि सब फालतू और बेहूदा बातें खत्म हो चुकी हैं, वह उसका मजाक उड़ाने लगा। उसके उत्तर से वह बहुत उदास हो गयी। उसके बाद, पालिन ने अनुभव किया कि उसकी उपस्थिति में वह उखड़ा-उखड़ा-सा रहता है और बनावटी ढंग से रहने लगता है। उसकी दृष्टि और-मुखाकृति से दस महीनों के उस अस्तित्व का आभास होता है जिसमें कि आप छोटी लड़कियों से बात न कर सके हों। अपनी पुस्तकें—उपन्यास और

सचित्र वैज्ञानिक पाठ्यग्रंथ, छिपाने के लिए उसने अपनी सन्दूक खुद ही खोलकर खाली की थी। अब वह उसे पकड़ कर लट्टू की तरह नचाता नहीं था और जब वह उसके कमरे में चलकर वहाँ बैठने की जिद करती तो कभी-कभी बाहर निकल जाया करता था। अभी वह ज्यादा बड़ी नहीं हुई थी और लजारे को अपनी उसी पवित्र और भोली निगाह से देखा करती थी।

बहरहाल, एक हफ्ते बाद वे अपनी बाल सुलभ मित्रता के पुराने धरातल पर पुनः लौट आये। गूँजती हुई हँसी तथा गदराये हुए स्वास्थ्य वाली पालिन की संगति में लजारे पुनः बच्चा बन गया। पुराने खेल-कूद पुराने आमोद-प्रमोद पुनः आरम्भ हो गए और इस तरह हँसी-खुशी के दो महीने समाप्त हो गए। उनकी मित्रता में कभी भी कोई प्रश्न-चिन्ह नहीं लग सका।

अक्तूबर में जिस दिन लजारे अपना सामान समेटने लगा, पालिन उसकी किताबें उठा कर देती हुई उसे निहारती रही।

"क्या तुम इन्हें अपने साथ लेते जाओगे?" उसने बड़ी बेसब्री से पूछा।

"बिल्कुल!" उसने जवाब दिया "अपने काम के लिए मुझे इनकी जरूरत है...बावरे! मुझे कितना काम करना है! सभी अड़चनों को दूर कर देना पड़ेगा!"

बोनीविले के छोटे से घर में पुनः निर्जीव शान्ति छा गयी। दिन पुनः पहले की सी एकरसता के साथ बीतने लगी। किन्तु उस साल पालिन के जीवन में एक असाधारण घटना घटित हुई। जून में, साढ़े बारह साल की उम्र में ईसा मसीह के स्मरणार्थ वह अपनी पहले भोज में सम्मिलित हुई और थोड़ी-थोड़ी मात्रा में धर्म उसके ऊपर अपना प्रभुत्व जमाने लगा। पहले बिना समझे ही वह प्रार्थनायें किया करती थी किन्तु अब उनका अर्थ कुछ-कुछ समझ में आने लगा। विवेकशील युवा मष्तिष्क में यह धारणा विकसित हो गई थी कि ईश्वर अत्यधिक

बुद्धिमान शासक है और सभी वस्तुओं का इस प्रकार नियंत्रण करता है कि पृथ्वी पर हरएक बात न्यायानुसार घटित हो सके। इस सहज विश्वास से प्रेरित होकर वह प्रत्येक रविवार को बहुत उत्कण्ठा के साथ चर्च के विशप के पास जाने लगी।

यह साल कम सौभाग्यशाली सिद्ध हो रहा था। बहुत दिनों से दवाइने इस इन्तजार मे था कि जलाऊ लकड़ी की कीमतें बढ़ेंगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और केन से अशुभ सम्वाद प्राप्त हुए। उन्हें ज्ञात हुआ कि दवाइने को अपना माल घाटे पर बेचना पड़ा और वह बदकिस्मती की ओर बढ़ रहा था। श्रीमती शैन्ते को अपनी गृहस्थी बहुत किफायत के साथ चलानी पड़ रही थी। तीन हजार फ्रैंक की आमदनी से घर की केवल साधारण आवश्यकतायें ही पूरी हो पाती थीं, अगर्चे उसमें भी सभी चीजों का खर्च घटाकर ही चलाना पड़ता था।

श्रीमती शैन्ते विशेषतः लजारे के सम्बन्ध में चिन्तित थीं। लगता था कि वह अपव्ययी बन गया था। बार-बार घर से रुपये माँगता और इससे उन्हें बहुत झुंझलाहट होती। इस बार लजारे ने लिखा था कि बिना अपना कर्ज अदा किए वह घर आने में असमर्थ है।

पूरे हफ्ते तक लजारे का इन्तजार किया गया। हर सुबह एक खत आता और मालूम होता कि अब वह अगले दिन रवाना होगा। पालिन को लेकर उसकी माँ वर्चेमण्ट तक उसकी अगवानी करने गयी और सड़क पर ही उससे भेंट हो गयी और शाम तक वे लोग घर पहुँच गये। इस बार लजारे का घर आना पहले की अपेक्षा कम आह्लाद पूर्ण था। वह जुलाई के इम्तहान में फेल हो गया था। अपने अध्यापकों से वह बेहद नाराज हो गया था। बहुत देर तक वह उनकी शिकायत करता रहा।

दूसरे दिन पालिन के सामने वह अपनी किताबें लेकर बैठ गया। औषधियों के बारे में तमाम बातें सुनकर पालिन बहुत खुश होती, उसके नये-नये ख्यालात से उसे ताज्जुब होता। कभी-कभी चिढ़ भी जाती, कहाँ

से ये बातें उसके दिमाग में आयी ? बेशक गंदी किताबों से, लेकिन अब उसे बहस करने की हिम्मत नहीं होती थी।

आधे सितम्बर के करीब, ठीक जब कि लूसी के आने की उमीद थी, सहसा लजारे ने पेरिस जाने का अपना निर्णय घोषित किया। पालिन के चेहरे पर उदासी छा गई। लजारे जितना ही उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाता, वह उतनी ही अधिक विनीत और शालीन बन जाती। उसकी राय थी कि उसका भाई अवश्य ही बीमार हो जायगा, क्योंकि जीवन के प्रति वह बूढ़ों का सा दृष्टिकोण रखता था।

अपनी यात्रा के दिन लजारे ने बोनीविले छोड़ने की इतनी ज्यादा खुशी जाहिर की कि पालिन सिसकने लगी—"अब तुम बिल्कुल ही मुझे प्यार नहीं करते।"

"बेवकूफ कहीं की। क्या मुझे अपना काम नहीं करना है। इतनी बड़ी होकर तुम बच्चों की तरह रो रही हो ?"

पुनः वह बहादुर बन गयी। उसकी ओर मुस्कुराती हुई बोली—याद रहे, तुम्हें इस साल कड़ी मेहनत करनी है और भगवान करे, तुम तन्दुरुस्त हालत में वापस लौटो !"

"उफ़, कड़ी मेहनत में कुछ नहीं धरा है। ये इम्तहान बहुत बेहूदे ढंग से होते हैं। मेरे फेल होने का मतलब यह था कि मैंने पास होने की ज्यादा पर्वाह नहीं की। मैं अवश्य ही इस बार सफल हो जाऊँगा क्योंकि दौलतमन्दों की तरह मुझे अपना हाथ बाँध कर बैठना अच्छा नहीं लगता।"

अक्तूबर के प्रारम्भ में, जब कि लूसी केन वापस चली गयी। पालिन ने अपनी चाची के साथ फिर से पढ़ाई शुरू कर दी। तीसरे साल के पाठ्यक्रम में उसे मुख्य रूप से फ्रांस के इतिहास और पौराणिक कथाओं की शिक्षा दी गयी। लेकिन पिछले साल इतनी ज्यादा मेहनत करनेवाले लड़की का अब ज्यादातर सिर दुखने लगता था। कभी-कभी वह अपनी कापियों के ऊपर ही सो जाती

और आकस्मिक तमतमाहट से उसका चेहरा लाल हो उठता वेरोनिक के प्रति, जो कि उसके अनुसार उसे प्यार नहीं करती थी, तीन दिनों तक वह उदासीन बनी रही। इसके बाद उसके भीतर बाधक परिवर्तन परिलक्षित होने लगे। सम्पूर्ण शरीर धीरे-धीरे विकसित होने लगा। अंगों का फुलाव और उभार प्रारम्भ में घना तथा कष्टदायक प्रतीत होता। शाम को बिस्तर पर लेटने से पहले जब वह स्वयं को देखती उसे एक प्रकार की असुविधा पूर्ण पीड़ा का अनुभव होता और वह जल्दी से चिराग़ बुझा देती। उसकी आवाज़ और ज्यादा पतली और सुरीली हो गयी। यह उसे बहुत नापसन्द था। इस प्रकार अपने से घृणा हो गयी और उसके दिन एक प्रकार की अधीर उत्कण्ठा में व्यतीत होने लगे। वह किसी प्रत्याशा में रहती किन्तु यह न समझ पाती कि किस वस्तु की आवश्यकता है। किसी से इन बातों के बारे में मुँह खोलने का भी उसे साहस नहीं हो पाता था।

अन्ततः, क्रिसमस निकट आने पर, पालिन की स्थिति से श्रीमती शैन्ते चिन्तित रहने लगीं। वह कमर में तेज दर्द होने की शिकायत करती, उसके सम्पूर्ण अंग दुखते रहते और हरारत का दौरा आता रहता। डाक्टर कैजनोव ने, जोकि उसके बहुत बड़े मित्र बन गये थे, उससे एकान्त में बातचीत की। श्रीमती शैन्ते को एक तरफ ले जाकर सलाह दी कि इस लड़की को सब बातों से आगाह कर दो। उन्होंने पहले विरोध किया। पूर्व-सावधानी उन्हें अनावश्यक प्रतीत होती थी और इस प्रकार की गुप्त वार्ताओं से वे अपने को अलग रखना चाहती थीं। उनकी शिक्षा-विधि पूर्ण अज्ञानता के पक्ष में थी। भद्दे तथ्यों की तब तक उपेक्षा की जानी चाहिए, जब तक कि वे काबू से बाहर न हो जाँय। बहरहाल, डाक्टर की जिद के मुताबिक वे यह सब बताने के लिये राजी हो गयीं। उस शाम को बात टल गयी और फिर दिन-ब-दिन वह मुल्तवी ही होती रही। उनका ख्याल था कि पालिन वैसी भीरू नहीं है और आखिरकार तमाम दूसरी लड़कियाँ भी तो हैं,

जो पहले से ही आगाह नहीं कर दी जाती। जब कोई बात होगी तब उसे समझा दी जायगी।

पालिन अपना अधिकांश समय लजारे के बड़े कमरे में ही बिताती। वह उसका स्कूल का कमरा बन गया था। खाने के लिए उसे नीचे बुला लिया जाता, किन्तु ऊपर की मंजिल में पौराणिक शास्त्र की पुस्तक बन्द ही पड़ी रहती और वह अपना पूरा दिन चिकित्सा-सम्बन्धी पाठ्य-पुस्तकों को, जिन्हें लजारे छोड़ गया था, पढ़ने में बिता दिया करती। पहले वे समझ में न आतीं। उनकी शास्त्रीय शब्दावली उसे दुर्बोध लगती और उनके लिए उसे शब्द-कोश की सहायता लेनी पड़ती। इस प्रकार चौदह वर्ष की बालिका ने उन सभी बातों की जानकारी प्राप्त कर ली, जो किसी क्वांरी लड़की के लिए सुहाग की रात तक अज्ञात ही रहती हैं।

जीवन के प्रति उसकी आसक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। पेरिस अब उसके ख्याल से उतर गया था और ऐसा अनुभव होता जैसे उसका जन्म और विकास इसी ऊँची-नीची जमीन पर हुआ हो, जहाँ कि शैन्ते का परिवार बहुत दिनों से बस गया था। समुद्री हवा उसे बहुत भली मालुम होती। एक वर्ष से कम समय में ही वह बालिका से युवती बन गयी थी। शरीर का एक नया रूप निखर आया था। अपने को वह धूप में खिलने और पंखुरियाँ बिखेरनेवाले फूल के रूप में अनुभव करती। सुबह से शाम तक अपने कण्ठ के सुरीलेपन से सम्मोहित होकर वह गाने गाती रहती। जिन्दगी उसे भा गयी थी और उसके सभी कार्य-कलापों को वह बिना किसी घृणा अथवा भय के प्यार करने लगी थी।

लजारे ने उस साल छः महीने तक कोई पत्र नहीं लिखा। केवल कुछ संक्षिप्त समाचार आ जाते। इसके बाद उसने जल्दी-जल्दी भेजे जानेवाले पत्रों से अपनी माँ को परेशान कर दिया। दुबारा अपने नवम्बर के इम्तहान में वह फेल हो गया था। धीरे-धीरे चिकित्सा शास्त्र

के अध्ययन से पीछे हट गया था और अब उसके सिर पर रसायन-शास्त्र की नयी सनक सवार होगयी थी। संयोगवश उसका परिचय विख्यात हर्बलिन से हो गया था। हर्बलिन के आविष्कार उस समय विज्ञान के क्षेत्र में क्रान्ति उत्पन्न कर रहे थे। लजारे उनकी प्रयोग-शाला में एक सहायक के रूप में, बिना यह स्वीकार करते हुए कि वह चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन समाप्त कर दे.रहा है, भर्ती हो गया था। लेकिन जल्द ही उसके पत्रों से एक नयी योजना के सम्वाद प्राप्त होने लगे। पहले प्रयोग रीति से उसने इसका वर्णन किया, फिर बढ़ते हुए जोश के साथ। यह योजना बड़े पैमाने पर समुद्री बनस्पति का उपयोग करने की थी। महान् हर्बलिन की नयी पद्धतियों और आविष्कारों के आशीर्वाद से यह लाखों का फायदा दे सकती थी। लजारे ने सफलता के अवसरों का विवरण दिया—महान् रसायनशास्त्री हर्बलिन ने सहायता का वचन दिया है, कच्चा माल आसानी से मिल जायगा और उपकरण काफी सस्ते हैं। अन्त में उसने स्पष्ट रूप से घोषणा कर दी कि अब वह डाक्टर नहीं बनना चाहता। मज़ाक के तौर पर यह भी लिख दिया कि खुद मरीजों की जान लेने के बजाय वह उनके लिये दवायें बेचा करेगा। उसके सभी पत्र जल्द ही भाग्यशाली बनने की दलील के साथ खत्म होते थे। अपने परिवार को उसने यह भी लोभ दिया कि सबके साथ वह घर पर ही रहेगा और बोनीविले के निकट ही अपनी फैक्ट्री चालू करेगा।

महीनों बीत गये। छुट्टियों में लजारे घर नहीं आया। जाड़े भर वह कई पृष्ठों में अपनी योजना का विवरण भेजता रहा। श्रीमती शैन्ते शाम के भोजन के बाद जोर-जोर से उसके पत्र पढ़ा करतीं। मई में एकरात को शानदार गोष्ठी आयोजित की गयी, क्योंकि लजारे ने स्पष्ट उत्तर की माँग की थी।

"वह अपने उस पितामह की वास्तविक प्रतिमूर्ति है जो कि बहुत उद्यमी और उत्साही थे!" श्रीमती शैन्ते ने घोषणा की।

"अवश्य ही उस पर यह मेरा प्रभाव नहीं है, क्योंकि मैं परिवर्तनों से डरता हूँ ?" शैन्ते कराहता हुआ दबी जबान से बोला। दर्द के दौरे से पीड़ित वह निकट ही आराम कुर्सी पर लेटा था।

"किन्तु तुम भी बहुत शान्त स्वभाव की नहीं हो, मेरी प्राण !"

उन्होंने अपना कन्धा हिलाया, जैसे कहना चाहती थी कि उनकी कार्यशीलता संयमित और तर्क द्वारा सुनियोजित रहती है। फिर वे धीमे से बोलीं—"ठीक है, इस पर पशोपेश की जरूरत नहीं। उसे लिख दिया जाय कि तुम जैसा चाहो, वैसा करो ! मुझे उम्मीद थी कि वह मजिस्ट्रेट बनेगा। मैंने कभी नहीं सोचा कि दवा बहुत बढ़िया चीज है और अब वह अत्तार बनने जा रहा है। अच्छा है वह लौट आये और अपार सम्पत्ति अर्जित करे। यह हमेशा कुछ न कुछ फायदे का ही धन्धा होगा !

वस्तुतः धन के लोभ से ही वह ऐसा निर्णय कर सकी थी। अपने प्रियपुत्र के लिये वे एक नया दिवा-स्वप्न देखने लगी। उनकी कल्पना थी कि वह बहुत धनी बनेगा, केन में एक फर्म का मालिक रहेगा और नगर का सभासद या डिप्टी भी हो जायगा। शैन्ते ने अपनी कोई राय जाहिर नहीं की। परिवार के हित की बातों को वह अपनी पत्नी के जिम्मे ही छोड़ दिया करता था। जहाँ तक पालिन का संबन्ध था, विस्मय और अपने भाई के बार-बार बदलते हुए इच्छाओं के प्रति असहमति के बावजूद उसने अनुभव किया कि वह घर लौट आये और अपनी विशाल योजना का प्रयोग आरम्भ कर दे !'

"कम-से-कम हम सभी एक साथ तो रह सकेंगे !" वह धीरे से बोली।

श्रीमती शैन्ते उस दिन आये हुए एक दूसरे पत्र को उठाते हुये बोलीं—"रुको, इसके बाद उसने योजना के वित्तीय पक्ष का विवरण उपस्थित किया है !"

टीका-टिप्पणी करती हुई वे उसे पढ़ गयीं। छोटी सी फैक्ट्री कायम करने के लिये करीब साठ हजार फ्रैंक की जरूरत पड़ेगी। पेरिस में लजारे की मुलाकात केन के उसके पुराने सहपाठी बाउटिग्नी से हुई है। अब वह शराब का व्यापार करता है। इस योजना से सहमत होकर उसने तीस हजार फ्रैंक देने का वादा किया है। वह बहुत शानदार भागीदार साबित होगा। तीस हजार फ्रैंक कर्ज लेने की बात बाकी रह जाती है, क्योंकि लजारे आधी जायदाद पर स्वयं अपना नियन्त्रण रखना चाहता है।

"जैसा कि सुनाया जा चुका है," श्रीमती शैन्ते ने आगे कहा—"उसने लिखा है कि मैं उसकी ओर से थिबादीर से बात-चीत करूँ। यह अच्छा ख्याल है। थिबादीर उसे रुपया देना मन्जूर कर लेगा। जैसा कि चल रहा है, लूसी अच्छी हालत में नहीं है। मैं चाहती हूँ कि एक हफ्ते के लिये उसे यहाँ बुला लूँ, ताकि उसके बाप से बातचीत करने का मौका मिल जाय।"

पालिन की आंखों पर उदासी धूप से उतर आयी। और उसके ओठ आप से आप ही जकड़ उठे। मेज की दूसरी ओर वेरोनिक चाय की प्याली धोती हुई उसकी ओर निहार रही थी।

"मैंने कुछ और ही सोचा था," श्रीमती शैन्तें आहिस्ता से बोलीं—"लेकिन चूंकि किसी व्यवसाय को चलाने में हमेशा खतरों का सामना करना पड़ता है, मैंने मन में प्रतिज्ञा कर ली थी कि इसका जिक्र नहीं करूँगी," इसके बाद उन्होंने पालिन की तरफ मुखातिब होकर कहा—"हूँ, बिटिया, मेरा ख्याल था कि तुम्हीं अपने भाई को तीस हजार फ्रैंक दे देतीं...रुपया लगाने का इससे अच्छा कोई दूसरा जरिया तुम्हें नहीं मिलेगा।"

अपने रुपयों से तुम्हें औसतन पच्चीस प्रतिशत का फायदा हो सकता है, क्योंकि तुम्हारा भाई अपने मुनाफे में तुम्हें भी हिस्सा देगा। किसी दूसरे आदमी की जेब में यह सारा मुनाफ़ा जाता हुआ देखकर

मेरा दिल फट जायगा...सिर्फ मैं यह चाहती हूँ कि तुम्हें अपने रुपयों के साथ कोई खतरा न मोल लेना पड़े। यह एक पाक अमानत है, वहाँ रखी हुई है और उसे ज्यों-की-त्य मैं तुम्हें वापस कर दूँगी।

पालिन सुनती जा रही थी। आन्तरिक द्वन्द के फलस्वरूप उसका चेहरा उतरा हुआ था। अपने माँ-बाप, क्वेनू और लीसा से धन-लोलुपता की प्रवृत्ति उसे उत्तराधिकार रूप में प्राप्त हुई थी। उसकी सम्पूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा ने उसे रुपये का आदर करना और उसे एक एक कर जोड़ना सिखाया था। इस प्रकार उसके उदार हृदय की गहराइयों में एक अज्ञात, लज्जापूर्ण और गुणहीनता की भावना स्पन्दित होती रहती थी। इसके अतिरिक्त उसकी चाची उसे जल्दी जल्दी डेस्क के उस दराज को, जिसमें कि उसकी विरासत जमा थी, दिखाया करती थी कि उसे अपने भाई के लापरवाह हाथों में जाने देना उसे प्रायः खल रहा था। इस ख्याल से कि लूसी लजारे के लिये चांदी का एक बड़ा थैला ले आयेगी, उसे और भी झुंझलाहट और पीड़ा हो रही थी।

"अगर तुम चाहो भी तो मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगी!" श्रीमती शैन्ते आगे बोली—"यह यकीन और समझदारी की बात है। क्यों? है न ऐसा ही, मेरी तनी?"

"उसका रुपया उसका रुपया है" शैन्ते ने उत्तर दिया—"अगर सब बातें बुरी तरह उलट-पुलट जाती हैं तो लोग हमें ही दोषी कहेंगे। नहीं, नहीं थिबादोर बहुत खुशी-खुशी रुपया दे देगा!"

"किन्तु पालिन को भावनाओं के आकस्मिक उद्रेक में पुनः वाणी प्राप्त हो गयी—"उफ्, ऐसा करने से तुम लोग मुझे क्यों रोक रहे हो? मुझे लजारे को रुपया देने की इजाजत दो। क्या वह मेरा अपना भाई नहीं है? मेरा उसे रुपया देने से इन्कार करना बहुत कष्टदायक होगा। तुमने मुझसे क्यों पूछा? उसे दे दो, चाची, सारा रुपया उसे दे दो!"

बोलते बोलते उसकी आंखों में आँसू आ गए। फिर भी, हिचकिचाहट दिखाने की लज्जा को छिपाने के लिये वह मुस्कराने लगी।

"तो आओ मेरे गले से लग जाओ ?" श्रीमती शैन्ते अश्रुपूर्ण नेत्रों से बोली—"तुम बहुत अच्छी लड़की हो। तुम्हारी ऐसी ही जिद है तो लजारे जरूर तुम्हारा रुपया लेगा ?"

"और क्या तुम मेरी गोद में भी नहीं आओगी !" शैन्ते ने पूछा।

दोनों ने उसे प्यार किया, दुलराया। मेज के चारों ओर आँसुओं की बूँदें टपकती रहीं। श्रीमती शैन्ते अपनी आंखें पोंछती हुई बोलीं—यह बड़ा शुभ है, इसका हृदय बहुत उदार है ?"

एक हफ्ते बाद, शनिवार को लजारे बोनीविले वापस आ गया। लूसी उसके एक दिन पहले ही पहुँच गयी थी। पालिन लजारे की गाड़ी की आवाज़ सुनते ही लूसी को साथ लेकर दौड़ पड़ी। लजारे सिर्फ पालिन को ही निहार रहा था। अचम्भे के साथ बोला—"शाबाश, क्या यह पालिन है ?'

"हाँ, यह तो मैं ही हूँ !"

"बहुत खूब, तुम क्या खा रही थीं, जो इस तरह बड़ी हो गई ? अगले साल तुम्हारी शादी हो जायेगी।"

उसके कपोलों पर लज्जा की लाली उभर आयी फिर भी वह जोर-जोर से हँस रही थी। लजारे के इस पर्यवेक्षण से उसकी आँखों में खुशी की एक नयी चमक पैदा हो गयी। लजारे पालिन को एक बालिका अथवा स्कूल की छात्रा के रूप में ही देखकर गया था और अब उसके सामने बसन्त के श्वेत परिधान और गुलाब के फूलों सुसज्जित विकसित कुसुम कली की भांति एक लम्बी युवती खड़ी थी।

"आओ, आओ," वह बोला—"तुम्हारे साथ अब बड़ों जैसा व्यवहार करना पड़ेगा...मेरा अभिवादन स्वीकार करो !"

[३]

दो दिनों बाद, समुद्र का भाटा इतनी दूर तक उतर गया कि काफ़ी गहरे पानी की चट्टानें भी दिखायी पड़ने लगीं ! लजारे प्रत्येक नये अध्यवसाय के प्रारम्भ में बहुत अधिक उत्साह प्रदर्शित करता था। अब और रुकना उसके लिए कठिन था। अपने नहाने की पोशाक पर सिर्फ एक मखमली जैकेट डालकर वह नंगे पाँव ही चल पड़ा। पालिन भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। वह भी नहाने की पोशाक में थी।

चट्टानों से करीब एक मील आगे आने पर दोनों समुद्री घास के विशाल विस्तार के बीच में खड़े हो गए। चारोंओर नज़र डालने पर लजारे का जोश एकाएक उबल पड़ा। लगता था जैसे आज पहली बार ही यह समुद्री फसल उसकी निगाह के सामने आयी हो।

"देखो, देखो !" वह चिल्लाया—"कितना बड़ा खजाना है ! और कोई इसका उपयोग करने की परवाह नहीं करता। अभी सौ मीटर के नीचे और न जाने कितना ढेर पड़ा है।"

इसके बाद वह पालिन को अपने परिहासपूर्ण पाण्डित्य प्रदर्शन के साथ समुद्री वनस्पति की विभिन्न जातियाँ दिखाने लगा। एक-एक वनस्पति का रोचक और संक्षिप्त विवरण देने के बाद बोला—"कैसी बेकार जायदाद पड़ी है न ? हम लोग कितने अहमक हैं। स्काटलैण्ड वाले कम-से-कम इतने समझदार तो हैं कि उबलेखाया करते हैं जहाँ तक हम लोगों का ताल्लुक है, हम इनका कुछ भी इस्तेमाल नहीं करते। स्थानीय किसान कुछ घटिया खाद तैयार करते हैं... विज्ञान कितना आगे बढ़ गया है इसका किसी को कुछ ज्ञान ही नहीं है।

पालिन घुटने भर पानी में खारी ठण्डक का आनन्द ले रही थी। वह अपने भाई की बातें बहुत दिलचस्पी के साथ सुन रही थी—"तो तुम इन सबका अर्क उतारने जा रहे हो?" उसने सवाल किया।

'अर्क' शब्द लजारे को बहुत अच्छा लगा—"हाँ, तुम इसे कुछ भी कह सकती हो। लेकिन जैसा कि तुम देखोगी, यह बहुत पेचीदा काम है, कुछ भी बुरा मत मानो। मैं जो कुछ बता रहा हूँ, उसे याद रखो। हमने संसार की वनस्पति पर अधिकार कर लिया है। है न? तरह-तरह के पेड़-पौधे हैं, इनमें से हम कितनों का उपभोग कर सकते हैं। कितनों के भोजन की समस्या हल हो सकती है। सम्भवतः समुद्री वनस्पति पर अधिकार करने से हम और भी अधिक धनी बन जायेंगे। देर बस इतनी ही है कि कोई आदमी चटपट काम शुरू कर दे!"

दोनों जोश-ख़रोश के साथ नमूने इकट्ठा करने लगे। एक-एक मुट्ठी भरभर बहुत सारी चीजें जुटा ली गयीं। घर लौटते समय दोनों सिर से पैर तक भींगे हुए थे। लजारे अपने गुरु हर्वलिन की बातों को बार बार दुहराता हुआ सभी चीजों की व्याख्या करता जा रहा था।

"हाय राम! तुम लोगों ने यह कितनी गन्दगी बटोर ली है?" उनके घर पहुँचने पर श्रीमती शैन्ते चिल्लाई।

"घबराओ नहीं," लजारे ने मगन होते हुए उत्तर दिया। समुद्री वनस्पति का गट्ठर बरामदे में फेंक कर आगे बोला—"देख मां, हम लोग तेरे लिए पाँच फ्रैंक की कीमत की चीजें ला रहे हैं।"

अगले दिन एक देहाती गाड़ी में भरकर समुद्री घास का बहुत बड़ा गट्ठर लाया गया और उसके बाद दूसरी मंजिल के एक बड़े कमरे में अनुसन्धान प्रारम्भ किया गया। पालिन सहायक के रूप में नियुक्त की गयी। पूरे एक महीने तक दोनों पागलों की तरह काम पर जुटे रहे। पूरा कमरा सूखे पौधों, बोतलों और विविध उपकरणों से भर गया। मेज के एक सिरे पर खुर्दबीन लगायी गयी। पियानो लपेट कर

अलग रख दिया गया, प्रयोग छोटे पैमाने पर ही शुरू किए गए ताकि कामयाबी का सही अन्दाज लगा लिया जाय। इसके बाद बड़े पैमाने पर काम शुरू करने, प्रयोगशाला को फैक्ट्री बना देने और अधिक लाभ देनेवाले उपकरणों को लगाने की योजना थी।

जिस दिन लजारे को मूल द्रव पदार्थ से पाँच विभिन्न सत्वों को अलग कर लेने में सफलता प्राप्त हुई, पूरा कमरा विजय के आह्लाद से गुंजित हो उठा। पोटेसियम ब्रोमाइट निश्चय ही आश्चर्य जनक मात्रा में निकल आयी थी। यह मशहूर दवा गरम-गरम मालपुआ की तरह बिकनेवाली चीज थी। पालिन जो कि मेज के पास अपने सम्पूर्ण अह्लाद के साथ नाच रही थी, सहसा नीचे भाग गयी और भोजन के कमरे में अपने चाचा के पास जाकर बोली—"ओहो! तुम अब बीमार हो सकते हो, हमें तुम्हारे लिए ढेरों ब्रोमाइड मिल गयी है।"

श्रीमती शैन्ते हाल ही में स्नायु रोग से पीड़ित थी। डा० कैजनोव ने उन्हें ब्रोमाईड लेने की सलाह दी थी। पालिन की चिल्लाहट सुन कर वे मुस्कुराती हुई बोली—"क्या तुम्हारे पास हर आदमी को निरोग कर देने की भी दवा हो गयी है? आज कल हर एक आदमी के स्नायु गडबड़-सड़बड़ चल रहे हैं।"

पालिन अपने दोनों हाथ फैला कर ऊँगलियां नचाती हुई बोली—"हाँ,-हाँ, हम इससे तमाम दुनिया को पाट देने जा रहे हैं। अब स्नायु रोगों का कहीं नामो निशान तक नहीं रहने पायेगा!"

समुद्रतट का निरीक्षण और विभिन्न स्थानों के सम्बन्ध में विचार विमर्श करने के बाद लजारे ने खजाने की खाड़ी पर अपनी फैक्ट्री स्थापित करने का निश्चय किया। उसने पहले पालिन के साथ घूमते-फिरते समय इस स्थान का नाम यों ही खजाने की खाड़ी रख दिया था। आज यह नाम बहुत सार्थक प्रतीत हुआ। यहाँ हर प्रकार की अनुकूल सुविधायें सुलभ थीं। मोटी चट्टानों के फर्श के साथ चौड़ा समुद्र तट था।

जिसके फलस्वरूप आसानी से 'आल्गे' इकट्ठी की जा सकतीं थीं। यातायात भी सस्ता पड़ता और कच्चा माल हमेशा अपनी मुट्ठी में रहता।

खाली जमीन का बीस हजार मीटर का खण्ड खरीद कर लजारे ने बड़ी शान से काम शुरू कर दिया। केवल दो मास के बिलम्ब के बाद ही प्रिफेक्ट की स्वीकृति भी प्राप्त हो गयी। कारीगरों को काम पर लगा दिया गया। बाउटिग्नी बुलाया गया और उसके प्रबन्ध तथा निर्देशों के अनुसार जल्दी ही दीवारें खड़ी हो गयीं।

अगले चार महीनों के दौरान में जबकि इमारतें तैयार हो रही थीं और प्रयोग के यंत्र लगाए जा रहे थे, खजाने की खाड़ी की फैक्ट्री लजारे और पालिन की रोजाना की सैर की जगह बन गयी। प्रत्येक शाम को जब वे घर लौटते, एक ही प्रश्न से उनका स्वागत होता —"कैसा काम चल रहा है ? खुश हो ?"

हमेशा जवाब भी एक ही होता; "हाँ, हाँ, लेकिन कारीगर लोग बहुत वक्त लगा रहे हैं।"

इन महीनों मे लजारे और पालिन में घनिष्टतम मित्रता स्थापित हो गयी, लजारे पालिन के प्रति तीव्र अनुराग का अनुभव करने लगा। पालिन ने रुपये देकर उसकी योजना मे मदद की थी, अतः वह उसके प्रति कृतज्ञता का भी भाव रखता था। धीरे-धीरे उसके दिमाग से यह ख्याल उतर गया कि वह लड़की है। एक बार पुनः उसे बालक के रूप में, अपने छोटे भाई के रूप में मानने लगा। वह इतनी समझदार, इतनी ज़िन्दादिल और खुशमिजाज थी कि लजारे उसके प्रति प्रशंसा और आदर की भावना का अनुभव करने लगा था, किन्तु उसे चिढ़ाते हुए, अपने इन भावों को वह छिपा रखना ही श्रेयस्कर मानता था।

इसी बीच लजारे के प्रति पालिन की प्रभूत अनुरक्ति भी दिन प्रति दिन तीव्रतर होने लगी। सात वर्षों से भाई और बहन के सम्बन्धों के पश्चात् उसमें केवल स्त्रियोचित प्रवृत्तियों का ही उदय नहीं हुआ, बल्कि वह किसी के प्रति अपने को समर्पित करने की भी आवश्यकता का

अनुभव करने लगी थी। उसे यह भ्रान्ति थी कि लजारे उससे अधिक शाक्तिशाली और बुद्धिमान है। धीरे धीरे उसका बहनापे का अनुराग प्रेम में परिणत होने लगा।

लजारे किसी आकांक्षा की उत्तेजना से अविचल रहता हुआ, उसे केवल बहन के रूप में ही देखता था। इसके विपरीत पालिन, जो कि अभी नितांत क्वांरी थी और लजारे के अतिरिक्त जिसके एकान्त क्षणों का और दूसरा सहचर नहीं था, धीरे धीरे उसे पूजने लगी और अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को उसे समर्पित कर दिया। सुबह से लेकर रात तक अपने समग्र अस्तित्व के लिए वह उसी पर निर्भर रहने लगी। उसकी आखें केवल लजारे को टुकुर-टुकुर निहारती रहतीं, यह जानने के लिए यह प्रतिक्षण उन्सुक रहती कि उसके योग्य कौन सी सेवा हो सकती है।

इसी बीच घर में दूसरी मुसीबतों ने भी डेरा जमाया। खजाने की फैक्ट्री तैयार हो गई थी, पिछले सप्ताह में प्रयोग-मंत्र चलाकर देख लिया गया था, किन्तु निराशापूर्ण परिणाम ही हाथ लगा। लजारे को यह स्वीकार करने के लिए विवश होना पड़ा कि कुछ पुर्जे गलत बिठा दिए गए थे। अपने गुरू हर्बेलिन से सलाह लेने के लिए वह पेरिस गया और बुरी तरह नाउम्मीद होकर वापस लौट आया उसे मालुम हुआ कि सब चीजों को नये सिरे से बिठाना पड़ेगा। अब तक साठ हज़ार फ्रैंक खर्च हो चुके थे। बाउटिग्नी ने एक भी दमड़ी और देने से साफ साफ इन्कार कर दिया था।

"तुम चिन्ता मत करो।" श्रीमती शैन्ते अपने पुत्र को चिन्ता से पीड़ित लेटा हुआ देखकर कहतीं—"हम लोग इतने गये-गुजरे नहीं हैं कि कुछ हजार फ्रैंक जुटाने का भी तरीका न जान सके।"

श्रीमती शैन्ते एक नयी योजना पर विचार कर रही थीं। लजारे और पालिन के पारस्परिक विवाह का विचार प्रारम्भ में उन्हें आश्चर्य पूर्ण प्रतीत होता था। किन्तु अब यह बिल्कुल उपयुक्त जान पड़ा।

अन्ततः उनकी अवस्था में केवल नौ वर्ष का ही अन्तर तो था। और इसमें कोई अस्वाभाविकता नहीं थी। निश्चय ही इससे सभी चीजें तय हो जाँयगी। फिर लजारे अपनी पत्नी के लिये काम करने लगेगा। उसका अपने कर्ज से चिन्तित रहना छूट जायगा। अपनी जरूरत के रुपये वह पालिन से ही ले लिया करेगा। श्रीमती शैन्ते अपने हृदय की गहराइयों में केवल एक ही संशय से संत्रस्त थीं, ऐसा न हो कि पालिन का जीवन बर्बाद हो जाये ! फिर भी इस विचार से उन्हें बहुत शान्ति मिलती कि क्या लजारे मेधावी नहीं है ? वह पालिन को मालमाल कर देगा। वास्तव में इस विवाह से पालिन ही अधिक लाभान्वित होगी। उनका पुत्र निर्धन हो सकता है, किन्तु पालिन के सहयोग से वह अवश्य ही सौभाग्यशाली बन जायेगा।

विवाह बिल्कुल सीधे सादे ढंग से निश्चित हो गया। एक दिन, सुबह होते ही श्रीमती शैन्ते ने पालिन से उसके सोने के कमरे में इसका जिक्र किया। वह खुशी से नाच उठी और तुरन्त राजी हो गयी। इसके बाद श्रीमती शैन्ते कुछ थकान के बहाने उसे घर पर ही रोक रखती और अपने बेटे के साथ स्वयं ही फैक्ट्री जातीं। लौटते समय लजारे से जब उन्होंने विस्तार पूर्वक अपनी योजना की चर्चा की उसके प्रति पालिन के प्रेम, ऐसे विवाह की उपयुक्तता और प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त होने वाले लाभों का विवरण सुनाया तो वह एकदम चकित रह गया। इस तरह की कोई चीज कभी भी उसके दिमाग में नहीं आयी थी। वह सोचने लगा, यह कैसे होगा ? लड़की की क्या उम्र होगी ? लेकिन इसके बाद, वह सहमत हो गया। वास्तव में वह भी पालिन को बहुत चाहता था। माँ-बाप जैसा कहेंगे, वह वैसा ही करेगा।

जब वे दोनों घर पहुँचे तो पालिन कोई काम करने के लिये मेज दुरुस्त कर रही थी और उसका चाचा आराम कुर्सी पर बैठा हुआ अखबार पढ़ने में मशगूल था।

"वाह, वाह, तो हम लोगों की शादी होने जा रही है।" लजारे मुखर आह्लाद के प्रदर्शन में अपने संवेग को छिपाता हुआ बोला।

पालिन अपने हाथ में एक तश्तरी लिये हुए आरक्त और मौन खड़ी थी।

"किसकी शादी होने जा रही है !" शैन्ते ने इस तरह पूछा। जैसे अभी अभी वह अचानक नींद से जाग पड़ा हो।

उसकी पत्नी ने आज ही सुबह उसे सूचना दी थी, लेकिन इस समय यह बात उसके ध्यान से उतर गयी थी, फिर भी तुरन्त ही उसे ख्याल आ गया।

"ओह हाँ, !" वह चिल्लाया और लजारे तथा पालिन को ध्यान से निहारने लगा। पालिन ने खामोशी के साथ तश्तरी रख दी थी। अन्ततः वह लजारे से बोली—"अगर तुम चाहो तो मैं तैयार हूँ !"

"शाबाश ! फिर सब चीजे तय हैं, एक दूसरे से गले मिलो !" श्रीमती शैन्ते अपना हैट उतारती हुई बोलीं।

हँसी-खुशी के साथ जब सब लोग खाना खाने के लिए बैठे, तो श्रीमती शैन्ते ने समझाया कि अगले दो सालों तक शादी नहीं हो सकेगी, लड़की की कानूनी उम्र का इन्तजार जरूरी था; क्योंकि वे अपने बेटे को मदद से एक नाबालिक बच्ची पर दबाव डालने के लिए दोषी नहीं बनना चाहती थीं। इन दो वर्षों के बिलम्ब की बात से पालिन उद्विग्न हो उठी किन्तु वह अपनी चाची की ईमानदारी से बहुत प्रभावित हुई। एक तारीख निश्चित हो गयी, लजारे तथा पालिन तब तक धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा कर सकते थे और इस अवधि में अपनी भावी सम्पत्ति की पहली किश्त इकट्ठा कर सकते थे। इस प्रकार रुपये की समस्या उत्साह पूर्वक हल कर ली गयी।

"दराज से रुपया निकाल लो, चाची, पालिन कहने लगी। उनकी जरूरत के मुताबिक जितना चाहो, उतना रुपया निकाल लो। वस्तुतः यह जितना मेरा है अब उतना ही उसका भी है।"

श्रीमती शैन्ते ने प्रतिवाद किया—"नहीं-नहीं हम अपनी जरूरत से एक दमड़ी भी ज्यादा नहीं निकालेगें—देखो, तुम्हें फिकर करने की ज़रूरत नहीं है। ऐसा न हो कि मेरा वास्तविक अधिकार समाप्त हो जाये। इस समय तुम लोगों को दस हजार फ्रैंक की जरूरत है; मैं दस हजार फ्रैंक निकाल लूँगी और बाकी को फिर उसी तरह सँभाल कर बन्द कर दूँगी। यह बहुत पाक़ अमानत है!"

लजारे बोला—"दस हजार फ्रैंक से निश्चय ही मेरा काम पूरा हो जायगा। बड़े-से-बड़े खर्चे खत्म हो चुके हैं और अब हिम्मत हारना बहुत बड़ा जुर्म होगा। तुम देखोगी, तुम देखोगी...और तुम, मेरी प्राण, अपने विवाह के दिन मैं तुम्हें राजरानी की भाँति सोने के वस्त्रों से सुसज्जित करना चाहता हूँ!"

इस तरह पूरा एक साल बीत गया। फैक्ट्री अब चालू हो गयी थी और इससे सम्बन्धित सारी चिन्तायें प्रायः दूर हो गयी थीं। प्रायः पर्याप्त कठिनाई के साथ उपकरण बैठा देने के पश्चात् प्रारम्भिक परिणाम बहुत आशा जनक प्रतीत हो रहे थे। निश्चय ही मुनाफा औसत दर्जे का था। लेकिन प्रयोग सफल हो जाने पर और पूरे उत्साह तथा शक्ति के साथ काम करने पर विशाल मात्रा में उत्पादन होने की पूरी आशा थी। शीघ्र ही वे विपुल सम्पत्ति के स्वामी बनने के स्वप्न देखने लगे। फैक्ट्री एक जँभाई लेनेवाली दरार बन गयी और वे लोग खुले हाथ उसमें रुपया झोंकने लगे। हरएक नयी कुर्बानी उनकी ख़ब्ती दिलेरी को और ज्यादा बढ़ा दिया करती थी।

पहले श्रीमती शैन्ते पालिन को बताए बिना अपने लिखने के डेस्क के दराज से एक भी रुपया नहीं निकालती थी—"बिटिया, शनिवार को कुछ बिलों का भुगतान करना है, तुम्हें तीन हजार फ्रैंक की जरुरत है क्या तुम मेरे साथ ऊपर चल कर यह बता दोगी कि हमें कौन सी सिक्योरिटी बेचनी चाहिए?"

"लेकिन तुम अपने आप ही यह फैसला नहीं कर सकती !" पालिन ने उत्तर दिया।

"कभी नहीं, तुम जानती हो कि मैं तुम्हारी राय के बिना कोई भी काम नहीं करती। रुपया तो सब तुम्हारा ही है !"

आगे चलकर श्रीमती शैन्ते के वसूल में ढिलाई आने लगी। एक दिन शाम को लजारे ने अपनी माँ से, पालिन से छिपाए गए, पाँच हजार फ्रैंक के एक कर्ज की चर्चा की। इस रकम से ताँबे की नलियाँ मँगाई गयीं थी; लेकिन उनका इस्तेमाल नही हुआ था। उसकी माँ उस वक्त पालिन के साथ अपनी डेस्क के पास ही थी। अपने बेटे की मुसीबत सुनकर वह फिर वापस लौटी और इस वादे के साथ कि पहला ही मुनाफा आ जाने पर वह अदा कर देगी, पांच हजार फ्रैंक निकाल लायी। लेकिन उस दिन से लापरवाही खुले रूप में सामने आ गयी। पालिन को सूचित किए बिना रुपया निकाल लेना उसके स्वाभाव का एक अँग बन गया। इतनी उम्र में एक लड़की की इच्छाओं के अनुसार चलना उसे बहुत बेहूदा मालुम होता था। उसका रुपया वापस कर दिया जायगा और अगर यह सिर्फ उसका ही है तो भी इसमें कोई तर्क नहीं है कि क्यों उसको इजाजत के बिना वे कोई काम नहीं कर सकते।

पालिन को भी इससे राहत मिली, क्योंकि अपने उदार स्वभाव के बावजूद सारी पूछ-ताछ उसे बहुत भद्दी मालुम होती थी। उसकी ऊँची समझ उसे चिन्तित होने से रोकती थी किन्तु अपनी माँ के उत्तराधिकार रुप में प्राप्त मितव्यपिता उसके भीतर ही भीतर विद्रोह करती रहती थी।

बदकिस्मती से उस साल दवाइने दिवालिया घोषित कर दिया गया। यह मुसीबत पहले से ही मालूम थी, फिर भी शैन्ते परिवार के लिए बहुत करारी चोट साबित हुई। अब उन्हें अपनी तीन हजार फ्रैंक की आमदनी पर ही गुजर करना था। दूसरी ओर बहुत से बिलों का भुगतान बाकी था। इस तरह एक पखवारा बीतने के पहले ही श्रीमती शैन्ते को पालिन के रुपयों में से पन्द्रह हजार फ्रैंक ऋण के रुप में लेने

पड़े, क्योंकि वर्शमाउन्ट का कसाई अपना बिल लिए सिर पर सवार था और अब उसे टाला नहीं जा सकता था। इसी तरह एक लाण्ड्री व्वाइलर को सौ फ्रैंक देना था। दस फ्रैंक से कम आलू वाले का और पन्द्रह फ्रैंक मछलीवाले का बाकी था। थोड़े से रुपयों से इधर अपनी गृहस्थी और उधर लजारे की फैक्ट्री का खर्च चलाते-चलाते वे आजिज़ आ चुकी थीं। हालत यहाँ तक पहुँच गयी कि उन्हें अपने कर्ज के गड्ढे को भरने के दारुण प्रयत्न में अब गृहस्थी के खर्चों के लिए ताँबा उधार लेने को मजबूर होना पड़ता था। खास तौर से महीने के आखिर में वे न जाने कहाँ गायब हो जातीं और अक्सर फौरन् ही जेब में हाथ डाले हुए आती और बिलों के भुगतान के लिए एक-एक कर खुदरा पैसे बाहर निकालने लगतीं। उन्हें लिखने की मेज के दराज पर निर्भर रहने के लिए विवश हो जाना पड़ा था, यह उन की आदत बन गयी थी और अब वे उसकी हमेशा की शिकार बन गयी थीं; और फिर भी जब उनकी प्रेतबाधा उन्हें डेस्क के पास खींच ले जाती तो उसे खोलते समय जरा सी भी आवाज होने पर उनका माथा ठनक जाता था। डेस्क कितना भद्दा और पुराना था; यह सोचकर कि वे कभी भी एक बढ़िया सी सन्दूक नहीं खरीद सकीं; उन्हें बार-बार ग्लानि होने लगती थी। वह लिखने का डेस्क जो कि किसी वक्त रुपये से भरा-पुरा होने पर घर भर की खुशी का केन्द्र था, वही अब उन्हें बहुत कष्टकर मालुम होता था। यह उस सन्दूक की तरह बन गया था जिसमें इंसानियत की तमाम बुराइयां सिमट आयी थीं और उसके सभी छेदों से विपदायें मुँह खोल कर झांकती हुई सी प्रतीत होती थी।

जाड़ा आने पर लजारे की हिम्मत पस्त हो गयी। एक बार फिर उसका जोश ठन्डा पड़ गया। फैक्ट्री के लिए चिन्तित रहने के अलावा उसे कोई काम ही नहीं सूझता था। नवम्बर में उसे एक नये अर्थसंकट का सामना करना पड़ा। और चीजों को उसने कामयाबी के साथ निभा लिया था लेकिन इससे वह एकदम हताश हो गया। हर एक

चीज की नुक्ताचीनी करते हुए विज्ञान की वह कटु भर्त्सना करने लगा। उसकी योजना मूढ़तापूर्ण सिद्ध हुई थी। उसके गुरु, महान् हर्बलिन ने फैक्ट्री का निरीक्षण करने के बाद बताया कि उसकी छोटी-सी प्रयोगशाला के अनुपात में उपकरण बहुत बड़े पैमाने पर लगाया गया है। संक्षेप में, यह मालुम हुआ कि प्रयोग व्यर्थ सिद्ध हुआ था और सचाई यह थी कि विभिन्न प्रकार के सत्व उतारने के लिए जिस ठन्डक और निम्न तापक्रम की आवश्यकता थी, उसे प्राप्त करने का तरीका नहीं मालुम किया जा सका था। निश्चय ही लजारे को आल्गे से कुछ मात्रा में पोटेसियम ब्रोमाइड निकालने में सफलता मिली थी किन्तु चूँकि वह चार या पाँच और दूसरे सत्व निकालने का प्रबन्ध नहीं कर सका था, इसलिए सारी प्रक्रिया चौपट हो गयी थी। ग्लानि और पश्चाताप के कारण वह बीमार पड़ गया और अपने को उसे पराजित घोषित कर देना पड़ा। एक दिन शाम को जब श्रीमती शैन्ते और पालिन ने उससे खामोश रहने और एक बार फिर से कोशिश करने का अनुरोध किया तो एक क्षोभपूर्ण दृश्य उपस्थित हो गया। गाली-गलौज रोने-धोने और फटफट दरवाजे पीटने तक की भी नौबत आ गयी।

अगले दिन भोजन के समय लजारे अपने साथ एक कागज ले आया। उसमें आंकड़ों के विवरण दिये गये थे। पालिन के एक सौ अस्सी हजार फ्रैंक में से करीब सौ हजार फूँके जा चुके थे। अब आगे बढ़ने का क्या तुक था? सब कुछ इसी तरह बर्बाद हो जायगा। लजारे एक बार पुनः भीषण रूप से आतंकित हो उठा। इसके बावजूद, उसकी माँ ने इस समय उसकी तरफदारी की। वह कभी भी उसके खिलाफ नहीं जाती थी। वह उसे इस हद तक प्यार करती थी कि उसकी बुराइयों को भी अनदेखा कर देती थी। सिर्फ पालिन ने बहस करते रहने की कोशिश की। सौ हजार फ्रैंक का आंकड़ा सुनकर वह स्तम्भित हो उठी थी। क्या? बात यहाँ तक पहुँच गयी? वह मेरी पूँजी का आधे से ज्यादा हो चुका है? अब अगर वह अपना धन्धा बन्द कर देता

है तो सौ हजार फ्रैंक मिट्टी में मिल जायेंगे ? लेकिन उसकी सारी बातें अनसुनी कर दी गयीं। पारस्परिक दोषारोपण की नौबत न आ सके, इस भय से वह वहाँ से भाग खड़ी हुई और अपने कमरे में जाकर चुपचाप चारपाई पर लेट गयी।

उसके चले जाने के बाद और लोग मेज के चारों ओर खामोशी के साथ बैठे रहे।

"निश्चय ही लड़की कृपण स्वभाव की है और यह एक भयंकर दोष है !" अन्ततः श्रीमती शैन्ते बोलीं—"मैं नहीं चाहती कि काम और फिकर के पीछे लजारे अपनी जान की बाजी लगा दे।"

"मुझे तो मालुम ही नहीं था कि यह इतनी बड़ी रकम है !" शैन्ते ने हिचकिचाते हुये कहा—"सौ हज़ार फ्रैंक ! हाय राम, अब क्या होगा।"

"उँह, इसकी क्या परवाह है ? उसके हज़ार फ्रैंक लौटा दिये जायेंगे," श्रीमती शैन्ते ने हस्तक्षेप किया—"अगर हमारा लड़का उससे शादी कर लेता है, तो उसमें सौ हज़ार फ्रैंक कमाने की पूरी क्षमता है !"

अविलम्ब व्यवसाय समाप्त कर देने का निश्चय कर लिया गया। बाउटिग्नी ने स्थिति का निराशापूर्ण लेखा उपस्थित कर लजारे को संत्रस्त कर दिया था। कर्ज की रकम करीब बीस हजार फ्रैंक तक पहुँच गयी थी। बाउटिग्नी ने यह देखकर कि उसके हिस्सेदार ने अपना हाथ बटोर लेने का इरादा किया है, यह हवा फैलायी कि मैं अल्जीरिया में अपना कारबार जमाने जा रहा हूँ। इसके बाद वह फैक्ट्री खरीद लेने के लिए राजी हो गया; किन्तु उसने ऐसा करने में इतनी आना-कानी दिखायी, इस तरह के पेचीदे लेखे पेश किए कि आखिर में उसे यह आधार मिल गया कि इमारत और उपकरण बीस हज़ार फ्रैंक के कर्ज के बदले में ले लिए जायेंगे। बिल्कुल अन्त में लजारे उससे पाँच हजार फ्रैंक का एक रुक्का लिखवा लेने में कामयाब हो

सका। यह चौमाही किश्तों में अदा किया जाने वाला था। इसके तुरन्त बाद ही, बाउटिग्नी ने उपकरण के तांबे को बेंच दिया और पूरी इमारत का दुबारा हिसाब किताब बैठाकर वहाँ से बड़े पैमाने पर सोडा के उत्पादन का कार्य आरम्भ कर दिया।

लजारे जब पाँच हजार फ्रैंक का रुक्का लेकर आया तो श्रीमती शैन्ते उसे देखते ही निहाल हो गयीं। वे पालिन को लेकर ऊपर गयीं और उसे स्वयं अपने हाथ से दराज में रखने का आदेश देती हुई बोलीं—"देखो, पाँच हजार हमें वापस मिल गए हैं, मेरी लाडली, ये तुम्हारे हैं, इन्हें रखो। मेरा लड़का तमाम मुसीबतों के बावजूद इनमें से एक भी फ्रैंक पर हाथ नहीं लगा सकता है।"

थोड़ी देर से अपनी मरियल कुर्सी पर पड़ा हुआ शैन्ते चिन्ता से परेशान हो रहा था। अगर्चे अपनी पत्नी के दिये हुए कागजातों पर दस्तखत करने से वह इन्कार नहीं कर सका, फिर भी वह जिस ढंग से अपने पाल्य के रुपयों का प्रबन्ध कर रही थी, उससे उसके मन में बहुत व्यग्रता उत्पन्न हो गयी। उस सौ हजार फ्रैंक के बोझ को वह कभी भी अपने सिर से उतार नहीं सकता। जब लेखा पेश करने का वक्त आ गया तब भला इतना बड़ा घाटा कैसे पूरा किया जा सकेगा? सबसे बड़ी मुसीबत तो यह थी की सहायक अभिभावक उस सैकार्ड ने जिसके विचित्र सिद्धान्तों की पेरिस में उन दिनों बड़ी चर्चा थी, करीब आठ साल बाद पालिन को याद किया था। उसने पालिन के बारे में खबर करने के लिए लिखा था और यहाँ तक कि शेर्बरी के तिजारती सफ़र के दौरान में बोनीविले में मुकाम करने का भी इरादा जाहिर किया था। अगर वह स्थिति का लेखा की माँग करे, क्योंकि इसका उसे अधिकार है, तो वे उससे क्या कहेंगे? इतनी लम्बी अवधि की उदासीनता के बाद आज सचेत होने पर उसे बहुत घबराहट महसूस होने लगी।

शैन्ते ने जब इस विषय की चर्चा अपनी पत्नी से की तो वह चिन्तित होने की अपेक्षा किसी छल का सहारा ढूँढ़ने लगी। एक क्षण में ही करीब-करीब उसने सचाई का पता लगा लिया। उसने अनुमान किया कि सैकार्ड अपने लाखों रुपयों का वारा-न्यारा कर चुका है और अब पास में एक कौड़ी भी न होने पर पालिन के रुपयों पर हाथ साफ करना चाहता है। उसे उम्मीद होगी कि वह इसका दस गुना पैदा कर लेगा। इसके बाद वह विस्मयपूर्वक यह अनुमान करने लगी कि कदाचित पालिन ने ही अपने सहायक अभिभावक को लिखकर बदला लेने की कोशिश की है। यह बात सुनकर उसका पति भी हकबका उठा।

"बहरहाल, उनके सम्बन्ध में मैं अपहरण के आरोप की चिन्ता नहीं करती?" वह बोली—"यह सच है कि लड़की अठारह साल की नहीं है, लेकिन मुझे तुरन्त उसकी शादी लजारे के साथ कर देनी है। विवाहित स्त्री कानूनी तौर पर निर्मुक्त हो जाती है।"

"इसके बारे में तुम्हें पूरा यकीन है?" शैन्ते ने पूछा।

"बिल्कुल! मैंने आज ही सुबह संहिता में इसे पढ़ा है।"

श्रीमती शैन्ते इस समय संहिता का अध्ययन कर रही थीं। अपने आखिरी बचे-खुचे सन्देह के संघर्ष के साथ-साथ वे वहाँ बचाव की खोज कर रही थी; किन्तु कानूनी वाक्छल की सम्पूर्ण छद्म प्रक्रिया के साथ वे सम्मोहित-सी हो उठी थीं। क्योंकि इतने अधिक रुपयों के लोभ से क्रमशः उनकी ईमानदारी ध्वस्त हो चली थी।

किसी भी हालत में श्रीमती शैन्ते शादी करने का निश्चय नहीं कर सकी। आर्थिक संकट के बाद पालिन सभी चीजों के साथ जल्दबाजी करना चाहेगी। उसके अठारह साल पूरे होने के लिए छः महीनों का इन्तजार क्यों? लजारे पर पहले अपने लिये काम खोजने का दबाव डाले बिना शादी कर देना बेहतर होगा। श्रीमती शैन्ते ने इसके बारे में अपनी भतीजी से चर्चा की। अपनी झिझक की वजह से वह इस पर यकीन नहीं कर सकी। उन्होंने बन्द दरवाजों के पीछे धीमी आवाज़ में

पालिन को आश्वस्त किया कि लजारे की एक गुप्त व्यथा है। वह बहुत भावुक है, तुम्हारे लिए सम्पत्ति अर्जित किए बिना तुम्हारे साथ विवाह करने से वह घृणा करता है। भावना के ऐसे अद्‌भुत माधुर्य को समझने में असमर्थ पालिन इन बातों को चकित होकर सुनती रही। वह चाहे कितनी ही वैभव शालिनी हो, किन्तु लजारे से ही विवाह करेगी, क्यों कि वह उसे प्यार करती है। फिर भी, उन्हें कब तक प्रतीक्षा करनी होगी ? हो सकता है कि हमेशा के लिए। किन्तु श्रीमती शैन्ते ने तीव्र विरोध किया। पालिन को सम्मान के इस अतिशयोक्तिपूर्ण भाव पर विजय प्राप्त करनी होगी। कोई भी चीज जल्दबाजी में नहीं की जायगी, श्रीमती शैन्ते ने पालिन को कुछ भी न बोलने की सलाह दी। धैर्यपूर्ण मौन के साथ प्रतीक्षा करना ही उसके लिए श्रेयस्कर था।

शैन्ते जब भी सैकार्ड के भय से संत्रस्त होता, अपनी पत्नी से कहता—"तुम इन बच्चों की शादी क्यों नहीं हो जाने देती, जब कि इससे सभी चीजें सुलझ जाने वाली हैं ?"

"कोई जल्दी नहीं है," वह जवाब देती। "खतरा बिल्कुल करीब नहीं है।"

"लेकिन चूँकि किसी न किसी दिन उनकी शादी होनी ही है... मेरा ख्याल है कि तुमने अपना इरादा नहीं बदला है ? ऐसा करना उनकी मौत को बुलावा देना होगा।"

"उफ्, उनकी मौत !—जब तक कोई चीज हो नहीं जाती, उसे छोड़ा नहीं जा सकता। फिर, आखिकार वे अपने लिए पूरी तरह से आज़ाद हैं। हमें देखना चाहिये कि वे इसके लिए अब भी उसी तरह उत्सुक हैं, अथवा नहीं।"

कठोर शीत ऋतु के कारण घर में ही बन्द रहने से पालिन तथा लजारे पुनः अपने पुराने पारस्परिक जीवन के अनुसार आगे बढ़ने लगे। पहले सप्ताह में लजारे प्रत्येक वस्तु के प्रति इतना उदास, इतना आत्म-लीन और खिन्न दिखाई पड़ता कि पालिन अथक दयालुता के साथ उसकी एक

रोगी की भाँति देखभाल करती रहती। इस ढपोंग के लिए उसे एक खास तौर का तरस आता था। दृढ़ता का अभाव और उसके साहस का विशुद्ध,स्नायविक स्वभाव ही उसकी सारी विफलता का कारण था। धीरे-धीरे मातृत्व के अधिकार के साथ वह उसकी भर्त्सना भी करने लगी। प्रारम्भ में लजारे ने उत्तेजित होकर घोषणा की कि वह खेतिहर बनेगा। जल्दी ही धनवान् बना देने वाली वह अगणित योजनायें सुना ले गया। उसने प्रतिज्ञा की कि मैं जो रोटी तोड़ता हूँ, उसके लिए बहुत लज्जित हूँ और अब एक घन्टा भी अपने परिवार के व्यय पर जीवित नहीं रहूँगा। दिन बीतते गए और वह अपनी योजनाओं का कार्यान्वयन स्थगित करता रहा। हर सुबह वह अपना निर्णय बदलता रहता। इसके बाद पालिन अपनी चाची की झूठी बातों से चकित होकर उससे कहती कि तुम्हें कोई भी इस तरह उद्विग्न नहीं करना चाहता है। तुम बसंत के मौसम में काम पा सकते हो, कोई न कोई काम तत्काल ही पा सकते हो, लेकिन तब तक तुम्हें विश्राम कर लेना चाहिए। पहले महीने के अन्त तक पालिन ने लजारे को मुट्ठी में कर लिया। वह एक निरुद्देश्य आलस्य का अथवा उस भाव का, जिसे वह विनोदपूर्वक 'जीने की थकान' कहता था, पूर्णरूप से दास बन गया।

दिन प्रति दिन पालिन को लजारे के भीतर कुछ ऐसे अज्ञात एवं अवरोधक तत्व दिखाई पड़ते जिनसे उसे बहुत धक्का पहुँचता। लजारे प्रत्येक वस्तु का उपहास करता, बहुत तीखे स्वरों में शून्यवाद का समर्थन करता, इससे पालिन की यही इच्छा होती कि उसके पुआल की लपटों जैसे रोषपूर्ण आवेश पुनः वापस लौट आते तो बहुत अच्छा होता। ऐसा प्रतीत होता कि शीत ऋतु की खामोशी में बोनीविले के इस दूरस्त गाँव में रहते हुए लजारे को पेरिस के अपने पुराने सम्बन्धों की बहुत याद आती। अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों का, अपने सहपाठियों के साथ हुए वाद विवादों का वह सहसा बार-बार स्मरण करता। यह बात साफ थी कि वह निराशावाद से बहुत प्रभावित था, किन्तु शॉपेनहॉर की बौद्धिक

विलासितापूर्ण तथा निराशा मूलक कविता की प्रेरणा के अतिरिक्त अधिकतर उसके भीतर अपरिपक्व निराशावाद के अवशेष ही मौजूद थे। पालिन को यह अच्छी तरह मालुम हो गया कि जीवन में मिलने वाली पराजय ही उसकी मानवता के प्रति उदासीनता की जड़ थी। फैक्ट्री की भीषण विफलता ने उसकी सारी दुनिया को तहस-नहस कर दिया था। किन्तु इसके कारणों में गहराई तक बैठने में वह असमर्थ थी। लजारे जब प्रगति की नकारात्मकता और विज्ञान की अन्तिम व्यर्थता की अपनी पुरानी स्थापनाओं की चर्चा करता तो वह तीक्ष्णता पूर्वक उनका प्रतिवाद करती। क्या जाहिल बाऊटिग्नी व्यापारिक सौडे से ही चाँदी नहीं काट रहा था? इसलिए जब दुश्चिकित्सा की विजय घोषित हो चुकी थी तो व्यर्थ में बेहतरी की तलाश और नये नियमों की खोज की भला क्या उपयोगिता थी? लजारे ओठ भींचता हुआ फीकी मुस्कुराहट के साथ कहता कि विज्ञान वास्तव में तभी उपयोगी सिद्ध होगा अगर वह किसी दिन किसी विशाल कारतूस से सारी दुनिया को उड़ा देने का साधन प्रस्तुत कर दे। हर बार वह इसी विषय के साथ अपनी बात चलाता और इसी को अपना निष्कर्ष घोषित करता। इस के बाद वह आगे चलकर फीके व्यंग के साथ संसार के ऊपर शासन करने वाली नियमित कुटिल चालों और मानवता की जीवित रहने की अभिलाषा की अन्ध मूढ़ता का वर्णन करता। जीवन पीड़ा के अतिरिक्त और कुछ नहीं है; और अन्त में वह भारतीय फकीरों की इन शिक्षाओं का उल्लेख करता कि केवल विनाश ही मुक्ति प्रदान कर सकता है। उसकी कर्म के प्रति घृणा की बातें सुन कर पालिन चकित रह जाती। वह भविष्य वाणी करता कि अन्ततः सभी राष्ट्रों को आत्म हत्या कर लेनी होगी। अगली पीढ़ियाँ जब बुद्धिमत्ता पूर्वक यह समझेंगी कि किस प्रकार एक अदृश्य शक्ति उनके साथ क्रूर और कुटिल खिलवाड़ कर रही है तो उन्हें सामूहिक रूप से अन्धकार की ओर बढ़ने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं मिलेगा। पालिन इधर-उधर दलीलों की तलाश करती हुई

क्रुद्ध हो उठती। लजारे उसके सारे तर्कों का खण्डन कर देता, क्योंकि इन विषयों से वह अपरिचित थी और जैसा कि लजारे का कहना था, तत्व ज्ञान उसकी समझ के बाहर की वस्तु थी। लेकिन वह हार मानने के लिए तैयार न होती और जिस समय वह शॉपेनहार के कुछ उद्धरण सुनाने लगता तो वह उसके शॉपेनहार को शैतान का बच्चा कहकर डाँटने लगती। *नारी के सम्बन्ध में इतनी भयानक बातें लिखने* वाला भला और कोई आदमी हो सकता है! पशुओं के प्रति यदि उसने प्रेम न व्यक्त किया होता तो वह उसका गला ही घोंट देती। अपने शारीरिक स्वास्थ्य और आज के कर्मों तथा कल की आशाओं का आनन्द लेने वाले दृष्टिकोण के साथ वह लजारे को खामोश कर देती। उसकी खिलखिलाहट और यौवन की उद्दाम स्फूर्ति तथा शान्ति के सामने वह अपना सिर नीचा कर लेता।

"मेरी बात सुनो," वह कहती—"यह सब तुम्हारी बेहूदी बकवास है। हम जब बूढ़े हो जायँगे तभी मरने की चिन्ता करेंगे!"

मृत्यु की बात चलने पर, जिसका कि पालिन इतने हल्के ढंग से खण्डन करती, लजारे प्रकट रूप से गम्भीर हो कर अपनी आँखें दूसरी ओर फेर लेता। यह भुन भुनाते हुये कि सभी-युगों में मनुष्यों की मृत्यु हुई है, वह प्रायः किसी दूसरे विषय पर बात-चीत करने लगता।

अन्ततोगत्वा पालिन ने अनुभव किया कि लजारे मृत्यु से भयंकर रूप से भयभीत है। उसे स्मरण हुआ कि किस प्रकार बहुत समय पहले वह नक्षत्रों को देखकर डर से चिल्लाने लगता था। इन दिनों वह देखती कि कुछ शब्दों को सुन कर वह एकदम पीला पड़ जाता और धीरे-धीरे इस तरह खामोश हो जाता जैसे कि कोई लज्जा-जनक रोग छिपा रहा हो। एक निराशावादी में जो कि नक्षत्रों को जीवन की सार्वभौम प्रचंड अग्नि के मध्य ज्योति-शिखाओं के रूप में प्रज्वलित घोषित करता, विनाश के प्रति ऐसा भय देख कर उसे बहुत अचरज होता था। उसका रोग बहुत पुराना था और उसकी गम्भीरता को मापना उसके लिये

दुष्कर था। जीवन की प्रौढ़ता के साथ लजारे मृत्यु के विचार से संत्रस्त हो गया था। बीसवें साल तक, रात में जरा-सी सर्दी लगने पर भी वह बिस्तर पकड़ लेता था।

इन दिनों 'नापिमधिकम्' की भावना से पूर्ण रूप से आक्रान्त हुये बिना वह कभी भी अपना सिर तकिये पर नहीं रख सकता था। अनिद्रा का रोग उसके पीछे पड़ गया। उसकी कल्पना के सामने प्राण घातक अनिवार्यता धुँधले प्रतीक के रूप में उद्‌घाटित हो उठती और उससे जान बचाना उसके लिये मुश्किल हो जाता। थकान से अभिभूत होकर वह कभी-कभी चिहुँक कर जाग पड़ता और देर तक ऊपर की ओर निहारता रहता। भय से उसकी आँखें खुली की खुली रह जातीं। अपने हाथ बाँध कर वह अँधेरे में भुनभुनाने लगता, 'मेरे भगवान्, मेरे भगवान्!' उसके हृदय की गति तीव्र हो जाती वह अपने को मृत्यु के बहुत निकट समझता और जब तक अपनी लालटेन जला कर पूरी तरह से जाग न जाता, तब तक उसे तनिक भी शान्ति न मिल पाती। आगे चलकर अपने भय के प्रति उसे लज्जा का अनुभव होता। कैसी दयनीय मूर्खता है उस ईश्वर की प्रार्थना करना जिसके प्रति मेरे मन में लेश मात्र भी विश्वास नहीं है। जब कि संसार का विध्वंस हो रहा है, सहायता के लिये चिल्लाना मानवता की परम्परागत दुर्बलता है। किन्तु संकट की घड़ियाँ कम अथवा अधिक हर शाम को सामने उपस्थित हो जातीं। दिन में भी किसी पुस्तक के पढ़ने अथवा कोई दृश्य देखने पर मन में उभरने वाले किसी आकस्मिक विचार अथवा वाक्य से प्रत्येक वस्तु पुनरूज्जीवित-सी हो उठती। एक दिन पालिन अपने चाचा को एक समाचार पत्र पढ़ कर सुना रही थी। किसी किस्सा सुनाने वाले ने यह आश्चर्य पूर्ण कल्पना की थी कि बीसवीं सदी में आसमान में तमाम गुब्बारे उड़ेंगे और उनमें बैठकर लोग एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप की यात्रा करेंगे। यह सुनते ही लजारे भावाभिभूत होकर उस कमरे से बाहर चला गया। मैं ऐसी दुनिया नहीं देख

सकूँगा। मेरे दार्शनिक व्यर्थ में ही उपदेश देते हैं कि जीवन का कोई भी स्फुलिंग विनष्ट नही होगा।

लजारे की अन्तरात्मा विनाश की भावना के प्रति विद्रोह करती। मानसिक द्वन्दों के फलस्वरूप उसकी मुखाकृति शीघ्र ही धूमिल पड़ गई। वह अपनी आन्तरिक पीड़ा और मनोवेदना को छिपाने की चेष्ठा करता। ऐसी स्थिति में उसे देखकर पालिन का हृदय सहानुभूति से आलोड़ित हो उठता। वह उसके प्रति सदय होकर उसे सुखी देखना चाहती थी।

लजारे और पालिन के दिन ऊपर के बड़े कमरे में ही बीतते, नरकुल, कुप्पियाँ और बाजे उसमें इधर-उधर बिखरे पड़े थे। लजारे के मन में उनसे पीछा छुड़ाने का साहस नहीं रह गया था। दिन भर की चहल-पहल में वे दुनियाँ को बिल्कुल भूले रहते थे। प्रायः सुबह से लेकर रात तक दिसम्बर की बरसात की बौछारें छत पर पड़ती रहतीं। पछुवा हवा के तेज झोंके आते रहते। हफ्तों बदली छाई रहती और धूप का दर्शन मुहाल हो जाता। कुछ दिनों तक लजारे मनमारे इधर-उधर घूमता रहा।

उसने झाड़-पोछ कर अपना पियानो निकाल लिया। एक सप्ताह बाद संगीत के प्रति उसका अनुराग फिर से ताजा हो गया। उसकी अस्त-व्यस्तता का मौलिक स्रोत वस्तुतः इसी में निहित था। उसके भीतर के कलाकार की निराशा ही वैज्ञानिक तथा औद्योगिक के रूप में उसकी विफलता के लिये जिम्मेदार थी। दूसरे ही दिन से अपना कागद्-पत्र समेट कर वह पियानो ढुनढुनाने में व्यस्त हो गया। पुराना पड़ जाने के कारण पियानो की आवाज मद्धिम पड़ गयी थी। इस कमी को पूरा करने के लिये वह स्वयं जोर-जोर से गाना शुरू कर देता। इस सीमा तक कोई भी कार्य उसे कभी भी तल्लीन नहीं कर सका था। खाना पीना भूल कर वह घण्टों बैठा रहता। उसके शोर गुल से पालिन के कान दुखने लगते। फिर भी वह उसके पास बैठी रहती, उसके गीत सुनती रहती और उसके लिये स्वर लिपियों की साफ-साफ प्रतिलिपि तैयार करती रहती।

अन्ततोगत्वा लजारे पुनः अधिक शान्त रहने लगा। अपनी मेज के पास बैठ कर वह सिगरेट पीता रहता। पालिन कभी-कभी उसे कोई गीत सुनाने लगती। यही वह मोड़ था जहाँ आ जाने पर उनकी घनिष्ठता खतरनाक साबित होने लगी। लजारे को अब न तो फैक्ट्री की चिन्ता करनी थी और न उसके काम में अपनी देह ही खपानी थी। बन्द कमरे में एक साथ बैठने पर पालिन के प्रति उसकी भावनायें तीव्रतर हो उठीं। वह कितनी खुश मिजाज, कितनी उदार और कितनी स्वार्थ-हीन थी। पहले से वह उसके प्रति केवल कृतज्ञता की भावना का अनुभव करता आ रहा था, बचपन से ही उसे अपने भाई की तरह मानता आ रहा था, किन्तु धीरे-धीरे उसके मन में एक शिथिल भावना उत्पन्न होने लगी। उसने अनुभव किया कि जिसे वह अपना छोटा भाई समझता आ रहा था, जिसके साथ इतना हिल-मिल कर खेलता आ रहा था, वह वास्तव में एक स्त्री थी। इसीलिये अब उसके शरीर का तनिक भी स्पर्श होने पर वह सहसा सकुचा जाता था। उसके बहुत करीब जाने की उसे हिम्मत नहीं होती थी। यदि उनके हाथ संयोग वश मिल जाते तो दोनों निर्वाक होकर एक दूसरे की ओर देखते हुये खड़े के खड़े ही रह जाते। इसके बाद उनके सभी अपराह्न एक बेचैनी की हालत में बीतने लगे, ऐसी बेचैनी और अन्यमनस्कता की हालत में जिसमें वे अपने को बहुत थके हुये और एक खोयी हुई प्रसन्नता की अस्पष्ट अभिलाषा से पीड़ित अनुभव करते थे।

कभी-कभी व्यग्रता के इन क्षणों को टालने के लिये पालिन उसे चिढ़ाती हुई कहती—"मैंने तुम से बताया नहीं! मैंने स्वप्न में देखा कि तुम्हारे शॉपेनहार ने स्वर्ग से हमारे विवाह के बारे में सुन लिया, वह रात में हम दोनों की टाँगें खींचने के लिये आया था।"

लजारे ठठा कर हँस पड़ा। उसने अनुभव किया कि वह उसकी अस्थिरता का उपहास कर रही है। फिर भी उसने अपने जिजीविषा के प्रति घृणा को पराजित करनेवाले असीम अनुराग का अनुभव किया।

"मेरे प्रति कुछ उदार बनो," वह धीरे से बोला, "तुम जानती हो कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।"

वह निठुर बनी रही। "सावधान रहना! तुम मुक्ति का निरादर कर रहे हो, अहंकार और आत्म-वंचना के जाल में कूद रहे हो!"

"अब चुप रहो, दुष्ट कहीं की!"

मेज के चारों ओर गोलाई में लजारे पालिन का पीछा करने लगा। वह व्यंगपूर्ण स्वर में निराशावादी दर्शन के कुछ पद गुन-गुनाती हुई भागती रही। लजारे ने दौड़कर उसे पकड़ लिया फिर भी यह साहस नहीं हुआ कि पहले को तरह उसे अपनी बाँहों में कस ले। एक दिन खेल-खेल में पालिन भाग रही थी। लजारे तेजी से उसका पीछा कर रहा था। अचानक पकड़ में आते ही लजारे ने उसे कसकर अपने सीने से लगा लिया। बेतहाशा हँसती हुई वह काँपने लगी।

"ओहो, अब मैंने तुम्हे पकड़ लिया है—बताओ तुम्हारे साथ क्या बर्ताव करूँ?"

उनके चेहरे एक दूसरे का स्पर्श कर रहे थे। पालिन अब भी हँस रही थी लेकिन अचानक उसकी हँसी उसके ओठों पर ही मुर्झा गयी।

"नहीं, नहीं, मुझे जाने दो, अब फिर मुझ से ऐसा कभी नहीं होगा।"

"यह लो, अभी-अभी यह खत मिला है, जरा इसे पढ़ो तो!" शैन्ते ने एक दिन अपनी पत्नी से बहुत परेशान होते हुए कहा।

यह सैकार्ड का दूसरा पत्र था। इस बार उसने धमकी भी दी थी। नवम्बर से ही वह रुपये का हिसाब माँग रहा था। शैन्ते दम्पति की ओर से उसे कपट पूर्ण उत्तर प्राप्त होते रहे। अब उसने इस बात को परिवार-परिषद् के सामने पेश करने की इच्छा व्यक्त की थी। श्रीमती शैन्ते इसे स्वीकार न करते हुये भी चिन्तित हो उठीं।

"दुरात्मा कहीं का!" वह पत्र पढ़ने के बाद भुनभुनाई।

"अब तुम्हें अधिक संकल्प-विकल्प में पड़ने की आवश्यकता नहीं है?" शैन्ते बोला—"लजारे के साथ पालिन का विवाह कर दो। इससे वह वैधानिक रूप से निर्मुक्त हो जायगी!"

किन्तु श्रीमती शैन्ते को यह समाधान प्रतिदिन अधिक अरुचिकर प्रतीत होने लगा, उन्हें अन्देशा होता—कौन कह सकता है कि दोनों बच्चे एक साथ हिल-मिल कर रहेंगे ? प्रेम-विवाह विफल और अशान्तिपूर्ण भी हो सकता है। आगे चलकर उन्हें ऐसी बातें दिखाई दीं जिनसे कि उन्हें सख्त परहेज था।

"नहीं, ऐसा कभी मत कहो। हम दोनों की अपनी मानसिक शान्ति के लिये उनका बलिदान अनुचित होगा अभी कुछ और प्रतीक्षा करने की आवश्यकता है और इसके अलावा अब हमें उनका विवाह करने की क्या आवश्यकता हैं, पिछले महीने पालिन अठारह साल की हो गयी। अब तो हम वैधानिक निस्तार का दावा कर सकते हैं।"

श्रीमती शैन्ते के मन में आत्म-विश्वाश की किरनें फूटने लगीं। अपनी कानून की किताब लाकर वे पति के सामने पढ़ने लगीं।. धारा ४७८ पढ़ने पर उन दोनो के मन को बहुत शान्ति मिली, किन्तु धारा ४८० पढ़कर वे पुनः चिन्तित हो उठे। उसमें लिखा था कि अभिभावकों को पारिवारिक परिषद् द्वारा मनोनीत ट्रस्टी के सामने अपना लेखा जोखा पेश करना चाहिये। यह सच था कि श्रीमती शैन्ते परिषद् के सभी सदस्यों को अपनी उँगली पर नचा सकती थीं। जिसको चाहती उसी को उसके द्वारा नामजद करा सकती थीं; लेकिन सवाल था कि किसे चुना जाय ? कहाँ से कोई वाजिब आदमी मिल सकता है ? समस्या थी उस क्रूर सहायक अभिभावक के स्थान पर अपने पक्ष के ट्रस्टी नियुक्त करने की।

अचानक उनके दिमाग में एक ख्याल आया—"डाक्टर कैजूनोव के बारे में कैसा रहेगा ? वह हमारी समस्याओं से कुछ-कुछ अवगत है। वह इन्कार भी नहीं करेगा ?"

शैन्ते ने भी हामी भरी। किन्तु वह अपनी पत्नी को घूरता रहा, क्योंकि एक विचार से वह संशकित था। आखिरकार उसने उससे

पूछा ही—"तो तुम रुपया वापस कर दोगी, मेरा मतलब कि जो कुछ बाकी बचा है, उसे वापस कर दोगी ?"

श्रीमती शैन्ते ने तत्काल उत्तर दिया। कानून की किताब काँपती उँगलियों से उलटती हुई वे नीचे की ओर निहार रही थीं। कुछ साहस करती हुई बोली—"निश्चय ही मैं रुपया वापस कर दूँगी। यह हमारे हक में अच्छा ही होगा। देख रहे हो कि वे लोग पहले से ही मुझे दोषी ठहरा रहे हैं। किसी के प्रति किसी का विश्वास न रहना बहुत घातक होता है। इस झंझट से मुक्ति पाने के लिये मैं आज रात ही अपने डेस्क से पाँच फ्रैंक निकाल कर दे दूँगी। हर हालत में हमें रुपया तो वापस ही कर देना होगा।"

दूसरे ही दिन डाक्टर कैज़्नोव अपने शनिवार के दौरे पर बोनीविले आया। श्रीमती शैन्ते ने उसे अपनी पूरी दास्तान सुना दी। पारिवारिक-परिषद् से कभी भी बिना पूछे किस प्रकार लजारे के विफल प्रयोग में सारा रुपया डुबा दिया गया, यह उन्होंने ईमानदारी से स्वीकार किया। इसके बाद उन्होंने विवाह की योजना का जिक्र किया और फिर उस कानूनी खतरे का किस्सा सुनाया जिससे कि उनका रोम-रोम सशंकित था।

अपनी ओर से सहायता करने का वचन देने के पूर्व डाक्टर ने पालिन से बात कर लेने पर बल दिया। उसे यह ज्ञात हो चुका था कि किस प्रकार पालिन धीरे-धीरे शोषित और प्रवंचित हो रही है। अब तक उसे आघात न पहुँचने के विचार से वह शान्त था। एक नयी जिम्मेदारी ओढ़ते समय उसकी राय ले लेना आवश्यक था। पालिन के सोने के कमरे में ही यह मामला छेड़ा गया। श्रीमती शैन्ते भी डाक्टर के साथ गयीं। उन्होंने बताया कि पालिन के कानूनी रूप से मुक्त हो जाने पर ही विवाह निर्भर है, क्योंकि लजारे पर जबतक झूठा हिसाब पेश करने का आरोप लगाया जा सकता है, तब तक वह कभी भी शादी करने के लिए राजी नहीं होगा। इसके बाद वे यह कहती हुई बाहर

चली गयीं कि जिसको उन्होंने अपनी प्रिय पुत्री की भांति माना है, उसे कभी भी फुसलाने को कोशिश नहीं कर सकती है। तुरन्त ही पालिन ने डाक्टर कैज़्नोव से पूछा कि मेरे लायक कौन-सी खिदमत है? उसने सभी बातें भुला देने की जिद की। वह किसी से कोई भी दावा नहीं करना चाहती थी, किसी से कुछ माँगना-जांचना नहीं चाहती थी। डाक्टर ने उसके भारी संकटों और आने वाले खतरों की ओर संकेत किया, किन्तु वह इस सम्बन्ध में कुछ भी सुनने के लिए तैयार नहीं थी।

"नहीं,-नहीं, मुझे खेद करने के लिए उत्प्रेरित मत करो। मेरे भीतर कृपणता का एक तन्तु छिप हुआ है। उसे जीत पाना मुझे बहुत कठिन प्रतीत होता है......सब कुछ उन्हें ले लेने दो वे जो कुछ बचा है उसे भी ले लें। मैं केवल इसी में सुखी रहूँगी अगर वे लोग मुझे सदैव स्नेह भाव प्रदान करते रहें।"

'मेरी बात सुनो!' डाक्टर ने पूछा—"क्या तुम अपने भाई के लिये प्रत्येक वस्तु का परित्याग कर रही हो?"

पालिन बिना कुछ उत्तर दिये तमतमा कर रह गयी।

"और आगे चलकर तुम्हारा भाई तुम्हें प्यार न करे तो क्या होगा!"

पालिन सशंक दृष्टि से उसे ताकने लगी। उसकी आंखों में अश्रु प्रवाह उमड़ आया। असीम प्रेम की चिल्लाहट में उसकी सम्पूर्ण आत्मा फूट पड़ी—"नहीं,-नहीं, तुम मुझे इस प्रकार निराश क्यों कर रहे हो?"

इसके बाद डाक्टर कैज़्नोव ने हार मान ली। उसके भीतर उस उदार बालिका का ममतापूर्ण विभ्रम विनष्ट करने का साहस नही था। ऐसा करने से उसके जीवन की उत्फुल्लता के शीघ्र ही शुष्क हो जाने की आशंका थी।

श्रीमती शैन्ते ने पूरी चतुराई और नारी-सुलभ कार्यपटुता से अपना काम सँवार लिया। परिवारिक-परिषद् के सभी सदस्य एक-एक कर उनसे सहमत हो गये। और इस प्रकार नवसेना के सर्जन

कैजनोव को ट्रस्टी के रूप में नामजद कर दिया गया। मजिस्ट्रेट को उसके पक्ष में सबसे अधिक सिफारिशें प्राप्त हुई।

एक पखवारे के बाद हिसाब-किताब के जांच की रस्म सीधे-सादे ढँग से पूरी हो गयी। डाक्टर कैजनोव को भोजन के लिए आमंत्रित किया गया। परिवार के सभी प्राणी एकत्र होकर आपसी बात-चीत करने लगे। लजारे दो दिन के लिए केन गया था। वह वहां के किस्से सुनाने लगा।

"एक नयी खुश खबरी है!" लजारे बोला—"लूसी अचानक अगले हफ्ते में यहाँ आ रही है। मैं उसे बहुत मुश्किल से पहचान पाया। इस समय अपने घर पर ही है। अब तो इतनी सुरुपवान् और मनमोहक बन गयी है कि कुछ कहते ही नहीं बनता है?"

उसकी वाणी से फूटनेवाली भावना की उष्णता से चकित होकर पालिन उसकी ओर निहारती रही।

श्रीमती शैन्ते बीच में ही बोल पड़ी—"लूसी का जिक्र आने पर मुझे एक नयी बात का स्मरण हो आया। सफर के दौरान में मुझे एक औरत मिली थी। वह थिवादेर के परिवार से परिचित थी। मालुम हुआ है कि थिवादेर अपनी बेटी की शादी में सौ हजार फ्रैंक दहेज देने वाला है। अपनी माँ के हजार फ्रैंक के साथ कुछ दो सौ हजार फ्रैंक का दहेज हो जायगा...। इस सम्बन्ध में तुम्हारा क्या ख्याल है? दो सौ हजार फ्रैंक! अब वह धनवान् लड़की हो गयी है।

"ऊँहुँक, उसे इसकी जरुरत नहीं है। वह एक तस्वीर की तरह खूबसूरत है...है न ऐसी बात?"

पालिन की आंखों के सामने अँधेरा सा छा गया और उसके ओठ बदहवासी से काँपने लगे।

❋ ❋ ❋

भोजन का कार्यक्रम समाप्त होते ही श्रीमती शैन्ते रुपये के हिसाब-किताब की बातों पर आ गयीं—हाँ, तो...........जमा पूँजी सत्तर

हजार दो सौ दस फ्रैंक, तीस सैंटिम है.....मैं इसे पालिन के हवाले कर दूँगी।"

वे अपने लिखने के डेस्क के पास गयीं दराज खोलकर उन्होंने पुरानी कैश-बुक बाहर निकाल ली। इसकी पुरानी शकल अब भी ज्यों की त्यों बरकरार थी। कहीं-कहीं कुछ धब्बे जरूर पड़ गये थे।

"नहीं, नहीं" पालिन चिल्ला पड़ी—"चाची, इसे अपने पास ही रखो।"

श्रीमती शैन्ते रोब में आ गयी थीं—"हमने अपना हिसाब समझ लिया है और अब हमें रुपया वापस कर देना चाहिये...यह तुम्हारी ज़ायदाद है। तुम्हें मालूम है कि आज से आठ साल पहले इसे यहाँ रखते हुये मैंने तुमसे क्या कहा था ? हम इसमें से एक दमड़ी भी अपने पास नहीं रखना चाहते हैं।"

उन्होंने प्रतिभूतियाँ बाहर निकाल लीं। पालिन से उन्हें गिनने की ज़िद करने लगीं।

"लेकिन मैं इसे कहाँ रखूँगी ?" इतनी ज्यादा रकम सँभाल पाने के ख्याल से आशंकित होते हुये पालिन ने पूछा।

"इसे अपनी आलमारी में बन्द कर लो" उसकी चाची ने जवाब दिया। तुम अपनी रकम की खुद ही देख-भाल करने के लिये काफी सयानी हो गयी हो। मैं अब पुनः इसकी ओर ताकना भी नहीं चाहती हूँ।"

शैन्ते-दम्पति ने रुपया चुकता कर दिया था। और वे निश्चिन्त एवं आश्वस्त्व हो गये थे। लजारे निश्चिन्तता का अनुभव करता हुआ प्रायः अपने कुत्ते के साथ खेलता रहता था और डाक्टर कैज़ुनोव नये ट्रस्टी के रूप में पालिन को अपनी प्रतिभूतियाँ भुना लेने तथा उन्हें मुनाफे के किसी नये काम में लगाने की सलाह दिया करता था।

[४]

उस शनिवार को, जबकि लूसी दो महीने के लिये श्रीमती शैन्ते के घर आयी, सभी लोग बरामदे में ही एकत्र थे। दिन बीत रहा था। अगस्त की बड़ी तेज गरमी का वह दिन था। सुखद समुद्री वायु चल रही थी। एबे हार्टर वहाँ पहले से ही जमा था। वह शैन्ते के साथ ताश खेलने में लगा था। श्रीमती शैन्ते उनकी बगल में बैठी हुई एक रुमाल पर कसीदाकारी कर रही थीं। और पालिन थोड़ी ही दूर पर पत्थर की एक बेंच के सामने खड़ी थीं। बेंच पर गाँव के चार छोटे-छोटे बच्चे, दो लडके और दो लड़कियाँ, इकट्ठा हो गये थे।

"ओ हो! तुम यहाँ पहले से ही विराजमान हो", श्रीमती शैन्ते चिल्लायीं। मैं अभी-अभी अपना काम समेटकर तुमसे मिलने के लिये चौराहे तक जाने वाली थी।

लूसी ने मुस्कुराते हुये बताया कि बूढ़ा मैलीवोरे उसे हवा की तरह ले आया है। वह बिल्कुल ठीक थी। कपड़े बदलने की कोई जरूरत नहीं थी। श्रीमती शैन्ते यह देखने के लिये कि उसका कमरा किस हालत में है, भीतर चली गयीं। अपनी हैट उसने एक खूँटी पर टाँग दी। सब से मिलने-जुलने के बाद वह उत्सुकता पूर्वक पालिन के पास पहुँची। प्रीतिपूर्वक उसका आलिंगन करती हुई बोलीं :—

"इधर आओ, मेरी ओर निहारो!...अब तो हम दोनों सयानी हो गयी हैं। है न? तुम जानती हो, मैं उन्नीस के ऊपर हूँ। काफ़ी बुजुर्ग हो गयी हूँ..." सहसा चुप होकर वह आगे बोली—"उफ़ बहाना मत करो, मुझे मालूम हुआ है कि अगले महीने में क्या होने जा रहा है।"

पालिन यद्यपि अठारह महीने छोटी थी, फिर भी बड़ी बहन की गरिमा और स्नेहाकुलता के साथ उसने लूसी को अपने गले से लगा

लिया। लजारे के साथ अपने विवाह की भ्रान्ति पर उसके कपोलों पर हल्की-सी लाली दौड़ गयी।

"नहीं, सच, तुम्हें गलत खबर मिली है" उसने उत्तर दिया—"कुछ भी निश्चित नहीं है। हम लोग केवल इस शरद ऋतु में कुछ करने की बात सोच रहे हैं।"

और वास्तव में ही श्रीमती शैन्ते ने एक बार प्रत्यक्ष अनुरोध करने पर अपनी अरुचि के बावजूद शरद ऋतु का जिक्र किया था। यह कहती हुई कि पहले लजारे की जीविका का प्रबन्ध कर लेना है, वह अपने पुराने बहाने पर अड़ गयी थीं।

"ओहो, बिल्कुल ठीक," लूसी ने कहा—"तुम मेरी बिल्कुल सगी सहेली हो। है न? मुझे निमंत्रण तो दोगी, है न? और लजारे कहाँ है? क्या वह कहीं बाहर गया है?"

उसके इन प्रश्नों का उत्तर शैन्ते ने दिया—"अरे लूसी, तुम्हारी उससे मुलाकात नहीं हुई? हम लोग अभी यही चर्चा कर रहे थे कि तुम दोनों साथ ही आओगे। हाँ, वह बेयुक्स में है। उसे सहायक प्रिफेक्ट से मिलना है। लेकिन वह आज रात मे आ जायगा। कुछ देर लग गयी होगी।" इसके बाद अपने खेल की ओर उन्मुख होता हुआ बोला—"एबे, अब मेरी बारी है। तुम्हें मालूम है न? अब हमें संगमूसा मिल जायगा, क्योंकि इस मामले में विभाग अनुदान देने से इन्कार नहीं करेगा।"

यह एक नया धन्धा था जिसमें कि लजारे इन दिनों डूबा हुआ था। पिछली बसन्त ऋतु के ज्वार में, मार्च के महीने में बोनीविले के दो अन्य मकान बह गये थे। पूरा गाँव धीरे-धीरे तबाह होता जा रहा था। ऐसा लगता था कि उचित रूप से बाँध आदि बनाकर यदि सुरक्षा की कारवाई न की गयी तो गाँव के सभी घर समुद्र के पेट में समा जायँगे। नगर प्रमुख के रूप में शैन्ते तबाही से काफी चिन्तित था। पिछले दस वर्षों से वह सहायक प्रिफेक्ट का ध्यान इस ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करता

आ रहा था। लेकिन उसे कोई कामयाबी नहीं हासिल हुई थी। अन्ततोगत्वा पालिन की प्रेरणा से, जिसका सबसे बड़ा उद्देश्य उसे कर्मण्य बनाना था, लजारे ने एक नयी योजना तैयार की थी। वह संगमूसों और बाँधों के द्वारा समुद्र की लहरों से गाँव की रक्षा का स्थायी प्रबन्ध करना चाहता था। आवश्यकता थी केवल रुपयों की---कम-से-कम बारह हजार फ्रैंक की।

इसी बीच पालिन पत्थर की बेंच के पास चली गयी! चारों गन्दे और चिथड़ों में लिपटे हुये बच्चे मुँह बाये हुये उसकी वहाँ प्रतीक्षा कर रहे थे।

"ये कौन हैं?" लूसी ने निकट जाने का साहस न करते हुये पूछा।

"ये मेरे नन्हें-मुन्ने मित्र हैं।" पालिन ने उत्तर दिया।

इन दिनों गाँव भर में उसकी दानशीलता की चर्चा थी। पीड़ितों के प्रति उसके मन में स्वाभाविक प्रेम-भाव विद्यमान था। उनके दुर्भाग्य से वह घृणा नहीं करती थी। यहाँ तक कि लँगड़ी हो जाने वाली मुर्गियों की टाँग में कमटी बाँधने और रात में भूली भटकी बिल्लियों को मट्ठा पिलाने तक के लिये भी वह तत्पर रहती थी। पीड़ित जीवों की ओर निहारने पर उसका उर-अन्तर करुणार्द्र हो उठता था। उनकी पीड़ा दूर करना उसके लिये अनिवार्य बन जाता था। इसी में वह अपने जीवन के सबसे बड़े आनन्द का अनुभव करती थी। गरीब लोग अपने हाथ फैलाये हुये उसके चारों-ओर उसी प्रकार जुट आते थे जैसे कि गौरैयों के झुण्ड किसी अन्नागार की खुली खिड़कियों पर एकत्र हो जाते हैं। बोनीविले के सभी लोग, दुर्भाग्य के मारे और समुद्री ज्वार से सताये थे। मुट्ठी भर मछुवाहे उसे देखने के लिये आया करते थे। लेकिन वह खास तौर से बच्चों को, फटे पैजामे पहने हुये लड़कों और पेट की आग से इधर-उधर भटकने वाली लड़कियों को प्यार करती थी। वह सबको खाने-पहनने के लिये कुछ न कुछ हमेशा देती रहती थी।

चालाक माता-पिता उसकी सहृदयता का लाभ उठाया करते थे। उसकी ज्यादा हमदर्दी उभारने के लिये वे अपने नन्हें से नन्हें और गन्दे से गन्दे बच्चों को उसके पास भेज दिया करते थे।

"देख रही हो !" वह हँसती हुई बोली—"आज मेरे सदाव्रत का दिन है, आज मैं कितनी खुश हूँ। इन बच्चों के साथ खेलने में मुझे कितना आनन्द मिलता है !"

इसके बाद वितरण प्रारम्भ हुआ। मातृवत् अधिकार के साथ उसने उन्हें क्रम से बैठने की आज्ञा दी, पहले उसने दस साल के एक लड़के को अपने पास बुलाया। उसने अपना पैर दिखाया। उसके घुटने पर एक बड़ा-सा घाव हो गया था और उसके पिता ने उस पर कुछ लगा देने के लिये उसे भेजा था। वही, गाँव भर के लोगों को मरहम और दवायें दिया करती थी। लोगों को रोग-मुक्त करने की लगन के परिणाम स्वरूप धीरे-धीरे उसने बहुत सी दवायें इकट्ठा कर ली थीं। बड़ी मुलायमियत से उसने बच्चे के पैर पर पट्टी बाँध दी।

सभी बच्चे उसे धन्यवाद देते हुए अपने-अपने घर चले गये। श्रीमती शैन्ते लूसी का कमरा देखने के बाद वापस लौट आयी थीं। प्रकारान्तर से वे वेरोनिक को झिड़कने लगीं। अपने घर में भिखमंगों का इस तरह आना उन्हें बेहद नापसन्द था। पालिन के रुपये उसके अपने हैं। वह स्वेच्छानुसार उसे उड़ा सकती है, किन्तु इस प्रकार की बुराई को प्रोत्साहन देना उसके लिये अनुचित है। श्रीमती शैन्ते ने पालिन को यह वादा करते हुये सुन लिया था कि वह एक बच्चे को हर शनिवार को पाँच फ्रैंक दिया करेगी। इस तरह महीने में बीस फ्रैंक हुये। इस प्रकार तो सभी रुपया स्वाहा हो जायगा।

"सुनती हो, मैं उस चोर को दोबारा नहीं देखना चाहती हूँ !" उन्होंने पालिन से कहा—"तुम अपनी सम्पत्ति की अब स्वयं ही स्वामिनी हो सकती, हो लेकिन मैं तुम्हें अपने को इस तरह मूर्खतापूर्वक बर्बाद करने की आज्ञा नहीं दे सकती हूँ। मेरे ऊपर इसका नैतिक उत्तरदायित्व है।

इतने में वेरोनिक रसोई से चिल्लाती हुई निकली—"यह कसाई आया है। अपना हिसाब माँग रहा है।"

श्रीमती शैन्ते क्षण भर के लिये असमंजस में पड़ गयीं। उन्होंने अपनी जेब टटोली और फिर आश्चर्यपूर्ण मुद्रा के साथ धीरे से बोली—"हूँ...! पालिन, तुम्हारे पास कुछ है। मेरे पास फुटकर नहीं है, मुझे ऊपरी मंजिले पर जाना पड़ेगा। ठीक है, बाद में हिसाब बैठा लिया जायगा!"

पालिन ने अपने पास से कसाई का रुपया चुकता कर दिया। जबसे उसने अपनी आलमारी में अपना रुपया रखा था, किसी के बिल का भुगतान करते समय बार-बार इसी प्रकार का नाटक किया जाता था। छोटी-छोटी माँगों के साथ वह नियमित रूप से ठगी जा रही थी और यह तरीका पूर्णतया स्वाभाविक बन गया था।

लजारे दूसरे दिन भी वापस नहीं लौटा। सहायक प्रिफेक्ट से मिलने के बाद उसने खुद ही केन जाकर प्रिफेक्ट से मिलने का निश्चय किया। उसे यकीन था कि साधारण परिषद् उसके लिये बारह हजार फ्रैंक की रकम मंजूर कर देगी। प्रिफेक्ट ने उसे अपने दरवाजे पर देखते ही इस प्रकार का वचन दे दिया था। वे बोनीविले को मुसीबत में नहीं छोड़ना चाहते थे। शासन उस इलाके के निवासियों के उत्साहपूर्ण प्रयास का समर्थन करने के लिये तैयार था। केवल लजारे हताश था, क्योंकि वह हर प्रकार के बिलम्ब से अवगत था अपनी इच्छा की पूर्ति के मार्ग में तनिक भी रुकावट आने से वह इन दिनों बिल्कुल ही व्यग्र हो उठता था।

"मेरी बात सुनिये!" वह बोला—"अगर मेरे पास बारह हजार फ्रैंक होते तो मैं उन्हें दे देता...वैसे हमें अपने प्रयोग के लिये इतनी रकम की जरूरत नहीं है...और सोचिये, एक बार लोगों की आर्थिक सहायता पा जाने पर हमारी परेशानियाँ कितनी बढ़ जाँयगी। विभाग के सभी इंजीनियर हमारे सिर पर सवार हो जाँयगे। अगर मैं लोगों की मदद के बिना भी काम शुरू करूँगा तो उन्हे हमारे परिणामों को स्वीकार करने के लिये विवश होना पड़ेगा...मुझे अपनी योजना पर

पूरा भरोसा है। प्रिफेक्ट को जब मैंने इसे संक्षेप में समझाया तो वह इसके सस्तेपन और सादगी से चकित हो गया था !"

लजारे समुद्र को पराजित करने के विचार से बेहद उत्तेजित हो उठा था। वह उसे अपना प्रतिद्वन्दी मानने लगा था वनस्पति सम्बन्धी अपने पिछले प्रयोग की विफलता के लिये वह समुद्र को ही जिम्मेदार समझता था। यद्यपि खुले रूप में वह इसका परिहास करने का साहस नहीं कर पाता था, तथापि किसी न किसी दिन बदला चुका लेने का उसने संकल्प कर लिया था। इससे बढ़िया दूसरा कौन सा बदला हो सकता था कि अधिकार पूर्वक यह कहते हुये—"कि तुम इससे आगे नहीं बढ़ोगे !" उसकी विनाशकारी प्रकृति पर ताला लगा दिया जाय। संघर्ष के उत्साह के अतिरिक्त, विश्व-प्रेम की भावना से ही वह उत्प्रेरित था।

इसके अतिरिक्त लजारे की योजना अति सरल भी थी, मोटे-मोटे खूँटे रेत में गाड़ देते थे, फिर इन पर तख्ते बिछाना था। इसके पीछे ज्वार के साथ बह कर आनेवाले कंकड़ एक मजबूत दीवार बना देते। लहरें वहाँ तक आकर अपने आप ही लौट जातीं। इस तरह स्वयं समुद्र ही एक ऐसा किला बना देता जो कि उसकी पराजय का कारण बन जाता। कंकड़ों की दीवार के सामने संगमूसे बांधों का काम करते और इस तरह योजना पूरी हो जाती। मूलरूप से लजारे को यह विचार बहुत पहले अपने पितामह की खरीदी हुई एक पुस्तक से प्राप्त हुआ था। इसमें उसने अपनी ओर से पर्याप्त परिवर्धन और संशोधन कर लिया था। वह वास्तव में एक महान् अनुसन्धान करने में लगा हुआ था।

पालिन एक बार पुनः लजारे के अध्ययन में रुचि लेने लगी थी। उसकी तरह वह भी निरन्तर प्रयोगों के विचार में तल्लीन रहा करती थी। समुद्र की लहरों की ओर जब उसकी दृष्टि जाती तो वह लजारे के

बनाये हुये खिलौनों, खूँटों की पंक्तियों, संगमूसों और छोटे-छोटे बांधों को भी सन्दिग्ध भाव से निहार लिया करती। यही सब इन दिनों लजारे के अध्ययन के विषय बने हुये थे।

एक रात पालिन अपनी खिड़की के पास बहुत देर से बैठी थी। पिछले दस दिनों से उसका भाई इन सब को फेंक देने की बात कर रहा था। एक दिन शाम को भोजन के समय उसने चिल्ला कर कहा था कि वह आस्ट्रेलिया जायगा, क्योंकि फ्रान्स में उसके लिये कोई भी स्थान नहीं था। इन्हीं बातों का वह स्मरण कर रही थी। इसी समय समुद्र में ज्वार आया था और बोनीविले अन्धकार की गोद में समा गया था। प्रत्येक आघात उसके ठीक पास से गुजरता हुआ मालुम होता था। उसने सोचा कि वह कभी-कभी उन पीड़ितों की ये कराहें सुन सकती है, जिन्हें कि समुद्र आत्मसात् कर रहा है। इसके पश्चात् रुपये के प्रति ममता तथा हृदय की उदारता के बीच उसके मन में छिड़ा हुआ द्वन्द उसके लिए असह्य बन गया। शोर गुल से पनाह पाने के लिए उसने खिड़की बन्द कर दी। किन्तु वह जहाँ बैठी थी वहाँ भी दूरस्थ प्रतिध्वनियाँ उसे प्रकम्पित कर देती थीं। क्योंकि असम्भव के लिये भी प्रयास किया जाय? क्या हरज है अगर उसका रुपया-समुद्र में डूब जाता है, बशर्ते कि गाँव को बचाने का एक मौका मिल जाय? और अरुणोदय में अपने भाई की प्रसन्नता की कल्पना करती हुई वह सो गयी। अपने मन-चाहे काम में लग जाने से अवश्य ही उसकी निराशा दूर हो जायगी। उसे अपने भाई को प्रसन्न करना ही होगा। उसका ध्यान उसके लिये सर्वोपरि था।

दूसरे दिन नीचे जाने से पहले वह लजारे के पास पहुँची। वह हँस रही थी—"जानते हो, मैंने स्वप्न में देखा कि तुम्हें मैंने बारह हज़ार फ्रैंक दे दिया है।"

लजारे उसका प्रस्ताव अस्वीकार करता हुआ क्रोधित हो उठा—"क्या तुम चाहती हो कि मैं बहुत दूर भाग जाऊँ और कभी वापस न

लौटूं ? नहीं, फैक्ट्री की ही मुसीबत काफी थी, यद्यपि मैं कभी इसकी चर्चा नहीं करता, तथापि इसका स्मरण आते ही मेरा सिर लज्जा से झुक जाता है !"

दो घन्टे बाद लजारे ने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उत्साह में आकर उसने उसके हाथों को चूम लिया। यह बिल्कुल एक कर्ज समझा जायगा। उसके रुपयों को खतरे में नहीं डाला जायगा, क्योंकि निस्सन्देह साधारण परिषद् आर्थिक सहायता मंजूर ही कर देगी। खास तौर से एकबार काम शुरू हो जाने पर तो अनुदान मिलकर ही रहेगा। उसी दिन शाम को ऐरोमाँशे के कारीगर को खबर भेज दी गयी। बार-बार विचार-विमर्श हुए, समुद्रतट का निरीक्षण किया गया, समुद्रतट के बारे में बहसें हुईं। घरभर की उत्सुकता इसके लिए उमड़ पड़ी।

श्रीमती शैन्ते बारह हजार फ्रैंक कर्ज की बात सुनकर आग बबूला हो उठीं। लजारे को उनका यह रुख देखकर बहुत अचरज हुआ। उसकी माँ उसके सामने तमाम दलीलें पेश करने लगीं। यह बात सच है कि पालिन समय-समय पर छोटी-मोटी रकम उधार में देती रहती है, लेकिन अपने सिर की इसे हमेशा की मुसीबत समझ कर वह ऐसा करना बन्द कर देगी। वे लोग लूसी के पिता से पेशगी की माँग कर सकते हैं। स्वयं लूसी दो सौ हजार फ्रैंक दहेज की स्वामिनी होते हुए भी अपनी रईसी का इतना ठाठ नहीं बघारती है। श्रीमती शैन्ते बार-बार उन दो सौ हजार फ्रैंक का जिक्र किया करती थीं, लेकिन पालिन के रुपयों से उन्हें नफरत और चिढ़ हो गयी थी। उनका ख्याल था कि वे रुपये उनके लिखने के डेस्क में गलने के बाद अब भी पालिन की आलमारी में गल रहे हैं।

शैन्ते ने भी अपनी पत्नी का रुख देख कर झुँझलाहट जाहिर की। यह देख कर पालिन का मन बहुत छोटा हो गया। अपना रुपया देते रहने पर भी वह अनुभव करती थी कि वे लोग पहले की अपेक्षा उसे कम चाहने लगे हैं। उसके चारों ओर विषाद का एक ऐसा परिवेश तैयार हो गया, जिसकी व्याख्या करने में वह असमर्थ थी। विषाद के

इस वातावरण की परिधि दिन प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही थी। जहाँ तक डाक्टर कैजनोव का सम्बन्ध था, वह भी इसके बारे में सलाह माँगने पर नाक भौं सिकोड़ने लगा। लेकिन कम या ज्यादा वह जितना भी रुपया देती, डाक्टर कैजनोव उसे मंजूर करने के लिये मजबूर हो जाता था। वस्तुतः उसका निक्षेपधारी का पद एकदम धोखे की टट्टी के समान था। इन लोगों से, जो कि उसे अपने पुराने मित्र के रूप में मानते थे, लड़ाई मोल लेने में वह असमर्थ था। दो हजार-फ्रैंक ऋण के दिन उसने अपना सारा उत्तरदायित्व उतार दिया।

"मेरी प्यारी बच्ची", उसने पालिन को अपनी बगल में खींचते हुए कहा—"मैं तुम्हारे जुर्म का और अधिक साझीदार नहीं बनना चाहता हूँ। मेरी सलाह को भाड़ में जाने दो। तुम जितना चाहो, अपने को महरूम करो...तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि मैं तुम्हारी बात कभी भी नहीं काटूँगा। सच, बाद में इससे मुझे बहुत रंज होता है। मेरी चेतना अपने को भयंकर रूप से अपराधी समझने लगती है...जिन बातों का मैं समर्थन नही कर सकता, उन्हें न जानना ही मेरे लिये श्रेयस्कर है।"

पालिन उदास होकर टुकुर-टुकुर उसका मुँह जोहने लगी। थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद बोली—"बहुत-बहुत शुक्रिया, मेरे मेहरबान डाक्टर...लेकिन क्या यही सर्वोत्तम मार्ग नहीं है? जब तक मैं प्रसन्न हूँ, तब तक किसी बात की परवाह करने से क्या लाभ है?"

डाक्टर कैजनोव ने पितृवत् स्नेह के साथ उसका हाथ चूम लिया—"हूँ, तब तक, जब तक कि तुम प्रसन्न हो...उफ़...आदमी कभी-कभी अप्रसन्नता के लिये भी बहुत बहुत मँहगा मूल्य दे सकता है।"

ठीक उसी शाम को, जब कि कारीगर आया, शैन्ते का गठिया का रोग पुनः उभर आया। अब यह संकट प्रायः हर महीने टूट पड़ता था। पालिन को अपना एक पूरा पखवारा अपने चचा की परिचर्या में बिताना पड़ा। लजारे समुद्र तट पर अपने अनुसन्धान कार्य में लगा हुआ था।

वह लूसी को भी अपने साथ ले जाने लगा, ताकि वह शैन्ते की चीख-चिल्लाहट से दूर रह सके।

हँसी-खुशी के साथ एक पखवारा बीत गया। पहले लजारे को अपनी नयी संगिनी से बहुत झुँझलाहट हुई। वह पालिन से बहुत भिन्न थी। पैर के नीचे कोई केकड़ा आ जाने पर वह जोर से चिहुँक पड़ती थी। पानी से उसे बेहद डर मालूम होता था। शरीर के कोमल अंगों को धूप से बचाने के लिये वह अपने को सिर से पैर तक ढक रखती थी। उसके लुभावने और डरपोक स्वभाव से लजारे अप्रसन्न हो उठता था। उसे उसकी रक्षा के लिये हमेशा तैयार रहना पड़ता था। यह लड़की अपने साथ खुली हुई ताजगी नहीं, बल्कि उन्माद की तीखी सुगन्ध लेकर आयी। यह सुगन्ध उसके रोम-रोम में समा गयी। अब उसकी बगल में उछलता-कूदता हुआ एक बालक नहीं था। वहाँ तो अब एक वास्तविक स्त्री आ गयी थी। हवा के झोंके से जब उसके टखने सहसा उघड़ जाते तो उसके दिल की धड़कन तेज हो जाती थी। और फिर भी वह दूसरी से कम सुन्दर थी। वह अधिक वयस्क थी और उसकी गुलाबी आभा विलुप्त हो गयी थी, किन्तु उसकी लुभावनी भंगिमायें, उसके छरहरे अंगों का लचीलापन, उसका सम्पूर्ण सुमधुर व्यक्तित्व वरदान के वचनों से छलकता हुआ प्रतीत होता था। ऐसा ज्ञात होता था जैसे वह उसे कहीं से खोयी हुई-सी मिल गयी है। उसके भीतर वह अपनी पूर्व परिचित पतली और नन्हीं बालिका को नहीं पहचान सकता था। क्या यह सम्भव था कि उसके छात्रावास जीवन के लम्बे वर्षों ने ही उसे इतना चंचल, अपने सम्पूर्ण कुमारीत्व के साथ कामेच्छा के प्रति इतना सजग और इतना उद्धत बना दिया था। उसकी स्वच्छ एवं आयत अँखड़ियों की गहराई में वे सभी भ्रान्तियाँ तैरती रहती थीं, जिनमें कि वह निपुण हो चुकी थी। धीरे धीरे एक प्रकार की दूषित वासना के साथ, जिसमें कि उनकी पुरानी बाल सुलभ मैत्री तीखी ऐन्द्रिकता में परिवर्तित हो गयी थी, वह अपने को उत्सुकतापूर्वक उसके प्रति आकर्षित होता हुआ अनुभव करने लगा था।

कभी कभार पालिन को अपने चाचा की तीमारदारी से फ़ुरसत मिल जाती थी। लजारे के साथ उसे बाहर जाने का मौका मिल जाता था। उस समय अपने और लूसी के बीच एक नया वातावरण बना देख कर वह हैरान रह जाती थी। कनखियों के इशारे होते, ठिठोलियाँ होतीं। इन सब से वह दूर रहती थी। वह उनसे यह जानने का प्रयत्न करती कि किन बातों से उन्हें इनता रस मिल रहा था। जानने पर उसे ज्ञात होता कि वह उनके रुचि के विषयों पर परिहास करने में असमर्थ थी। पहले उसने अपने भीतर मातृवत् श्रेष्ठता की प्रवृत्ति उत्पन्न की। उन्हें हल्की-फुल्की बातों में मजा लेने वाले छोकरे समझने की कोशिश की। किन्तु शीघ्र ही वह मर्माहत हो उठी। हरएक शैर उसे भारी और अवसाद पूर्ण प्रतीत होने लगी। वह कभी मुँह न खोलती, कभी शिकवा-शिकायत न करती। केवल सिरदर्द का बहाना कर दिया करती। फिर जब उसका भाई उसे बाहर न जाने की सलाह देता तो वह नाराज़ हो उठती थी और यहाँ तक कि घर में भी उसका साथ छोड़ने से इनकार करने लगती थी। एक रात, करीब दो बजे लजारे अपना एक कार्यक्रम पूरा करने में लगा हुआ था। उसे किसी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी, चौंककर उसने दरवाजा खोला और पालिन को अँधेरे में सिर्फ पेटीकोट पहने मुँडेर पर झुककर नीचे के कमरे की ओर कान लगाये देख कर उसे और ज्यादा अचम्भा हुआ। पालिन ने कहा कि वह किसी की चीख सुन रही थी, किन्तु झूठ बोलने से उसके गाल तमतमा उठे। लजारे का मुँह भी आकस्मिक भय से लाल हो उठा। इसके बाद कोई भी बात नहीं हुई किन्तु तभी से उनमें एक बेगानापन बढ़ने लगा। छोटी छोटी बातों के प्रति उसकी वाहियात उद्विग्नता की प्रवृत्ति देखकर लजारे उसे अलग जाने के लिये कहता, किन्तु पालिन की कृपणता और अधिक गहरी होती गयी। वह उसे लूसी के साथ एक मिनट के लिये भी अकेला छोड़ने को तैयार न होती। वह उनकी छोटी से छोटी भंगिमाओं का निरीक्षण करती रहती और अगर उन्हें समुद्रतट से एक साथ काना-फूसी करते हुये लौटते देख लेती तो रात में अपने कमरे में बिलपने-कलपने लगती थी।

इसी बीच बाँध का काम आगे बढ़ने लगा था। दुर्भाग्य से मौसम भयानक हो उठा लगातार मूसलाधार बारिश होने लगी और बाँध के खूँटों को समुद्र में डूबते हुये देख बोनीविले-वासियों का कलेजा सूखने लगा। बसन्त के ज्वार का दिन आते ही समुद्र पर काले बादलों का अँधेरा छा गया। आठ बजे वर्षा पुनः आरम्भ हो गयी। सारा क्षितिज धुन्ध से ढक उठा।

श्रीमती शैन्ते ने अपने पति के पास ही रहने का निश्चय किया। अब भी उसकी हालत बहुत खराब थी। पालिन को भी घर पर रहने के लिये बहुत कहा गया। पूरे एक हफ्ते से वह जुकाम से पीड़ित थी। हर रात उसका बुखार बढ़ता ही जा रहा था लेकिन वह सारी नेक सलाह नामंजूर कर देती थी और जब कि लजारे और लूसी जा रहे हों तो खुद भी समुद्रतट पर जाने की जिद करने लगती थी।

लूसी यद्यपि सदैव इतनी दुर्बल दिखाई पड़ती थी जैसे कि वह मूर्छित होने के सन्निकट हो, तथापि बाहर घूमने के लिये निकलने का किसी भी प्रकार का अवसर आने पर बला की बहादुर बन जाती थी।

और इस प्रकार तीनों व्यक्ति समुद्र की सैर के लिये रवाना हो गये। थोड़ी देर पहले हवा का एक झोंका आने से बादल छँट गये थे। मौसम थोड़ा साफ देख कर सभी का मन उल्लसित और पुलकित हो उठा। आसमान में जदा-कदा ही बदली देखकर दोनों लड़कियों ने सिर्फ अपनी छतरियाँ ही साथ लेना काफी समझा। केवल लजारे ने एक साबूत छाता अपने हाथ में लगा लिया। बहरहाल उन्हें भी बचाने की जिम्मेदारी उसने अपने ऊपर ओढ़ ली। यदि वर्षा पुनः आरम्भ हुई तो उन्हें शरण देने का प्रबन्ध सोच लिया गया।

दोनो लड़कियाँ आगे-आगे चल रही थीं। किन्तु एक ढाल की जगह पहुँचने पर 'लूसी गीली जमीन पर बहुत जोरसे फिसलती हुई दीख पड़ी। लजारे दौड़ कर उसके पास पहुँचा और उसे सहारा देने लगा। पालिन को भी उनके पीछे-पीछे जाना पड़ा। जिस छलकते हुये

उत्साह के साथ वह घर से चली थी, उस पर अब पानी फिर गया था। उसकी सशंक आँखों ने देखा कि उसके भाई कि केहुनी से लूसी के वक्षस्थल का इस प्रकार स्पर्श हो रहा था जैसा की निरन्तर दुलार करने के समय हुआ करता है। शीघ्र ही इस स्पर्श के अतिरिक्त सभी दृश्य उसकी दृष्टि से ओझल हो गये। वह समुद्रतट जहाँ कि मछुवाहे विचर रहे थे, वह चपल तरंगों का नर्तन, जिन पर श्वेत फेन लहरा रहा था और बाँध के वे खम्भे, जो कि पहले से ही झाग से सफेद हो गये थे सब कुछ एक दम विलुप्त, एक दम नष्ट-भ्रष्ट हो गया। क्षितिज पर एक साक्षात् धुँधली पेटी फैल रही थी, यह एक तीव्र वेग से घूमनेवाला तूफ़ानी बादल था।

"उफ, धत् तेरे की!" लजारे अपना मुँह फेरता हुआ भुनभुनाया —"फिर पानी आने वाला है...लेकिन तब तक हम काफ़ी चीजें देख सकते हैं। इसके बाद कहीं शरण खोजी जायगी!"

ज्वार; जिसके कि वायु प्रतिकूल थी, धीमे-धीमे उठ रहा था। तूफान के फलस्वरूप उसका वेग पर्याप्त मद्धिम पड़ गया था। फिर भी कोई समुद्रतट से दूर नहीं हटा।

अकस्मात् फुहारें पड़ने लगी। लजारे ने लूसी के सिर पर अपना छाता तान दिया। वह ठिठुरी हुई पेन्डुकी की भाँति उससे चिपकी जा रही थी। वे दोनों पालिन को भूल गये थे। हल्के क्रोध से सन्तप्त और उनके आलिंगन की उष्णता को अपने मुँह पर एक तमाचे की तरह अनुभव करती हुई वह अब भी उनकी ओर निहार रही थी। वर्षा वेगवती हो गयी थी। सहसा लजारे पीछे की ओर मुड़ कर बोला—

"यह क्या है? पागल हो गयी हो? कम से कम अपनी छतरी तो खोल लो!" मूसलाधार वर्षा में भीगती हुई वह अलग खड़ी रही। जैसे कि उसे इसका आभास ही न हो रहा हो। खिन्नमन से उसने उत्तर दिया—"मुझे अकेली ही रहने दो। मैं बिल्कुल ठीक हूँ!"

"ओ हो, भाई लजारे !" लूसी विकल होकर बोली—"उसे बुला लो। हम तीनों इसमें आ जाँयगे !"

किन्तु पालिन अपने दुर्दान्त हठ में डूबी हुई थी। उसने कोई उत्तर देने तक की भी परवाह नहीं की। वह बड़े मजे में थी। वे लोग उसे क्यों नहीं अकेले ही रहने देते ? मिन्नतों से तंग आकर वह बोली—"तुम सब अपनी-अपनी फिक्र करो। मुझे इसी तरह भीगने दो। तुम लोगों का जहाँ मन हो, वहाँ जाओ...चूंकि हम लोग यहाँ कुछ देखने परखने आये हैं, इसलिए मैं आगे जा रही हूँ।"

मछुवाहे भाग खड़े हुये थे। मूसलाधार बारिश में वह अचल खड़ी रही। तत्कालीन दृश्यवाली उसे सम्मोहित सी कर रही थी। उसके बाँहों और कंधों के वस्त्रों पर कीचड़ के धब्बे पड़ गये थे। वह वहाँ से हिलने का नाम ही नहीं ले रही थी। पछुवा हवा चलने से जब बादल एक दम छँट गये, तभी उसे घर चलने का ध्यान आया।

तीनों व्यक्ति खामोशी के साथ घर की ओर रवाना हो गये। घटना के सम्बन्ध में शैन्ते या श्रीमती शैन्ते से एक शब्द भी नही कहा गया। पालिन तेजी से अपने कपड़े बदलने चली गयी। लजारे ने अपने प्रयोग की पूरी सफलता का वर्णन किया। शाम को भोजन के समय उसका ज्वर तेज हो गया। एक-एक ग्रास निगलने में प्रत्यक्ष कठिनाई के साथ भी उसने बहाना किया कि उसे तनिक भी कष्ट नहीं है। यहाँ तक कि लूसी ने जब बड़ी आजिज़ी से उसका हाल जानने की जिद्द की तो उसने उसे बेहद बेरुखी से झिड़क दिया।

"सचमुच, इसका मिजाज बरदाश्त से बाहर होता जा रहा है।" श्रीमती शैन्ते उसके पीछे से भुनभुनाई—"उससे कुछ पूछा-पेखी करना बिल्कुल व्यर्थ है।"

उस रात लगभग एक बजे लजारे जोर-जोर से खांसने की आवाज सुन कर जाग पड़ा। खांसी इतनी शुष्क थी कि वह आवाज़ सुनने के लिये उठकर बैठ गया। पहले उसने सोचा, शायद यह माँ की आवाज

हो। ध्यान लगाकर सुनने पर उसे मालुम हुआ जैसे कोई सहसा फर्श पर गिर पड़ा हो। चारपाई से उछल कर उसने आनन-फानन कपड़ा पहना। यह सिर्फ पालिन हो सकती है, क्योंकि आवाज़ दीवार की दूसरी ओर से आ रही थी। जल्दी जल्दी वह दियासलाई की तीलियाँ जलाने लगा। मोमबत्ती लेकर वह भागता हुआ बाहर निकला। सामने का दरवाजा एकदम खुला हुआ देख कर वह हैरत में पड़ गया। पालिन रात्रिकालीन वस्त्र में लिपटी चौखटे के बाहर उतान पड़ी थी। उसके बाजू और पैर नंगे खुले थे।

"क्या हुआ ?" वह चिल्लाया—"क्या तुम फिसल गयी ?"

उसके मन में पुनः यह ख्याल उठा कि वह शायद उसकी टोह लेने के लिये घूम रही थी। किन्तु न तो वह हिली डुली, न तो कुछ जबाब दिया। आंखें बन्द किये इस तरह पड़ी थी जैसे कि कुचल दी गयी हो। ऐसा लगता था गोया वह मदद लेने की कोशिश कर रही थी और अचानक ग़श आ जाने पर फर्श पर लुढ़क गयी थी।

"पालिन, सुनो तो, क्या...कैसे तुम्हें चोट लगी ?"

झुककर उसने रोशनी में उसका मुँह देखा। उसका चेहरा एकदम लाल हो गया था और तेज बुखार से जलता हुआ मालुम हो रहा था। उसे अर्ध-नग्नावस्था में देख कर उसे संकोच हो रहा था। हाथ लगा कर उठाने में हिचक मालुम हो रही थी। किन्तु शीघ्र ही मातृवत् स्नेह के सामने ये लज्जापूर्ण भावनायें विलुप्त हो गयीं। पालिन की नग्नता उसकी आँखों से ओझल हो गयी। अपने सीने के साथ उसके अंगों के स्पर्श से बेखबर होकर उसने पालिन को अपनी गोद में उठा लिया और उसे चारपाई पर लिटाने के बाद भी चादर उढ़ाने का ख्याल न करता हुआ बोला—"भगवान् के लिये दया करो, मेरी बात का जबाव दो पालिन...क्या तुम्हें चोट लग गयी है ?"

थोड़ी हरकत से उसकी आंखें खुली। लेकिन फिर भी वह उसकी ओर निहारती हुई एकदम मौन थी। लजारे के बार-बार पूछने पर उसने अपना हाथ अपने गले पर रख लिया।

"क्या तुम्हारे गले में दर्द हो रहा है ?"

क्षीण वाणी में कठिनाई से उसने उत्तर दिया—"मुझे बोलने के लिये विवश मत करो। मैं बिनती कर रही हूँ...इससे बहुत क्लेश होता है।"

और तत्काल ही उसे खाँसी पर खाँसी आने लगी। वैसी ही लगातार खाँसी जैसी कि उसने अपने कमरे से सुनी थी। उसका चेहरा प्रायः काला पड़ गया और पीड़ा इतनी तीखी थी कि उसकी आँखों में आंसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें ढुलक आयीं। अपना दोनों हाथ उसने सिर पर रख लिया। माथा इतना फड़क रहा था जैसे उस पर हथौड़ों की चोटें पड़ रही हों।

"आज तीसरे पहर तुमने जान बूझ कर यह बीमारी मोल ली।" लजारे घबराई हुई आवाज़ में बोला—"तुम पहले से ही अस्वस्थ थी। फिर ऐसा पागलपन क्यों किया ?"

उसकी विनीत दृष्टि देखकर लजारे की घबराहट और अधिक बढ़ गयी। अपने हाथ से वह कम्बल की ओर संकेत करने लगी। लजारे ने उसकी ठुड्ढी तक का शरीर कम्बल से ढक दिया।

"जरा अपना मुँह खोलो। देखूँ तो, तुम्हारे गले में क्या हो गया है ?"

पालिन बड़ी कठिनाई से अपने जबड़े खोल सकी। मोमबत्ती निकट ले जाकर वह उसके गले का भीतरी भाग देखने लगा। गला एक दम सूख कर लाल हो गया था। साँस लेने में उसे बेहद तकलीफ हो रही थी। लजारे को उसकी छटपटाहट देखकर ऐसा लगा जैसे अभी वह उसके सामने ही चन्द लहमों में दम तोड़ देगी। साँस लेने के प्रयत्न में उसका पूरा शरीर काँपने लगता था। खांसी के उभार से वह पुनः मूर्छित हो गयी। लजारे भागता हुआ नौकरानी के कमरे के दरवाजे पर गया—"वेरोनिक, वेरोनिक, उठो तो ! पालिन मर रही है !"

वेरोनिक घबराहट के साथ दौड़कर पालिन के कमरे में आयी। वह अपनी चारपाई पर धीरे-धीरे हाँफ रही थी।

"यह स्थान भी कैसा नरक-कुण्ड है ! कोई भी यहाँ कुत्ते की मौत मर सकता है। डाक्टर के लिये सात मील से भी ज्यादा दौड़ना पड़ेगा।"

थोड़ा रुक करके वेरोनिक पुनः बोली—"मैं खुद डाक्टर को बुलाने के लिये जा रही हूँ। अगर तुम्हें जरूरत पड़े तो मालिकिन नीचे आग जला सकती हैं।"

नीचे जाकर श्रीमती शैन्ते को सूचना देती हुई वेरोनिक डाक्टर को बुलाने के लिये रवाना हो गयी।

"क्या हो गया है ?" श्रीमती शैन्ते ने ऊपर आकर पूछा।

लजारे ने उसे संक्षिप्त उत्तर दिया। वह घबराया हुआ आलमारी में चिकित्सा की अपनी पुरानी पाठ्य-पुस्तकें खोज रहा था। इधर-उधर पन्ने उलटने के बाद वह कर्त्तव्यमूढ़-सा हो गया।

श्रीमती शैन्ते बैठ गयी थीं। "सम्भवतः यह केवल सिर की पीड़ा है। सब से अच्छा यही होगा कि इसे चुपचाप सोने दो !"

लजारे झुँझलाकर बोला—"सिर दर्द ! सिर दर्द ! माँ, तुम यहाँ हाथ पर हाथ धरे बैठी मुझे पागल कर दोगी। नीचे जाओ और थोड़ा पानी गरम करो !"

"मेरा ख्याल है कि लूसी को जगाना ठीक नहीं होगा ?"

"नहीं, नहीं, नहीं, कतई जरूरत नहीं है। मुझे किसी की भी जरूरत नहीं है। मैं तुम्हें बुला लूँगा।"

लजारे अकेला रह जाने पर पालिन के पास गया। नाड़ी की गति जानने के लिये उसने उसकी कलाई अपने हाथ में ले ली। नाड़ी की गति थी एक सौ पन्द्रह। उसने अनुभव किया कि वह तपता हुआ हाथ हल्के दबाव के साथ उसका हाथ पकड़े हुये है। बालिका की बोझिल पलकें मुँदी हुई थीं किन्तु अपने इस पाणी-बन्ध द्वारा वह अपनी कृतज्ञता

और क्षमाशीलता व्यक्त कर रही थी। यद्यपि वह मुस्कुराने में असमर्थ थी, तथापि वह लजारे को समझाना चाहती थी कि मैंने सुन लिया है। मैं यह जान कर बहुत आश्वस्त हूँ कि तुम यहाँ अकेले मेरे अतिरिक्त और किसी का चिन्तन नहीं कर रहे हो।"

सामान्यतया लजारे किसी को रुग्ण देखकर भयभीत हो उठता था। घर में कोई बीमार हो जाता तो वह बाहर भाग जाता था। वह किसी की परिचर्या नहीं कर सकता था। वह स्वयं ही कहता था कि मेरे स्नायु इतने दुर्बल हैं कि मुझे हमेशा बहुत जल्द रुलाई आने लगती है। पालिन उसकी स्वार्थहीन निष्ठा के प्रति मन ही मन कृतज्ञता मिश्रित आश्चर्य का अनुभव कर रही थी। लजारे स्वयं उस भावना की गहराई को, जो कि उसे उत्साहित कर रही थी, स्वयं अकेले ही उसकी देख-भाल के लिये उत्प्रेरित कर रही थी, व्यक्त नहीं कर सकता था। उसके कोमल कर-स्पर्श ने उसे आकुल-व्याकुल कर दिया था। वह उसे ढाढस देना चाहता था, उसे आश्वस्त करना चाहता था।

"तुम्हें कुछ भी नहीं हुआ है, मेरी रानी। मैं कैजेनोव की बाट जोह रहा हूँ। तुम्हें तनिक भी घबराने की जरूरत नहीं है।"

वह अपनी आँखें मूँदे रही। धीरे-धीरे बोली—"उफ़, मुझे कोई घबराहट नहीं है...तुम परेशानी में पड़ गये हो मुझे यही चिन्ता कुरेद रही है।" उसके बाद और भी मद्धिम आवाज़ में, और भी फुसफुसाहट के स्वर में याचना-सी करने लगी—"कहो कि तुम मुझे क्षमा कर रहे हो...मैं आज भयंकर रूप से डर गयी थी।"

लजारे उसका माथा चूमने के लिये इस तरह झुक गया, जैसे कि वह उसकी पत्नी हो। फिर खामोश होकर बगल में बैठ गया, क्योंकि उसकी आँखों में आँसुओं का प्रवाह उमड़ आया था। डाक्टर के आने से पहले कम से कम उसने कोई काढ़ा ही तैयार करना चाहा। पास की छोटी-सी आलमारी में कुछ दवायें रखी थीं। लेकिन वह डर रहा था कि कहीं कोई दवा देने में गलती न हो जाय। दवा के बोतलों के बारे

में वह उससे पूछने लगा। और अन्त में एक प्याले में मार्फिया की कुछ बूँदें उड़ेल ली। चम्मच भर दवा पीते ही उसका दर्द इतना बढ़ गया कि उसे और पिलाने का साहस न हो सका। चुपचाप एक तरफ बैठ गया। डाक्टर की प्रतीक्षा क्लेशप्रद बन गयी। यह जानने के लिये उसका मन छटपटाने लगा कि आखिर बीमारी है कौन-सी? क्या यह डिपथीरिया हो सकती है? चिकित्सा की पुस्तकें उलटता हुआ वह निदानों की संगति बैठाने लगा। फिर भी कुछ उसकी समझ में नहीं आ रहा था, कोई उपाय नहीं सूझ रहा था।

कोई चार बजे तक डाक्टर कैजेनोव आ गया। लजारे उसे देखते ही चिल्ला पड़ा—"आ गये डक्टर? क्यों इतनी देर की?"

डाक्टर कैजेनोव ने फौरन एक और लालटेन जलाने के लिये कहा ताकि वह पालिन की जाँच कर सके। लजारे अपने हाथ में बत्ती लिये खड़ा था। वेरोनिक दूसरी लालटेन भी जला कर ले आयी। श्रीमती शैन्ते खड़ी-खड़ी तमाशा-सा देख रही थी। ऊँघती हुई पालिन बिना कराहे अपना कंठ भी नहीं खोल सकती थी। डाक्टर ने आहिस्ता से उसका पैर सीधा कर दिया। वह बहुत घबराया हुआ आया था। लेकिन अब उसकी दुश्चिन्ता दूर हो गयी थी। लजारे को अलग ले जा कर कहने लगा—

"तुम्हारी वेरोनिक ने मुझे कितने डरा दिया। उसकी बहकी-बहकी बातें सुन कर मैंने सोचा, पालिन ने ज़हर खा लिया है। देखो न, अपनी जेबों में मैं तमाम दवायें भर लाया हूँ।"

"यह घाँटी की सूजन है, है न?" लजारे ने पूछा।

"बिल्कुल ठीक...जल्द कोई खतरे की बात नहीं है।"

श्रीमती शैन्ते की आँखों में एक नयी चमक आ गयी, जैसे कि वे कहना चाहती हों—"मैंने तो पहले ही बता दिया था।"

पालिन की तीमारदारी की पूरी जिम्मेदारी लजारे ने अपने ऊपर ले ली। दुर्दमनीय स्नेह भावना के आवेग में डूबा वह किसी भी अन्य व्यक्ति को उसके कमरे में फटकने नहीं देता था। लूसी और उसकी

माँ बस प्रातः काल ही आ सकते थे। हाँ, वेरोनिक इच्छानुसार कभी भी आ सकती थी। श्रीमती शैन्ते प्रायः कहा करतीं कि किसी पुरुष के लिये युवा लड़की से इस तरह चिपका रहना अनुचित है। किन्तु वह प्रतिवाद करता—"क्या मैं उसका पति नहीं हूँ? और फिर, डाक्टर लोग तो प्रत्येक दशाओं में महिलाओं की देख-भाल कर सकते हैं। वस्तुतः उनके सम्बन्धों में किसी प्रकार की आत्मबोधपूर्ण शीलता का अंश नहीं था। पीड़ा और मृत्यु के भय ने ऐन्द्रिक बोध का शमन कर दिया था। अनेक ढंग से वह उसकी चौकसी करता था। अपने भाई की तरह वह उसे गोद में उठाया करता और चारपाई पर लिटा दिया करता। उसके प्रकाम्य शरीर के प्रति ज्वर के अतिरिक्त उसके मन में और कोई भाव नहीं उत्पन्न होता था। बचपन की उन सभी पुरानी स्मृतियाँ पुनः सजीव हो उठी थीं। दवा पिलाने के अतिरिक्त और किसी बात का उसे स्मरण नहीं होता था। घण्टो बस यही प्रतीक्षा रहती कि उसकी हालत में कुछ सुधार हो। शारीरिक जीवन की छोटी से भी छोटी बातें अति महत्वपूर्ण बन गयी थीं, दिन के बाद रात आती और रात के बाद दिन। लजारे की चेतना सदैव अन्धकार और सून्य में ही टँगी रह जाती।

नित्य प्रातःकाल डाक्टर कैजेनोव पालिन को देखने के लिये आता। कभी-कभी वह भोजन के बाद शाम को भी आ जाया करता। कुछ दिनों तक कम रहने के बाद ज्वर पुनः तेज हो गया। दो दिन बीत गये। फिर भी डाक्टर रोग का पूरा निदान समझने में असमर्थ था। पालिन अपना मुँह नहीं खोल पाती थी, इसलिये गले के भीतर झाँककर देखना कठिन था। एक दिन पालिन ने कहा—"साँस लेने में मुझे बहुत तकलीफ मालूम होती है। गले में कुछ अटका हुआ-सा लगता है। नया सुराग पाकर डाक्टर ने तुरन्त लजारे से कहा—"मुझे शक है, शायद गले में गिल्टी निकल आयी है।"

लजारे उसे अपने कमरे में ले गया। कातरवाणी में बोला—"डाक्टर, क्या अब वह बचेगी नहीं?"

"ऐसी कोई बात नहीं," कैजेनोव ने उत्तर दिया—"घबराओ नहीं, वह अच्छी हो जायगी। हाँ, कुछ वक्त जरूर लगेगा!"

प्रतिदिन प्रातःकाल होने पर लजारे उससे कहता—"कुछ करो डाक्टर, मैं तुम्हारे पाँव पड़ रहा हूँ...बीमारी बेहद ख़तरनाक है। क्षण भर के लिये भी उसे नींद नहीं आती है। रात भर वह कराहती रहती है।"

"तो मेरा इसमें क्या बस है भाई!" डाक्टर मर्माहित होकर उत्तर देता—"उसे बचाने के लिये मैं उसका गला तो काटूँगा नहीं।"

और लजारे क्षुब्ध होकर कहता—"तो सारी दवायें एकदम फालतू हैं?"

"ऐसा ही समझो। शारीरिक यंत्र जब अस्त-व्यस्त हो जाता है तो दवाओं का कोई बस नहीं चलता। सब भाग्य पर ही निर्भर है। तुम्हें प्रकृति पर विश्वास करना ही होगा!"

एक रात, बिस्तर के पास बैठा, लजारे हमेशा की तरह पालिन का हाथ अपने हाथ में लिये था, उसे यह दिलासा देने के लिये कि वह उसे कभी अकेले नहीं छोड़ सकता है। डाक्टर कैजेनोव यह कहता हुआ कि अब मैं किसी बात का जिम्मा नहीं ले सकता, दस बजे अपने घर चला गया था। पालिन अपनी पीड़ा के बावजूद बहुत शान्त दिखाई पड़ रही थी। अपने बारे में जब वह लोगों को बातें करते और नयी योजनायें बनाते हुये सुनती तो केवल मुस्कुरा दिया करती थी। उसी रात, अभी वह सुनती आ रही थी कि लजारे वायु परिवर्तन के लिये उसे कहीं ले जाने की योजना बना रहा था। फिर ख़ामोशी छा गयी। ऐसा मालुम होने लगा, गोया वह सो गयी हो। आध घन्टे बाद वह नितान्त भिन्न स्वरों में बोली—"प्रिय लजारे, मैं नहीं समझती कि कभी तुम्हारी पत्नी बन सकूँगी!"

लजारे ने एक नये आघात का अनुभव किया। अकस्मात् उसकी रीढ़ काँपने लगी।

"क्या मतलब?" उसने पूछा।

वह आंखें खोलकर दृढ़ता पूर्वक उसकी ओर निहार रही थी। "हाँ, सच कह रही हूँ, मैं जानती हूँ कि मेरे साथ क्या होने वाला है...और मैं सब ठीक-ठीक समझ-बूझ लेना चाहती हूँ, ताकि कम-से-कम तुम लोगों का अभिवादन तो कर लूँ...!"

लजारे ने दृढ़ता पूर्वक प्रतिवाद किया कि ये सब पागलपने की बातें हैं। एकाध हफ्ते में तुम भली-चंगी हो जाओगी। उसका हाथ छोड़कर किसी बहाने से वह कमरे में चला गया, क्योंकि उसे एकदम रुलाई आ रही थी। अपने बन्द कमरे में वह फूट-फूट कर रोने लगा। एक भीषण भावना अकस्मात् उसके हृदय को बेधने लगी। पालिन मरने ही वाली है। शायद रात भर भी जिन्दा नहीं रहेगी। वह इससे अवगत है। उसकी अब तक की शान्ति बनावटी थी। दूसरों को दुखी न करने के विचार से ही वह मौन थी। जानती है, मृत्यु की पीड़ा को वह अपने पास आती हुई अनुभव करेगी और मैं वहाँ जड़वत् उपस्थित रहूँगा।

जैसे-तैसे रात बिना किसी दुर्घटना के समाप्त हो गयी। दो दिन और बीत गये, किन्तु दोनों के बीच अब एक नयी दीवार खड़ी हो गयी। मृत्यु के विचार से उसका मानस सदैव आक्रान्त रहने लगा। पालिन ने अपनी स्थिति की गम्भीरता के सम्बन्ध में कोइ और नया विभ्रम नहीं उत्पन्न किया। यहाँ तक कि मुस्कुराने की भी शक्ति उसमें आ गयी। लजारे सदैव पूर्णरूप से शान्त बना रहता और पालिन के रोग-मुक्त होने की प्रतीक्षा करता रहता। फिर भी दोनों को ऐसा लगता जैसे वे एक-दूसरे से सदा-सदा के लिये विलग होने जा रहे हों।

एक दिन बड़े भोर ही लजारे को ऐसा लगा कि अब वह अपनी ही मृत्यु के भय से भी कितना अधिक व्यग्र हो उठता है। यदि वह अपने संगिनी की मृत्यु के विचार से काँप उठता था, तो वह कुछ भिन्न प्रकार का भय था। इसमें उसकी अपनी आत्मा के विनाश का स्थान नहीं था। भीतर ही भीतर उसका हृदय विचूर्ण होता रहता था, किन्तु ऐसा

लगता था कि मृत्यु के संग्राम ने ही उसे उसका बलवान् प्रतिद्वन्दी बना दिया था। मृत्यु का सामना करने के लिये उसमें पर्याप्त साहस आ गया था। इसके अतिरिक्त उसका भय एक प्रकार के निद्रालस्य द्वारा मापा जा सकता था। ऐसा सम्भवतः अवसाद के कारण ही होता था। वह इस तरह अपनी आँखें मूँद लेता था, ताकि उगते हुये सूरज को न देख सके। अपने को भय के लिये उत्तेजित कर वह अपनी वेदना के स्फुरण को पुनरूज्जीवित करने का प्रयास किया करता था। बार-बार अपने मन से वह कहता रहता था कि मैं भी किसी दिन जरूर मर जाऊँगा। प्रत्येक वस्तु उसके लिए अत्यन्त नगण्य बन गयी थी। इस कंटक-शैया की उपस्थिति में यहाँ तक कि उसका निराशावाद भी निस्तेज हो गया। संसार के प्रति उसके मन की घृणा को तीव्र करने के बदले, पीड़ा के विरुद्ध उसके विद्रोह ने स्वास्थ्य के प्रति उद्दीप्त अभिलाषा का, जीवन के प्रति अदम्य आसक्ति का रूप धारण कर लिया। अब वह दुनिया को नष्ट-भ्रष्ट करने की बात नहीं करता था। केवल यही कल्पना उसके सामने घूमती रहती थी कि पालिन पुनः स्वस्थ हो जाय, चमकीली धूप में उससे हाथ मिलाकर चलने लगे। केवल इसी आवश्यकता का वह अनुभव करता था। कि पुनः उसके शरीर में शक्ति आ जाय और वह उसके साथ उन पुरानी राहों पर पुनः हँसती-इठलाती हुई चलने-फिरने लगे।।

उसी दिन लजारे ने सोचा कि अन्तिम क्षण आ गया है। आठ बजे से पालिन को कै होने लगी। प्रत्येक कै होते समय वह बेहोश हो जाती। शीघ्र ही उसका बदन जोर-जोर से काँपने लगा, इतनी जोर-जोर से कि उसके दांतों की कटकटाहट साफ साफ सुनी जा सकती थी। भयभीत होकर लजारे खिड़की के बाहर से चिल्लाया कि डाक्टर को बुलाने के लिये किसी लड़के को भेज दिया जाय। वैसे सदा की भाँति ग्यारह बजे डाक्टर के आने की उम्मीद थी। समूचे घर में मनहूस खामोशी छाई हुई थी, क्योंकि अपनी दौड़-धूप से उसे सजीव बनाने वाली पालिन

अब एक किनारे पड़ी थी। शैन्ते नीचे पड़ा रहता और चुपचाप अपने पैरों की ओर निहारता रहता। हमेशा डरता रहता था कि अब दर्द का दौरा आया तो कौन उसकी देख भाल करेगा। श्रीमती शैन्ते लूसी को बाहर चलने के लिए कहती और दोनों का सारा समय निरन्तर घनिष्टता में घर से बाहर ही बीता करता। घर भर में केवल वेरोनिक के बार-बार आने-जाने की आवाज़ ही सुनी जा सकती थी। तीन बार लजारे बाहर झाँक आया, यह जानने के लिये कि नौकरानी ने डाक्टर के पास किसी को भेजा है, अथवा नहीं! अभी अभी वह कमरे में लौट कर मरीज को देख रहा था, इतने में किसी की पद-चाप सुनाई पड़ी।

"अरे, वेरोनिक?"

लेकिन यह तो उसकी माँ थी। उस दिन लूसी को पड़ोस के मित्रों के घर ले जाने का कार्य-क्रम बनाया था।

"नन्हा कुशे तत्काल भेज दिया गया है।" उसने कहा—"चलने में वह बहुत फुर्त है!"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसने पूछा—"कुछ आराम नहीं हुआ?"

उदास मुद्रा में लजारे ने पालिन की ओर संकेत किया। वह एक दम निश्चल और शान्त थी। जैसे कि मर गयी हो, चेहरे पर पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें झलक रही थीं।

"अच्छी बात है, तो हम बाहर नहीं जायेंगे?" उसकी माँ बोली—"सचमुच, ये गुप्त रोग बहुत भयानक होते हैं। बेचारी बच्ची के लिये निश्चय ही ख़तरनाक बात आ गयी है?" वह बैठ गयी थी और धीमी तथा एकरस आवाज़ में कहती जा रही थी—"सोचो, तब क्या होता अगर सात बजे ही हमने जाने का कार्य-क्रम बनाया होता। अच्छा ही हुआ जो लूसी इतने तड़के जागी नहीं और, आज सुबह ही सभी तगादा करने वाले आयेंगे। वे जान बूझ कर मुझे परेशान करना चाहते हैं। ऐरोमांशे का पंसारी अपना 'बिल' लेकर आ धमका। मुझे उसे

देना पड़ा और अब बेकरी वाला नीचे खड़ा है। उसे चालिस फ्रैंक देना है। मैं सचमुच समझ नहीं पाती कि यह सब कहाँ चला जाता है ?"

लजारे उसकी बात नहीं सुन रहा था। लेकिन उसके ओठों की बड़बड़ाहट से वह झुँझला उठा। उसने उससे छुटकारा पाने की कोशिश की।

"जाओ, वेरोनिक को दो तौलिये देकर उसे मेरे पास भेज दो!"

"वास्तव में उस बेकरीवाले का हिसाब मुझे चुकाना ही पड़ेगा!" वह बोलती गयी—"वह मुझसे बात कर चुका है, इसलिये उसे यह नहीं बताया जा सकता कि मैं घर पर नहीं हूँ...उफ़, मैं इस घर से आज़िज़ आ चुकी हूँ! गृहस्थी चलाना मेरे बस के बाहर होता जा रहा है...अगर पालिन इतनी बीमार न होती तो वह हमें अपनी 'पेंशन' का नब्बे फ्रैंक उधार दे सकती थी। आज बीस तारीख है...महीना खत्म होने में दस दिन ही बाकी है...बेचारी बच्ची बहुत कमजोर दिख रही है!"

"तुम्हें मालूम नहीं कि वह अपना रुपया कहाँ रखती है ?"

"नहीं ?"

"उसकी आलमारी में ही होगा। याद करो, तुमने देखा था ?"

"मेरी अच्छी माँ, भगवान् के लिए मुझे अकेला ही रहने दो।"

कमरे के बहुत दूर के कोने से ये कुछ वाक्य धीरे-धीरे बोले गये थे। थोड़ी देर के लिए वेदना पूर्ण शान्ति छा गयी थी। तदनन्तर बिस्तर से मुर्झाई हुई वाणी प्रतिध्वनित हुई। "लजारे, मेरी तकिया के नीचे से चाबी ले लो और चाची को, जो भी वह माँग रही हों, दे दो।"

माँ-बेटे दोनों अचकचा गये। लजारे ने विरोध किया। कौन आलमारी खोले ? लेकिन उसे झुकना पड़ा, ताकि पालिन को ठेस न पहुँचे। सौ फ्रैंक का नोट अपनी माँ के हाथ में देने के बाद, जब वह चाबी रखने के लिए तकिए के पास गया तो देखा कि पालिन को और भी तेज़

बुखार हो आया है। सारा शरीर बेचैनी से काँप रहा है और उसकी अभागी बन्द आँखों से आँसुओं की दो बड़ी-बड़ी बूँदे उसके कपोलों पर ढुलक आयीं।

डाक्टर कैजेनोव अपने हमेशा के वक्तसे पहले नहीं आ सका। नन्हा कुशे भी उसे नहीं मिला था। इस समय आने पर लजारे की आवाज़ सुनने के बाद पालिन को देखते ही वह हर्ष विह्वल हो कर बोला—"वह बच गयी, बच गयी!"

वे उबकाइयाँ, वे भयंकर कम्पन इस बात के लक्षण थे कि अन्ततः उसका व्रण फूट रहा था। अब कण्ठावरोध का बिल्कुल ही खतरा नहीं था। जो कुछ कमी थी, उसको अपने आप ही मिट जाने में देर नहीं थी। घर भर में नये हर्ष का वातावरण छा गया। लजारे खुशी-खुशी डाक्टर के साथ नीचे चला आया। श्रीमती शैन्ते और लूसी प्रसन्न हो कर अखरोट चबाने लगीं।

"वास्तव में मैं कभी भी चिन्तित नहीं हुई।" श्रीमती शैन्ते बोलीं—"मुझे पूरा यकीन था कि कुछ भी नहीं होगा!"

"चाहे जो कुछ हो, बिटिया को तकलीफ बहुत हुई।" वेरोनिक ने हस्तक्षेप किया।

"हाय राम, मैं ज्यादा खुश नहीं हो सकती, पाँच फ्रैंक इनाम दो, तब भी नहीं।"

[५]

प्रत्येक शाम को भोजन के कमरे में श्रीमती शैन्ते और पालिन में एक ही बातें हुआ करतीं। शैन्ते अखबार में डूबा रहता। उसकी पत्नी जब कभी कुछ पूछती तो अत्यन्त संक्षिप्त उत्तर दे दिया करता। उस पखवारे

में, लजारे खाने तक के लिए भी नीचे नहीं आता था, लेकिन अब वह नीचे ही भोजन किया करता था। भोजन के बाद ज्योंही वह ज़ीने पर क़दम रखता श्रीमती शैन्ते पहले भुन भुनाने लगतीं।

पहले तो उन्होंने दयालुता प्रदर्शित की। "मेरा प्यारा बेटा कितनी मेहनत करता है।...सच, अपने स्वास्थ्य को इस तरह खतरे में डालना न्याय-संगत नहीं है। तीन हफ्ते से वह सोया नहीं...दिन प्रति-दिन उसका शरीर पियराता जा रहा है।

पालिन के प्रति भी उसके मन में समवेदना थी। बेचारी लड़की को भयँकर पीड़ा सहनी पड़ी। उसके पास कोई एक क्षण भी शान्ति से बैठ नहीं सकता था। किन्तु धीरे-धीरे उन्हें रोगी के कारण उत्पन्न विघ्नों को झेलने का अभ्यास हो गया। हर एक चीज तितर-बितर थी। किसी को ताज़ा खाना नही मिल सकता था। सचमुच, जिन्दगी दूभर हो गयी थी।

फिर वह लूसी से धीरे-धीरे कहने लगी। "मजे की बात है कि अभागी पालिन हमारे लिए कभी भी वरदायक नहीं सिद्ध हुई। कुछ लोग उसे फरिश्ता समझते हैं! हूँ, जो गप्पें हाँकी जाती हैं, मैं उनसे अवगत हूँ...केन में लोगों का कहना है—है न लूसी?...कि वह हमारे लिए खजाना लेकर आयी है। हाँ, हाँ, खजाना! तुम्हीं बताओ कि इसमें कितनी सचाई है। मैं पिशुन परायण व्यक्तियों से डरती नहीं।"

"हूँ," लूसी ने उत्तर दिया, "लोग औरों की तरह ही तुम्हारे बारे में भी गप्पें बघारते हैं। पिछले महीने मुझे एक वकील की औरत को समझाना पड़ा। वह तुम्हारे बारे में बिना कुछ जाने-बूझे ही बहस कर रही थी...तुम किसी का मुँह नहीं बन्द कर सकतीं।"

श्रीमती शैन्ते एक साथ ही अपने मन का गुबार बाहर निकालने लगीं—"हूँ, हम लोग अपनी भलमनसाहत की ही सज़ा भुगत रहे हैं। क्या पालिन के आने से पहिले हमलोग अपना काम आराम से नहीं चला लेते थे? अगर हम लोग उसे अपने पास न लाये होते तो वह आज न जाने कहाँ होती? पेरिस की न जाने किस गली में मारी-मारी फिर

रही होती ? उसके रुपयों के बारे में बहुत दिलचस्प बातें सुनने में आती हैं। उसके रुपयों से हमें मुसीबत के अलावा भला और क्या मिला ? हमारे घर की सारी तबाहियाँ इसकी साक्षी हैं। मेरा बेटा समुद्री बनस्पति के उस वाहियात धन्धे में कभी हाथ न लगाता, न वह बोनीविले को समुद्र के उत्पात से बचाने की कोशिश करता। यह सब पालिन की ही करतूत है। उसी ने उसके मन में यह ख़ब्त पैदा की। वह अपना स्वास्थ बर्बाद कर चुका है। अब आगे वह न जाने क्या करेगा ?

श्रीमती शैन्ते उस पन्द्रह हजार फ्रैंक के सम्बन्ध में अपना सारा गुस्सा उतारने लगीं। उसकी कटु स्मृति उनकी लिखने की मेज के आस-पास मँडराती हुई प्रतीत हो रही थी। बड़े कर्ज के अलावा अब भी हर रोज छोटी-छोटी रकमें ली जा रही थीं। कर्ज का बोझ बढ़ता ही जा रहा था। उसके विचार से पालिन के रुपयों में ही वह ज़हर था, जिससे कि उसकी ईमानदारी भ्रष्ट हो गयी थी। अब भ्रष्टाचार अपनी सीमा पर आ गया था। वह अपने सारे ऋण के लिए, अपनी सारी तबाही के लिए पालिन को ही कोसने लगी।

"ऐसे हठी जीव के लिए क्या कहा जाय ?" वह कहती गयी—"स्वभावतः वह बेहद कंजूस है, लेकिन साथ ही रुपयों को पानी की तरह बहाना भी जानती है। वह बोनीविले के उन मछुवाहों के लिए, जो कि हमारी हँसी उड़ाते हैं, बारह हजार फ्रैंक समुद्र में फेंकने को तैयार है। पड़ोस के तमाम भिखमंगों और दरिद्रों की परवरिश के लिए वह मुँह बाये रहती है, लेकिन मैं अभी एक पैसा माँगू तो उसे बुखार चढ़ आता है। तुम्हीं इसका भेद बताओ ! दूसरों के लिए सब कुछ लुटाने के ढोंग के साथ ही उसका दिल पत्थर का है, न जाने कितने सख्त पत्थर का बना है !"

बहुधा वेरोनिक बर्तन या चाय लेकर भीतर आ जाती। खड़ी होकर वह तमाम बातें सुनती और कभी-कभी हस्तक्षेप करने का भी प्रयास करती।

पाषाण हृदय ! रानी बिटिया पालिन का ? हाय राम ! मालिकिन, तुम यह कैसे कह रही हो ?"

श्रीमती शैन्ते तीखी निगाह से उसे चुप कर देतीं। फिर, मेज पर हाथ रख कर, जैसे खुद से ही बात कर रही हों, उलझा हुआ हिसाब बैठाने लगतीं।

"भगवान् की कृपा से अब मुझे उसके रुपये की निगरानी नहीं करनी है। फिर भी, मैं जानना चाहती हूँ कि कितना बाकी बचा है। सत्तर हजार नहीं,...देखो, गिन लिया जाय। उन लकड़ी के कुन्दों पर तीन हजार-फ्रैंक पहले ही महीने खर्च हो चुका है, हर महीने दान के लिए कम से कम दो सौ चाहिये। उसकी पेंशन का नब्बे फ्रैंक है। बड़ी तेजी से सब साफ होता जा रहा है। लूसी, सोचो, वह अपना सत्यानाश कर लेगी। हाँ, देखना, वह भीख माँगने लगेगी...और अगर वह अपना सत्यानाश कर लेगी, तो कौन उसे अपने पास बैठने देगा, कैसे वह अपना गुजर-बसर करेगी ?"

इस पर वेरोनिक अपने को रोक न सकी—"मुझे आशा है कि मालिकिन उसे घर से नहीं निकालेंगी ?"

"अरे रे, यह क्या बात है ?" उसकी मालिकिन क्रुद्ध होकर बोली—"तुम क्या बकवास कर रही हो ? वास्तव में किसी को निकालने का सवाल नहीं है...मैं सिर्फ यह कह रही हूँ कि जब किसी को इतनी बड़ी विरासत मिले तो उसे सब फूंक-ताप कर दूसरों पर बोझ नहीं बनना चाहिये...मेरी बच्ची, जाओ अपनी रसोंई में, मैं भी अभी आ रही हूँ !"

नौकरानी अपना विरोध भीतर ही दबाती हुई चली गयी। थोड़ी देर तक खमोशी छायी रही। लूसी चाय उड़ेलने लगी। शैन्ते के अखबार पढ़ने के अलावा और कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ रही थी। कभी-कभी वह विज्ञापन भी जोर-जोर से पढ़ने लगता था और लूसी से थोड़ी बातचीत कर लिया करता था।

"अपना काम करो। एक चिम्मच चीनी और डाल दो...अपने पिता का तुम्हें कुछ सन्देश मिला ?"

"कुछ भी नहीं।" उसने हँसते हुये उत्तर दिया।" लेकिन देखो। अगर मेरी जरूरत न हो तो मैं जा सकती हूँ। पालिन की बीमारी से तुम्हें अब छुटकारा मिल गया है...मैं जाना चाहती थी, लेकिन तुम्हीं ने मुझे रोक लिया।"

"उसका कोई सवाल नहीं है।" शैन्ते बोला—"जब तक पालिन ऊपर है, तुम्हारा यहाँ साथ रहना बहुत अच्छा लगता है।"

"अपने पिता के आने तक मैं ऐरोमांशे में रह सकती हूँ" लूसी आगे बोली—"मेरी एक चाची ने वहाँ किराये का मकान ले रखा है। पास-पड़ोस में तमाम लोग रहते हैं। समुन्द्र में नहाने का आनन्द ले सकती हूँ......सिर्फ मेरी चाची ही बड़ी जल्लाद औरत है!"

शैन्ते लूसी की भोली-भाली बातों पर हमेशा हँस दिया करता था। यद्यपि अपनी पत्नी के सामने वह प्रकट न करता। किन्तु वास्तव में उसे पालिन का ही अधिक मोह था। कितनी सहृदयता से वह उसकी सुश्रूषा करती थी। लेकिन, अपनी पत्नी को देखते ही शैन्ते के देवता कूच कर जाते थे और वह पुनः गुम-सुम हो कर अखबार पढ़ने लगता था।

श्रीमती शैन्ते पास आकर बोलीं—"सुनो कम से कम एक बात के लिये मैं पालिन को क्षमा नहीं कर सकती। उसने मेरा बेटा मुझसे छीन लिया।...भोजन की मेज के पास मुश्किल से वह पच्चीस मिनट भी नहीं रुकता है। जब भी कोई उससे बात करना चाहे तो वह अपना मुँह फुला लेता है!"

"जल्दी ही मैं चली जाऊँगी," लूसी बोली—"किसी को उसके पास बैठना चाहिये!"

श्रीमती शैन्ते ने ओठ बिचकाते हुये अपना सिर हिलाया जिन शब्दों को वह कहना नहीं चाहती थीं, आखिरकार वे उनके मुँह से

निकल ही पड़े। "हो सकता है। लेकिन एक जवान मर्द का किसी बीमार लड़की के पास हमेशा रहना सन्देहजनक है...उफ, मैं बात नहीं बना रही हूँ। जो कुछ समझा है, वही मैंने कहा है। अगर कोई मुसीबत भीतर छिपी है, तो मैं उसे रोकने में असमर्थ हूँ।"'

लूसी ने उसकी ओर बेचैनी से ताकते हुये कहा—"इसके आलावा उस कमरे में साँस लेना भी मुनासिब नहीं है। इसका पूरा अन्देशा है कि उसे उसके गले की बीमारी हो जाय...इस प्रकार की स्थूल लड़कियों के रक्त में संक्रामकता की सभी किस्में मौजूद रहती हैं। एक बात बताऊँ ?

ठीक, मैं यह नहीं समझती कि वह स्वस्थ है।

लूसी पालिन की पैरवी करती रही। उसका विचार था कि वह बहुत सहृदय है, बहुत उदार है। पालिन के प्रति कठोरता और अस्वस्थता के अभियोगों के विरुद्ध यही उसकी दलीलें थीं। वह और आनन्दपूर्ण स्थायित्व का वातावरण पसन्द करती थी और श्रीमती शैन्ते की सख्ती का प्रतिवाद किया करती थी। फिर भी प्रायः प्रतिदिन उनके पास बैठकर उसे जली-कटी बातें सुननी पड़ती थीं। उनकी शिकायतों पर हुँकारी भरनी पड़ती थी।

प्रत्येक शाम को उसी स्थान पर बैठ कर श्रीमती शैन्ते प्रायः इस तरह की बातें किया करती।

"नहीं, लूसी, मेरे बेटे को ऐसी पत्नी चाहिये जो..." और इसके आगे श्रीमती शैन्ते उन गुणों का वर्णन करतीं जिन्हें कि एक पूर्ण बहू में पाना चाहती थीं। अपनी आँखें लूसी के चेहरे पर स्थिर रखती, ताकि अनकही बातों को भी वह उनकी मुद्रा से समझ सकें।

लूसी से अच्छी और गुणवान् बहू का उन्होंने इस प्रकार वर्णन किया। "भली-भांति उसका लालन-पालन हुआ हो, पूर्ण युवती हो संसार का उसे कुछ अनुभव हो। अभ्यागतों का स्वागत-सत्कार करना

जानती हो, रुपवान् होने की अपेक्षा आकर्षक हो, इन सब बातों से आगे बहुत स्त्रैण हो", क्योंकि वे मर्दाना ढङ्ग की लड़की पसन्द करती थीं, जोकि कठोरताओं को सहन कर सके, आपदाओं का साहसपूर्वक सामना कर सके फिर उसके बाद सवाल था धन का। धन पर ही तो हर एक चीज का दार-मदार रहता है। लेकिन वे इसकी ज्यादा चर्चा नहीं करती थीं। वास्तव में दहेज की कोई बात नहीं है, लेकिन उनके बेटे की बड़ी-बड़ी योजनायें थीं और उसे ऐसी शादी की जरूरत नहीं थी जो उसे तबाह कर दे।

"देखो, बिटिया, अगर पालिन के पास एक दमड़ी न होती। अगर वह यहाँ केवल एक जोड़े ही कपड़े लेकर आई होती तो वर्षों पहले ही उसकी शादी हो गयी होती। मुझे चिन्ता तभी होती है, जब यह देखती हूँ कि किस तरह सारा रुपया उसके हाथ में गलता जा रहा है। अपने बचे हुये रुपयों के साथ भी वह न जाने क्या-क्या करेगी। नहीं, लजारे को कोई उससे अच्छी लड़की चाहिये। मैं उसे कभी भी ऐसी पागल औरत के हाथ में नहीं दूँगी जो उसे खाने-पीने में ही उलझा रखे और व्यर्थ की योजनाओं पर अपना रुपया लुटा दे।"

"उफ़, धन का कोई प्रयोजन नहीं है," लूसी आँखें नीचे किये उत्तर देती—"फिर भी इसकी आवश्यकता तो पड़ती ही है।"

उसके दहेज का जिक्र छिड़े बिना ऐसा लगा मानों दो सौ हजार फ्रैंक मेज पर रखे हों। लालटेन की मद्दिम रोशनी में चमक रहे हों। उनके अवलोकन और अनुभूति से श्रीमती शैन्ते का रोम-रोम पुलकित हो उठा। दूसरी लड़की के मनहूस साठ हजार फ्रैंक उन्हें व्यर्थ प्रतीत हुये और इस नवागन्तुक बालिका को उसके दहेज के साथ प्राप्त करना उन्हें श्रेयस्कर जान पड़ा। उन्होंने ताड़ लिया था कि पालिन की बीमारी के पहले उनका बेटा लूसी की ओर आकर्षित था। मान लो कि यह लड़की भी उससे प्रेम करती हो, तो इन दोनों की शादी क्यों न कर दी जाय? इसका बाप राजी हो जायगा। विशेष कर पारस्परिक

आशक्ति की स्थिति में तो जरूर ही । और वह इस आशक्ति को उत्प्रेरित करने लगीं। सायंकाल का शेष समय वे उत्तेजक वाक्यों को ही दुहराते हुये ही बिताया करतीं। "कितना भला है, मेरा लजारे ! कोई उसे जानता नहीं । तुम भी नहीं । तुम भी नहीं । लूसी ! तुम कल्पना नहीं कर सकती कि वह कितना उदार हो सकता है......उफ् ! मैं उसकी पत्नी के लिए चिन्ता नहीं करूँगी। जो भी उसे प्राप्त करेगी, निश्चय ही उसके असीम प्रेम की अधिकारिणी बनेगी !... हमेशा वह कितना स्वस्थ रहता है ! उसकी चमड़ी कितनी मुलायम और सफेद है !"

लूसी को ये विवरण बहुत ही विनोदपूर्ण प्रतीत होते । वह लजा जाती और हँसने लगती। स्वेच्छा पूर्वक वह रात-रात भर श्रीमती शैन्ते की बातें सुनती रहती। अपने बेटे की ओर से वे उसे कितना फुसलाया करती थीं। किसी सम्मानित दूती की भाँति वे गुप्त भेदों का भी जिक्र करतीं, ऐसे गुप्त भेदों का जिनकी चर्चा केवल दो महिलायें ही करती हैं।

लेकिन शैन्ते अखबार पढ़ते-पढ़ते ऊँघने लगा था। "क्या अभी सोने का वक्त नहीं हुआ" वह झिझकता हुआ बोला। फिर जैसे किसी नयी बात का स्मरण कर रहा हो आगे बोला—"तुम चाहे जो भी कहो, लेकिन पालिन बहुत अच्छी लड़की है। उस दिन मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहेगा, जब वह नीचे आयेगी और मेरे साथ बैठ कर खाना खायेगी।"

"हम सभी खुश होंगी," श्रीमती शैन्ते झुँझलाती हुई चिल्लायीं। "जिसके जो मन में आये वह कहे, बोले लेकिन उससे दूसरों की प्रशंसा पर आँच नहीं आ सकती, दूसरों की चर्चा करने पर रोक नहीं लगायी जा सकती।"

"प्यारी पालिन," छूटते ही लूसी बोली—"यदि यह सम्भव हो तो मैं उसकी आधी पीड़ा स्वयं झेलने के लिए तैयार हूँ...वह कितनी मधुर है, कितनी नेक और रहमदिल है !"

लालटेन लेकर आते हुए वेरोनिक ने पुनः हस्तक्षेप किया—"तुम्हें उसे अपनी सखी मानना बिल्कुल वाजिब है, लूसी रानी, क्योंकि उसके विरुद्ध किसी दुरभिसन्धि में सम्मिलित होने के स्थान पर तुम उसके रास्ते का काँटा साफ करने का गौरव प्राप्त कर सकती हो।" "बहुत अच्छा, किसी ने तुम्हारी राय नहीं माँगी है," श्रीमती शैन्ते गुर्राती हुई-सी बोलीं—"अच्छा हो कि तुम लालटेन साफ कर लो। जरा देखो तो, कितनी गन्दी हो गयी है!"

सभी उठ खड़े हुये। शैन्ते निचले महले के अपने कमरे में बन्द हो गया। लेकिन दोनों महिलायें जब पहले महले पर पहुँची, जहां कि दोनों की चारपाई आमने-सामने बिछी थीं, तो सहसा थोड़ी देर के लिए रुक गयीं। श्रीमती शैन्ते लूसी को एक क्षण के लिए अपने कमरे में खींचते हुये ले गयीं और वहाँ पुनः लजारे की चर्चा छेड़ दी। उसकी तस्वीरें दिखाने लगीं, बचपन से लेकर अब तक की विभिन्न घटनायें सुनाने लगीं।

लूसी अपने बिस्तर पर पहुँच कर तत्काल सो न सकी। लजारे का चित्र आँखों के सामने नाचने लगा। उसकी मां उसकी कितनी पैरवी करती है और किस तरह उसे उसके दिमाग में बैठाने की कोशिश करती है अनिद्रा से तंग आ कर वह इधर-उधर टहलने लगी। अँधेरे में लजारे की श्वेत वर्ण प्रतिमा उसे अपने पास आती हुई सी प्रतीत होती। कभी-कभी वह घबराकर बाहर झाँकने लगती कि कहीं लजारे बाहर दिख जाय। यह ख्याल आने पर कि इसी समय वह पालिन के पास होगा, उसकी उत्सुकता निराशा में परिणत हो जाती।

पहला हफ्ता बीत जाने के बाद से लजारे बिना दरवाजा खटखटाये हुये पालिन के कमरे में प्रवेश न करता। एक दिन, प्रातःकाल दरवाजा खोलते ही उसने देखा कि पालिन बिस्तर पर बैठी है और नग्न बाहों से अपने बालों में कंघी कर रही है।

"ओ हो, मुझे खेद है !" आँखें नीची कर वह धीरे से बोला।

"क्यों, क्या बात है ?" वह बोली, "मुझसे डर लगता है ?"

वह भीतर तक चला गया, लेकिन डर रहा था कि कहीं पालिन को लज्जा का अनुभव न करना पड़े। जब तक वह अपने बालों में कंघी करती रही, वह अपना मुँह दूसरी ओर किये रहा।

"हूँ, जरा मेरा कोई पेटीकोट निकाल दो !" वह शान्त स्वर में बोली—"वहाँ, पहले दराज में है।" लजारे उसकी ओर पेटीकोट बढ़ाकर खिड़की के पास खड़ा हो गया। एक पखवारा पहले, जब कि वह मौत के पँजे में थी, वह उसे नन्हीं लड़की की तरह अपनी गोद में उठा लिया करता था। उसकी नग्नता की ओर उसका तनिक भी ध्यान नहीं जाता था और अब उसके कमरे में अकेले आते हुये भी उसे सँकोच होता था। पालिन भी उसकी सकुचाहट देखकर सतर्क रहने लगी और शीघ्र ही अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए उससे कहना बन्द कर दिया।

"वेरोनिक, दरवाजा बन्द कर दो !" एक दिन बरामदे में लजारे की पद-चाप सुनकर वह बोली—"सब सामान एक किनारे कर दो और मुझे वह किताब दे दो !"

धीरे-धीरे पालिन के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। अब वह खिड़की के पास जाकर खड़ी हो सकती थी और दूर समुद्र पर बनने वाले बाँध का अवलोकन कर सकती थी। सात-आठ आदमियों को चींटियों की तरह रेंगते हुये साफ-साफ देख सकती थी। लेकिन पालिन खासतौर से लजारे का सफेद जैकेट और लूसी के नारंगी रंग के कपड़े देखने के लिए ही उत्सुक रहती थी। धूप में वे चमचमाते हुये नज़र आते थे। उनकी हर तरह की गतिविधि का वह निरीक्षण करती रहती थी।

"हूँ..., उन लोगों को देखना तुम्हें अच्छा लगता है, क्यों ?" वेरोनिक प्रतिदिन कमरे में आते ही कहा करती—"वास्तव में यह तुम्हारे लिये पढ़ने से अधिक उपयोगी है। मेरा तो कोई किताब देखकर सिर दुखने लगता है।"

थोड़ा रुक कर वेरोनिक आगे बोली—"आज कल लूसी रानी का रंग देखने लायक है। उसके कमरे में आजकल तेल-फुलेल और न जाने कितनी प्रसाधन सामग्रियों का ढेर लगा रहता है। उसके कमरे में जाओ तो तुम्हारी तबीयत मस्त हो जाय...हाँ, लेकिन इतना होते हुये भी वह तुम जैसी सुन्दर नहीं है।"

"उफ़, मैं तो एकदम गँवार छोकरी हूँ," पालिन ने मुस्कुराते हुये उत्तर दिया—"लूसी का ठाट बहुत ऊँचा है वह बहुत भव्य दिखाई पड़ती है!"

"हो सकता है। फिर भी उसके बदन पर मांस नहीं है—मैंने उसे प्रायः नहाते समय देखा है। अगर मैं पुरुष होती तो उसकी ओर तनिक भी आकर्षित न होती।" दोष-निरूपण की भावना से उत्तेजित होकर वह पालिन की बगल में खिड़की के पास खड़ी हो गयी और बाहर की ओर झांकने लगी।

"वह देखो उसे, उधर रेत पर बिल्कुल केकड़े की तरह दिखाई दे रही है। वैसे हम उसे बहुत दूर से देख रहे हैं। उसे किसी मकान की तरह बड़ी देखने की उम्मीद तुम नहीं कर सकती हो। लेकिन दरसल किसी को इतनी वाहियात शकल-सूरत का नहीं होना चाहिये...ओहो, लजारे उसे गोद में उठा रहा है, ताकि उसके जूते पानी में भीगने न पायें। यकीन मानो, वह उसको गोद में नहीं समा पा रही है! सच, कुछ ऐसे भी आदमी हैं जो अस्थि और चर्म के प्रेमी होते हैं...।"

वेरोनिक यह देखकर कि पालिन उसकी बातें उत्सुकता पूर्वक सुन रही है, खामोश हो गयी। इन दिनों वह जो कुछ सुनती और देखती थी वह उसके गले में अटक जाता था और उसे पीड़ित करने लगता था। शाम के वक्त होने वाली बातें, लजारे और लूसी के बेसाख्ता ठहाके, घर भर की कृतघ्नता, दिन प्रति-दिन की धोखा-धड़ी आदि सारी चीजें उसके दिमाग में गूँजती रहती थीं, उसके मन को कुरेदती रहती थीं। उसकी इच्छा होती कि ऊपर जाकर वह पालिन से सब बता दे,

किन्तु पालिन के पुनः बीमार हो जाने की आशंका से वह चुप रह जाया करती थी। सहसा उसे स्मरण हुआ कि वह कुछ आपत्तिपूर्ण शब्द बोल गयी है। स्थिति सम्भालने के लिए वह बात बनाती हुई बोली—

"भगवान् की दया से लजारे अस्थि और चर्म की ओर ध्यान नहीं देते हैं। वे पेरिस में रह चुके हैं। बहुत सुरुचि सम्पन्न हैं। तुम देख ही रही हो कि उन्होंने फिर उसे अपने से परे कर दिया है।"

वेरोनिक इस डर से कि कदाचित पुनः कुछ अनावश्यक बातें मुँह से निकल जायें, झाड़ लेकर सफाई के काम में लग गयी। पालिन विचार-लीन होकर बाहर की ओर निहारती रही। धीरे-धीरे क्षितिज पर अन्धकार फैल गया। किन्तु, मजदूरों की काली शकलों के बीच लूसी के नीले और लजारे के सफेद कपड़े अब भी झलक रहे थे।

पालिन के प्रायः पूर्णतया रोग-मुक्त होते ही, शैन्ते का गठिया प्रबल वेग से उभर आया और उसे दुर्बल होने के बावजूद नीचे जाने के लिए बाध्य होना पड़ा। अपने कमरे से पहले पहल बाहर आते ही उसे रोगी की शैया के पास जाना और उसके पास बैठना पड़ा। जैसा श्रीमती शैन्ते ने कुढ़ते हुये कहा, घर नियमित रूप से अस्पताल बना हुआ था। पालिन के बाद अब उसका पति बिस्तर से बँध गया था। कई दौरों के बाद उसका संपूर्ण शरीर रोग-पीड़ित हो गया था। रोग पैरों से घुटनों तक और कन्धों से हाथों तक फैल गया था। उसके शरीर के एक-एक जोड़ बुरी तरह दुखने लगे थे। उसका गठिया दीर्घ स्थायी और असाध्य था। और इससे वह पूर्णतया अपंग-सा बन गया था।

"हाय राम कैसा तेज दर्द है!" शैन्ते चिल्लाया "मेरा बाँया पैर लकड़ी की तरह सुन्न हो गया है। न मैं अपना पैर ही घुमा सकता हूँ और न घुटना ही...और अब मेरे कन्धे भी दुखने लगे हैं। जरा इन्हें छू कर देखो तो!"

पालिन ने देखा कि उसका बाँया कन्धा बुरी तरह जकड़ उठा है। वही जोड़ उसे सबसे ज्यादा तकलीफ दे रहा था। शीघ्र ही पीड़ा

असहनीय हो उठी।

"मुझसे रहा नहीं जाता है। मेरी मदद करो...। लगता है जैसे मेरी हड्डियों पर आरे चल रहे हैं...कोशिश करो और मुझे थोड़ा उठा दो!"

घण्टे में बीस बार उसे इधर से उधर करवट बदलनी पड़ती थी। अब भी इतनी कमजोर थी कि वह अकेले ही उसे सहारा देने की हिम्मत नहीं कर पाती थी। धीरे से वह बोली, "वेरोनिक इसे उठाने में तनिक मेरी मदद करो।"

"नहीं, नहीं," वह चिल्लाया, "वेरोनिक नहीं,। वह मुझे कोंच डालती है।"

अपने अंग अंग की पीड़ा से वह छटपटा रहा था। किसी भी तरह से राहत पाना उसके लिये नामुमकिन हो गया था। पालिन उसकी झिड़कियों का पालन करती हुई केवल वहाँ खड़ी रह सकती थी। पल पल पर उसे करवट बदलवाने के लिए तैयार रहती थी। दर्द ने शैन्ते को खूँखार और वहशी बना दिया था। ऐसी बेमुरव्वती से वह उससे बोलता था जैसे किसी भोंदू नौकर को फटकार रहा हो।

"उफ, तुम वेरोनिक की तरह ही बदतमीज हो! मेरे बदन में इस तरह अपनी उँगलियां मत धँसाओ। किसी डाक्टर की तरह ही तुम क्रूर और निर्दयी हो। निकल जाओ मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे छुवो।"

अविचल धैर्य के साथ पालिन उनकी झिड़कियाँ सुनती रहती थी। कभी भूल कर भी कोई वचन नहीं बोलती थी बल्कि और भी अधिक कोमलता और विनम्रता के साथ उसकी छोटी छोटी आज्ञाओं का पालन करती रहती थी। जब देखती कि वह बेहद चिड़चिड़ा हो उठा है तो थोड़ी देर के लिये पर्दे के पीछे जाकर छिप जाती, इस आशा से कि वह उसे न देख कर स्वयं ही शान्त हो जायगा। बहुधा वह चुपचाप रोने लगती थी, बूढ़े की उज्जड्डता से तँग आकर नहीं बल्कि उसे इस प्रकार

निर्दय बनाने वाली उसकी असह्य पीड़ा का स्मरण कर। अपनी कराहटों के बीच वह उसे भुन-भुनाते हुये सुना करती थी। वह चली गयी। कितनी हृदयहीन है!...मैं अपने पास किसी को नहीं देखना चाहता। भगवान् न जाने मेरे किस अपराध से रुष्ट होकर मुझे इतनी ताड़ना दे रहा है!"

फिर थोड़ी देर तक कांखने-कराहने के बाद और ज्यादा जोर-जोर से चीखने लगता था—"पालिन, तुम कहां मर रही हो? आओ, थोड़ी मेरी मदद करो, थोड़ा मुझे सहारा दो...मुझसे ऐसे नहीं रहा जाता है—क्या तुम मुझे बाँये करवट नहीं लिटा सकती हो?"

कभी-कभी वह सहिष्णु और विनम्र बन जाता। पालिन से अपनी निर्दयता के लिए क्षमा माँगने लगता। आँखें मूँदकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगता। जब वह बहुत जोर से चिल्लाने लगता तो पालिन ठगी सी उसके पास बैठ जाती। हर बार वह डाक्टर कैजेनोव के साथ दरवाजे तक जाती और उससे निवेदन करती—"क्या तुम उसे मार्फिया का इन्जेक्शन नहीं दे सकते? उसकी चिल्लाहट सुनकर मेरा कलेजा दहल जाता है!"

डाक्टर इन्कार कर देता। "क्या फायदा? दर्द और तेज हो जायगा। जैसा है, उसी तरह चलने दो, वह पल्ले सिरे का पेटू है। अपने दुर्व्यसनों का ही दण्ड भुगत रहा है। उसका रोग असाध्य है। किसी नयी दवा का प्रयोग व्यर्थ होगा। उसे सिर्फ दूध पिला दिया करो और बिस्तर पर इसी तरह तड़पने-छटपटाने दो। वह परहेज तो करता नहीं। फिर दवा क्या असर करेगी? लेकिन बेटी, अगर तुम फिर बीमार पड़ गयीं तो बहुत बुरा होगा। अकल से काम लो। तुम्हें अभी अपने स्वास्थ्य का निरन्तर ध्यान रखने की आवश्यकता है।"

फिर भी वह अवकाश न लेती। हमेशा अपने चाचा के पास ही बनी रहती। उसकी चीख-पुकार प्रतिक्षण उसके कान में गूंजती रहती।

अपनी प्रबल सेवा-परायणता में वह लजारे और लूसी को भी भूल जाती। कभी-कभी सामना हो जाने पर उनसे दो-चार बातें कर लिया करती। भोजन के कमरे में जाने पर यदा-कदा ही उन्हें देख पाती। बाँध का काम खत्म हो चुका था। पिछले हफ्ते से लगातार वर्षा के परिणाम स्वरूप लजारे और लूसी घर में ही पड़े रहते थे। अचानक जब उसे स्मरण होता कि वे दोनों साथ-साथ हैं तो उन्हें अपने निकट ही समझ कर उसे बहुत हर्ष होता।

श्रीमती शैन्ते इतनी व्यस्त कभी नहीं दिखाई पड़ी थीं। पति की बीमारी का लाभ उठा कर वह अपना कागज-पत्र दुरुस्त करने और हिसाब-किताब बैठाने में जुटी हुई थीं। हर तीसरे पहर वे अपने कमरे में समाधिस्थ हो जाया करती थीं। लूसी लजारे के पास चली जाती थी। अकेला समय बिताना उसके लिए असह्य था। दूसरी मँजिल के बड़े कमरे में, जोकि पालिन की बहुत समय तक पढ़ने और खेलने की जगह थी, भोजन के समय तक साथ ही रहने की उनकी आदत पड़ गयी थी। लजारे की लोहे की सँकरी चारपाई अब भी वहीं परदे के पीछे पड़ी थी। पियानो गर्द-गुबार से ढका हुआ एक कोने में पड़ा था और बड़ी मेज कागजों और किताबों के ढेर में छिप गयी थी।

लजारे के स्नायु इन दिनों तने-तने से रहते थे। बाँध का विनाश हो जाने से एक बहुत बड़े बखेड़े से उसे फुर्सत मिल गयी थी। अपने विचारों को कार्य रूप में परिणत देख कर प्रसन्न होने का अवसर उसे कभी प्राप्त नही हुआ, फिर भी अब उधर से वह निश्चिन्त हो गया था। अब उसके दिमाग में दूसरी योजनायें चक्कर काटने लगी थीं। भविष्य के सम्बन्ध मे वह उलझी-बिखरी योजनायें बनाता। केन में कोई सम्मानपूर्ण पद प्राप्त करने की बात सोचता, किन्तु अब भी वह गम्भीर कदम नहीं उठा पा रहा था। आलस्य से पीछा छुड़ाना उसके लिए दुश्वार-सा प्रतीत होता था। अपनी शक्ति और साहस से वह एक दम उदासीन-सा था। पालिन की बीमारी से मिलनेवाले गम्भीर आघात ने उसकी

निराशा की भावनाओं को और भी अधिक उद्दीप्त कर दिया था। वह हमेशा खुली हवा की कामना करता रहता था। अपने भीतर विचित्र शारीरिक उत्तेजना का अनुभव करता रहता था। लूसी की उपस्थिति ने उसके स्वाभाविक उत्ताप को और अधिक प्रज्वलित कर दिया था। वह बिना अपने कन्धे मटकाये हुये, जोर-जोर से सांस लेते और हँसते हुये उससे बोल नहीं पाती थी। और, उसकी बिल्ली के शिशु जैसी चपलतायें, उसकी मनमोहिनी स्त्रैण सुगन्ध, बाधित करनेवाली उसकी समस्त अनुरागपूर्ण अंग-भंगिमायें उसके मन में भीतर तक पैठ गयीं। वह उसके प्रति कामुकतापूर्ण और विकल कामना में निमग्न हो उठा।

बचपन की एक दोस्त के साथ, अपनी मां के ही निजी घर में वह वस्तु असम्भव थी और उच्चता की उसकी भावना उस समय उसके हाथों को सहसा अशक्त बना कर बटोर लेने के लिये बाध्य कर देती थी, जबकि वह खेल-खेल में उसे पकड़ लिया करता था और रग-रग में उष्ण रक्त प्रवाह का अनुभव करने लगता था। इस संघर्ष में कभी भी वह पालिन के विचार से अपने ऊपर रोक नहीं लगाता था। वह उसके बारे में कुछ भी नहीं जानती होगी। अनेक पति प्रायः युवती नौकरानियों से सम्बन्ध स्थापित कर अपनी पत्नियों को धोखा दिया करते हैं। और रात में वह किस्से गढ़ा करता। वह सोचता कि वेरोनिक से तंग आकर उसे निकाल दिया गया है और लूसी बिल्कुल एक ऐसी छोटी-सी नौकरानी ही है, जिसके पास वह नंगे पांव जा सकता है। कैसी थका देनेवाली परिस्थितियाँ आ गयी थीं! सुबह से लेकर रात तक वह प्रेम और स्त्री के सम्बन्ध में ही सोचता रहता था। प्रायः दुर्वचन बोलने लगता था। औरतें तमाम बुराइयों की जड़ हैं वे मूढ़ और अनेक आडम्बर रचने वाली होती हैं। और इच्छायें जागरित कर वेदना को स्थायी बना देती हैं; और प्रेम विभ्रम के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वह जन्म लेनेवाली भावी पीढ़ियों की स्वार्थपूर्ण प्रेरणा ही तो है। वह शॉपेनहार की समस्त स्थापनाओं का वर्णन करता। उत्तेजित होकर उनका ऐसा उदण्डतापूर्ण

विवरण सुनाता कि लूसी ठकरा मार कर रह जाती, उत्तरोत्तर उसके प्रति लजारे का प्रेम बढ़ता गया। उसकी बर्बर वितृष्णा से उद्दीप्त अनुराग के अंकुर फूट निकले और उसने अपने को इस नये प्रेम प्रवाह में अपने समूचे मूलभूत उत्साह के साथ धकेल दिया। इसी प्रेम में वह अनवरत उस सुख की खोज करने लगा जो कि उसके लिए सदैव दूभर था।

लूसी की ओर से बहुत समय तक हाव-भाव प्रदर्शन के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। उसे प्रिय थे—सहमत होने योग्य मनुष्यों का कोमल अवधान, मधुरस्वर में कृतज्ञता-ज्ञापन और कृत्रिम सम्बन्ध। यदि लोग उसके प्रति अभिरुचि लेना बन्द कर देते थे तो वह खोयी-खोयी और उदास रहने लगती थी। उसकी इन्द्रियाँ अब भी क्वाँरी और सुप्त थीं और वह अनावश्यक बकवाद और विवाह पूर्व-प्रेम के समय की विकार शून्य घनिष्टता के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहती थी। जब लजारे पल भर के लिए उसे पत्र लिखना या उसके आकस्मिक रूप से खिन्नता के आकस्मिक उद्वेग में तल्लीन होना भूल जाता तो वह इतनी अप्रसन्न हो उठती कि वह उपेक्षा का खतरा मोल लेते हुये उसे चिढ़ाने और उत्तेजित करने लगती। तदनन्तर वह दिन भी आया, जबकि अपनी मुलायम गर्दन पर युवा पुरुष की उष्ण साँसों का अनुभव करते हुये वह उसके पाश में आबद्ध हो उठी। छात्रावासीय विद्यालय के दीर्घ निवास काल में वह बहुत सारी चीजें जान चुकी थी, उन सभी बातों से अवगत थी जिनसे कि उसे डर मालूम होता था और उसके बाद वह संभाव्य उपद्रव की मधुर एवं समस्त प्रत्याशा की स्थिति में रहने लगी। यह बात नहीं थी कि उसे इसकी तनिक भी अभिलाषा थी या इसके सम्बन्ध में स्पष्टरूप से सोच सकती थी। इसकी उपेक्षा करने में समर्थ होने का उसे पक्का विश्वास था, फिर भी वह अपने को इसके प्रति उभारने में कभी नहीं आने देना चाहती थी, समर्पण करने और इसके दमन की प्रवृत्ति के बीच उसके स्त्रीत्व के सन्तोष के लिए यह कृत्रिम द्वन्द अत्यन्त अनिवार्य बन गया था।

ऊपर की मंजिल के बड़े कमरे में लजारे और लूसी एक दूसरे के और ज्यादा नजदीक खिंच जाते थे, इधर समूचा परिवार उनके परिणय के लिए अभिसन्धि करता हुआ-सा प्रतीत हो रहा था। लजारे आलस्य और एकान्तता से रूग्ण था। उधर लूसी श्रीमती शैन्ते से अपने पुत्र के आंतरिक विवरण सुन कर स्तब्ध सी हो उठी थी। नीचे गठिया से जर्जर पिता की चिल्लाहटों से बचने के बहाने दोनों ने वहाँ शरण सी ले रखी थी, और वे बिना कोई किताब छुये, बिना पियानों खोले पूर्णतः आत्मोन्मुख होकर अन्तहीन वार्तायें करते हुये वहां रहा करते थे।

उस दिन, जबकि शैन्ते की बीमारी पराकाष्ठा पर पहुँच गयी, पूरा घर उसकी चीखों से दहल उठा। कत्ल होनेवाले जानवरों के गिरोह की तरह सभी एक जगह इकट्ठा हो गये। भोजन के पश्चात् श्रीमती शैन्ते क्रुद्ध कर बोलीं—"मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकती। मैं भी अब पागल होकर चिल्लाने लगूंगी। अगर कोई मुझे पुकारेगा तो मैं लिखने के लिए अपने कमरे में चली जाऊँगी। और लजारे, तुम चटपट लूसी को अपने कमरे में ले जाओ। अपने को भीतर बन्द कर लो, उसका दिल बहलाने की कोशिश करो, क्योंकि उसे पर्याप्त हास-का अवसर नहीं मिल रहा है। हाय, बेचारी लुसिया...!

श्रीमती शैन्ते ने दूसरी मंजिल के अपने कमरे का किवाड़ फट से बन्द कर लिया। लजारे और लूसी भी ऊपर के अपने विश्राम- कक्ष में चले गये।

पालिन पुनः अपने चाचा के पास जाकर बैठ गयी। अकेली वही इस प्रकार की वेदना से द्रवित होकर पूर्णतया शान्त बनी थी। अगर वह वहां बैठने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती थी तो बेचारे बीमार को कम से कम अकेले में न तड़पने का सुकून तो दे ही सकती थी। उसका ख्याल था कि चाहे उससे बिना बोले भी जब तक वह उसकी ओर देखती रहेगी, तब तक मरीज अपना दर्द ज्यादा बहादुरी के साथ बरदाश्त करता रहेगा। घन्टों वह उसके बिस्तर के पास इस तरह बैठी रहती

और अपने सहानुभूतिपूर्ण नेत्रों से रोगी को शान्त रखने में उसे थोड़ी सफलता भी प्राप्त हुई। लेकिन आज वह सिर औंधा किये हुये, दोनों हाथ अगल-बगल फैलाकर दर्द से कराह रहा था और पालिन की ओर देखता भी नहीं था। होता यह कि पालिन के सामने आ जाने पर वह और भी ज्यादा सिकुड़-बटुर जाता।

चार बजे के करीब पालिन संत्रस्त स्थिति में दरवाजा खुला छोड़कर वेरोनिक को खोजती हुई रसोई घर में गयी। तुरन्त ही वह वापस आ जाने वाली थी।

"हमें कुछ न कुछ करना ही चाहिये," वह कातर स्वर में बोली। "मैं ठण्डे पानी के फाहे देना चाहती हूँ। डाक्टर का कहना है कि इससे नुकसान होगा लेकिन कभी-कभी यह फायदा भी करता है—मुझे थोड़ा सा कपड़ा चाहिये।"

वेरोनिक कुढ़ गयी।

"कपड़ा! मैं कुछ उपरनों के लिये अभी ऊपर गयी थी और वहाँ मेरा अच्छा स्वागत हुआ। लगता है कि हमें उनसे किसी चीज के लिये कहना नहीं चाहिये। परिस्थितियाँ कितनी विचित्र हो उठी हैं!"

"अच्छा लजारे से तो कहो!" पालिन आगे बोली।

लेकिन नौकरानी गुस्से में उसकी बात अनसुनी ही कर गयी। "हूँ, सच, वे तो एक दूसरे का मुँह चाटते हुये और भी व्यस्त हैं!"

"क्या मतलब?" पालिन लाल-पीली पड़ती हुई बोली।

वेरोनिक उसकी वाणी से भयभीत होकर इतने समय से काबू में किये हुये भेद को छिपाने की कोशिश करने लगी। और कुछ कहना वाजिब न समझ कर वह झूठ बोल कर बात बनाने का उपाय सोचने लगी। पूर्व सतर्कता के रूप में उसने पालिन की कलाई पकड़ ली लेकिन उसने सहसा अपना हाथ छुड़ा लिया और गुस्से से काँपती हुई पागलों की तरह सीढ़ियाँ फाँदने लगी। नौकरानी को उसके पीछे

जाने का साहस नहीं हुआ। पूरा घर सोया हुआ सा मालूम हो रहा था। ऊपर की मंजिलों पर खामोशी छायी थी और प्रशान्त वातावरण में केवल शैन्ते की कराहट ही गूँज रही थीं। पालिन हाँफती-दौड़ती पहली मंजिल पर पहुँची और वहाँ अपनी चाची के पास से भागी, वह सन्तरी की तरह रखवाली करती हुई-सी खड़ी थीं। शायद काफी देर से वह वहां निगहबानी में लगी हुई थीं।

"कहाँ जा रही हो?" उसने पूछा।

पालिन गुस्सा और झुँझलाहट की वजह से कुछ बोल नहीं पायी।

"मुझे चली जाने दो!" आखिरकार वह भुनभुनायी।

और उसका चेहरा इतना भयानक बन गया कि श्रीमती शैन्ते घबरा कर पीछे हट गयीं। फिर वह दूसरी मंजिल पर एक बार फिर तेजी के साथ दौड़ी। उसकी चाची बिना कुछ चिल्लाये हाथ उठा कर रह गयी। पालिन के दिमाग में पहले भी इस तरह का तूफानी दौरा आ जाया करता था और शुरू जवानी के दिनों में वह विध्वंस की स्थिति में पहुँच जाया करती थी। बहुत समय से अब उसका ख्याल था कि यह बीमारी दूर हो गयी है किन्तु ईर्षा की तूफ़ानी हवा ने इस बुरी तरह उसे झकझोर दिया था कि वह बिना धक्का खाये हुये रुक नहीं सकी।

ऊपर पालिन लजारे के कमरे के दरवाजे पर पहुँची और जोर से उसे धक्का दिया। सिटकिनी लच गयी और दरवाजा फट से खुल गया। भीतर जो कुछ देखा उससे वह और उन्मत्त हो उठी। लूसी लजारे के बाहुपाश में आबद्ध थी और लजारे के चुम्बनों को बिला किसी प्रतिरोध के प्रायः विमूर्छित सी होकर सहन कर रही थी। उन्होंने निःसन्देह परिहास में ही इसका समारम्भ किया था किन्तु खेल बुरी तरह से खत्म हो रहा था।

क्षण भर के लिये जड़ता छा गयी। तीनों एक दूसरे की ओर

ताकते रहे। अन्ततः पालिन चिल्ला पड़ी—"उफ, तुम...फूहड़, निर्लज्ज...!"

यह था नारी का विश्वासघात जिसने उसे सर्वाधिक विक्षिप्त कर दिया था। घृणा से मुँह बिचका कर उसने लजारे को तरह दे दी थी। बच्चे की तरह उसकी कमजोरियों से वह बहुत पहले से ही वाकिफ थी। लेकिन उसके प्रति अपना घनिष्ट अनुराग जताया करती थी। यह औरत जो कि उसके पति को उससे उस समय छीन रही थी, जबकि वह नीचे एक मरीज की तीमारदारी कर रही थी! उसने उसका कन्धा पकड़ लिया, उसे झकझोरने लगी और उसका मन हुआ कि वह उसे नीचे ढकेल दे।

"बोलो, क्यों ऐसा किया?...यह तुम्हारा कपट है, विश्वासघात है, सुन रही हो?"

लूसी हक्का-बक्का, आँखें फाड़े हुये धीमे से बोली—"उसीने मुझे पकड़ लिया, करीब-करीब उसने मेरी हड्डियाँ ही तोड़ दीं।"

"हुँह? बेवकूफ! अगर तुमने उसे ढकेल भी दिया होता तो वह रोने लगता!"

कमरे के दृश्य ने क्रोधाग्नि को और भी अधिक प्रबल कर दिया; लजारे का कमरा, जहाँ उन्होंने एक-दूसरे को प्यार किया था, जहाँ उसने भी उस युवक की उत्तेजना पूर्ण साँसों का अनुभव किया था। इन सब बातों की स्मृति से उसके तन-बदन में आग भड़क उठी। इस स्त्री से वह कैसे बदला ले सकती थी? आखिरकार शर्म से आँखें नीची किये हुये लजारे को उस समय प्रायः हस्तक्षेप करना पड़ा जब कि उसने लूसी को सहसा इतने जोर से धकेल दिया कि उसका सिर आलमारी से जा टकराया।

"मैं कह रही हूँ कि मुझे स्वयं अपने पर भी विश्वास नहीं है!... निकल जाओ!"

और इस क्षण के बाद उसे किसी भी चीज का ख्याल नहीं रहा। कमरे से वह लूसी के पीछे-पीछे दौड़ पड़ी और उसी तरह चिल्लाती हुई उसे गलियारे से नीचे तक घसीट लायी।

"निकल जाओ! निकल जाओ!...अपना सर-सामान ले लो और निकल जाओ!"

इसी बीच श्रीमती शैन्ते गुमसुम नीचे उतरती हुई आयीं। घटना की गम्भीरता से उन्हें बीच में बोलने का मौका नहीं मिला था, लेकिन अब उनकी जबान शान पर चढ़ गयी। हाथ हिलाकर उन्होंने अपने बेटे को अपने कमरे में बन्द हो जाने का हुक्म दिया। फिर अचरज का दिखावा करते हुये उन्होंने पालिन को खामोश करने की कोशिश की। वह लूसी को उसके सोने के कमरे तक खदेड़ कर अब भी चिल्ला रही थी, "निकल जाओ! निकल जाओ!"

"तुम चाहती क्या हो? वह कैसे निकल सकती है? क्या तुम पागल हो गयी हो?"

पालिन सारा किस्सा बयान कर गयी। उसे मर्मान्तक आघात पहुँचा था। उसके जैसे सीधे-सादे स्वभाव के लिये यह सर्वाधिक लज्जा-जनक और अक्षम्य कार्य था। इससे उसकी हार्दिक निश्छलता और प्रेम-परायणता को कस कर चोट लगी थी। जितना ही इसके बारे में वह सोचती, उतना ही अधिक विक्षिप्त हो उठती। कोई एक बार अपना हृदय देकर उसे वापस नहीं ले सकता है!

"निकल जाओ? फौरन अपनी पेटी उठाओ! निकल जाओ!"

लूसी, नितान्त पराजित और आत्म रक्षार्थ एक भी शब्द पाने में असमर्थ, एक दराज़ खोल कर कपड़े समेट रही थी। किन्तु श्रीमती शैन्ते तुरत आ धमकीं।

"रुक, लुसिया!...क्या मैं अपने ही घर में नौकरानी हूँ? यहाँ कौन हुक्म देने और लोगों को बाहर निकालने का साहस कर सकता है? यह बहुत अरुचिपूर्ण कार्य है, हम किसी बाजार में नहीं खड़े हैं!"

"तुमने सुना नहीं ?" पालिन चिल्लायी। "मैंने अभी-अभी इसे लजारे के साथ देखा है...वह इसे प्यार कर रहा था।"

श्रीमती शैन्ते ने अपना कन्धा हिलाया। उनकी समस्त संचित घृणा लज्जाजनक सन्देह की एक अभिव्यक्ति में फूट पड़ी।

"वे सिर्फ मज़ाक कर रहे थे, इसमें कौन-सा आक्षेप है?...और जब तुम चारपाई पर पड़ी थी और वह तुम्हारी देखभाल कर रहा था तो क्या जो कुछ भी तुम दोनों कर रहे थे, उसमें हम लोग टाँग अड़ाने गये थे?"

पालिन की उत्तेजना अकस्मात् हवा हो गयी। अपने प्रति यह अभियोग सुनकर वह स्तब्ध रह गयी। तो अब अपराधिनी वही थी और उसकी चाची सबसे भयानक चीजों का विश्वास करती हुई-सी प्रतीत हुई!

"तुम्हारा क्या मतलब है?" वह धीरे से बोली—"अगर तुम्हें इसका विश्वास था तो अपने घर में अवश्य ही इसकी अनुमति नहीं देनी चाहिये थी?"

"क्यों? तुम काफ़ी सयानी हो चुकी हो! लेकिन मेरा पुत्र कुपथ-गामी नहीं बनेगा। दूसरी स्त्रियाँ भी सम्मान-योग्य हैं और मेहरबानी करके उन्हें अकेले ही रहने दो।"

पालिन क्षण भर अवाक् खड़ी रही। उसकी बड़ी-बड़ी मासूम आँखें श्रीमती शैन्ते पर टिकी थीं और वे अपनी आँखें दूसरी ओर फेर ले रही थीं। इसके बाद वह संक्षेप में कहती हुई अपने कमरे में चली गयी। "बहुत अच्छा, खुद मैं ही यहाँ से चली जाऊँगी।"

पुनः निस्तब्धता छा गयी। इस आकस्मिक शान्ति के बीच शैन्ते की कराहें फिर गूँजने लगीं। धीरे-धीरे उसकी कराह इतनी ज्यादा तेज हो गयी थी कि और सभी आवाजें इसी में डूब कर रह गयीं।

और अब श्रीमती शैन्ते क्रोध में अपना सन्देह प्रकट कर दिये जाने पर खेद करने लगीं, उन्होंने अनुभव किया कि वे अपरिहार्य क्षति कर

चुकी हैं। यह सोचकर कि पालिन तत्काल ही अपनी धमकी को कार्य रूप में परिणत कर सकती है, वे चौकन्नी हो उठीं।

ऐसे हठी जीव के साथ जो न हो जाय, वही कम है। और जब उनकी पोषिता उनके झगड़े का किस्सा सुनाती हुई गाँव-गाँव घूमेगी तो लोग उनके और उसके पति के बारे में भला क्या कहेंगे? वह डाक्टर कैजेनोव के घर में शरण ले सकती है और इससे पास-पड़ोस में भयंकर कलंक फैल जागया। इन सब चिन्ताओं की तह में श्रीमती शैन्ते सबसे ज्यादा इस भय का अनुभव करने लगीं कि उनसे खोये हुये रुपयों के लिए भी जवाब तलब किया जा सकता है।

"चिल्ला मत, लुसिया!" वे अपना क्रोध जाग्रत करती हुई बोलीं। "देख, तू उसकी गलती से अजीब मुसीबत में पड़ गयी है। और वह इतनी खूँख्वार है कि शान्ति से रहना असम्भव हो गया है!...तू घबरा मत! मैं कोशिश करूँगी और सब मामला दुरुस्त कर लूँगी।"

"मेरी बात सुनिये, मेहरबानी कर के मेरी बात सुनिये," लूसी बोली, "मुझे जाने दीजिये। यहाँ रुकने से मुझे बहुत दुःख होगा। वह बिल्कुल ठीक है। मैं जाना चाहती हूँ।"

"आज रात नहीं, किसी भी हालत में नहीं मैं तुम्हें तुम्हारे बाप को सौंप दूँगी। एक मिनट रुको, मैं ऊपर जाकर देखूँगी कि क्या वह सचमुच अपनी पेटी निकाल रही है।"

श्रीमती शैन्ते धीरे से उठ कर पालिन के दरवाजे के पास गयीं। उन्होंने सुना कि वह तेजी से इधर से उधर भाग-दौड़ कर रही है, दराजों को खोल और बन्द कर रही है। क्षण भर के लिए उन्होंने भीतर जाने और समझौता करने का इरादा किया, ताकि समस्त मनोमालिन्य अश्रु-प्रवाह में बह निकले। लेकिन ऐसा करने में उन्हें हिचक महसूस होने लगी। उन्हें ख्याल आया कि मेरा गुस्सा भड़क उठेगा और मैं उस बच्ची के सामने बाही-तबाही बकने लगूँगी, और इससे उनकी घृणा और प्रबल

हो उठी। दरवाजा खटखटाने के बजाय वे नीचे रसोई में चली गयीं। उनके दिमाग में एक सूझ आयी।

"अभी बिटिया रानी ने जो झमेला खड़ा कर दिया, उसके बारे में क्या तुमने कुछ सुना है ?" उन्होंने वेरोनिक से, जो कि जल्दी-जल्दी बर्तन माँजने लगी थी पूछा।

नौकरानी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। सिर झुकाये अपने काम में ही लगी रही।

"वह काबू के बाहर हो रही है। मैं खुद उससे अपनी कोई भी बात नहीं मनवा सकती हूँ। जरा सोचो, अब वह हमें छोड़कर चली जाना चाहती है, हाँ, वह अपना सब सर-समान समेट रही है जाओ और उसे समझाने की कोशिश करो ?"

और अब भी कोई उत्तर न पाने पर वे बोलीं।

"क्या तुम बहरी हो गयी हो ?"

"मेरे जवाब न देने की वजह यह है कि मुझसे यह काम नहीं होगा !" वेरोनिक एक थाली तेजी से घिसती हुई आग बबूला हो कर बोली—"उसका चला जाना बिल्कुल मुनासिब है। अगर मैं उसकी जगह होती तो बहुत पहले ही चम्पत हो गयी होती।"

श्रीमती शैन्ते हक्का-बक्का हो कर उसकी बातें सुनती रहीं।

"मैं बकवादिनी नहीं हूँ, मालिकिन ! लेकिन इससे मैं अपना मुँह सी नहीं सकती हूँ...ऐसा ही होना था तो मैं उस बच्ची को, जिस दिन आप ले आयीं, उसी दिन समुद्र में फेंक देती। मैं किसी को उसे कष्ट पहुँचाता हुआ नहीं देख सकती हूँ। तुम सभी उसके साथ ऐसा निर्दय व्यवहार कर रहे हो कि अब जो कोई उसे छूने का भी दुस्साहस करेगा, मैं उसका सिर तोड़ दूँगी...उफ, तुम चाहे जो करो, मुझे इसकी परवाह नहीं है। तुम मुझे नोटिस दे सकती हो। मैं उसे पूरी कहानी बता दूँगी। हाँ, हाँ, वह सब जो तुम करती रही हो, मैं उससे कह दूँगी, क्योंकि तुम सब लोग बड़ी सज्जनता का आडम्बर रचते हो !"

"चुप रह, कमबख्त !" मालिकिन इस नये दृश्य से झुंझला कर बोलीं।

"नहीं, मैं चुप नहीं रहूँगी...यह बेहद बुरी बात है, सुनती हो ? वर्षों से मैं अपना गुस्सा पीती आ रही हूँ। क्या उसकी दौलत उड़ा लेना ही तुम्हारे लिए काफी नहीं था ? क्या तुम उसका कलेजा छलनी करके ही दम लोगी ? उफ, जो कुछ मैं जानती हूँ, मैंने तुम्हें यह सब षडयंत्र रचते हुये देखा है...और मेरी बातों पर ध्यान दो, लजारे बाबू इस तरह के षड़यंत्रकारी नहीं हो सकते थे, लेकिन आखिर वे तुम्हारे ही पेट के जाये तो हैं। अपने स्वार्थों से उन्होंने उसे जबरदस्त सदमा पहुँचाया है।... भगवान् के लिए मेरे ऊपर दया करो। कुछ लोग दूसरों का शिकार बनने के लिए ही पैदा हुआ करते हैं !"

इतना कह कर वह लालटेन साफ करने लगी। फिर एक कड़ाही उठा ली और उसे इतनी तेजी से रगड़ने लगी कि वह ढोल की तरह आवाज करने लगी। श्रीमती शैन्ते के मन में आया कि उसे बाहर धकेल दें, लेकिन अपना गुस्सा काबू में लाती हुई वे शान्त स्वर में बोलीं।

"तो तुम उसके पास जा कर उसे रोकोगी नहीं ? उसे बेवकूफी करने से रोकने में उसी की भलाई है।"

वेरोनिक पुनः चुप हो गयी। अन्त में वह बोली ! "खैर...मैं उसके पास जाऊँगी। अन्ततोगत्वा तर्क-तर्क ही है। गुस्से की हालत में किसी भी आदमी ने कभी कोई अच्छा काम नहीं किया है।"

वेरोनिक ने हाथ धोकर अपनी चादर उठा ली। गलियारे में जब उसने दरवाजा खोला तो उसे एक दर्दनाक आवाज सुनाई पड़ी। यह थी पालिन की अविरल और पागल कर देने वाली रुलाई। वेरोनिक के पीछे पीछे जाती हुई श्रीमती शैन्ते ठिठक कर खड़ी हो गयीं धीरे से आग्रह के स्वर में बोलीं। "उससे कहो कि अपने चाचा को वह ऐसी हालत में नहीं छोड़ सकती है...सुन रही हो।"

"उफ, सच है" वेरोनिक ने उत्तर दिया, "हाँ, वह भी चिग्घाड़ मार रहा है।"

ऊपर जाकर नौकरानी ने देखा कि पालिन रुखसत ही होनेवाली है। अपने जरूरी कपड़ों की उसने छोटी-सी गठरी बांध ली है। उसका चेहरा अब भी उतरा हुआ है और वह पुनः पूर्णतः शान्त हो गयी है।

वेरोनिक की प्रत्येक बात का उसने केवल एक उत्तर दिया। "या वह जायगी, या मैं" लूसी का नाम भी उसने अपनी जबान पर नहीं आने दिया।

वेरोनिक ने जब यह उत्तर श्रीमती शैन्ते को सुनाया तो वे लूसी के कमरे में थीं। लूसी बेहद घबराई हुई थी। दरवाजा खुलने की आवाज तक सुनकर वह काँप उठती थी। वह कपड़े पहनने और तत्काल प्रस्थान करने की तैयारी कर रही थी। श्रीमती शैन्ते को आखिरकार उसे राज़ी करना पड़ा। उन्होंने वर्शमाउएट से बेकरी वाले की गाड़ी बुलाने के लिये कहलवा दिया और लूसी को साथ लेकर ऐरोमांशे में उसकी चाची के पास जाने का निश्चय किया। उन्होंने तै किया कि शैन्ते की खौफ़नाक बीमारी का बहाना बना दिया जायगा।

दोनों महिलाओं के चले जाने पर वेरोनिक गला फाड़ कर चिल्लायी, "बिटिया रानी, अब तुम नीचे आ सकती हो; अब यहाँ कोई नहीं है।"

घर खाली हो गया-सा मालूम होने लगा। पुनः बोझिल खामोशी छा गयी। और मरीज की कराहें अधिक तीव्रता के साथ गूँजने लगीं। पालिन ने जैसे ही नीचे पहुँचने के लिए आखिरी कदम बढ़ाया, लजारे अहाते से लौटता हुआ सामने पड़ गया। उसकी पूरी देह थर-थर काँपने लगी। क्षण भर को वह अपना दोष स्वीकार करने और क्षमा माँगने के लिए रुक गया। लेकिन उसके आँसुओं ने उसे गूँगा बना दिया और वह एक भी शब्द बोलने में समर्थ हुये बिना ऊपर भाग गया। शुष्क नेत्रों और गम्भीर मुखाकृति से पालिन अपने चाचा के कमरे में चली गयी।

[६]

उस शाम को भोजन के समय से थोड़ी देर पहले वापस आने पर श्रीमती शैन्ते ने लूसी का कोई जिक्र नहीं किया। उन्होंने सिर्फ बेरोनिक को अपनी मदद के लिये पुकारा। उनके बाँये पैर में बहुत दर्द हो रहा था।

"हाय राम," नौकरानी बोली, "यह तो एकदम लुंज हो गया है।"

और सचमुच, पैर के तलुवे में खून के निशान उभर आये थे। लजारे नीचे आकर बोला—"माँ, तुम्हें बहुत ज्यादा चलना पड़ा। कितनी थक गयी हो!"

एक सप्ताह बीत गया। बिल्कुल उसी पहली शाम को भोजन के समय से, जबकि पालिन का दुर्घटना की रात के बाद माँ और बेटे से खुलकर सामना हुआ, सब लोग नित्यप्रति की भाँति व्यवहार करने लगे थे। किसी के प्रति कोई दोषारोपण नहीं किया गया और ऐसा लगता था कि उनके बीच कोई भी नयी बात नहीं हुई है। पारिवारिक जीवन पुरानी अनुरागपूर्ण आदतों की परम्परा के अनुसार यांत्रिक ढंग से आगे बढ़ता रहा। औपचारिक ढंग से प्रातः और रात के समय प्रणाम, अभिवादन होते। नियत समय पर लापरवाही से चुम्बनों का आदान-प्रदान होता। शैन्ते जब भोजन की मेज तक पहुंचने में समर्थ हो गया तो किसी प्रकार राहत की साँस ली जाने लगी। इस मर्तबा उसके घुटने एकदम सख्त हो गये थे और वह खड़ा नहीं हो सकता था। फिर भी उसे पीड़ा से छुटकारा मिल गया था। अपनी ही कुशलता में डूबा हुआ वह परिवार के हर्ष अथवा शोक से विरत और अविचल बना रहता था। जब श्रीमती शैन्ते ने लूसी के अकस्मात् चले जाने का उससे जिक्र करना चाहा तो वह ऐसे शोकपूर्ण सम्वाद की चर्चा न करने की प्रार्थना करने लगा।

पालिन को चूँकि अब अपने चाचा के कमरे में ही बन्द नहीं रहना था, अतः वह अपना धन्धा ढूँढ़ने की कोशिश करने लगी। किन्तु अपनी कृपणता को छिपाने में वह असमर्थ थी। खास तौर से हर एक शाम का वक्त और भी दर्दनाक हो उठता। परम्परागत शान्ति के बीच से बेचैनी के खंजर उस वक्त दिल को चाक-चाक करने लगते। उनके जीवन का रूप छोटी-मोटी घटनाओं की दैनिक पुनरावृत्ति के साथ पहले जैसा ही था। लेकिन कभी-कभी कोई स्नायविक भंगिमा अथवा शान्ति ही उन्हें उनके आन्तरिक आघात के प्रति सजग कर देती, उनका वह घाव ताजा कर देती, जिसके बारे में कभी बात नहीं करते थे, किन्तु जो प्रतिक्षण बढ़ता ही जा रहा था।

लजारे को पहले तो बहुत आत्म-ग्लानि हुई। पालिनकी नैतिक उच्चता, पवित्रता और सच्चाई का स्मरण कर उसका सिर लज्जा और क्रोध से अवनत हो जाता। क्यों उसमें खुलकर अपना अपराध स्वीकार कर लेने और क्षमा माँग लेने का साहस नहीं है? किस प्रकार उसकी इन्द्रियां विवश हो गयीं, किस प्रकार उस लड़की का उत्तेज्जक मोहकता ने उसे बेकाबू कर दिया, यह सब वह उसे स्पष्ट रूप से बता सकता है। इन सब बातों को समझने के लिए उसका हृदय पर्याप्त उदार है। किन्तु एक अविजेय व्यग्रता उसे रोक देती। उसे यह भय था कि सफाई देकर वह उसकी आंख में और भी अधिक गिर जायगा। हो सकता है कि यह सुनकर वह बच्चों की तरह थर-थर कांपने लगे। उसकी उपेक्षा के पीछे नये विश्वासघात की आशंका छिपी हुई थी। क्योंकि लूसी अब भी उसके दिमाग पर चढ़ी हुई थी। वह उसके ख्यालों में अब भी डूबा रहता था। खास तौर से रात के समय वह यह सोच कर छटपटाने लगता कि क्यों-नहीं उसने चुम्बन के समय अपनी सारी आन्तरिक अभिलाषा पूरी कर ली। न चाहते हुये भी वह ऐरोमांशे की दिशा में काफ़ी दूर तक टहलता हुआ चला जाता। एक शाम को वह अपनी चाची लेओनी के घर तक चला गया। दीवारों के चारों ओर वह चक्कर काटता रहा और खड़खड़ाहट

सुनकर अपनी गलती का ख्याल आते ही चुपचाप भाग खड़ा हुआ। अपनी अयोग्यता के इस बोध ने उसकी व्यग्रता को और अधिक प्रबल कर दिया। अपनी इच्छाओं का दमन करने में समर्थ न होने की स्थिति में वह स्वयं पर ही दोषारोपण करने लगा। पालिन के साथ अपने को झूठी गवाही की आखिरी नीचता से बचाने के निमित्त उससे दूर रहने की उसमें पर्याप्त शक्ति थी। कदाचित वह अब भी उससे प्रेम करता था, किन्तु दूसरी लड़की की लुभावनी प्रतिमा अतीत को कलंकित और भविष्य को अवरुद्ध करती हुई उसके सामने लगातार नाचने लगती थी।

पालिन अपनी ओर से उसके क्षमा माँगने की प्रतीक्षा में थी। अपने क्रोध के प्रारम्भिक स्थिति में उसने क्षमा करने की प्रतीक्षा करली थी, किन्तु अब उसकी ओर से क्षमा का प्रस्ताव न आने पर उसे भीतर ही भीतर तीव्र वेदना हो रही थी। वह क्यों उससे कभी बोला नहीं; वह इतना उद्विग्न दिखाई पड़ता है, क्यों वह हमेशा घर से बाहर रहता है ? क्या उसके साथ अकेले होने में उसे डर लगता है ? यदि वह तनिक-सा पश्चात्ताप भी प्रदर्शित करता तो वह उसकी बात सुनने और सब कुछ भूल जाने के लिए तैयार थी। प्रत्याशित क्षमा-याचना कभी सामने नहीं आयी और वह एक के बाद दूसरी परिकल्पनायें करती हुई भीतर ही भीतर कुढ़ रही थी। स्वाभिमान के कारण वह चुप रहती थी और जैसे जैसे वेदना पूर्ण दिवस धीरे-धीरे बीतते गये, उसने अपने ऊपर नियंत्रण कायम कर लिया। पुनः पुराने ढंग से काम करने लगे। किन्तु इस वीरोचित मौन के भीतर एक अविजेय खिन्नता निरन्तर छिपी हुई थी और रात के समय तकिये में अपने आँसू छिपाती हुई वह सिसकियाँ भरा करती थी।

यद्यपि हर एक के दिमाग़ में यह बात जमी हुई थी, तथापि उनके विवाह के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा गया। शरदकाल निकट आ रहा था, न जाने क्या होने वाला था ? इस प्रश्न पर अपनी राय तक जाहिर करने से लोग कतरा रहे थे और निर्णय बाद की किसी

तिथि के लिए, जबकि वे फिर इस पर बात-चीत कर सकेंगे, स्थगित कर दिया गया सा मालुम हो रहा था।

यही उनके जीवन का वह समय था जबकि श्रीमती शैन्ते ने अन्ततः अपनी सारी शान्ति खो दी। वह हमेशा बाहर ही रहने का प्रयत्न करती थीं किन्तु उनके उत्तम स्वभाव के विघटन की प्रक्रिया अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची हुई-सी प्रतीत हो रही थी। वह कभी भी इतनी असन्तुलित और उद्विग्न नहीं दिखाई पड़ी थीं। आत्मसंयम के प्रयास में उनकी बौखलाहट और तेज हो उठती थी। रुपया ही उनकी पीड़ाओं का मूल था; रुपये का लोभ धीरे-धीरे इतना प्रबल हो उठा था कि उनकी सारी सुबुद्धि, सारी उत्तम भावना हवा हो गयी थी। धीरे-धीरे पालिन के प्रति उनके विचार बदल गये थे। लूसी के अपसरण के लिए वह उसी को दोषी मानती थीं। मानों उसने ऐसी डकैती की थी कि उसीसे उनका बेटा बर्बाद हो गया था। उनके हृदय में एक रिसता हुआ घाव-सा हो गया था, ऐसा घाव जिसके पुजने की उमीद नहीं थी। तिल जैसी बातों का भी ताड़ बन जाता था। पालिन की 'निकल जाओ' की चिल्लाहट अब भी उन्हें आक्रान्त किये रहती थी, और वे ऐसी कल्पना करतीं मानों उन्हें भी निकाला जा रहा है, मानों समस्त परिवारिक सुख-सम्पत्ति के साथ उन्हें दूर किया जा रहा है। रात में बेचैनी की निद्रा में वे खेद करतीं कि इस निगोड़ी पालिन को मौत क्यों नहीं उठा ले गयी। पीड़ापूर्ण योजनाओं और जटिल ब्योरों से उनका दिमाग भरा रहता था और इतने पर भी उस लड़की से छुटकारा पाने का कोई तर्कसंगत मार्ग उन्हें नहीं सूझ पाता था। एक प्रतिक्रिया के रूप अपने पुत्र के प्रति उनकी ललक और ज्यादा बढ़ गयी, जब वह उनकी गोद में बच्चा था, उससे भी ज्यादा अब वे उसे साजने-सँवारने लगीं, सुबह से लेकर रात तक वे उसकी निगहबानी करती रहती थीं; उसका मुँह अगोरती रहती थीं। अकेले में पाने पर वे उसे छाती से लगा लेतीं, पुचकारती हुई समझाने-बुझाने लगतीं। वह उनसे कोई भी

चीज छिपाता नहीं था ? अकेला होने पर रोता नहीं था ? वे उसे कसम खाकर यकीन दिलातीं कि सब कुछ धीरे-धीरे दुरुस्त हो जायगा, सारी मुश्किलें धीरे-धीरे आसान हो जायँगी। ऐसे अनवरत मनोद्वन्द के एक पखवारे बाद यद्यपि उनका वजन तो नहीं घटा, तथापि चेहरे पर पीलापन छा गया। पैरों में दोबारा सूजन आ गयी, लेकिन जल्दी ही उससे आराम हो गया।

एक दिन सुबह ही उन्होंने वेरोनिक को बुलाया और उसे अपने सूजे हुये पैर दिखाने लगीं—"देख तो, मुझे क्या होने वाला है ? क्या इससे दर्द नहीं होता? मैं आज बाहर जाना चाहती थी। अब मुझे बिस्तर पर ही पड़ा रहना होगा। लजारे को तंग करने के डर से कुछ भी बोल मत।"

वे स्वयं उससे घबराई हुई नहीं मालुम हो रही थीं। कहा उन्होंने इतना ही कि मैं कुछ थक गयी हूं और सबने समझा कि सिर्फ ऐंठन आ गयी है। लजारे समुद्र के किनारे घूमने गया था और पालिन यह सोच कर कि उसकी उपस्थिति का स्वागत नहीं होता, ऊपर जाने से कतराती थी, इसलिए श्रीमती शैन्ते नौकरानी से लड़की का दुखड़ा रोने लगी।

"उफ़ वह नीचे क्या कर रही है ?...देखो, कितनी वाहियात है ! मेरे लिए एक गिलास पानी भी नहीं ले आयेगी।"

"लेकिन मालिकिन ?" वेरोनिक ने उत्तर दिया—"क्यों तुम खुद ही तो उसे अपने पास आने से रोकती हो ?"

"बेवकूफ ! तुम उसे जानती हो। उससे बुरी दकियानूस कोई नहीं हो सकती है। दूसरों के सामने वह हमेशा अपनी नेकनीयती दिखाती रहती है, लेकिन पीठ पीछे वह सबको गिन-गिन कर कोसती है...हाँ,-हाँ, मेरी बच्ची ! जिस दिन मैं उसे यहां ले आयी, तुम मेरे पास मौजूद थीं, अगर वह इस घर में न आयी होती तो मुझे क्यों ये सब झंझट उठाने पड़ते...और वह हम सब को खत्म करके ही दम लेगी, मेरे पतिदेव की जब से उसने देख-भाल शुरू की है, तभी से वे बुरी तरह रिरिक रहे हैं,

मुझे इतना उद्विग्न कर रखा है कि मेरी एक-एक नस दुखने लगी है और जहां तक मेरे बेटे का हाल है, वह तो करीब-करीब अपना होश ही खोता जा रहा है...!"

"ओहो, मालिकिन, आप यह कैसे कह सकती हैं ? वह आप सबके साथ कितना नेक बर्ताव करती रही है !"

रात तक श्रीमती शैन्ते ने अपनी सारी कोफ़्त उगल दी। लूसी के भद्दे ढंग से घर छोड़ने से लेकर रुपयों-पैसों की बातें सामने आ गयीं। और इसी तरह वेरोनिक जब भोजन के बाद नीचे गयी और रसोई में थालियां एक किनारे रखते हुई पालिन उसे मिली तो उसने उसके सामने अपने मन का सारा गुबार खोल कर रख दिया। एक लम्बे अर्से से सारे भेद और मर्म वह छिपाती आ रही थी लेकिन इस समय बातें अपने आप ही प्रकट हो उठीं।

"उफ, बिटिया रानी, उनकी थालियों की परवाह करना तुम्हारी हद दरजे की नेकनीयती का सबूत है। अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो इन्हें ठोकर मारकर एक किनारे कर देती !"

"क्यों, क्या बात है ?" पालिन ने चकित होकर पूछा।

"क्योंकि तुम कभी भी उतनी बुरी नहीं बन सकीं, जितना कि ये लोग तुम्हें बनाना चाहते हैं।"

और यहाँ से बात चलाते हुये वह सब बातों की शुरुआत तक पहुँच गयी।

"क्या यह सर्व शक्तिमान ईश्वर को भी कुपित करने के समान नहीं है ? उसने तुम्हारी सारी पूंजी हड़प कर ली। तुमसे एक बात बताऊँ ? हूँ, तुम न होतीं तो ये सब भूखों मर गये होते। तुम्हारे रुपयों के साथ उसने कितना घालमेल किया। पेरिस जाकर जो चाल चली, वह कम ही लोगों को मालूम है ! क्यों, तुम उसे सीधे अदालत में खड़ी करा सकती थी...अब भी उसकी शरारतें बन्द नहीं हुई हैं। अब भी

वह तुम्हें चूसती जा रही है। वह तुम्हारी एक-एक पाई हजम कर जायगी...तुम समझती हो कि मैं झूठ बोल रही हूँ? हो सकता है। इधर देखो, बाइबिल की क़सम खाकर कह रही हूँ, मैंने देखा है, अपने कानों से सुना है और तुम्हारी इज्जत करती हूं, इसीलिये सबसे बुरी बात नहीं कह रही हूँ। जैसे यही लो, जब तुम बीमार थीं तो उसे तुम्हारे आल्मारी न ढूंढ़ पाने का ही सबसे बड़ा ग़म था।

पालिन चुपचाप सुनती रही। प्रायः इस विचार से कि उसके सम्बन्धी उसी के खर्चे से जी रहे हैं और घृणित रूप से उसे तबाह कर रहे हैं, वह चिन्तित हो उठा करती थी। लेकिन वह हमेशा ऐसी चीजों के बारे में न सोचना ही अच्छा समझा करती थी। वह उनकी ओर से आँखें मूँद लिया करती थी और अपनी कृपणता को ही कोसने लगती थी। इस बार यह सब समझने के लिये उसे बाध्य होना पड़ रहा था और चीजें इस ढंग से प्रकट की गयी थीं, जिनसे कि अपराध अधिक घृणित बन गया था। प्रत्येक वाक्य ने उसकी स्मृति में कोई प्रतिध्वनि जाग्रत कर दी। वे पुरानी घटनायें उसके दिमाग में ताजी हो उठीं, जिनका मतलब अभी तक वह नहीं समझ पायी थी। बड़ी थकान से संत्रस्त सी होकर वह एक कुर्सी में धँस गयी और उसके ओंठ जैसे कि दर्द के मारे सिकुड़ गये।

"तुम अतिशयोक्ति कर रही हो।" वह धीरे से बोली।

"अतिशयोक्ति? बिल्कुल नहीं।" वेरोनिक जलकर आगे बोली—"रुपये का सवाल इतना बड़ा नहीं है जो कि मुझे विक्षुब्ध कर दे। इधर ताको, जिसके लिए मैं उसे कभी क्षमा नहीं करूँगी, वह है तुम्हें दे देने के बाद लजारे को तुमसे छीन लेना...हां, जो कह रही हूँ वह मुझे मालूम है। जब तुम धनी नहीं रह गयी तो उसे दूसरी उत्तराधिकारिणी की जरूरत पड़ गयी। क्या सोच रही हो? बोलो तो! वे तुम्हें लूट रहे हैं और तुम्हारे विपन्न हो जाने पर तुम्हें दूध की मक्खी की तरह अलग कर देंगे। क्या किसी को मूँड़ लेना और फिर सौदे में उसका दिल

तोड़ देना ठीक नहीं है ! चूँकि तुम अपने भाई को प्यार करती थीं और केवल वही उदारता पूर्वक प्रत्येक वस्तु के लिये प्रतिदान दे सकता था, इसलिये उसे भी तुमसे छीन लेना वाजिब समझा गया और यह सब उसी ने किया, यह मैं देख चुकी हूँ । हाँ, हाँ, हर शाम को वह उस लड़की को फुसलाया करती थी । तमाम गन्दी चालों से उसने उसे अपने बेटे के लिए पटा लिया था । इस लालटेन की रोशनी की तरह ही यह सच है कि उसी ने उन्हें एक-दूसरे के पास पहुँचाया । हाँ, एकदम सही बात ! वह उनके लिए चिराग भी रख देती, अगर वह शादी मंजूर न करती तो मालिकिन खुद अगुवई करती अगर वे बहुत आगे नहीं बढ़े तो यह उसका कुसूर नहीं था...जरा सोचो, उसने तुम्हें उसके पैर के नीचे दबा दिया है और उसकी ही वजह से तुम रात-रात भर तड़पा करती हो । मैं अपने कमरे से तुम्हारी सारी बातें सुना करती हूँ ।"

"उफ, वेरोनिक, हुश ।" पालिन भुनभुनाई, "ये चीजें सुनकर मैं बीमार हो जाऊँगी । यह सारी कृपणता और अन्याय..."

भर्राई हुई आवाज में वह आगे बोली, "तुम मुझे बहुत दुखी कर देती हो ।"

उसके गालों पर बड़े-बड़े आँसू लुढ़क आये । उसने अनुभव किया कि यह औरत झूठ नहीं कह रही है और उसकी क्षत-विक्षत भावनायें भीतर-भीतर रिसने लगीं । प्रत्येक घटना साकार रूप धारण करने लगी, व्यापक यथार्थ के रूप में परिपात होने लगीं । वह लूसी को लजारे के आलिंगन में मूर्छित होती हुई और श्रीमती शैन्ते को दरवाजे पर चौकसी करती हुई देख सकती थी । हाय भगवान, मैंने क्या किया है, जो कि हर एक आदमी मुझे धोखा देता है, सबके प्रति वफादार हूँ तब भी हर एक आदमी धोखा देता है ?

"तुम्हारे पाँव पड़ रही हूँ, कुछ मत बोलो, मैं यह सुन नहीं सकती !"

वेरोनिक उसे इतनी आकुल-व्याकुल देखकर लड़खड़ाई हुई आवाज में सिर्फ इतना बोली—"उसकी वजह से नहीं, बल्कि तुम्हारी ही वजह से मैं कुछ नहीं बोलती हूँ...क्यों, वह इस समय ऊपर है, सुबह से ही वहाँ है। तुम्हारे लिए न जाने कितनी कुचालों के ताने-बाने बुन रही है। मैंने सब बातों के अन्त में मुँह खोला है, क्योंकि उसे तुम्हारी सभी भलाइयों का बुरा मतलब लगाते हुये देखकर मेरा खून खौल उठता है...वह कहती है कि तुमने उसे तबाह कर दिया है और तुम उसके बेटे की हत्या कर रही हो। मेरा यकीन न हो तो आओ दरवाजे पर सुन लो।"

पालिन को सिसकती हुई देखकर वेरोनिक ने उसका सिर अपने दोनों हाथों से थाम लिया। उसके बालों को चूमती हुई बोली—"नहीं, नहीं, रानी, अब मैं कुछ नहीं कहूँगी...फिर भी तुम्हें सब समझना-बूझना है। दूसरे का शिकार बनते जाना परले सिरे की बेवकूफी है...अब चुप हो जाओ। मैं कुछ नहीं कहूंगी।"

खामोशी छा गयी। वेरोनिक ने चूल्हे की अब भी जलती हुई लकड़ी बुझा दी। लेकिन धीमी आवाज में उससे बिना इतना बोले नहीं रहा गया—"मैं जानती हूँ कि क्यों उसे सूजन हो रही है। उसकी दुष्टता उसके घुटनों में उतरती जा रही है।"

पालिन नीचे फर्श की ओर निहार रही थी। उसका मस्तिष्क उलझे विचारों और गहरी वेदना से आक्रान्त हो उठा था। ऊपर आँख उठाकर उसने देखा। वेरोनिक ने यह क्यों कहा? क्या सूजन फिर उभर आयी है? पालिन सहसा उदास होने की अपेक्षा उत्कण्ठित हो उठी।

"लेकिन वह इस तरह अकेली नहीं छोड़ी जा सकती।" वह उठती हुई बोली, "वह संकट में है।"

"संकट!" वेरोनिक भद्दे ढंग से चिल्लाई। वह इस तरह दिखती नहीं और किसी भी हालत में इसके बारे में सोचती नहीं। अपनी खाट

पर सुल्तान की तरह दूसरों पर कलंक लगाती हुई वह जल-भुन रही है...इसके अलावा, इस वक्त सो गयी है। हमें कल तक इन्तजार करना होगा। कल ही वोनीविले में हर हालत में डाक्टर आता है।"

दूसरे दिन लजारे अपने मां की हालत से नावाकिफ नहीं रह सका। पालिन रात भर जाग-जाग कर सुनती रही। उसे ऐसा लगता। जैसे वह नीचे फर्श से रोने-चिल्लाने की आवाज सुन रही है। भोर में वह इतनी गहरी नींद में सो गयी कि वहीं नौ बजे तक आँख खुली। किवाड़ की आवाज सुनकर वह अपनी खाट पर चौंक पड़ी। नीचे हाल जानने के लिए जाते समय रास्ते में ही लजारे से भेंट हो गयी। वह अपनी माँ के कमरे से आ रहा था। सूजन पेट तक पहुँच गयी थी और वेरोनिक को आखिर में इसकी खबर लजारे को दे देनी पड़ी थी।

"एँ ?" पालिन ने पूछा।

लजारे क्षण भर चुप रहता। थोड़ी देर बाद भर्राई हुई आवाज में बोला—"वह खत्म हो चुकी है।"

घबराया हुआ वह ऊपर चला गया। पालिन उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। दूसरी मंजिल के बड़े कमरे में जिसमें लूसी के साथ उसे, पकड़ने के बाद से उसने पैर नहीं रखा था, पहुँचने पर उसने दरवाजा बन्द कर लिया और उसे ढाढ़स बँधाने लगी—

"देखो, तुम यह तक नहीं जानते कि उन्हें क्या हुआ है। कम से कम डाक्टर के आने तक इन्तजार करो...वह बहुत मजबूत हैं। निराश होने की कोई बात नहीं है।"

लेकिन वह हाँफता हुआ जिद करता रहा, "वह खत्म हो चुकी है, खत्म हो चुकी है।"

मुसीबत अप्रत्याशित रूप से उस पर टूट पड़ी थी। सुबह उठने पर उसने हमेशा की तरह समुद्र की ओर देखा था। तभी जीवन के खोखलेपन के प्रति वह चिन्तित हो उठा था। फिर जब उसकी मां ने

उसे घुटने तक अपना पैर दिखाया तो जलोदर से फूले हुए अंगों को देखकर वह आतंकित हो उठा। क्या? तो आफत तुम्हारे सिर पर किसी भी क्षण आ सकती है। इस बार भी अपनी बड़ी मेज के एक कोने पर बैठा हुआ वह थर-थर कांप रहा था। बीमारी उसने पहचान ली थी और उसका नाम लेने का साहस उसे नहीं हो रहा था। हृदय-रोग के भय से, चाहे वह अपने लिए हो अथवा अपने किसी प्रिय जन के लिए, वह सदैव आतंक का अनुभव करता आ रहा था। अपने दो वर्षों के चिकित्सा संबंधी अनुभव से उसने यही गांठ बांधली थी कि मृत्यु के समान कोई भी दूसरा रोग नहीं है। हृदय ही तो जीवन का एकमात्र स्रोत है। उसका रुग्ण होना मृत्यु का क्रूरतम रूप है और उसकी मां इसी मौत से मरने जा रही थी और निश्चय ही वह स्वयं भी आकस्मिक रूप से मर सकता है।

"तुम क्यों इतना डर रहे हो?" पालिन बोली। "जलोदर के कुछ रोगी लम्बे अर्से तक जीते रहते हैं।"

लेकिन उसने अपना सिर हिलाया। वह कोई बच्चा नहीं था। उसके पैर कांप रहे थे। पूरा शरीर हिल रहा था आँखें खिड़की पर टिकी थीं। फिर अपने बेगानेपन के बाद पहली बार पिछले दिनों की भांति उसने उसका माथा चूम लिया। उस कमरे में, जहाँ कि वे साथ-साथ बड़े हुये थे, दोनों पास-पास खड़े थे। और उनकी सारी कटुता इस महान् आघात से एकदम विनष्ट हो गयी। पालिन ने अपनी आंखें पोंछ लीं। रोने में असमर्थ लजारे यांत्रिक ढंग से बार-बार कहता गया "वह खत्म हो चुकी है, खत्म हो चुकी है।"

नित्य शनिवार की भांति ग्यारह बजे के करीब आने पर डाक्टर कैजेनोव श्रीमती शैन्ते को खाट पर पड़ा हुआ देखकर चकित रह गया। भली चंगी महिला को आखिर हुआ क्या? मरीज की डाक्टरी जांच करने पर, उसके अंगों और जोर-जोर से धड़कते हुये दिल की परीक्षा कर वह गम्भीर हो गया।

किन्तु श्रीमती शैन्ते अपनी स्थिति की गम्भीरता से नितान्त अनभिज्ञ थीं।

"आशा है कि तुम मुझे इससे उबार लोगे, डाक्टर !" वे प्रसन्न मुद्रा में बोलीं—"देखो, मुझे केवल एक भय है और वह यह कि सूजन ज्यादा बढ़ जाने पर मेरा गला घोंट कर ही छोड़ेगी !"

"फिक्र मत करो, यह इस तरह बढ़ेगी नहीं !" वह स्वयं ही हँसता हुआ बोला—"इसके अलावा, हम इसे जल्द ही ठीक कर देंगे।"

लजारे कांपता हुआ उसकी बातें सुन रहा था। उसका मन हो रहा था कि वह एक-एक सवाल कर अन्त में सच्चाई जानने की कोशिश करे।

"श्रीमती जी !" डाक्टर बोला—"आप फिक्र मत करें, मैं कल आऊँगा तो आपसे बातें करूँगा...नमस्कार, नुस्खा लिखने के लिये मैं नीचे जा रहा हूँ।"

नीचे, पालिन ने उसे भोजन के कमरे में जाने से रोक लिया, क्योंकि शैन्ते को अभी तक यह विश्वास था कि ऐंठन के अलावा और कुछ नहीं हुआ है। रसोई की मेज पर उसने कागज और स्याही रख दी। डाक्टर ने स्वीकार किया कि बीमारी खतरनाक है लेकिन वह उलझी हुइ बातें ही कह कर रह गया। अपनी ओर से कोई निष्कर्ष नहीं बताया।

"कोई उमीद नहीं है। है न ?" लजारे झल्ला कर बोला—"गड़बड़ी दिल में है, क्यों ?"

पालिन विनीत दृष्टि से निहारने लगी। डाक्टर इसका अर्थ समझ गया।

"दिल ?" वह बोला—"मुझे ऐसा नहीं समझना चाहिये। लेकिन, हर हालत में, यहां तक कि अच्छी न होने पर भी वह देखभाल के साथ लम्बे अर्से तक चल सकती है।"

लजारे ने उस क्रुद्ध बालक की भांति जो कि कहानियों से फुसलाया नहीं जा सकता, अपना कन्धा हिलाया। आगे बोला—"डाक्टर यद्यपि

तुम बहुत दिनों से उसे देखते आ रहे हो, लेकिन कभी मुझे चेतावनी नहीं दी...! ये खतरे कभी भी यकायक नहीं आते हैं। तुमने कुछ देखा नहीं ?"

"ओहो, हाँ !" कैजेनोव ने उत्तर दिया—"मैंने दो-तीन छोटी-मोटी बातें देखी थीं। मेरे बच्चे सुनो, मेरा ख्याल है कि और लोगों के मुकाबले में कुछ कम बेवकूफ हूँ। यह पहला ही मौका नहीं है जबकि किसी रोग ने मुझे चकित और विमूढ़ कर दिया है...यह तुम्हारी हिमाकत है। कोई भी मनुष्य सर्वज्ञ नहीं हो सकता है। मनुष्य के शरीर जैसे जटिल यंत्र को समझ पाना इतना आसान नहीं है, जितना कि तुम समझते हो !" उत्तेजित होकर वह नुस्खे का कागज़ खुरचने लगा। लजारे और पालिन को निराश मुद्रा में सिर झुकाये देखकर आगे बोला।

"मेरे बच्चो, मैं उसे अच्छा करने की पूरी कोशिश करूँगा, लेकिन स्पष्ट रूप में कुछ नहीं कह सकता। यों चाहे हो भी, किन्तु मुझे कोई आसन्न संकट नहीं दिखाई पड़ रहा है।"

भोजन के समय यह सोचकर कि उसका पिता रुष्ट न हो, लजारे नीचे गया। उसका मुँह पीला पड़ गया था। समय पर घण्टी बजा करती और वेरोनिक को सूप और दवा-पानी लेकर मरींज के कमरे में जाना पड़ता। नीचे आने पर पालिन को वह बताती कि लजारे पागल होता जा रहा है। अपनी मां के पास उसे थर-थर कांपते देख कर बहुत दुःख होता था। तीन बजे के करीब नौकरानी को पुनः ऊपर जाना पड़ा। वापस आने पर पालिन से बोली—"बिटिया, जाओ, उसे सहारा दो उसकी झुँझलाहट को बुरा मत मानना। वह चाहती है कि लजारे उसे करवट बदलवा दे, लेकिन वह डरपोक छूने का भी साहस नहीं कर पाता है।"

पालिन ऊपर गयी। श्रीमती शैन्ते शिथिल होकर खाट पर पड़ी थीं। उनके सामने ही लजारे कांप रहा था। "मां, तुम्हें दाहिनी करवट लिटा दूँ ?"

"हाँ, थोड़ा मुझे सहारा दो !...हाय, मेरे बच्चे, तुम मेरी तकलीफ नहीं समझ सकते हो।" इससे पहले ही पालिन ने उसे आहिस्ता से पकड़ लिया। "मुझे यह करने दो, चाचा को उठाते-बैठाते मुझे इसका अभ्यास हो गया है...ठीक है न?"

श्रीमती शैन्ते रुष्ट होकर भुन-भुनायीं—"उफ, तुम मुझे धकेल रही हो, मेरी जान लेकर ही मानोगी!"

किसी तरह लिटा कर पालिन उसके पैर में दवा मलने लगी। अपने भाई को ऐसा उद्विग्न देखकर उसने उसे बाहर भेज देना ही अच्छा समझा।" अच्छा हो कि तुम यहां से चले जाओ!"

क्षण भर वह रुका रहा। उसकी आंखें आंसुओं से अन्धी हो गयी थीं। थोड़ी देर बाद वह भुन-भुनाता हुआ नीचे चला गया! "हे भगवान् मुझसे नहीं देखा जाता, नहीं देखा जाता!"

पहली रात पालिन को बहुत भारी गुजरी। आराम कुर्सी में अधलेटी पड़ी हुई वह सोने में असमर्थ थी। मरणासन्न महिला की भयंकर सांसें बराबर उसके कानों में गूँजती रहती थीं; जब भी पलक झँपती, वह अनुभव करती कि इस आवाज से पूरा घर कांप रहा है, सभी चीजें टूटती जा रही हैं। हाल के महीनों की घटनायें उसके दिमाग में नाचने लगीं। यहां मृत्यु-शैया के निकट भी उसे आंतरिक शान्ति नहीं मिल रही थी। उन लोगों को वह क्षमा नहीं कर पा रही थी। धुंधले रात्रि-जागरण के दुःस्वप्नपूर्ण क्षणों में उसे वेरोनिक की बतायी हुई बातें याद आने लगीं। सब बातों पर सोच-विचार करते हुए उसका ईर्ष्या पूर्ण आक्रोश फिर से हरा हो गया। अब प्यार नहीं मिलने वाला है, हाय राम! जिन्हें प्यार किया, चाहा, उन्हीं से धोखा! उपेक्षा और घृणा से एकाकी छोड़ दिया जाना! उसका घाव ताजा होकर रिसने लगा। लजारे की गलती का उसे इतना अधिक बोध और कभी नहीं हुआ था। उन्होंने मुझे मार डाला है, इस लिये वे भी अपनी मौत मरें! और उसकी चाची की तेज सांसें

उसके रुपये की चोरी का स्मरण कराती हुई, उसके प्रेम की चोरी का स्मरण कराती हुई उसे उद्विग्न करने लगीं। अपने सीने में भी वह इसके विस्फोट का अनुभव करने लगी।

अगला दिन आने पर भी पालिन के मानसिक द्वन्द्व का समाधान नहीं हुआ। खोया हुआ प्रेम लौटा नहीं। केवल कर्त्तव्यवश ही वह रोगी के कमरे में बैठी रही उसके हृदय की कृपणता धधकने लगी। क्या मेरा हृदय भी कठोर होता जा रहा है? पूरा दिन इसी बेचैनी की हालत में बीत गया। स्वयं से असन्तुष्ट और रोगी औरत के कपट से खिन्न स्थिति में लापरवाही के साथ अपने रोगी की वह परिचर्या करती रही। श्रीमती शैन्ते कुढ़न और सन्दिग्ध आँखों से उसकी क्रियायें देख लेतीं। अगर वे पालिन से रुमाल मांगतीं तो इस्तेमाल करने के पहले उसे सूँघ लेतीं। और पालिन को गरम पानी की बोतल लाते हुये देख कर वे बोतल को छूने की जिद करने लगीं।

"उन्हें क्या हो गया है?" पालिन नौकरानी से फुस-फुसायी। "क्या वह समझती है कि मैं उसका अहित कर सकती हूँ?"

डाक्टर के चले जाने पर वेरोनिक श्रीमती शैन्ते को एक चम्मच दवा देने लगी। वे अपनी भतीजी को न देखकर भुन-भनायीं। "क्या यह दवा डाक्टर ने तैयार की है?"

"नहीं मालिकिन, पालिन बिटिया ने तैयार किया है।"

उन्होंने अपने ओठों से उसका ज़ायका लेकर मुँह बिचका लिया।

"इसमें ताँबे की महक आ रही है...नहीं जानती कि वह मुझे क्या खिला रही है, लेकिन कल से मैं अपने पेट में तांबे के स्वाद का अनुभव कर रही हूँ।"

झुँझलाकर उन्होंने चिम्मच की दवा अपनी खाट के पीछे फेंक दी। वेरोनिक अचकचा कर रह गयी।

"हूँ, भगवान् के लिए बोलिये! अब क्या विचार है?"

"मैं अभी मरूँगी नहीं," श्रीमती शैन्ते बोलीं। "कान खोलकर सुन लो—मेरे फेफड़े अब भी मजबूत हैं और वही मुझसे पहले मरेगी क्योंकि उसका शरीर स्वस्थ नहीं है।"

पालिन ने सुन लिया था। मर्माहित अवस्था में मुड़कर वह वेरोनिक को निहारने लगी। अपनी चाची के इस अतिदुष्ट सन्देह से लज्जित होकर वह आगे आने के बजाय और पीछे हट गयी। उसका आन्तरिक द्वन्द सहसा शान्त हो गया और उस अभागी महिला के प्रति, जिसे भय तथा घृणा ने इतना लूट लिया था, गहरी करुणा से उसका हृदय आप्लावित हो उठा। जहर के भय से फेंकी हुई दवाइयाँ देख कर तिक्तता की अपेक्षा वह सहानुभूति का अनुभव करने लगी। रात होने तक वह वीरोचित नम्रता के साथ व्यवहार करती रही, ताकि सुश्रुषा के द्वारा वह उस मरणासन्न महिला के भय का शमन कर दे, ताकि वह इस घातक विचार को क़ब्र में भी अपने साथ न ले जा सके।

उसने वेरोनिक को लजारे से इस घटना की चर्चा करने से मना कर दिया।

सुबह से सिर्फ एक बार श्रीमती शैन्ते ने अपने बेटे के बारे में पूछा और जो कुछ सुनने को मिला उससे वे सन्तुष्ट होकर रह गयीं। अपने पति के बारे में वे इससे भी कम बोलीं। भोजन के कमरे में एकाकी पड़े हुये उस पर क्या बीत रही है, इसकी चिन्ता उन्हें नहीं थी। प्रत्येक वस्तु उनके लिये बेगानी-सी हो गयी मालुम होती थी, जैसे कि उनके पैरों की बर्फीली ठन्डक धीरे-धीरे बहुत दूर तक फैल गयी हो और इससे उनका हृदय भी जम गया हो। भोजन का समय आने पर पालिन को नीचे जाना पड़ता। अपने चाचा से झूठ बोलना पड़ता। उस शाम उसने लजारे से भी असत्यवादन किया, उसे आश्वासन दिया कि सूजन कम हो रही है।

लेकिन रात में श्रीमती शैन्ते की दशा चिन्ताजनक हो गयी। अगली सुबह को पालिन और नौकरानी ने जब उन्हें दिन की खुली

रोशनी में देखा तो उनकी आँखों में विचित्र लक्षण देखकर वे चकित हो उठीं। उनका चेहरा नहीं बदला था, उन्हें अब भी बुखार नहीं था, केवल मन विकृत प्रतीत हो रहा था। प्रेतबाधा के भय से उनका मस्तिष्क उखड़ने लगा था। यह आखिरी मंजिल थी। मात्र एक भाव ने धीरे-धीरे सम्पूर्ण अन्तःकरण झुलसाकर उन्हें पागल कर दिया था।

प्रातः काल डाक्टर कैजेनोव के आगमन तक कठिन अग्नि-परीक्षा थी। श्रीमती शैन्ते ने पालिन को अपने पास तक आने से भी रोक दिया।

"मुझे आप अपनी देख-भाल करने दें, पालिन ने बिनती की। मैं आपको थोड़ी देर तक उठाये रहूँगी, इस तरह आपको तकलीफ हो रही होगी!"

"नहीं,-नहीं, तुम कैंचियाँ लिये हो। उन्हें मेरी मांस में भोंक रही हो...इसकी चोट मुझे मालुम हो रही है, मेरे सारे शरीर से खून बह रहा है।"

निराश होकर पालिन परे हट गयी। अवसाद तथा दुःख से वह जर्जर हो गयी थी। सहायता करने की इच्छा न पूरी होने से उसका टूटा हुआ मन रोने लगा। छोटी-से-छोटी सेवा स्वीकार हो जाने के लिए वह इतना अपमान और दोषारोपण सहती आ रही थी कि उसे आंसू बहाने की नौबत आ गयी थी। कभी-कभी वह हार कर कुर्सी पर बैठ जाती और रोने लगती। पिछले विश्वास को वापस लाने का उसे कोई उपाय नहीं सूझ पाता था।

"चाची," वह बोली—"आपकी दवा का समय हो गया है। जानती हो, डाक्टर ने आपको विश्वास करने और नियमित रूप से दवा लेने की ताकीद की है!"

श्रीमती शैन्ते ने देखने और आखिर में बोतल सूँघने की जिद की।

"क्या यह कल वाली ही है?"

"हाँ, चाची।"

"मैं इसे नहीं छूऊँगी!"

बहुत कहने-सुनने पर उन्होंने एक चम्मच दवा ले ली। उनके चेहरे से अविश्वास का भाव टपक रहा था। दवा मुँह में लेते ही उन्होंने उसे थूक दिया—"यह तेजाब है, यह मुझे जला रही है।"

पालिन के प्रति उनका आक्रोश और भय, जो कि पहले पहल बीस फ्रैंक लेने के बाद से धीरे-धीरे बढ़ता आ रहा था, अपशब्दों के प्रवाह के रूप में बह निकला।

"तुम समझती हो कि मैं यह जानती नहीं! तुम हर चीज में तांबा मिला देती हो...इसी से मेरी साँस अटक रही है। मुझे कुछ हुआ नहीं है। पिछली रात अगर तुमने मुझे हानिकर वस्तु न दी होती तो मैं आज सुबह ही उठ सकती थी...हाँ, तुम मुझे धोखा देती हो। तुम मुझे दफनाई हुई देखना चाहती हो। लेकिन मैं भली चंगी हूँ और सुनो, मैं तुम्हें दफनाई हुई देखूँगी, मैं...।"

उनकी साँस फूल रही थी, शब्द टूटते जा रहे थे और ओठ ऐसे काले पड़ गये कि कोई विपत्ति एकदम निकट आ गयी मालूम होने लगी।

"उफ, चाची, चाची!" पालिन घबराकर बोली, "काश, तुम जान पाती कि अपने को कितना नुकसान पहुँचा रही हो!"

"ठीक, यही तो तुम चाहती हो, है न? हाँ, हाँ, मैं तुम्हें जानती हूँ, तुमने बहुत पहले से ही योजना बना ली है, तुम मात्र हमारी हत्या करने और हमें लूटने के ही उद्देश्य से आयी हो, तुम घर पर कब्जा करना चाहती हो और हमें अपनी राह का रोड़ा समझती हो...उफ, शैतान, मुझे तुम्हें बिल्कुल पहले ही दिन कुचल देना चाहिये था। मैं तुमसे नफरत करती हूँ, नफरत करती हूँ!"

पालिन खामोशी के साथ रोती हुई अवाक् खड़ी रही। अनिच्छित प्रतिवाद की भाँति उसके मुँह से इतना ही निकल सका, "हे भगवान्, हे भगवान्!"

श्रीमती शैन्ते थक गयी थीं, किन्तु क्रोध के आवेग में उनकी मूर्छा थोड़ी देर के लिए दूर हो गयी।

"मेरे पास मत आओ, मुझे छूओ नहीं...छुओगी तो मैं मदद के लिए हल्ला करूँगी। नहीं, नहीं, मैं नहीं पिऊँगी। यह जहर है।"

और उन्होंने कम्बल खींच लिया, अपना मुँह तकियों में छिपा लिया। सिर इधर-उधर घुमाने लगीं, ओठों को मजबूती से दबा लिया। व्यग्र होकर पालिन उन्हें शान्त करने का प्रयत्न करने लगी।

"समझ से काम लो, चाची...अगर इच्छा नहीं है तो मैं तुम्हें कुछ भी नहीं पिलाऊँगी।"

"हाँ, तुम्हारे पास बोतल है...उफ, मैं डर रही हूँ...!"

वे जोर-जोर से हाँफने लगीं। सिर पीछे की ओर लुढ़क गया। पालिन ने यह सोचकर कि वे मर रही हैं, नौकरानी को बुलाया। दोनों ने बहुत कठिनाई से उनका सिर ऊपर उठाया और उन्हें ठीक से तकियों के सहारे लिटा दिया।

इस सामान्य दुःख में पालिन की व्यक्तिगत वेदनायें, उसके हृदय की खिन्नतायें विलीन हो गयीं। अभी कल ही रिसने वाला ताजा घाव उसे भूल गया। इस शोक के सामने सभी लालसा, सभी ईर्ष्या ओझल हो गयी। सब कुछ अथाह सहानुभूति की गहराई में डूब गया। उसे अधिक प्रेम करने का सामर्थ्य संचित करना होगा, अधिक आत्म-बलिदान, अधिक आत्म-समर्पण करना होगा। यदि उनके द्वारा दूसरों का कष्ट दूर कर सकती है तो अधिक अन्याय और अपमान सहन करना होगा। जीवन की पीड़ा के भारी बोझ में वह बहादुरी के साथ कन्धा लगायेगी। इस क्षण के बाद से उसकी सारी दुर्बलतायें विनष्ट हो गयीं। मरणासन्न महिला के सामने वह उसी शान्ति का परिचय देने लगी, जिसका प्रदर्शन उसने स्वयं की मृत्यु से भयभीत क्षणों में किया था। वह सदैव तत्पर थी। किसी भी बात से निरुत्साह नहीं होती थी। उसकी पुरानी आसक्ति

पुनरुज्जीवित हो उठी । अपनी चाची को उसने बिल्कुल ही क्षमा कर दिया । उनसे वैसा ही प्यार करने लगी । वही सम्बन्ध मानने लगी जैसा कि पहले पहल बोनीविले आने पर माना था ।

उस दिन भोजन के बाद तक डाक्टर कैजेनोव नहीं आया । श्रीमती शैन्तें को देखने के बाद नीचे रसोई में आने पर वह अपना निराश भाव छिपा नहीं सका ।

"कोई आशा नहीं है, क्या कुछ है ?" लजारे ने पूछा—"पिछली रात मैं हृदय रोग पर बिलाद की पुस्तक दोबारा पढ़ रहा था......।"

"बस हृदय ! मेरे अच्छे दोस्त, तुम्हें हृदय के अलावा और कुछ नहीं सूझता है ! हम कोई बात निश्चयपूर्वक कैसे कह सकते हैं ? मेरा अनुमान है कि गुर्दा अब भी खराब हालत में है । मशीन बिगड़ जाने पर सभी अंग जवाब दे देते हैं । फेफड़ा, पेट, दिल, सब गड़बड़ हो जाता है । अच्छा हो कि रात में तुम विलाद की पुस्तक पढ़ने की अपेक्षा आराम से सो जाया करो !"

"लेकिन साफ-साफ बताओ !" वह चिन्तित स्वर में बोला—"तुम्हारे ख्याल से वह कब तक जिन्दा रह सकेगी ?"

"एक पखवारा या हो सकता है, एक महीना...मुझे कुछ कहने के लिए बाध्य मत करो । मैं सिर्फ गलत जवाब ही दे सकूँगा और तुम ठीक ही कहोगे कि मैं कुछ नहीं जानता । कुछ नहीं कर सकता...कल से बीमारी जिस कदर बढ़ी है, उससे बहुत अन्देशा हो रहा है ।"

"डाक्टर !" पालिन बोली—"मेरे चाचा की भी हमें खबर लेनी चाहिये...क्या यह उचित है कि उसे सूचना दे दी जाय ? घर जाने से पहले भीतर जाओ और उसे भी देख लो ।"

सायंकाल भोजन के समय सबने उतावली दिखायी । लजारे दो-चार कौर खाकर अपने कमरे में जाने के लिये तैयार हो गया । पहली मंजिल के कमरे में वह अपनी मां के पास गया और रात्रिकालीन चुम्बन देने से

पूर्व पाँच मिनट तक उसके पास बैठा रहा। वह उसे हमेशा भूली रहती थी और इस बात की परवाह नहीं करती थी। दिन भर उसके ऊपर क्या बीतता रहता है।

ऊपर के बड़े कमरे में जाने पर लजारे की व्यग्रता तीव्र होगयी। रात, लम्बी और अँधेरी रात उसके उद्विग्न मन के लिए भारी पड़ने लगी। उसने मोम बत्तियां ले ली थीं, ताकि अँधेरे में न रहना पड़े। अन्धकार से भयभीत होकर प्रातःकाल तक वह उन्हें एक-एक कर जलाता रहा। लेटने पर उसने पढ़ने का व्यर्थ प्रयास किया। अब उसे केवल अपनी चिकित्सा सम्बन्धी पुरानी पाठ्य-पुस्तकें ही रुच सकती थीं और उसने उन्हें इधर-उधर बिखेर दिया। इन पुस्तकों से उसे बहुत भय मालूम होने लगा था। फिर वह चित लेट गया। आँखें खुली थीं, चेतना केवल इसी की थी कि पास में ही, दीवालों के पीछे ही कोई भयानक काण्ड हो रहा है और इससे वह आंतकित हो उठा। मरणासन्न मां की सांसें उसके कानों में ध्वनित होने लगीं। पूरे घर में वह भयंकर साँस कराह के रूप में गूँजती हुई प्रतीत होने लगी। खाट पर पड़ा हुआ वह कम्पन का अनुभव करने लगा और जब आकस्मिक रूप से शान्ति छा जाती तो वह चिन्तित हो कर नंगे पांव उठ पड़ता, सीढ़ियों पर टहलने लगता और खिड़कियों से बाहर की ओर झाँकने लगता।

नीचे पालिन और वेरोनिक ने, जो कि साथ-साथ देखभाल कर रही थीं, कमरे में हवा जाने के लिए दरवाजा खुला छोड़ दिया था। थोड़ी देर तक लजारे उधर ताकता रहा। तेज सांस की आवाज उसे फिर सुनायी पड़ने लगी। बिस्तर पर आकर उसने भी अपना दरवाजा खुला छोड़ दिया, ताकि मृत्यु की ध्वनि को सुनता रहे। जैसा कि पालिन की बीमारी के समय हुआ था, खुद की मौत का भय उससे दूर हो गया। उसकी मां मरने वाली है, प्रत्येक वस्तु मरने वाली है। चारों ओर फैली हुई मृत्यु की भीषणता उसे आंतकित करने लगी, उसकी एक एक साँस को भारी बनाने लगी।

अगले दिन श्रीमती शैन्ते की मरण-वेदना आरम्भ हो गयी। एक ऐसी भीषणतम मरण-वेदना जो कि चौबीसों घण्टे बनी रही। वे शान्त हो गयी थीं, जहर के भय से अब पागल नहीं होती थीं। अपने आप से स्पष्ट वाणी और छोटे-छोटे वाक्यांशों में, तकिये से अपना सिर उठाये बिना वे अनवरत बातें करती रहतीं। यह वार्तालाप नहीं था, क्योंकि वे किसी आदमी से बात नहीं कर रही थीं। लगता था, मानों पूरा यंत्र टूट गया हो। दिमाग की रफ्तार किसी घड़ी के पुर्जों की तरह तेज हो गयी थी। उनका सम्पूर्ण अतीत अनावृत हो उठा। वर्तमान के सम्बन्ध में, अपने पति के सम्बन्ध में, बेटे के सम्बन्ध में, भतीजी के सम्बन्ध में अथवा बोनीविले के उस घर के सम्बन्ध में, जहाँ दस वर्षों तक उन्होने अपनी क्षत-विक्षत महत्वकांक्षा का पोषण किया था, वे एक शब्द भी नहीं बोलीं। वे पुनः केन के बड़े परिवारों की आया बन गयी थीं। ऐसे-ऐसे परिचित नामों का वे उच्चारण करने लगीं, जिन्हें न तो वेरोनिक ने सुना था और न पालिन ने। ऐसी-ऐसी असम्बद्ध कहानियाँ कहने लगीं, जो उनकी सेवा में बूढ़ी हो गयी नौकरानी के लिए भी नयी थीं, ऐसा लगता था जैसे कोई समयानुसार पीले हो गये पुराने पत्रों का सन्दूक खाली करता है, उसी तरह मरने से पहले वे अपनी यौवन कालीन स्मृतियों को अपने दिमाग से बाहर निकाल रही थीं। पालिन अज्ञात के इस रहस्योद्घाटन से मृत्यु की प्रक्रिया के समय गुप्त अतीत को प्रकाश में लानेवाली इस स्वेच्छाहीन आत्म-स्वीकृति से चकित होकर अपने समस्त साहस के बावजूद उन्हें देख कर कम्पन का अनुभव करने लगी। पूरे घर में सांस की ही नहीं बल्कि इस खौफनाक बक-झक की भी आवाज प्रतिध्वनि होने लगी। लजारे ने दरवाजे से गुजरते समय दो-चार बातें सुन लीं। वह उन पर विचार करने लगा, लेकिन उनका कोई अर्थ नहीं समझ सका। जीवन के एक अन्य पहलू पर अदृश्य व्यक्तियों के संबन्ध में अपनी माँ के मुँह से कोई अपरिचित कहानी सुनकर तो वह बिल्कुल ही भयभीत हो उठा। डाक्टर कैजेनोव ने आकर पुनः श्रीमती शैन्ते की

जाच की । मृत्यु शैया पर उनकी बक-झक सुनकर वह भी चकित रह गया । जाते समय पालिन ने उससे पूछा—

"तो क्या तुम्हारा ख्याल है कि वे अब बचेंगी नहीं !"

"हाँ, शायद कल तक ही वह जिन्दा रहेंगी ।" कैजेनोव ने उत्तर दिया—"लेकिन अब उसे उठाना नहीं । वह तुम्हारी गोद में ही दम तोड़ सकती है...हर हालत में मैं शाम को फिर आऊँगा ?"

लजारे के ऊपर आने पर सभी खामोश हो गये । डाक्टर की उपस्थिति का सामना करते समय असमर्थ हो कर वह घर में इधर-उधर घूम रहा था और इस तरह खतरे का सही विस्तार समझने की कोशिश कर रहा था । आकस्मिक शान्ति स्वयं ही उसके सामने सच्चाई प्रकट करने लगी ।

"प्यारे बच्चों !" डाक्टर ने कहा—"मेरे साथ आओ । मेरे साथ ही भोजन करना शाम को मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँगा !"

लजारे का चेहरा अब भी उतरा हुआ था ।

"नहीं, माफ कीजिये !" उसने उत्तर दिया—"मैं घर नहीं छोड़ना चाहता हूँ ।"

उसी क्षण से लजारे प्रतीक्षा करने लगा । एक खौफनाक तनाव ने उसके दिल को जकड़ लिया । लगता था जैसे वह किसी लोहे की पेटी से बाँधा हो । दिन अन्तहीन प्रतीत होने लगा । सीढ़ियों के ऊपर-नीचे जाकर वह प्रायः समुद्र की ओर निहारता रहा ।

चार बजे के करीब एक बार पुनः अपने कमरे में लौटते समय वह सहसा अपनी मां के कमरे में गया । वह उसे देखना चाहता था । उसने अनुभव किया कि उसे एक बार पुनः अपनी मां का चुम्बन लेना चाहिये । लेकिन उसके ऊपर झुकने पर वह अचकचा कर रह गया । शायद उसने उसे देखा तक भी नहीं । पीले चेहरे और काले ओठों वाली यह औरत उनकी माँ नहीं थी ।

"चले जाओ !" पालिन ने उससे नम्रतापूर्वक कहा—"थोड़ी देर के लिये चले जाओ...मैं कह रही हूँ कि वक्त अभी करीब नहीं आया है।"

अपने कमरे में जाने के बदले लजारे थोड़ी देर तक स्तम्भित रूप में खड़ा रहा। उस वेदनापूर्ण और न पहचानने योग्य चेहरे की छाप अपने दिमाग में लेकर वह बाहर चला गया। उसकी बहन उससे झूठ बोल रही थी। समय सन्निकट था; उसका गला भर आया। उसे विराम की आवश्यकता थी और वह विक्षिप्त की भांति टहलने लगा। वह चुम्बन आखिरी था। यह विचार कि अब वह अपनी माँ को कभी नहीं देखेगा, कभी नहीं देखेगा, उसके दिमाग में कौंधने लगा। यह ख्याल आने पर कि उसके पीछे-पीछे कोई दौड़ रहा है, उसने मुड़कर देखा और अपने कुत्ते मैथ्यू को पहचान कर वह वेग से भगाने लगा। कुत्ते को घर लौटाने के लिए उस पर गिट्टियाँ फेंकने लगा। मैथ्यू इस स्वागत से चकित होकर घूम पड़ा और अश्रु विगलित विनम्र नेत्रों से उसकी ओर निहारने लगा। लजारे को कुत्ते को दूर भगाना अच्छा नहीं लगा, बहुत दूर तक वह उसके पीछे-पीछे चलता रहा, ऐसा लगता था मानों वह अपने चिन्ताकुल स्वामी की बराबर रखवाली करता रहना चाहता था। विशाल समुद्र ने भी उसके स्नायु मण्डल को स्पन्दित कर दिया। और वह खेतों की ओर चल पड़ा, अत्यधिक एकान्त स्थलों की खोज करने लगा, ताकि वह अकेलेपन और अदृश्य होने का अनुभव कर सके। रात होने तक जुते हुये खेतों को पार करते और ढूहों पर चढ़कर झाँक-झूक करते हुये वह इधर-उधर भरमता रहा। अन्त में कुछ ऐसी चीज देखकर अन्ध विश्वास पूर्ण भय से संत्रस्त हो वह घर की ओर लौट पड़ा।

"मैथ्यू !" वह डर कर बोला, "चलो घर लौट चलें !"

जितनी तेजी से रवाना हुआ था, उतनी ही तेजी से दौड़ता हुआ वह घर की ओर चल पड़ा। कुत्ता भी बराबर उसके पीछे-पीछे दौड़ता रहा।

यद्यपि रात हो गयी थी, तथापि रसोई में उजाला नहीं था। वह सुनसान और अँधेरी पड़ी थी। अँधेरे से लजारे डर गया और उसके पाँव आगे नहीं उठ सके। बिखरे हुये बरतनों और सामानों के बीच घर को कँपाने वाली आवाज को सुनता हुआ वह उदास खड़ा रहा। दरवाजे के बगल वाले कमरे से उसके पिता के कराहने की आवाज आ रही थी। जिसे सुनकर वह खास तौर से आतंकित रह गया, वह सीढ़ियों के ऊपर तेज कदमों और काना-फूसी की आवाज थी और ऊपर की मंजिल से किसी काम के तेजी से किये जाने की भन्नाहट सुनायी पड़ रही थी। वह समझने की हिम्मत नहीं कर सका। तो क्या सब कुछ खत्म हो गया? ऊपर जाने और सचाई का पता लगाने में असमर्थ हो वह स्थिर बैठ गया। उसने देखा, वेरोनिक नीचे आयी, भीतर गयी, लालटेन जलायी और उसे लेकर ऊपर चली गयी। इतनी तेजी से ओझल हो गयी कि उसने न कुछ कहा, न उसकी ओर दृष्टिपात किया। क्षण भर बाद रसोई में पुनः अँधेरा छा गया। सीढ़ियों के ऊपर दौड़ धूप करने वाले कदमों की आहट खामोश हो गयी। नौकरानी फिर दिखायी पड़ी। इस बार यह उसी खामोश तेजी के साथ मिट्टी की प्याली लेने आयी थी। लजारे को निश्चय हो गया कि सब कुछ खत्म हो चुका है। मेज के पास अँधेरे में किसी अज्ञात की प्रतीक्षा करता हुआ वह बैठ गया। उसके कानों में इस समय छायी हुई गहरी खामोशी गूंज रही थी।

सीढ़ियों के ऊपर श्रीमती शैन्ते पिछले दो घन्टों से मौत की साँस गिन रही थीं और इसके भय ने पालिन तथा वेरोनिक को संत्रस्त कर दिया था। जिन्दगी की अन्तिम साँसें लेते हुये उसका विष का भय पुनरूज्जीवित हो उठा था और लगातार बकबकाती हुई किन्तु धीरे-धीरे मूर्छा से अशक्त होकर वह बैठने के लिए हाथ-पैर हिलाने लगी। वह बिस्तर से उछल कर घर से भागना चाहती थी, क्योंकि वहाँ कोई उसे, कत्ल करने जा रहा था। पालिन और नौकरानी को उसे पकड़ रखने के लिये अपनी सारी ताकत लगा देनी पड़ रही थी।

"मुझे अकेली छोड़ दो, तुम सब मुझे मार डालोगे...मुझे फौरन चली जाने दो, फौरन...!" वेरोनिक ने उसे शान्त करने का प्रयत्न किया—"हमारी ओर देखिये, मालिकिन...यह मत सोचिये कि हम लोग आपको हानि पहुँचा सकते हैं !"

मरणासन्न महिला थक कर क्षण भर कराहती रही, वह अपनी चमचमाती हुई और न देखने वाली आँखों से कमरे की तलाशी-सी ले रही थी। तदुपरान्त वह पुनः बकने लगी !

"डेस्क बन्द कर दो। यह दराज में है...अब वह ऊपर आ रही है। उफ, मैं डर रही हूँ, सुनो, मैं उसकी आहट सुन सकती हूँ; उसे कुंजी मत दो, मुझे जाने दो, फौरन,-फौरन...!"

और वह तकियों पर उलट-पुलट करने लगी। पालिन उसे पकड़ रखने की कोशिश में लगी थी।

"चाची, और कोई नहीं है, सिर्फ हमीं हैं !"

"नहीं,-नहीं, सुनो, वह यहाँ है...हाय राम, मैं मरने वाली हूँ; उस कर्कशा ने मुझे पूरे का पूरा पिला दिया है, मैं मरने वाली हूँ, मरने वाली हूँ !"

उसके दाँत कटकटा रहे थे। अपनी भतीजी को न पहचानते हुये उसने उसकी बांहों में काट लिया, पालिन ने अत्यधिक ग्लानि से उसे अपनी छाती से दबा लिया। अपनी चाची का दुर्निवार सन्देह दूर करने के लिए वह हर प्रकार का प्रयत्न करके हार गयी थी। अन्त में उसने सन्तोष कर लिया था कि वह इसे अपने साथ क़ब्र में ले जाकर ही मानेगी।

सौभाग्य से वेरोनिक की निगाह उधर गयी थी। वह उसके हाथों को फैलाती हुई बोली—"बिटिया, सावधान हो जाओ !"

यह अन्तिम संकट था। श्रीमती शैन्तें ने अपने सूजे हुये पैरों को बिस्तर के बाहर लटका लिया था और अगर नौकरानी की निगाह न

पड़ी होती तो वह जमीन पर गिर जाती। वे पूर्णतया उन्मत्त हो गयी थीं। असम्बद्ध रूप से चीखते चिल्लाते हुये अपनी मुट्ठियां इस तरह बांध ली थीं जैसे किसी से हाथा-पाई करने वाली हों। एक अदृश्य शत्रु से, जो कि उनका गला दबोचे हुये था, वे अपनी रक्षा करती-हुई-सी दिख रही थीं। इस अन्तिम क्षण में उन्होंने अवश्य ही अपनी मृत्यु देख ली थी, क्योंकि वे पालिन और वेरोनिक की ओर भयत्रस्त और सचेत आंखों से निहार रही थीं, भीषण यातना से भयभीत होकर उन्होंने दोनों हाथों को सीने पर बांध लिया। इसके बाद वे तकियों से नीचे सरक आयीं और उनका शरीर काला पड़ गया। उनकी इह-लीला समाप्त हो गयी थी।

गहरी खामोशी छा गयी। पालिन ने यद्यपि अपने बन्धन सूत्र के अन्त में, आँखें मूँद लीं। उसकी सहनशीलता की यह अन्तिम सीमा थी। वेरोनिक तथा एक अन्य स्त्री को, जिसे उसने डाक्टर के चले जाने पर बुला लिया था, शव के पास छोड़कर वह कमरे के बाहर चली गयी। जीने पर जाने पर वह मूर्छित हो गयी। एक पग बढ़ कर उसे क्षण भर के लिए बैठ जाना पड़ा, क्योंकि उसे नीचे जाकर लजारे और शैन्ते को यह सम्वाद सुनाने का साहस नहीं हो रहा था। दीवारें उसके चारों ओर घूम रही थीं। कुछ क्षण बीत गये, फिर उसने जीने की छड़ पकड़ ली। भोजन के कमरे में पुरोहित अवेहार्टर की आवाज सुनायी पड़ रही थी। वहाँ जाने के बजाय वह रसोई में गयी। लेकिन वहाँ उसे लजारे मिल गया। उसकी धुँधली आकृति अँगीठी की लाल लपटों के प्रकाश में चमक रही थी। बिना कुछ बोले, हाथ फैलाये वह आगे बढ़ी। लजारे को स्थिति का ज्ञान हो गया था। वह पालिन के कन्धे पर धड़ाम से गिर पड़ा। उसने उसें दृढ़ आलिगंन में आबद्ध कर लिया। पालिन खमोशी के साथ रो रही थी। लजारे एक भी बूंद आंसू गिराने में असमर्थ था। शोक से उसका गला इतना रूँध गया कि वह बहुत कठिनाई से सांस ले पाता था। अन्ततोगत्वा पालिन ने अपने हाथों को छुड़ा लिया और धीरे से बोली—"तुम अँधेरे में क्यों हो?"

उसने ऐसी मुद्रा बनाली जैसे कि कहना चाहता हो—मुझे रोशनी की जरूरत नहीं है।

"हमें लालटेन जला लेनी चाहिये ?" वह आगे बोली।

लजारे सीधा खड़ा होने में असमर्थ हो एक कुर्सी में धँस गया था। मैथ्यू अत्यन्त उद्विग्न हो, रात की नम हवा को सूँघता हुआ सायबान में परिभ्रमण करने लगा। वह फिर भीतर आया और टकटकी लगा कर बारी-बारी से दोनों की ओर निहारने लगा। आगे बढ़कर उसने अपने मालिक के घुटनों पर अपना सिर रख दिया और लजारे की आंखों की ओर प्रश्न सूचक नेत्रों से ताकता हुआ स्थिर होकर बैठ गया। लजारे थर-थर कांपने लगा। सहसा उसकी आंखों से आंसुओं की धार फूट पड़ी और अपने उस पालतू कुत्ते को, जिसे उसकी मां ने चौदह वर्षों तक प्यार किया था, पकड़ कर वह जोर-जोर से सिसकने लगा —"हाय, मेरे दोस्त, मेरे बहुत-बहुत पुराने दोस्त...वह हमसे जुदा हो गयी; हमसे हमेशा हमेशा के लिए जुदा हो गयी !"

पालिन ने लालटेन जला दी थी उसने लजारे को तसल्ली देने की कोशिश नहीं की। उसे रोते हुये देखकर ही वह कुछ विश्रान्ति का अनुभव कर सकती थी। अपने चाचा को खबर देने की दर्दनाक जिम्मेदारी सामने खड़ी थी। लेकिन जिस समय वह भोजन के कमरे में जाने की तैयारी कर रही थी, उसी समय अबेहार्टर शैन्ते को यह समझा रहा था कि तुम्हारी पत्नी बेहोश हो गयी है और कुछ ही घन्टों में दम तोड़ देने वाली है। और इस प्रकार शैन्ते ने अपनी भतीजी के भीतर आते ही दुर्घटना का अनुमान कर लिया। वह चिल्ला पड़ा—"हे भगवन् मैं सिर्फ एक चीज चाहता था, कितना अच्छा होता कि वह एक बार पुनः जीवित हो उठती...उफ, ये निगोड़े पैर, ये निगोड़े पैर !"

यही उसका तकिया कलाम बन गया। उसकी आँखों से आँसुओं की छोटी-छोटी बूंदें लुढ़क आयीं और वे जल्द ही सूख गयीं। अस्पष्ट आहें भरता हुआ वह पुनः अपने पैरों को कोसने लगा। मृत महिला के

अन्तिम-दर्शन के लिये उसे ऊपर लाने के बारे में कुछ बातें हुईं। उसे उठाने की कठिनाई के बावजूद इस कारुणिक दृश्य से उसे दूर रखना ही उचित समझा गया। बिस्तर पर उसे ठीक से लिटा देने के बाद अवश्य ही पुरानी स्मृतियाँ उसके दिमाग में कौंधने लगीं, क्योंकि वह बहुत देर तक जोर-जोर से रोता रहा।

एक लम्बा दिन और दो लम्बी रातें बीत गयीं। ये ऐसी खौफ़नाक घड़ियाँ थीं जब कि मृत्यु घर की संगिनी-सी बन जाती है। कैजेनोव सिर्फ मौत को प्रमाणित करने के लिये आया! लजारे पहली रात पल भर के लिये भी बिस्तर पर नहीं गया। दूर-दूर के सम्बन्धियों को वह पत्र लिखने में ही लगा रहा। शव केन की क़ब्रगाह में ले जाकर उसी जगह दफ़नानी थी, जहाँ कि परिवार की अन्य लाशें दफ़न की गयी थीं; डाक्टर ने सभी रस्मों की अदायगी का इन्तजाम अपने हाथ में ले लिया था और सिर्फ एक दर्दनाक रस्म बाकी थी: शैन्ते को बोनीविले के नगर प्रमुख के रूप में मृत्यु की सूचना देनी थी। पालिन के पास उपयुक्त काली पोशाक नहीं थी, इसलिये उसे एक पुराने स्कर्ट और शाल से काम चलाना पड़ा। पहली रात बीत गयी। अगला दिन भी इन्हीं कामों की हलचल में बीत गया। लेकिन दूसरी रात भोर की क्लेशपूर्ण प्रतीक्षा में अन्तहीन प्रतीत होने लगी। कोई भी सो नहीं सका, सभी दरवाजे खुले पड़े रहे और मोमबत्तिया सीढ़ियों और सामानों पर बिखरी पड़ी रहीं। फिनाल की गन्ध सबसे दूर तक के कमरों में भी पहुँच गयी थी। सभी लोग जड़ बने थे। उनके मुँह सूख गये थे, आँखें लाल हो गयी थीं और जीवन को नियमित रूप में पुनः प्राप्त करने की गुप्त आकाँक्षा के अतिरिक्त किसी को कोई दूसरा अनुभव नहीं हो रहा था।

आखिरकार अगली सुबह को दस बजे सड़क के पार छोटे से गिरजाघर की घण्टी बजने लगी। केन की क़ब्रगाह में शव ले जाने के पहले बोनीविले में धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न कर लेने का निश्चय

किया गया। घण्टी की आवाज सुनते ही शैन्ते अपनी आराम कुर्सी में उचकने लगा। "मैं हर हालत में उसे विदा होते हुए देखना चाहता हूँ।" वह कहने लगा, "उफ़, ये निगोड़े पैर! क्यों मुझे ऐसे अभागे पैरों का शाप दिया गया?"

उसे रोकने की सारी कोशिशें बेकार साबित हुईं। घण्टी और भी ज्यादा तेज़ आवाज़ से बज रही थी। वह क्रुद्ध होकर चिल्लाने लगा, "मुझे बाहर ले चलो। मैं अच्छी तरह सुन सकता हूँ कि उसे नीचे लाया जा रहा है ... जल्दी करो, जल्दी। मैं उसे विदा होते हुये देखना चाहता हूँ।"

पालिन और लजारे को उसकी आज्ञा माननी ही पड़ी। दोनों दायें-बायें से उसकी कुर्सी ढकेलते हुये उसे ज़ीने के पास ले गये। चार आदमी शव नीचे ला रहे थे। शव-मंजूषा देखने पर शैन्ते उठने की कोशिश करने लगा, लेकिन उसके जकड़े हुये पैर दुखने लगे और उसे हिलते-काँपते हुये अपनी कुर्सी में ही पड़े रहने के लिये बाध्य होना पड़ा। ज़ीना सँकरा होने की वजह से शव-पात्र नीचे लाने में बहुत मुश्किलाहट हुई। बड़े और पोले सन्दूक को धीरे-धीरे अपनी ओर आते हुये वह देखता रहा। मुर्दे की पेटी अपने पैर के पास आ जाने पर यह देखने के लिये कि तख्ती पर क्या लिखा गया है, वह सामने झुक गया। अब रास्ता चौड़ा था और आदमियों ने फैल कर शव-पात्र उठा लिया। वह खामोश होकर उन्हें देखता रहा, जीवन के चालीस वर्षों को, पुराने दिनों की अच्छी और बुरी सारी वस्तुओं को अपने से छिनते हुये देखता रहा। व्यग्रतापूर्वक वह उनकी उसी तरह कामना करने लगा जैसे कि कोई अपने खोये हुये यौवन की कामना करता है। कुर्सी के पीछे पालिन और लजारे आँसू बहा रहे थे।

"नहीं, नहीं, मुझे यहीं रहने दो।" उन्हें भोजन के कमरे में उसके नियत स्थान पर ले जाने के लिए उद्यत होते हुये देख कर वह बोला। "मुझे यहीं रहने दो; मैं सारा दृश्य देखना चाहता हूँ।"

शव मंजूषा टिकठी पर रख ली गयी थी और दूसरे आदमियों ने उसे उठा लिया था। बरामदे में जुलूस एकत्र हो रहा था। स्थानीय आदमियों की भीड़ जमा हो गयी थी। मैथ्यू अभी तक अपना मुँह बन्द किये था और अब उसकी गुर्राहट भीड़ के बीच से सुनी जा सकती थी। घर की पालतू बिल्ली मिनूशी रसोई की खिड़की पर खामोश बैठी हुई आदमियों की भीड़ की ओर चकित दृष्टि से ताक रही थी।

"क्या तुम नहीं जा रही हो?" शैन्ते ने वेरोनिक को अपनी बगल में बैठे हुए देख कर पूछा।

"नहीं," उसने लड़खड़ाई हुई आवाज में जवाब दिया। "छोटी मालकिन मुझे आपके पास रहने के लिये कह गई हैं।"

गिर्जाघर की घण्टी बजती जा रही थी। अन्ततोगत्वा शव अहाते के बाहर चला गया। लजारे और पालिन काले परिधान धारण किये हुये चमकीली धूप में पीछे-पीछे जा रहे थे। अपनी निगोड़ी कुर्सी में धँसा हुआ, बड़े कमरे के द्वार-पथ से शैन्ते शव को बिदा होते हुये देखता रहा, देखता रहा।

[७]

लजारे और पालिन को जटिल अन्त्येष्टि संस्कार और कुछ काम-धाम से केन में दो दिन लग गये। समाधि स्थल के अन्तिम दर्शन के बाद जब वे रवाना हुए तो मौसम बदल गया था और समुद्र तट से होकर तूफानी हवायें चलने लगी थीं। बारिश के बीच ही उन्होंने ऐरोमांशे से प्रस्थान किया, हवा इतनी तेज थी कि गाड़ी की धुरी करीब-करीब टूट गयी। पालिन को उस प्रथम यात्रा की याद आने लगी,

जब कि श्रीमती शैन्ते उसे पेरिस से ले आयी थीं ! इसी तरह का तूफ़ान चल रहा था और उसकी बेचारी चाची ने उसे खिड़की से बाहर न झांकने की हिदायत कर दी थी। हर दो मिनट के बाद वे अपनी रूमाल उसके गले में बाँधने लगती थीं। लजारे अपने कोने में बैठा विचारों में डूबा हुआ था। सड़क के हर मोड़ पर वह देखने लगता कि उसकी मां आलिंगन के लिए उसकी उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा कर रही है। एक बार दिसम्बर में वह उससे मिलने छः मील पैदल चलकर आयी थी और इसी मील के पत्थर के पास वह उसे बैठी हुई मिली थी। इसी बीच जमकर पानी बरसने लगा। ऐरोमांशे और बोनीविले के बीच पालिन और लजारे आपस में एक शब्द भी नहीं बोले।

बहरहाल, घर के नजदीक पहुँचते ही बारिश थम गयी, किन्तु अब हवा भीषण वेग के साथ बह रही थी। गाड़ीवान को उतरकर लगाम थामे हुये घोड़े को हाँकना पड़ रहा था। ठीक उसी समय एक मछुवाहा दौड़ता हुआ आया।

"उफ, लजारे बाबू," वह चिल्लाया, "सब मटियामेट हो रहा है; तूफ़ान से तुम्हारा बाँध धसकने लगा है।"

सड़क के इस मोड़ से समुद्रतट दिखाई नहीं देता था; लेकिन लजारे ने अपना सिर ऊपर उठाया और बेरोनिक चौरस छत पर खड़ी होकर समुद्रतट की ओर निहारती हुई दिखाई पड़ी। सड़क की दूसरी ओर अबेहार्टर अपने बाग की दीवार की छाँह में खड़ा था और वह भी समुद्र की ओर देख रहा था। सामने झुक कर वह चिल्लाया! "यह तुम्हारे संगमूसे बहाये ले जा रहा है!"

लजारे समुद्रतट की ओर घूम पड़ा। गड़बड़ मौसम के बावजूद पालिन भी उसके पीछे-पीछे चलने लगी। चट्टान की तलहटी के पास पहुंचते ही सामने का भयानक दृश्य देखकर वे क्षण भर के लिए रुक गये। ज्वार, सितम्बर महीने का तूफानी ज्वार जोर-शोर से बढ़ता आ रहा था। इसके खतरनाक होने का अनुमान नहीं किया गया था,

लेकिन पिछले दिन से चलने वाली उत्तरी हवा ने इसका वेग इतना प्रबल कर दिया था कि पानी के पहाड़ बनते और चट्टानों को कुचलने के लिये आगे बढ़ते हुये दिखाई पड़ने लगे। दूर बहुत दूर, आसमान में छाये हुए बादलों की छाँव तले समुद्र का कृष्णवर्ण विस्तार दृष्टिगत हो रहा था।

"चली जाओ," लजारे अपनी बहन से बोला, "मैं सिर्फ देख लेने भर को जा रहा हूँ; तुरन्त ही लौट आऊँगा।"

कोई उत्तर न देकर किनारे तक वह पीछे-पीछे चली गयी। संगमूसों और हाल ही में बने एक लम्बे बाँध पर भीषण प्रहार हो रहा था। निरन्तर बढ़ने वाली लहरें धक्के पर धक्के देती हुई टकरा रही थीं। प्रत्येक आघात पर संग मूसों की लकड़ियाँ करकरा कर टूट जातीं थीं। बीच का मोटा खम्भा सिर्फ एक किनारे से ही लगा हुआ था। दो अन्य खम्भे मजबूती से थमे हुए थे, लेकिन बार-बार के प्रहार से वे भी हिलते हुए दृष्टिगत हो रहे थे।

"यही तो मैंने कहा था" एक पियक्कड़ आदमी बोला, "देखो उल्टी हवा चलने पर क्या होता है...उस जवान दोस्त के खम्भों पर यह बहुत रहम कर रही है!"

सब लोग ठठाकर हँसने लगे। समूचा बोनीविले वहाँ जमा था। पुरुष, महिलायें और बच्चे संगमूस पर लगने वाले बेहिसाब धक्कों का मज़ा ले रहे थे। समुद्र उनके घरौंदों को भी नेस्त नाबूत कर सकता था, लेकिन वे आश्चर्यपूर्ण सराहना के साथ इसे चाह रहे थे, इससे चिन्तित होने के बदले प्रसन्न थे।

वे हास-परिहास जैसी बातें कर रहे थे, ऐसी अशुभ बातें बक रहे थे, जो कि प्रायः उन्हें प्रिय थीं।

लहरों के प्रबल थपेड़े से संगमूसों का कोई ढाँचा जब विध्वस्त हो जाता तो बच्चे मौज में आकर नाचने लगते। वह भी गया, वह भी गया! ये सभी मटियामेट हो जायँगे, किसी बच्चे के जूते के नीचे पड़ी

हुई मक्खी की तरह कुचल उठेंगे। लेकिन ज्वार अब भी बढ़ रहा था और बाँध अब भी खड़ा था। वे सभी प्रतीक्षा कर रहे थे, निर्णयात्मक युद्ध के दृश्य की। आखिरकार खम्भों के पास लहरें भौंरियाने लगी अब तमाशा शुरू ही होने जा रहा था। "हाय, हाय! वह जवान साथी यहाँ नहीं है!" एक व्यक्ति बोला—"वह उन्हें मजबूत करने का इन्तजाम कर सकता था।"

सहसा सन्नाटा छा गया। किसी मछुवाहे ने लजारे और पालिन को देख लिया था। उन दोनों ने उनकी बातें सुन ली थी। सब लोग शान्त होकर विपत्ति का निरीक्षण करने लगे। कड़ियों का टूटना कुछ भी नहीं था, लेकिन ज्वार अगले दो घण्टों में और ज्यादा बढ़नेवाला था। बाँध टूटने पर गाँव के लिए खतरा पैदा होना अवश्यम्भावी था। तूफान के झोंकों से बचाने के लिए लजारे अपनी बहन को कस कर पकड़े हुए था। आसमान पर धुन्ध और कालिमा छा गयी थी, लहरें गर्जन कर रही थीं। पालिन और लजारे शोकार्त दशा में स्थिर खड़े थे। उनके चारो ओर खड़े मछुवाहे इस समय चिन्ता और खामोशी के साथ आनेवाली आपत्ति की प्रतीक्षा कर रहे थे।

पहले धक्के में बांध थमा रहा। हर बार कोई लहर कड़ियों को हिला देती। एक बार लकड़ी का एक हिस्सा टूटने पर बगल के टुकड़े भी एक-एक कर टूटने लगते। बड़े-बूढ़ों ने पिछले पचास वर्षों में समुद्र की इतनी बड़ी हलचल नहीं देखी थी। शीघ्र ही उन्हें पीछे हटने को बाध्य होना पड़ा। एक-एक कर कड़ियाँ टूट चुकी थी और बाँध का विध्वंस पूरा हो चुका था। टूटे हुये हिस्से उछल कर तट पर आगये थे। सिर्फ एक खम्भा अकेला अपनी जगह बरकरार था। बोनीविले वासियों की हँसी गायब हो गयी थी; स्त्रियाँ अपने रोते हुए बच्चों को लेकर भाग रही थीं। शैतान फिर भी उनके पीछे लगा हुआ था। क्षणभर में ही उनके सामने उनके सबसे बड़े पड़ोसी समुद्र की विनाशलीला का नर्तन होने लगा। चारोंओर भगदड़ मच गयी।

सब लोग पत्थर की दीवारों के पीछे शरण लेने का प्रयत्न करने लगे। उनके घरों के लिए वही एकमात्र रक्षा-पंक्ति थी। धीरे-धीरे खम्भे खिसकने लगे, तख्ते सरकने लगे और विशाल लहरों ने उन बेहद नीची दीवालों को भी हजम कर लिया। सभी प्रतिरोध विफल हो गये और एक मछुवाहे के घर की रसोई तक बाढ़ का पानी पहुँच गया। चारो ओर प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित हो गया और विजयी समुद्र के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं रह गया।

धीरे-धीरे बाढ़ के सामने लजारे और पालिन की हिम्मत पस्त हो गयी। वे कुछ भी करने मे असमर्थ थे। घर की ओर लौटते समय पालिन पहाड़ी से आधी दूरी पर खतरे में पड़े हुए गाँव की आखिरी झलक देखने के लिए रुक गयी।

"विनाश, एकमात्र विनाश !" वह धीरे से बोली।

लेकिन लजारे बोनीविले-वासियों को उनकी बेहूदा हँसी के लिए क्षमा नहीं कर सका। विपत्ति से, जो कि उसके लिए व्यक्तिगत पराजय थी, खिन्न और क्रुद्ध होकर अन्त में वह बोला: "समुद्र से इन लोगों को बहुत प्रेम है। अच्छा है कि वह इनके बिस्तरों तक पहुँच जाय ! इसे रोकने की कोशिश करना मेरी मूर्खता होगी !"

वेरोनिक छाता लेकर उनसे मिलने नीचे जा रही थी। क्योंकि पानी फिर बरसने लगा था।

अबेहार्दर इस वक्त भी अपनी दीवार के पीछे खड़ा न जाने क्या चिल्ला रहा था। भयानक मौसम, संगमूसों के विनाश, गाँव की दुर्दशा और उस खतरे की हालत ने, जिसमें वे उसे छोड़ कर आये थे, उनके घर आने की शोकपूर्णता को प्रखरतर कर दिया। घर के भीतर जाने पर वह उन्हें नग्न और बरफ़ जैसा ठण्डा मालूम होने लगा। सिर्फ तेज हवा वीरान कमरों से लगातार कराह के साथ आ रही थी। कोयले की आग के सामने ऊँघता हुआ शैन्ते उन्हें देख कर रोने लगा। सीढ़ियों को देखकर याद आनेवाली भीषण स्मृतियों से डर कर

उनमें से कोई भी अपने कपड़े बदलने के लिये ऊपर नहीं गया। मेज पहले से ही रखी थी और उस पर लालटेन जल रही थी। जल्दी-जल्दी सबने भोजन किया। साँझ की गहरी धुन्ध छायी हुई थी। उनके छिट-पुट शब्द समुद्र के अनवरत कोलाहल में विलीन हो जाते थे, दीवारें काँपने लगती थीं। वेरोनिक ने चाय लाने पर बताया कि छः मकान ढह चुके हैं। कम से कम आधे गाँव के विनाश की आशंका है। अपने स्वास्थ्य से निराश शैन्ते ने यह कह कर उसे चुप करा दिया कि अपनी मुसीबतें ही काफी हैं। दूसरों की सुनना बेकार है। उसे खाट पर लिटाने के बाद दूसरे लोग भी थकावट से चूर हो विश्राम करने चले गये। लजारे ने भोर तक अपनी बत्ती जलने दी और उद्विग्न पालिन ने उस रात कुछ सुनने के लिये दर्जनों बार धीमे से अपना दरवाजा खोला, लेकिन अब सूनी हो गयी पहली मञ्जिल से सिर्फ मौत जैसी खामोशी ही उठ रही थी।

दूसरे दिन से लजारे उन्हीं अवसाद तथा वेदनापूर्ण घड़ियों में रहने लगा, जो कि प्रिय जनों के मार्मिक विछोह के बाद आया करती हैं। ऐसा लगता था मानो वह जमीन पर धड़ाम से गिर कर बेहोश होने के बाद चैतन्य हुआ हो और एक-एक अंग अब भी दुख रहे हों। अब वह पूर्णतया सचेत था। उसकी स्मृतियाँ स्पष्ट थीं। वह उस दुःस्वप्न की दशा से उठा था, जो कि उसे नयी परिकल्पनाओं से आक्रान्त किये हुये था। अतीत को पूरे विस्तार के साथ वह फिर से देखने लगा, अपनी पीड़ाओं को दोबारा झेलने लगा। मृत्यु का वह तथ्य, जिससे अब तक उसका सम्पर्क नहीं हुआ था, यहाँ उसके घर में ही विद्यमान था। मृत्यु ने पाशविकता पूर्वक कुछ ही दिनों में उसकी बेचारी मां को उससे छीन लिया था। अस्तित्व के विनाश का भय एकदम आँख के सामने उतर आया था। हम चार थे, फिर एक की जगह खाली हो गयी और अब चिन्ता से थरथराते हुये, मायूसी से एक दूसरे के नजदीक सटते हुये, खोयी हुई सजीवता

का कुछ अंश प्राप्त करने की आशा करते हुये, सिर्फ तीन ही हैं। क्या मृत्यु का यही अर्थ है? इस न रहने के बोध, किसी परछाईं को काँपते हुये हाथों से पकड़ने के प्रयास और अन्ततः कुछ भी न पाने को ही क्या मृत्यु कहते हैं?

मां के बिछोह की याद हर घड़ी फिर से ताजी हो जाती। हर समय उसकी तस्वीर उसके दिमाग में घूमती रहती। उसे उस समय इतनी पीड़ा नहीं हुई थी जब कि उसकी बहन आकर उससे लिपट गयी थी, दाह-क्रिया के समय भी इतना क्लेश नहीं हुआ था। सूने घर में अब लौटने पर ही उसे अपनी भीषण क्षति का आभास हुआ। इस अनुताप से उसकी वेदना और भी तीव्र हो उठी कि क्यों नहीं उसके अन्तिम क्षणों में, जबकि उसकी कुछ प्रतिच्छाया थी, उसने क्यों नहीं जी भर कर रो लिया। यह भय उसे कचोटने लगा कि अपनी माँ से उसने यथेष्ट प्रेम नहीं किया। समय-समय पर रुँधे हुये आँसुओं से वह छटपटाने लगता। हमेशा अपनी मां के बारे में सोचता रहता। मां की प्रतिमा सामने नाचती रहती। अगर ऊपर जाता तो यही देखने की आशा करने लगता कि उसकी मां अपने कमरे से निकल कर तेज कदमों से जल्द ही उसके पास आ जायगी। प्रायः यह ध्यान कर कि उसकी आहट सुनायी पड़ी है, वह मुड़कर अगल-बगल देखने लगता। कभी-कभी भ्रम होता कि वह किसी कमरे में प्रवेश कर रही है। वह उससे नाराज नहीं हैं, उसकी ओर देखती भी नहीं; जो कुछ गुज़र गया वह केवल एक परिचित प्रेत था, जीवन की एक परछाईं थी। रात को उसे अपनी बत्ती बुझाने की हिम्मत न होती, नहीं तो अँधेरे में चुपके से किसी के अपने बिस्तर के निकट आने की आहट सुनायी पड़ने लगती और अपने ललाट पर किसी की धीमी-धीमी साँस का अनुभव करने लगता। घाव पुजने के बजाय हमेशा बढ़ता ही गया। मां की याद दिलाने वाली छोटी-से छोटी वस्तु भी उसे विकम्पित

कर देती और तत्क्षण ही विलुप्त हो जानेवाला कोई प्रखर और स्पष्ट स्वप्न 'जीवित न रहने' की चिन्ता में उसे निमग्न कर देता ।

घर की हर चीज उसकी मां को उसके पास लौटा लाती । उसका कमरा अछूता पड़ा था, कोई भी सामान इधर से उधर नहीं किया गया । आले पर रखी घड़ी की सुइयां सात बज कर सैंतीस मिनट पर रुकी पड़ी थीं । वहाँ जाते समय उसके पैर काँपने लगते थे । एक दिन सिढ़ियों पर चढ़ते हुये सहसा वह अपनी माँ के कमरे के भीतर चला गया । बुरी तरह उसका दिल धड़क रहा था । वह पुराने और जाने-पहचाने फर्नीचर, लिखने के डेस्क, मेज और चारपाई को देखने लगा । उसे ऐसा लगा मानों प्रत्येक वस्तु ने एक प्रकार की दिव्यता धारण कर ली है और इसीलिये अपरिचित-सी हो गयी है । लगातार बन्द झाँपों के बीच से छन कर धुँधली रोशनी भीतर आ रही थी । इसके धुँधलेपन ने उसकी विह्वलता उद्दीप्त कर दी और वह उस तकिये को चूमने लगा जिस पर उसकी मां का सिर मौत से ठण्डा हुआ था । एक दिन प्रातः काल भीतर जाने पर वह अचकचा कर रुक गया; झाँपें खुल गयी थीं और दिन का उजाला बराबर भीतर आ रहा था । पूरे बिस्तर तथा तकिये पर सूरज की चमकीली किरनें पड़ रही थीं और हर जगह, हर एक फर्नीचर पर, हरएक घड़े में फूल रखे हुये थे । तब उसे याद आया कि यह बरस-गाँठ थी, उसकी स्वर्गीय मां का जन्म-दिन था । हर साल वे इसे मनाया करते थे और उसकी बहन को इसका स्मरण था । वे मात्र शरद् कालीन फूल थे, गुलबहार, गेंदे और गुलाब के फूल, पहले से ही पाले से कुम्हलाये हुये थे, लेकिन उनसे कमरा जीवन की सुगन्ध से भर उठा और उनके उल्लसित रंग बेजान घड़ी के, जहां कि स्वयं समय ही रुका हुआ प्रतीत हो रहा था, दोनों ओर चमचमा रहे थे । श्रद्धांजलि के इस रूप को देख कर वह विह्वल हो उठा और बहुत देर तक रोता रहा ।

भोजन-गृह, रसोई और ऊपर की छत, सब जगह उसकी मां की

छाप फैली हुई थी। मामूली से मामूली चीज भी हाथ में लेने पर उसमें उसकी मां की परछाई तैरती हुई नज़र आने लगती थी। अपनी मार्मिक वेदना को छिपाने के लिये, मृत्यु के साथ अपना निरन्तर वार्तालाप गुप्त रखने के लिए वह सदैव मौन बना रहता। अपने को पीड़ित करनेवाले का नाम तक लेने से वह कतराने लगा। अपने को ऐसा बना लिया मानों सब कुछ भूल गया हो, फिर भी ऐसा कोई क्षण नहीं आता था जबकि वह अपने हृदय में स्मृतियों के दंशन का अनुभव करता हो। केवल उसकी बहन की आँखें उसे भीतर तक देख लेती और उस समय वह साहस के साथ झूठ बोल देता, कसम खाकर कहने लगता कि मैंने अपनी बत्ती आधी रात बुझा दी थी या किसी काल्पनिक कार्य में तल्लीन था और आगे कोई सवाल किये जाने पर गुस्से में वह भाग खड़ा होता। अपना शयन-कक्ष ही उसका स्वर्ग था। अपने क्लेश का रहस्य दूसरों तक फैलाने के भय से मुक्त होकर उस कोने में, जहां कि वह बड़ा हुआ था, शान्ति का अनुभव करते हुये, अपने शोक के प्रति आत्म-समर्पण करने के लिये वह वहाँ चला जाया करता था।

प्रारम्भ से ही वस्तुतः उसने बाहर जाने की, दूर तक घूमने के अपने अभ्यास को फिर से जारी करने की, चेष्टा की थी। कम से कम इससे वह नौकरानी की मनहूस खामोशी और अपनी अपंगता का रोना रोते हुए कुर्सी में धँसे बाप के दयनीय दृश्य से अपना पीछा छुड़ा ही लेता। लेकिन टहलने-घूमने से उसे सख्त नफरत हो गयी थी। बाहर इतना ऊब जाता कि उसे मतली आने लगती। निरन्तर निनादित समुद्र और फेनिल किनारा उसके मन में उदासी उड़ेल दिया करता था। यह तो उसके ग़म से बेगानी एक बेजान ताकत थी, जो कि किसी मानवीय मृत्यु पर कभी शोक प्रकट किये बिना सैकड़ों वर्षों से उन्हीं पुराने पत्थरों का लिबास ओढ़े हुई थी। यह शक्ति अत्यन्त विशाल, अत्यन्त ठन्डी थी; और अपने को भीतर छिपाने के लिये वह घर भाग खड़ा होता था,

ताकि अपने को लघुतर और जल तथा आकाश की अनन्तता के बीच कम दबा हुआ अनुभव कर सके। अकेली एक जगह उसे भाती थी, वह थी चर्च के चारों ओर फैली हुई कब्रगाह। उसकी मां वहाँ नहीं थी और वहाँ एकान्त में वह उसका चिन्तन कर सकता था। नैराश्य के अपने भय के बावजूद वह उस स्थान पर शान्तिपूर्ण प्रभाव डालता था। कब्रें घास के नीचे सोयी पड़ी हुई थीं, गिर्जाघर से मध्य भाग की छाँह में सदाबहार के वृक्ष खड़े थे और हल्की समुद्री हवा की सरसराहट के अतिरिक्त कोई भी ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती थी। मक़बरों पर पुराने मृतकों के नाम पढ़ने में असमर्थ हो, सब कुछ भूलकर वह वहाँ घन्टों लेटा रहता था।

यदि लजारे मरणोत्तर जीवन में विश्वास कर सकता, यह विश्वास करने में समर्थ हो सकता कि मनुष्य पुनः अपने प्रियजनों से मिल सकता है, अँधेरी दीवार के पार उनसे भेंट कर सकता है, तो कदाचित् इतना दुःखी न होता। इस आश्वासन का वह तनिक भी अनुभव करने में असमर्थ था। उसकी दृढ़ धारणा थी कि मानवीय जीवन का अस्तित्व मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाता है। इसी भावना के गर्भ में मरजाने के विचार के विरुद्ध उसकी आत्मा का गुप्त विद्रोह छिपा हुआ था। कहीं और, नक्षत्रों के बीच अपने बन्धु-बान्धवों तथा पालकों के साथ नया जीवन आरम्भ करना कैसा आनन्द दायक होगा! बिछुड़े हुये प्रियजनों से पुनः मिलने का विचार मनुष्य के अन्तिम क्षणों को कितना मधुर बना सकता है! मनुष्य कितनी उत्कंठा से उनका आलिंगन कर सकता है! अमरता में साथ-साथ पुनः जीना कैसा अनोखा वरदान है! धर्म के असत्य भाषण का ध्यान कर उसका मन खिन्न हो उठता। धर्म सहानुभूति पूर्वक दुर्बल जीवों से भीषण सत्य को छिपाये रहता है। नहीं, मृत्यु के समय प्रत्येक वस्तु का विनाश हो जाता है। हमारी कोई भी प्रिय वस्तु पुनः जन्म नहीं धारण करती, हमारी विदाईयाँ अन्तिम होती हैं। अन्तिम! अन्तिम? यही वह भीषण विचार था जो कि शून्यता

के गह्वरों में उसके मन को धकेल दिया करता था।

एक दिन, प्रातःकाल लजारे 'यू' पेड़ों की साया में खड़ा था। उसने अबेहार्टर को उसके रसोई के बगीचे में देखा। बगीचा गिर्जाघर के अहाते से सिर्फ एक नीची दीवार से ही जुदा किया गया था। पादरी सिर्फ एक पुरानी बादामी रंग की अधबहियां पहने था, पैरों में चट्टियां थीं। वह करमकल्ले की एक क्यारी गोंड़ रहा था। उसका चेहरा प्रखर समुद्री वायु से पपरिया गया था, गर्दन धूप से लाल हो गयी थी। कड़ी जमीन पर झुका हुआ वह किसी बूढ़े किसान-जैसा दिख रहा था। उसका पारिश्रमिक नगण्य था, इस दूरवर्ती लघु पथरीली-प्रदेश में उसे ऊपरी आमदनी भी नहीं होती थी और इसीलिए अगर वह स्वयं कुछ सब्जियाँ न उगाये होता तो भूखों मर गया होता। दान-दक्षिणा में भला उसे कितनी रकम मिली थी। वह अकेले रहता था। कोई नौकर नहीं था। बस एक छोटी सी बच्ची थी और प्रायः स्वयं ही उसे अपना भोजन भी बनाना पड़ता था। घुटे हुये सिर पर ओले गिराने के लिये इन चट्टानों पर की जमीन एक दम बेकार थी। तूफ़ान ने उसके चोकन्दरों को पसार-पसूर दिया था और अभागे आदमी को मूठी भर प्याज उगाने के लिए कुश-कंकड़ों से जूझना पड़ रहा था। ताहम, इस खौफ़ से कि लोग-बाग मज़हब का मज़ाक उड़ायेंगे, उसने अध-बहियाँ पहन कर अपना चोला बदल लिया था। और लजारे मुड़ना ही चाहता था कि उसने पादरी को अपनी जेब से एक चिलम निकालते, अँगूठे से उसे भरते और मुँह से जोर-जोर से फूँक मार कर सुलगाते हुये देखा। लेकिन चूंकि वह पहली ही फूंक का बढ़िया मजा ले रहा था, सो उधर अब की आँख नौजवान पर पड़ गयी और मानों अपनी चिलम छिपाने के लिए उसने डरावनी सूरत बना ली। फिर यह चिल्लाते हुये हँसने लगा: "तो तुम हवा खा रहे हो ... आओ, चले आओ, मेरा बगीचा देख लो न!"

लजारे उसके पास पहुँच कर मगन होता हुआ बोला। "मेरा

कहना है कि तुमने मुझे आत्मलीन होते हुये पकड़ लिया है ... लेकिन यही मेरा सरबस है, मेरे दोस्त, मुझे भरोसा है कि भगवान् को यह अखरेगा नहीं।"

इसके आगे, पादरी खींच खींच कर पीता हुआ, कुछ बड़बड़ा देने भर के लिए अपनी चिलम उतार लिया करता। इस तरह वह वर्कमाउन्ट के पुरोहित के बारे में सोचने से अपने को रोक नहीं सका। वह भाग्यवान् आदमी है। पास में हर चीज उपजाने वाली असली जमीन के साथ शानदार बगीचा है। उसमें मशक्कत नहीं करनी पड़ती, यहाँ तक कि वह कभी इतना बेसी गोंड़ता भी नहीं। इसके बाद वह अपने आलुओं को कोसने लगा। अगर्चे जमीन उनके मवाफिक थी, फिर नीचे दो सालों से सड़ जाया करती थीं।

"मैं आपका हरज नहीं करूँगा," लजारे बोला, "काम चालू रहे!"

पादरी ने तुरत ही अपनी कुदाल पुनः उठाली।

"ठीक, ऐसा ही करूँगा ... मेरे जवान आवारे पढ़ने आ रहे होंगे और मैं इस क्यारी को पहले तैयार कर लेना चाहता हूँ।"

लजारे एक पत्थर पर बैठ गया। वह अबेहार्टर को कंकड़ों के साथ जूझता निरखने लगा। वह अपनी हल्की-फुल्की, बचकानी बूढ़ी आवाज में उसकी बातों पर हुँकारी मार दिया करता था। वह अपने मन में ऐसा ही अविचल, इन्द्रयों और चिन्ताओं से मुक्त, ग़रीब और मासूम बनने की तड़प महसूस करने लगा। विशप जरूर ही अपने को बहुत सादे ख्याल का समझता होगा, इसी मज़लूम पादरी घर में अपनी बुढ़ाई गँवा लेना चाहता होगा। यह सब होते हुये, वह ऐसे आदमियों में था जो कभी शिकायत नहीं करते, जिनकी सारी महत्वाकांक्षायें खाने भर की रोटी और पीने भर का पानी रहने पर ही सन्तुष्ट रहती हैं।

"इन क्रासों के बीच रहना बहुत सुखमय नहीं हो सकता है,"

लजारे अपने शब्दों पर बल देता हुआ बोला। पादरी ने अचकचा कर गोंड़ना बन्द कर दिया।

"सुखमय नहीं? क्या मतलब?"

"क्यों, मौत हमेशा तुम्हारी आँखों के सामने है, रात में तुम अवश्य ही इसका सपना देखते होगे।"

पादरी अपने मुँह से चिलम हटाकर नम्रता पूर्वक बोला, "डंके की चोट कहता हूँ कि मैं कभी इसके बारे में सोचता ही नहीं ... हम सभी परमात्मा के हाथों में हैं।" और वह पुनः अपने काम में लग गया। उसकी अवस्था उसे भय से सुरक्षित रखती है। अपनी धार्मिक शिक्षाओं के आगे सोचने की वह कभी चेष्टा ही नहीं करता है। तुम मर जाते हो और स्वर्ग चले जाते हो, कुछ भी कम जटिल या अधिक आश्वासनपूर्ण नहीं हो सकता है। वह उद्दण्डता से हँस रहा है; मुक्ति की निश्चित् सूझ-बूझ के अतिरिक्त उसकी तंग खोपड़ी में और किसी चीज के लिए जगह ही नहीं है।

इसके बाद से लजारे प्रायः हर सुबह पादरी के बगीचे में जाने लगा। पत्थर की पुरानी चौकी पर वह बैठ जाता, और पादरी को बाग़बानी करते हुये देख कर अपनी सारी चिन्तायें भूल जाता। निर्भय होकर मृत्यु के निकट रहने की ऐसी अन्धनिरीहता के दर्शन ने उसे कुछ समय तक शान्तपूर्ण बना दिया। इस बूढ़े आदमी की तरह वह भी क्यों नहीं पुनः बच्चों जैसा बन सकता? ऐसे निष्कपट पुरुष के साथ, जिसके निश्छल अज्ञान पर उसे हँसी आती थी, वार्तालाप करते हुये उसके हृदय की गहराइयों में लुप्त विश्वासों के पुनर्जाग्रत होने की गुप्त आशा करवट-सी लेने लगी। वह स्वयं भी अपने हाथ में चिलम लेकर जाता और दोनों चुकन्दरों को खानेवाले कीड़ों या खाद की मँहगी के बारे में बात करते हुये ठाट के साथ तमाखू पिया करते। पापों को अंगीकारकर्त्ता के रूप में वर्षों की सहिष्णुता और अनुभवशीलता के फलस्वरूप पादरी परमात्मा के विषय में बहुत कम ही बोलता। उसे

उसने अपनी व्यक्तिगत मुक्ति के लिए एक किनारे रख लिया था। दूसरे अपने निजी कामों की परवाह रखते हैं और वह अपने काम से काम रखेगा। तीस वर्षों की व्यर्थ चेतावनियों के बाद अब उसने स्वयं को पुरोहित-कर्मों के पालन तक ही सीमित कर लिया था। प्रतिदिन आना और उसे देख लेना लजारे की बहुत बड़ी अनुकम्पा थी। उसे रुष्ट करने अथवा धार्मिक विवाद छेड़ने से दूर रह, वह अनवरत रूप से अपने बगीचे के बारे में ही बात-चीत करना पसन्द करता था। ऐसे क्षणों में लजारे को ऐसा महसूस होता, मानो वह मासूमियत की सुनहली दुनिया में पहुँच गया है, ऐसी जगह पहुँच गया है जहाँ बिल्कुल ही कोई खौफ़ नहीं है, कोई डर नहीं है। लेकिन दिन बीतते गये और लजारे शाम को मां की स्मृति में डूबा हुआ अपने कमरे में अकेला पड़ा रहने लगा। बत्ती बुझाने की उसे कभी हिम्मत ही न होती। आस्था मर गयी थी। एक दिन जब वह अवेहार्टर के साथ तम्बाकू पी रहा था, पादरी ने सहसा किसी के पैरों की आहट सुन कर अपनी चिलम एक पेड़ के पीछे छिपा दी। यह पालिन थी। अपने भाई को ढूँढती हुई आ रही थी।

"घर पर डाक्टर आया है", वह बोली, "मैंने उसे खाने न्यौता दिया है ... जल्दी चलो, चल रहे हो न ?"

वह मुस्कुरा रही थी। घास तले छिपायी गयी चिलम पर उसकी निगाह पड़ गयी थी। उसने फौरन चिलम बाहर निकाल ली। जब कोई उसे पीता हुआ देख लेता था तो वह हमेशा ही ऐसा किया करता था। "यह बहुत खराब है", वह बोला। "लोगों का ख्याल हो सकता है कि मैं कोई जुर्म कर रहा था ... देख, मैं तेरे सामने ही इसे फिर सुलगाऊँगा।"

"मैं तुमसे क्या कह रही हूँ, मेरे भाई ?" पालिन मुस्कुराती हुई बोली। "चलो, मेरे और डाक्टर के साथ खाना खाओ और अकेले में तुम फिर चिलम चढ़ा सकते हो।"

पादरी, खुश होकर हँसता हुआ बोला : "क्यों मैं भी चल सकता हूं ... तुम लोग आगे-आगे चलो। मैं कपड़े बदल कर अभी आया। और हाँ, अपनी चिलम भी लाऊँगा। वादा कर रहा हूँ, पक्का वादा !"

सब के भोजन के समय, पहली बार भोजन के कमरे में पुनः हँसी गूंज उठी। मेज साफ हो जाने के बाद सब को चकित करते हुये पादरी तम्बाकू पीने लगा। शैन्ते ने डट कर भोजन किया था और घर में एक बार पुनः जीवन के स्पन्दन से प्रसन्न होकर आराम करने लगा था। डाक्टर कैजेनोव ने वहशियों की कुछ कहानियाँ सुनायीं और पालिन इस कोलाहलपूर्ण हास-परिहास से प्रसन्न होकर मुस्कुराती रही। उसे आशा थी कि इससे कदाचित लजारे का मन खिंचेगा और उसकी निराशा दूर हो जायगी।

इसके बाद, पालिन ने प्रत्येक शनिवार की शाम को दावत का सिलसिला फिर से जोड़ने की कोशिश की। उसकी चाची की मौत से इसका दौर टूट गया था। पादरी और डाक्टर नियमित रूप से आया करते और इस तरह पुराने तौर-तरीके फिर से शुरू हो गये। दिल खोल कर बातें होतीं। विधुर शैन्ते यह कहता हुआ अपने पैर हिलाने लगता— "मैं इतना खुशमिजाज़ हूँ कि कमबख्त गठिया ने टाँग न तोड़ दी होती तो अभी नाच सकता था। केवल लजारे उदास रहता। बहुत कम ही बोलता और कभी कभी उत्तेजित होकर एक दम चुप्पी साध लेता।

एक शनिवार की शाम को खाना शुरू होते ही पादरी का एक बीमार के घर से बुलावा आया। बिना अपना गिलास खाली किये या डाक्टर की बात सुने ही वह चल पड़ा। डाक्टर, जोकि बीमार को देख कर आया था, उसके पीछे चिल्लाया—तुम उसे मरा हुआ ही पाओगे। उस शाम को पादरी इतना हतप्रभ दिखा कि शैन्ते उसके जाते ही बोल पड़ा : "किसी-किसी दिन वह बेहद खुश मालूम पड़ता है।"

"मैं उसके साथ जगह बदलना चाहता हूँ।" लजारे खिन्नता से बोला—"वह हम लोगों की अपेक्षा अधिक सुखी है।"

डाक्टर हँसने लगा। हो सकता है। लेकिन मैथ्यू और मिनूशी भी तो हमसे अधिक सुखी हैं। हूँ, तुम आधुनिक युवकों की यही विशेषता है। तुमने विज्ञान की कतर-ब्योंत की है और उसने तुम्हें रुग्ण कर दिया है, क्योंकि तुम स्वेच्छाचारिता की उस प्राचीन उत्कट अभिलाषा को, जिसे कि तुमने अपने शिशु गृह में आत्मसात् किया है, सन्तुष्ट करने में समर्थ नहीं हुये हो। तुम चाहते हो कि विज्ञान तुम्हारे सभी प्रश्नों का एक साथ ही उत्तर दे दे, जब कि हम केवल उसे समझना प्रारम्भ कर रहे हैं। विज्ञान कदाचित् आन्तरिक खोज के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहेगा। और इसीलिए तुम विज्ञान की हँसी उड़ाते हो, धर्म पर प्रहार करते हो और धर्म तुम्हें कभी स्वीकार नहीं होगा। फिर तुम निराशावाद की ओर मुड़ जाते हो,...हाँ, यह हमारे युग का रोग है, इस शताब्दी का विनाशकारी लक्षण है।

वह उत्तेजित हो उठा, क्योंकि उसकी यह अत्यन्त प्रिय स्थापना थी। लजारे अतिशयोक्ति पूर्वक किसी प्रकार की निश्चयता का खण्डन करने लगा। अन्तिम स्थिति और अशुभ की सार्वभौमिकता में उसकी दृढ़ आस्था थी।

"तुम किस प्रकार जीवित रह सकते हो?" उसने पूछा, "जब अनवरत रूप से तुम्हारे पैरों के नीचे ही वस्तुयें विनाश को प्राप्त कर रही हैं, तो तुम किस प्रकार जीवित रह सकते हो?"

वृद्ध पुरुष बालक की भाँति ठठा कर हँसा। "किन्तु तुम केवल जीवित ही क्यों नहीं रह सकते हो? क्या जीवित रहना ही पर्याप्त नहीं है? आनन्द का निवास कर्म में है।" और सहसा उसने पालिन की ओर मुँह किया। वह मुस्कुराती हुई उनकी बातें सुन रही थी। "अब तुम्हीं आओ, इसे बताओ कि तुम कैसे प्रसन्न बनी रहती हो?"

"उफ," वह व्यंग के स्वर में बोली, "मैं तो अपने को इतना

भूली रहती हूं कि मुझे निराश होने का कभी अवसर ही नहीं आता। मैं तो हमेशा दूसरे लोगों के बारे में ही सोचती रहती हूं। इसी में व्यस्त रहती हूं और इससे अपने कष्टों को सह लेने में बड़ी मदद मिलती है।" इस उत्तर से लजारे खीझ-सा उठा। दुःस्वाभाविक विरोधाभास से उसकी यह धारणा थी कि स्त्रियों में धार्मिक निष्ठा अनिवार्य रूप से होनी चाहिये। उसकी समझ में यह नहीं आता था कि उसने क्यों बहुत पहले से ही धार्मिक कृत्यों को तिलांजलि दे रखी थी। और उसने बहुत नम्रता से अपना तर्क उपस्थित किया।

"यह तो बहुत सीधी-सी बात है। पापों को अंगीकार करना मुझे कष्टप्रद प्रतीत होता है। मेरी समझ में बहुत सी स्त्रियों को ऐसा होता है। इसके अतिरिक्त जो वस्तुयें तर्क-सम्मत नहीं होतीं, उनमें मैं विश्वास ही नहीं कर पाती। उन्हें स्वीकार करने का ढकोसला करते हुये झूठ बोलने से क्या लाभ? ...... फिर, अज्ञात के विषय में मैं चिन्तित नहीं रहती। इसका तर्क संगत होना स्वाभाविक है। अतः सर्वोत्तम यही है कि यथा संभव धैर्य धारण किया जाय, निश्चलता पूर्वक प्रतीक्षा की जाय।" "हुश," ऐसी बातचीत से ऊबा हुआ शैन्ते बीच में बोल पड़ा— "लो, अबे आ गया।"

आदमी मर गया था। अबे ने आराम से भोजन किया और सभी लोगों ने एक-एक गिलास मदिरा-पान किया।

पालिन ने प्रसन्नचित्त गृहणी की कुशलता के साथ घर की देख रेख अपने हाथ में ले ली थी। जमाखर्च और छोटे-बड़े सभी काम को उसने सुव्यवस्थित कर लिया। उसकी कमर में अब कुञ्जियों का गुच्छा लटकता रहता था। यह सब परम सहज रूप में हुआ था और वेरोनिक इससे असन्तुष्ट नहीं मालूम हो रही थी। किन्तु फिर भी श्रीमती शैन्ते की मृत्यु के बाद से ही उसका मन मोटा रहने लगा था। उसकी मनः स्थिति कुछ बदली हुई-सी प्रतीत हो रही थी। मृत महिला के प्रति उसका मोह पुनः जाग्रत हो उठा था। इसीसे पालिन से वह

कपटपूर्ण रूक्षता का व्यवहार करने लगी थी। चाहे जितनी नम्रता के साथ पालिन बोलती, लेकिन वह एकाध बात से चिढ़ ही जाती और रसोई में पहुँच कर भुनभुनाने लगती।

विवाह का नाम न तो पालिन ने लिया और न लजारे ने ही। अलबत्ता शैन्ते ने एक बार सवाल उठाया वह चीजों को रफा-दफा हो गयी देखना चाहता था। आखिर अब कोई रुकावट भी तो नहीं थी। खास तौर से वह पालिन को अपने निकट पाने की अभिलाषा से उत्प्रेरित था। फिर नौकरानी के हाथ में पड़ने से वह बहुत भयभीत था। क्या कभी उसे पालिन को खो देना चाहिये?

पालिन ने उसे समझाया कि शोक-काल समाप्त हुये बिना कोई भी बात नहीं की जायगी। यह उद्धत उत्तर केवल परम्परा के प्रति सम्मान-भाव से ही मुँह से नहीं निकला था। उसे आशा थी कि समय ही इस प्रश्न का उत्तर देगा। खुद अपने से ही यह सवाल करने की उसे हिम्मत नहीं पड़ती थी। आकस्मिक मृत्यु के भयानक आघात ने उनके वेदनापूर्ण सम्बन्ध पर एक प्रकार की विराम-सन्धि का आवरण डाल दिया था। वे इससे स्वस्थ हो रहे थे, ताकि नये आघातों को सहने में समर्थ हो सकें। प्रियजन के अपूरणीय विछोह के परदे के नीचे वे अपने व्यक्तिगत नाटक से अवगत थे। लूसी की खोज और निष्कासन, अपने प्रेम के विनाश और अपने सम्पूर्ण अस्तित्व की समस्या से वे भलीभाँति परिचित थे। अब वे क्या फैसला कर सकते? क्या वे अब भी एक दूसरे को प्यार करते थे? क्या विवाह अब भी सम्भव था? क्या यह विवेक-सम्मत था? मृत्यु की शोकपूर्ण घटना से विमूढ़ होकर वे अब भी डगमगा रहे थे और दोनों में से कोई भी जल्दबाजी का फैसला थोपने के लिए उत्सुक नहीं था।

बहरहाल, इस बीच पालिन के लिए जुर्म की याद कम कड़ुई हो गयी थी। उसने बहुत पहले से ही लजारे को क्षमा कर दिया था और ज्यों ही वह कुछ पश्चात्ताप प्रकट करता, वह उसके गले से

लगने के लिए तैयार थी। वह उसके दैन्य पर विजय पाने के लिए किसी ईर्षापूर्ण भावना से उत्प्रेरित नहीं थी। उसका सम्बन्ध केवल उसी से था, इस हद तक कि अगर वह उसे प्यार करना बन्द कर देता तो वह उसे उसकी वचन बद्धता से भी मुक्त करने के लिए सन्नद्ध थी। उसकी सारी चिन्ता इस अनिश्चयता के कारण थी कि वह लूसी के बारे में अब भी सोचता है या इसके विपरीत उसे भूल गया है और अपने पुराने बाल्यप्रेम की दुनिया में लौट आया है। लजारे को दुखी बनाने के पहले ही उसे छोड़ने का विचार आने पर वह अपने को कृपणता से अभिभूत स्थिति में अनुभव करने लगती। उसने सोचा, मुझे ऐसा करने का साहस बटोरना ही पड़ेगा, लेकिन हाँ, इसके बाद तो मर जाना ही अच्छा होगा।

अपनी चाची की मृत्यु के ठीक बाद से ही उसमें उदारता आ गयी थी। उसने लूसी के साथ समझौता करने की योजना बनाई। शैन्ते उसे पत्र लिख सकता है और जवाब में बस वह एक ही पंक्ति लिख सकती है कि सब कुछ विस्मृत हो चुका है। वे इतने दुखी और एकाकी थे कि लूसी आकर अपनी बच्चों जैसी सजीवता से उन्हें प्रसन्न कर सकती थी। इसके अतिरिक्त, ऐसे क्रूर आघात के बाद, हाल का अतीत बहुत-बहुत दूर हो गया मालूम हो रहा था। अपने उस समय के विकराल क्रोध पर भी उसे अनुताप होने लगा। लेकिन जब भी अपने चाचा से वह इसका जिक्र करना चाहती तो न जाने कौन सी वस्तु उसकी टांग पीछे खींच लेती। विश्वासघात नितान्त अक्षम्य अपराध है। फिर, कोई चारा न होने पर भी क्या वह घर में खुशहाली वापस नहीं ला सकती है? उसके आत्म-बलिदान में एक प्रकार का अज्ञात अभिमान छिपा हुआ था, दानशीलता में भी एक कृपणता निहित थी। पूर्णतया अपने परिवार में सुख के लिए उत्तरदायी होने की आशा से उसका हृदय प्रज्वलित हो उठा।

और इसके बाद से यह पालिन के जीवन का मुख उद्देश्य बन

गया। चारोंओर के व्यक्तियों को सुखी रखने के लिए उसने अपनी सारी शक्ति और मुक्ति अर्पित कर दी। इतनी प्रसन्न और उदार वह कभी भी नहीं थी। अपने क्लेशों को छिपाने और दूसरों की पीड़ा न बढ़ाने के उद्देश्य से वह प्रत्येक प्रभात का मुस्कुराहट के साथ स्वागत करती। अपने मधुर मैत्रीपूर्ण व्यवहार से उसने घर का पूरा वातावरण ही बदल दिया। अब उसने अपनी शक्ति संचित कर ली थी। किसी युवा वृक्ष की भाँति पुष्ट और ठोस बन गयी थी। उसका दीप्तमान स्वास्थ्य उसके चारों ओर हर्ष और प्रसन्नता विकीर्ण करता रहता था। प्रत्येक नया दिवस हँसी-खुशी के साथ आरम्भ होता था। जो कुछ पहले दिन किये रहती थी, वही सब करने में उसे सुख का अनुभव होता था। अन्य किसी वस्तु की उसे कामना नहीं थी। आशा थी तो केवल शान्तिपूर्ण आगामी दिन की ही। वेरोनिक, जो कि अब चिड़चिड़ी हो गयी थी, रसोई की देहरी पर खड़ी होकर भुनभुनाती, किन्तु नये जीवन का बोध घर से उदासी को निकाल बाहर कर रहा था। पहले की सी ही हँसी कमरों में गूँजने लगी थी, दीवारों और सीढ़ियों से प्रतिध्वनित होने लगी थी। सबसे ज्यादा उछाह उसके चाचा को था, क्योंकि उसने उदासी से हमेशा घृणा की थी। और अब अपनी आराम कुर्सी से बँधे होने के कारण हास परिहास ही उसे प्रिय था। उसका अस्तित्व असहनीय बनता जा रहा था, किन्तु उस कीड़े की तरह जो कि कष्ट में होने पर भी जिये जाना चाहता है, वह उससे चिपका हुआ था। प्रतिदिन वह विजय का-सा अनुभव करता रहता और उसकी भतीजी की उपस्थित घर को पूस की धूप की तरह उष्ण किये रहती थी। उसकी दीप्ति में वह मृत्यु से निर्भय बना रहता था।

इतना सब होते हुये भी पालिन को एक रंज था। लजारे को विश्रान्ति देने में वह असमर्थ ही रही। उसे खोया-खोया देखकर वह उदास हो उठती। माँ के बिछोह के नीचे दबा हुआ लजारे का पुराना मृत्यु से भय पुनः उभड़ आया था। समय के साथ विगत दुःखों

पर पर्दा पड़ जाने पर वंश-गत रोग की आशंका से प्रखर होकर यह डर फिर से ताजा हो उठा था। उसे भी हृदय-रोग से मरने की चिन्ता सताने लगी। अपने कारुणिक अन्त की निकटता का उसे पूरा निश्चय हो गया। अपने भीतर जीवन की प्रक्रिया का वह सदैव निरीक्षण करता रहता। हमेशा स्वाभाविक उत्तेजना की ऐसी स्थिति में रहता कि वह मशीन के पहियों के घूमने की आवाज को साफ-साफ सुन सकता था। पेट की ऐंठन, गुर्दे के रक्त-स्राव और जिगर की जलन को वह हर पल महसूस करता रहता था। किन्तु अन्य अवयवों की ध्वनि से बढ़कर, वह मुख्यतया चिन्तित था अपने हृदय से। अपने समस्त अंगों में यहाँ तक कि उँगलियों के पोरों में भी उसे अपना हृदय घण्टियों की टुनटुनाहट की तरह उछलता और बजता हुआ मालूम होता था। अगर वह मेज पर अपना कंधा रखता तो उसका दिल उसके कंधे में धड़कने लगता, कुर्सी पर पीठ देकर बैठता तो उसका दिल उसकी गर्दन में धड़कने लगता, लेट जाता तो उसका दिल जँघों, काँखों और पेट में धड़कने लगता। यह बड़ी घण्टी बिना दम लिये हमेशा बजती रहती। किसी चलती हुई घड़ी की टिक-टिक की तरह उसके जीवन को मापती रहती। अपने शरीर के अनवरत निरीक्षण से अभिभूत होकर उसने विश्वास कर लिया कि वह किसी भी क्षण टूटने ही वाला है, सभी अंग थक गये हैं और खण्ड-खण्ड हो जाने वाले हैं, हृदय वृहदाकार होकर हथौड़े की बड़ी-बड़ी चोटों से देह-यंत्र को चूर-चूर करता जा रहा है। क्या इसी को जीवित रहना कह सकते हैं? जीवन की प्रक्रिया के इस निरन्तर ध्यान और देह की भंगुरता के इस भीषण चिन्तन का नाम ही क्या जीवन है?

और इस प्रकार लजारे की उद्विग्नता बढ़ती ही गयी। कई वर्षों से अब वह सोने के लिए लेटता तो मृत्यु के ध्यान से उसका शरीर थर-थर काँपने लगता था। अब उसे सोने के लिए लेटने तक का भी साहस न होता। इस भय से वह आक्रान्त रहता कि फिर कभी भी नहीं उठ

सकूँगा। नींद से उसे घृणा हो गयी थी। सहसा जागने पर उसे एक और धक्का लगने लगा। वह सोचता, जैसे कोई प्रेत अँधेरे से उसे खींच कर आत्मसात् कर लेता है और फिर उगल कर उसे जिन्दा कर देता है। हे भगवान्, हे भगवान्! मुझे मरना होगा! निराशा के उन्माद में अभी तक कभी भी उसने इस तरह अपना हाथ नहीं बाँधा था। प्रत्येक संध्या को उसे ऐसा भास होता कि बिस्तर पर न जाना ही उसे श्रेयस्कर प्रतीत होता। अलबत्ता दिन में उसे अवश्य ही बच्चों जैसी नींद आ जाया करती थी। काफी देर तक वह विश्रान्तिपूर्ण और गहरी नींद में सोया रहता था और इसीलिए रात में सोना, दुर्भाग्य से और भी असम्भव हो गया था, केवल भोर में ही वह निंदासा होता था। क्योंकि उस समय अन्धकार और उसका भय दूर हो गया रहता था।

बहर हाल कभी-कभी उसे कुछ राहत मिल जाती थी। दो या तीन शामें ऐसी आ जाती थीं जब कि मौत का खौफ पास नहीं फटकता था। एक दिन पालिन ने उसके कमरे में एक कैलेण्डर देखा। उसमें कई जगह लाल पेंसिल से निशान बनाये गये थे। ताज्जुब के साथ उसने पूछा—

"इन निशानों का क्या मतलब है?...कितनी ही तारीखों पर तुमने निशान लगा रखा है।"

वह हड़बड़ा कर बोला: "क्यों, मैं कहाँ निशान नहीं बनाता...मुझे कुछ मालूम नहीं है......"

वह मुस्कुराती हुई बोली: "मेरा ख्याल था कि सिर्फ लड़कियां ही कैलेण्डरों में ऐसी चीजें छिपा रखती हैं जो वे दूसरों को नहीं बता सकती हैं...यह कितना अच्छा हो कि तुम उन दिनों पर निशान लगाओ, जिस दिन हम लोगों के के बारे में सोचते हो!...ओहो, तो तुम्हारे कुछ राज़ भी हैं!"

आगे चल कर पालिन को लजारे के एक नये उन्माद से और भी विस्मय हुआ। मृत्यु की समीपता का तो उसे दृढ़ विश्वास था ही।

इसी से एक और झक सवार हो गयी थी। जब भी वह किसी कमरे से निकलता, कोई किताब बन्द करता, किसी वस्तु का व्यवहार करता तो बिना यह महसूस किए न रह पाता कि यह उसकी आखिरी हरकत होगी, आखिरी काम होगा, उस चीज के उस किताब को या उस कमरे को फिर कभी नहीं देखेगा और इसीलिए उन्हें छूने और एक बार पुनः देख लेने की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर वस्तुओं को वह बार-बार उलट-पुलट लेता था। संगति की धारणा भी साथ जुड़ गयी थी। वह तीन कदम बाँये चलता और तीन कदम दाँये। हर सामान को बराबर की गिनती से छूता, अन्ध-विश्वास की इस भावना से कि किसी वस्तु को कुछ बार, उदाहरण के लिए पाँच या सात बार विशेष क्रम से छू लेने पर वह बिलगाव को अन्तिम होने से बचा लेगा। उसकी तीक्ष्ण बुद्धि और अलौकिक शक्तियों में अविश्वास के बावजूद वह गंवारों की तरह इन मूढ़ परम्पराओं का पालन करता था और साथ ही किसी लज्जाजनक रोग की भाँति उन्हें छिपाता भी था। वास्तव में यह उसके निराशावाद और यथार्थवाद के अतिचिन्तन की प्रतिक्रिया थी। तथ्यों और अनुभव के अतिरिक्त किसी वस्तु में विश्वास न करने वाले उसके स्वभाव की एक उलटी धारा थी। बहुत क्रोध आता था उसके इन कौतुकों पर।

"तुम्हें हो क्या गया है? क्यों इस तरह पैर पटकते रहते हो?" पालिन उससे पूछती। "कुंजी छूने के लिए उस आलमारी के पास तुम तिबारा गये हो, घबराओ नहीं, वह उड़ नहीं जायगी।"

शाम को कुर्सियों को, क्रम से रखे बिना वह भोजन के कमरे से बाहर न निकल पाता दरवाजा कई बार बन्द करता और फिर दाँये-बांये से अपने दादा की कारीगरी के नमूने को छूता। पालिन ज़ीने पर उसका इन्तजार करती हुई आखिरकार खिलखिला कर हँस पड़ती :

"पता नहीं तुम अस्सी साल के होने पर कितने ज्यादा झक्की बन जाओगे!...मैं पूछती हूं, इस तरह की खटर-पटर का क्या तुक है?"

लजारे की स्नायविक दशा देख कर पालिन बहुत खीझ उठती, और इसीलिए प्रायः चुटकियाँ ले लिया करती थी। एक दिन उसने देखा कि वह उस चारपाई की, जिस पर उसकी माँ मरी थी, पाटियों को सात बार गिन कर चूम रहा है, उसके अस्तित्व को विषाक्त बनाने वाले क्लेशों का अनुमान कर वह चकित हो उठी। किसी समाचारपत्र में बीसवीं शती की कोई तिथि पढ़ने पर जब उसका चेहरा फीका पड़ जाता, तो वह उसे सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखती ही रह जाती। ऐसे क्षणों में वह चौकन्ना हो उठता। यह सोचता हुआ कि पालिन ने उसके मन का हाल जान लिया है, वह चट अपने कमरे में भाग खड़ा होता। कितनी बार मैंने अपनी दुर्बलताओं का तिरस्कार किया है! कितनी बार अपने रोग पर विजय पाने का प्रयत्न किया है! वह अपने से ही तर्क करता। मौत उसे अपने सामने खड़ी दिखाई पड़ने लगती। अपनी कुर्सी पर बैठने के बजाय वह फौरन बिस्तर पर लेट जाता। मौत आती है तो आये। मुक्ति के रूप में अब वह उसकी बाट जोहने लगा था। किन्तु तत्क्षण ही हृदय की धड़कन सुनकर वह अपनी प्रतिज्ञा भूल जाता। दोनों हाथ उठाकर वह प्रार्थना करने लगता। हे भगवान्! हे भगवान्! इस प्रकार की भावुकता भी उसे लज्जा और निराशा से अभिभूत कर देती, और इन क्षणों में अपनी बहन की दयार्द्रता देख कर तो वह और भी पछताने लगता। दिन इतने कष्ट दायक बन गये कि उसने उनके अन्त की कामना ही छोड़ दी। उसके व्यक्तित्व के इस विच्छेद से पहले तो उसकी सारी कान्ति लुप्त हो गयी और अब उसकी देह की ताकत भी जवाब देती जा रही थी। किन्तु पालिन अपने आत्मोत्सर्ग के गर्व के साथ उस पर विजय पाने के लिए तत्पर थी। लजारे की परेशानी उसे मालूम थी। जीवन से प्रेम करने की प्रेरणा देते हुये उसने उसे कुछ अपना निजी साहस भी प्रदान करने की चेष्टा की। किन्तु यहाँ उसकी सद्भावना व्यर्थ सिद्ध हुई। पहले उसने उनके 'घृणित निराशावाद, का उपहास करना आरंभ

किया। उसके उपहासों को सुनकर वह ठहाका मार कर हँस पड़ता। इससे उसे इतनी पीड़ा होती कि पालिन को ऐसा करना बन्द ही कर देना पड़ा। फिर उसने उसे मासूम बच्चे की तरह बहलाना शुरू किया, आह्लादपूर्ण शान्ति से भरे सुखद परिवेश से उसे आवृत करना चाहा। लजारे पालिन को सदैव प्रसन्न, ताजी और जीवन की सुगंध से पूर्ण देखता। घर में आलोक छलकता रहता। उसे हँसी-खुशी के साथ बस पड़ा रहना था, लेकिन यही उसके बस के बाहर था। इस प्रसन्नता ने उसके इससे परे के भय को उद्दीप्त कर दिया। अन्ततः पालिन ने उसे किसी काम में लगाने का उपाय सोचा, उसे किसी ऐसे बड़े धन्धे में व्यस्त करने की योजना बनायी जो कि उसका दिमाग पूरी तरह अपनी ओर खींच ले। वह सुस्त और बेकार पड़ा रहता था। पढ़ने में भी मन नहीं लगता था। दिन भर आत्म-प्रताड़ना में ही डूबा रहता। इससे उद्धार करने के लिए उसे किसी काम-धाम में लगाना जरूरी हो गया था।

क्षण भर के लिए पालिन की आशायें अँगड़ाइयाँ लेने लगीं। एक दिन दोनों साथ-साथ घूमते हुये समुद्र के किनारे गये। लजारे अपने संगमूसों और बाँध के, जिसके कुछ खम्भे अब भी खड़े थे, अवशेषों को देखकर उसे घेरा बन्दी का एक नया तरीका समझाने लगा। इससे किसी भी तरह की बाढ़ रोकी जा सकती थी। गड़बड़ी कड़ियों की कमजोरी से पैदा हुई थी। उनकी मोटाई दुगुनी कर देनी होगी और बीच की कड़ी को ज्यादा पुख्ता कर दिया जायगा। उसकी आवाज़ में जोश आ गयी, आँखें पहले की भाँति चमकने लगीं। पालिन ने उससे कार्य प्रारम्भ करने का अनुरोध किया। गाँव महान् विपत्ति में था। हर बसन्त का ज्वार कोई न कोई हिस्सा बहा ले जाता था। अगर वह अधिकारी से मिले तो निश्चय ही अनुदान प्राप्त कर सकता है। जो भी हो, पालिन ने पुनः रुपया लगाने का वादा किया। उसका मुख्य उद्देश्य उसे एक बार पुनः क्रियाशील बनाना था। बचा हुआ

सारा धन इसमें लगा देना पड़े, तब भी कोई परवाह नहीं थी। लेकिन पहले से ही वह सिर हिलाने लगा। क्या फायदा? और उसका चेहरा पीला पड़ गया। मन में यह शंका उठने लगी कि अगर वह काम शुरू करेगा तो पूरा करने के पहले ही मर जायगा। अपनी हलचल पर काबू पाने के लिए वह बोनीविले के मछुवाहों के बारे में अपनी पुरानी कोफ्त की चर्चा करने लगा।

"ये लोग पिछला बाँध टूटते समय मेरी कैसी हँसी उड़ा रहे थे! नहीं, नहीं, सबको तबाह हो जाने दो। 'फिर उन्हें मेरे काम का मज़ाक उड़ाने का कभी मौका नहीं मिलेगा।"

पालिन ने समझाने की कोशिश की। लेकिन उसकी बातें अनसुनी ही रह गयीं। अन्ततोगत्वा उसने लजारे को अपने दान में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। हर शनिवार को वह उसके साथ घर पर रहता और दोनों चार बजे से छः बजे तक गाँव के निर्धन बच्चों का स्वागत करते, उनकी तकलीफें सुनते और दान देकर उन्हें सन्तुष्ट करने का प्रयास करते।

किन्तु पालिन को यह देख कर दुःख हुआ कि लजारे गाँव के बच्चों में रुचि नहीं लेता है। दूसरों के प्रति अपनी प्रेम भावना के कारण वह शान्त और प्रसन्न रहती थी, जब कि वह आत्म चिन्तन से मुक्त होने पर बाहरी दुनिया में निराशा के और नये-नये स्रोत ढूंढ़ लेता था। धीरे-धीरे गन्दे बच्चों का समूह देख कर वह चिढ़ने लगा। उनसे उसे बहुत घृणा होती और आखिरकार उसने दान देना बन्द कर दिया। दान की वह कटु निन्दा करने लगा ऐसे आवारा लड़कों को, जिनमें पाप के सारे बीज छिपे हुये हैं, दान देने से क्या लाभ? इनके प्रति दया किस काम की? ऐसे खतरनाक कीड़ों को पालने से बेहतर है, उन्हें कुचल दिया जाय, पहले से ही नष्ट कर दिया जाय। पालिन उसकी बातें सुनकर चकित रह जाती। उसे समझाने का उसे कोई उपाय ही न सूझ पाता।

एक शनिवार को, जबकि दोनों पुनः साथ-साथ थे, लजारे ने अपने मन की गाँठ एक ही वाक्य में खोल दी।

"लगता है, जैसे मैं किसी नाली से बाहर आया हूँ।"

फिर वह आगे बोला, "इन शैतानों से भला तुम कैसे प्यार करती हो?"

"देखते नहीं हो। मैं उन्हें उनके लिए ही प्यार करती हूं, अपने लिए नहीं," पालिन ने उत्तर दिया।

"क्यों क्या तुम सड़क पर चलते हुये किसी कुत्ते के पिल्ले को हाथ में उठा नहीं लोगे?"

उसने सिर हिलाते हुये प्रतिवाद किया। "कुत्ते के पिल्ले को, लेकिन आदमी के बच्चे को नहीं।"

"क्या दूसरों का कष्ट दूर करना स्वयं में एक लक्ष्य नहीं है?" वह आगे बोली, "यह दयनीय अवश्य है कि वे अपनी आदतें सुधारते नहीं वरन् शायद इतना कष्ट न भोगते। लेकिन जब मैं उन्हें खाना खिलाती हूं, कपड़े पहनाती हूँ। यही मेरे लिए पर्याप्त है। इससे संसार के दुःख का भार कुछ तो हल्का हो ही जाता है।...हम उनके लिए जो कुछ करते हैं, उसके प्रतिदान की कामना क्यों करें?" क्षणभर के लिए वह उदास हो उठी, "मेरे प्यारे भाई, मैं देखती हूँ कि तुम्हें इसकी चिन्ता नहीं रहती। अच्छा हो कि तुम मेरी मदद करना बन्द कर दो... मैं तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहती, तुम्हारी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहती, जितने कठोर वास्तव में हो, उससे अधिक कठोर नहीं बनाना चाहती।"

लजारे उससे पीछा छुड़ाने का प्रयत्न करने लगा। उसकी वेदना और उदासीनता दूर करने में अशक्तता का अनुभव करती हुई वह एकदम मौन हो गयी। उसे इतना खिन्न और चिन्तित देखकर वह यह नहीं समझ सकी कि दोष तो केवल उसकी परोक्ष मानसिक यातना का था। वह उसकी उदासी के अन्य कारणों की खोज करने लगी।

लूसी का प्रतिबिम्ब उसके सामने नाचने लगा। निश्चय ही बात यही है। वह अब भी उस लड़की के बारे में सोचता रहता है, अब उसे पुनः देख नहीं सकता, इसीलिए चिन्तित रहता है। पालिन आत्मोत्सर्ग के अपने गर्व को पुनः बटोरने लगी, अपने प्रियजनों को प्रसन्न रखने की अपनी पुरानी प्रतिज्ञा पुनः दुहराने लगी एक दिन शाम को लजारे जँभाई लेता हुआ बोला—"यहाँ कितना अकेलापन महसूस होता है!"

वह उसकी ओर निहारने लगी। क्या यह कोई संकेत है? लेकिन ठीक-ठीक बात पूछने का उसे साहस नहीं हुआ। उसकी सदाशयता की कठिन परीक्षा ली जा रही थी, उसका जीवन पुनः यातना-पूर्ण बन गया।

लजारे को एक आखिरी चोट और सहनी थी। उसके बूढ़े मैथ्यू की हालत अच्छी नहीं थी। बेचारा कुत्ता पिछली मार्च में चौदह साल का हुआ था। अब उसके हिरन जैसे पैरों की ताकत जवाब देती जा रही थी। एक बार बेहोशी का दौरा आने के बाद से अब वह पैर घसीटता हुआ चलने लगा था। अहाते में जाकर धूप में वह पसर जाता। पास से गुजरने वाले लोगों को उदास आँखों से निहारता रहता। वस्तुतः उन बूढ़ी आँखों ने ही लजारे को सबसे अधिक चिन्तातुर कर दिया। उनकी ज्योति मन्द हो गयी थी, एक नीला-सा पर्दा छा गया था। किसी अन्धे आदमी के नेत्रों की भाँति वे खोखली और सूनी मालूम होती थीं। फिर भी वह अभी देख सकता था। अपने मालिक के घुटने पर अपना सिर रखने और उदासी से उसकी ओर टुकुर-टुकुर निहारने भर को घिसट कर चल सकता था। उसकी खूबसूरती अब फीकी पड़ गयी थी। सफेद घुँघराले बाल भूरे हो गये थे। चटकदार काली नाक पीली पड़ गयी थी। उसकी दर्दनाक सूरत देखी नहीं जाती थी। बूढ़े हो जाने के कारण उसे कोई नहलाता भी नहीं था। उसके सारे खेल छूट गये थे। न तो अब वह लोटने का मजा लेता और न अपनी पूँछ का पीछा करता। किसी बूढ़े आदमी की तरह वह दिन भर ऊँघता हुआ

पड़ा रहता। खड़े होने में इतनी कठिनाई होती कि घर के किसी व्यक्ति को उसे सहारा देना जरूरी हो जाता था।

दिन प्रति दिन वह दुर्बल होता जा रहा था। एक चिकित्सक बुलाया गया, लेकिन वह कुत्ते को देखकर ठठाकर हँसने लगा। ऐसे जानवर को जिलाने से क्या फायदा? बेहतर यही है कि इसे मरने दिया जाय। प्रयत्न करना चाहिये केवल किसी आदमी को जिलाने और निरोग करने का। यह असाध्य रोगी पशु जी कर क्या करेगा? और कष्ट ही तो भुगतेगा।

एक दिन मैथ्यू के बदन से इतना खून बहने लगा कि उसे घुड़साल में बन्द कर देना पड़ा। शाम को डाक्टर कैजनोव आया। वह लजारे को साथ लेकर कुत्ते को देखने गया। वह भी परिवार का ही एक सदस्य समझा जाता था। कोठरी में वह पसरा हुआ था। सिर ऊपर उठा था। बहुत अशान्त हो जाने पर भी आँखों में जिन्दगी की चमक बनी हुई थी। डाक्टर ने उसे अच्छी तरह देखा-परखा आखिर में बोला :

"जरूर इसके गुर्दे खराब हो गये हैं। तभी इतना खून बह रहा है। अब इसका आखिरी वक्त आ गया है। फिर भी कुछ दिन चल सकता है। सहसा कोई दौरा न आये तो कुछ दिन जी सकता है।"

मैथ्यू की दर्दनाक हालत से सबका हँसी-खुशी के साथ खाना-पीना मुश्किल हो गया। लोग याद करने लगे, श्रीमती शैन्ते उसे कितना प्यार करती थीं, दूसरे कुत्तों से वह कैसी बहादुरी से लड़ता था, कूदने-फाँदने में तो एक ही था।

सहसा नौ बजे के करीब सबके सामने चाय आने पर पालिन चिल्ला पड़ी, "देखो, यह रहा बेचारा बूढ़ा मैथ्यू।"

मैथ्यू घिसटता हुआ भोजन के कमरे में आ रहा था। उसके बदन से बुरी तरह खून बह रहा था। वेरोनिक हाथ में एक कपड़ा लिये हुये, उसके पीछे-पीछे कमरे में आकर बोली, "मैं एक चीज के लिए घुड़-

साल में गयी थी। न जाने कब यह वहाँ से भाग आया। यह सब लोगों के साथ ही रहना चाहता है—"चलो, इधर चलो, तुम यहाँ नहीं बैठ सकते हो।"

बेचारा कुत्ता सिर के बल जमीन पर गिर पड़ा।

"उफ़, इसे यहीं रहने दो," पालिन ने प्रार्थना की।

नौकरानी बौखला उठी। "नहीं, नहीं, हरगिज नहीं!...मैं इसका खून धोते-धोते आजिज़ आ गयी हूँ। पिछले दो दिनों से मेरी रसोई खून से लथ-पथ रहती है। कितनी घिन आती है। यह हर जगह रेंगता रहा तो कमरे में पैर रखने की भी जगह नहीं मिलेगी।...चल इधर! जल्द-जल्दी पैर बढ़ा!"

"इसे यहीं रहने दो", लजारे बोला। "तुम दूर हट जाओ।"

वेरोनिक के तेज़ी से बाहर चले जाने पर मैथ्यू ने आगे बढ़ कर लजारे के घुटने पर अपना सिर टिका दिया। डबडबाई हुई आँखों से वह अपने मालिक की ओर निहारने लगा।

दस बजे, लजारे अपने कमरे में जाने से पहले, मैथ्यू को खुद उठा कर घुड़-साल में ले गया। पुआल बिछा कर उस पर उसने कुत्ते को लिटा दिया। उसे गले से लगाया फिर बाहर जाने लगा। लेकिन कुत्ता जैसे-तैसे उठ कर उसके पीछे-पीछे चलने लगा। लजारे को उसे फिर लौट कर लिटाना पड़ा। तीन बार ऐसा करना पड़ा आखिर में वह मान गया। सिर ऊपर किये हुये वह पुआल पर लेट गया और इतनी उदास निगाह से अपने मालिक का प्रस्थान देखने लगा कि लजारे को उसे चूमने के लिए एक बार पुनः लौटना पड़ा। ऊपर जाकर लजारे ने आधी रात तक पढ़ने की कोशिश की अन्त में वह बिस्तर पर गया, लेकिन सो नहीं सका। उसके सामने पुआल पर पड़े हुये और दरवाजे की ओर स्थित दृष्टि से निहारते हुये मैथ्यू की प्रतिमा घूमती रही। कल तक उसका कुत्ता मर जायगा। वह बराबर बैठा ही रहा, कान लगा कर बाहर की आवाज सुनता रहा। उसे लगा, जैसे मैथ्यू अहाते में भूँक

रहा है। उसके सतर्क कान हर तरह की काल्पनिक आवाजें सुन रहे थे। करीब दो बजे उसे लगा जैसे उसने कराहने की आवाज सुनी हो। चारपाई छोड़ कर वह बाहर चला आया। यह रोने की आवाज कहाँ से आ रही है? वह जीने तक गया। घर में अँधेरा और खामोशी थी। पालिन के कमरे से भी कोई आवाज नहीं सुनायी पड़ी। नीचे जाने की अपनी हड़बड़ी पर काबू पाना उसके लिए मुश्किल हो गया। कुत्ते को एक बार पुनः देखने के लिए वह छटपटाने लगा। हाथ में लालटेन लेकर वह बेतहाशा नीचे की ओर दौड़ पड़ा।

घुड़साल में मैथ्यू पुआल से अलग खिसक गया था। एक दम नंगी जमीन पर वह अधमरा सा लेटा था अपने मालिक को भीतर देखकर उसे सिर उठाने की भी हिम्मत नहीं हुई। लजारे ताक पर लालटेन रख कर नीचे झाँकने लगा। जमीन का काला रंग देख कर वह दंग रह गया। घुटनों पर झुक कर उसने देखा कि कुत्ता खून में लोटता हुआ दम तोड़ रहा है। उसके जीवन का रक्त बाहर बह रहा है और वह धीरे-धीरे अपनी पूँछ हिला रहा है। गहरी आँखों में हल्की सी चमक अब भी बनी हुई है।

"हाय मेरे पुराने कुत्ते," लजारे अधीर होकर बोला, "मेरे प्यारे पुराने कुत्ते!"

उसे सम्बोधित कर वह जोर से बोला, "रुको मैं तुम्हें उठा रहा हूँ... नहीं, ऐसे तुम्हें तकलीफ होगी। लेकिन तुम कितने लथपथ हो गये हो। मेरे पास रुई या लत्ता भी नहीं है। बोलो, कुछ पियोगे?"

मैथ्यू की आँखें अब भी उसे निहार रही थीं। उसने करवट बदलने की कोशिश की। सभी अंग जैसे लुंज हो गये थे। धीरे-धीरे खून का बहाव जोर पकड़ने लगा। लजारे ने घबरा कर दोबारा वही सवाल किया—"मेरे पुराने भाई, बोलो, कुछ पियोगे?"

उसे पास में पड़ा हुआ एक चिथड़ा मिल गया। पानी में डुबो कर उसने उसे मरते हुये जानवर के मुँह पर रख दिया। इसमें उसे कुछ

आराम-सा मिलने लगा। बुखार से झुलसी हुई नाक कुछ-कुछ ठन्डी हो गयी थी। आधा घन्टा बीत गया। लजारे बार बार कपड़े का फाहा बना कर उसके मुँह और बदन पर रखता रहा। शायद इसी सीधी-सादी तरकीब से वह अपने दुलारे कुत्ते को जिला लेना चाहता था। "क्या बात है?" वह अचकचा कर बोला, "खड़े होना चाहते हो?"

बुरी तरह काँपता हुआ मैथ्यू उठने की कोशिश कर रहा था। पैरों को तान कर उसने गर्दन ऊँची करनी चाही, लेकिन उसी वक्त बेतरह खाँसी आने लगी। उसका आखिरी वक्त पहुँच गया था। अपने मालिक के घुटनों पर वह अचेत होकर लुढ़क गया। भारी पलकों के नीचे उसकी आँखें अब भी लजारे के ऊपर टिकी हुई थीं, जैसे वे उसे एक बार और देख लेने की आखिरी-सी कोशिश कर रही हों, इस मरण-शील दृष्टि की तीक्ष्णता से अभिभूत होकर लजारे ने उसे अपने घुटनों पर बिठा लिया। ऐसा लगता था, मानों वह किसी आदमी की लाश हो। कुछ ही क्षणों तक ऐसा हुआ। कुत्ते की धुँधली आँखों से वास्तविक आँसू, बड़े-बड़े आँसू बहने लगे और उसके पंजे एकदम ढीले हो गये।

"मेरे दोस्त, मेरे भाई, मेरे बच्चे," लजारे फूट-फूट कर रोता हुआ चिल्लाया। मैथ्यू की इह लीला समाप्त हो गयी थी। वह जमीन पर पसर गया। लगता था, जैसे सो रहा हो, खामोश और गहरी नींद में सो रहा हो।

लजारे को महसूस हुआ, जैसे हर एक चीज का पुनः अन्त हो गया हो। अब उसका कुत्ता मर गया था। असन्तुलित शोक और निराशा ने उसे चारों ओर से घेर लिया। उसे अपना सम्पूर्ण अस्तित्व विलीन होता हुआ-सा प्रतीत होने लगा। इस मौत ने बाकी मौतों की भी याद ताजी कर दी। माँ को मरे हुये अभी ज्यादा दिन नहीं हुआ था, वह घाव अभी पूरी तरह पुज नहीं पाया था, इसी बीच उसका एक और भाग भी लजारे से छिन गया।

पास से कुछ आहट हुई। लजारे ने घूम कर देखा। मिनूशी चुपचाप पुआल नोंच रही थी। सहसा पालिन भी पहुँच गयी। उसे देखते ही उसका शोक दुगुना हो गया। फूट-फूट कर वह चिल्लाने लगा, "हे भगवान, हे भगवान! वह कितना प्यार करती थी इस कुत्ते को! तुम्हें याद है? जब यह छोटा-सा पिल्ला था, तभी वह इसे ले आयी थी, उसी ने इसे पाला, पोसा, बड़ा किया। घर भर में यह उसके पीछे-पीछे नाचता रहता था।"

थोड़ा रुक कर वह आगे बोला—"अब कुछ भी नहीं रह गया। हम अनाथ हो गये, एक दम बेसहारा और अकेले हो गये।" पालिन की आँखों में आँसुओं का तूफ़ान उमड़ आया। लजारे को आश्वासन देने की चेष्टा किये बिना, लालटेन की धुँधली रोशनी में झुक कर वह अभागे मैथ्यू को निहारने लगी। उसकी सारी चेतना शिथिल-सी होने लगी। कुछ भी कर पाने में वह अपने को व्यर्थ और अशक्त अनुभव कर रही थी।

[८]

लजारे की अप्रसन्नता और चिन्ता की जड़ थी उकताहट। वह आराम से, काम से, अपने से और यहाँ तक कि दूसरों से भी एकदम ऊब गया था। इस बीच अपने आलस्य को भी वह इसके लिए दोषी ठहराने लगा। इससे अब उसे शर्म आने लगी थी। क्या उसकी जैसी उम्र के आदमी के लिये अपने जीवन का सर्वोत्तम समय इस अभागे बोनीविले में बरबाद करना अपमानजनक नहीं था? पहले बहुत से बहाने थे, बहुत सी रुकावटें थीं; लेकिन अब उसे बाँध रखनेवाली

कोई भी अड़चन नहीं थी। अपने परिवार पर निर्भर रहते हुये यहाँ व्यर्थ में पड़ा रहना अब उसे भारी मालूम होने लगा। औरों के भी तो भरण-पोषण का प्रबन्ध होना चाहिये। उन्हें उनके लिये कुछ कमाना-धमाना चाहिये, कुछ जमा-पूँजी बटोरनी चाहिये। उसने एक बार ऐसा करने की प्रतिज्ञा की थी और तब उसकी सौ फी सदी नालायकी साबित हुई थी। बेशक भविष्य के लिये उसके पास योजनाओं की अब भी कमी नहीं थी। बुद्धि कौशल से अपार सम्पत्ति अर्जित करने की महत्वाकांक्षा अब भी बनी हुई थी, किन्तु नींद से अँगड़ाई लेने पर, स्वप्नों के संसार से बाहर आने पर उसने जिस अभाव का अनुभव किया वह था काम में लग जाने का साहस।

"इस तरह मेरा काम नहीं चल सकता", प्रायः वह पालिन से कहता, "मुझे कुछ काम करना चाहिये ...... मैं केन से एक अखबार निकालना चाहता हूँ।"

हर बार वह जबाब देती : "गर्मी बीतने तक चुप रहो। कोई जल्दी नहीं है... इस तरह की कोई भी चीज़ करने के लिए उस पर खूब सोच विचार कर लो।"

सच बात यह थी कि उसे काम में लगा हुआ देखने की इच्छा के बावजूद, ऐसे अखबार की सूझ से वह सशंकित थी। यह दाँव भी खाली जा सकता है। उसने संगीत, चिकित्सा और फैक्ट्री में हाथ लगाया। लेकिन नतीजा ? वही टाँय-टाँय फिस ! घण्टे-दो घण्टे बाद वह एक चिट्ठी तक लिखने से मुकर जाता। जैसे इतना थक गया हो कि कलम उठाने की भी ताकत न हो।

हफ़्तों के बाद हफ्ते बीत गये। पुनः बसन्त में ज्वार आया। बोनीबिले के तीन घर और बह गये। मछुवाहों ने इकट्ठा होने पर लजारे से पूछा, "क्या तुमने अपना इरादा छोड़ दिया है ?" हाँ, सचमुच, बात यही थी। अब कुछ भी करने को बाक़ी नहीं बचा था। लेकिन इसके साथ ही काम की इतनी सारी लकड़ी को बर्बाद होने देना बड़े अचरज की बात थी।

लोग उससे काम आगे बढ़ाने को कहते, लेकिन वह हँस कर बात टाल देता। धीरे धीरे वह इससे इतना ऊब उठा कि गाँव में जाना ही बन्द कर दिया। नष्ट हुये बाँध और संगमूसों का दृश्य देखना उसके लिये असह्य बन गया था।

एक दिन एक मछुवाहे ने लजारे को गिर्जाघर जाते समय रोक कर पूछा—"लजारे बाबू, जानते हो, वे लकड़ी की कड़ियाँ वहाँ किनारे पडी सड़ रहीं हैं?"

"हाँ, तो क्या हुआ?"

"अगर वे काम की न हों तो मैं उठा ले जाऊँ, कुछ नहीं तो तापने का ही काम देंगी।"

लजारे ने गुस्से से लाल भभूका होकर जवाब दिया: "यह नामुमकिन है अगले हफ़्ते से ही मैं कारीगरों को काम पर लगा रहा हूँ।"

तमाम इलाके भर में यह चर्चा फैल गयी। सब को उत्सुकता हो गयी कि कुछ अचम्भा होगा, कुछ गुल खिलेगा। एक पखवारा बीत गया मछुवाहे जब भी मिलते, खोद-खोद कर पूछते—क्यों क्या मजदूर नहीं मिल रहे हैं? आखिर में उसने संगमूसों का मसला एक बार फिर से हाथ में उठा लिया। इससे खासतौर से वह अपनी बहन को खुश करना चाहता था, क्योंकि वह उसे काम में लगा हुआ देखने के लिए परेशान रहा करती थी। लेकिन इस मर्तबा उसने बिना जोश के ही काम शुरू कर दिया। सम्मान पैदा करनेवाली चीज थी केवल समुद्र के प्रतिरोध की भावना। वह उसे छड़ी बुलाने के लिये तुल-सा गया था।

लजारे ने फिर से नयी योजना बनायी। बहुत-सी पुरानी लकड़ी का इस्तेमाल हो सकता था। इसलिए ज्यादा खर्च की बात नहीं थी। कारीगर ने चार हजार फ्रैंक का तखमीना पेश किया। रक़म भारी नहीं थी, इसलिये लजारे पालिन से रुपया लेने के लिए राज़ी हो गया। उसे यकीन था कि साधारण परिषद से अनुदान मिलने में कठिनाई नहीं

होगी। असल में पुराना घाटा भी इसी तरह पूरा हो सकता था, क्योंकि संगमूसे जब तक बेकार पड़े रहते, तबतक परिषद् कानी कौड़ी भी देने को तैयार नहीं हो सकती थी। सवाल के इस पहलू ने उसकी कुछ हिम्मत बढ़ा दी और काम तेजी से शुरू हो गया। लजारे की व्यस्तता का आर-पार नहीं था। प्रिफेक्ट और प्रभावशाली पार्षदों से मिलने-जुलने के लिये उसे हर हफ़्ते कैन जाना पड़ता। कड़ियों का बिठाना करीब-करीब पूरा हो चुका था। आखिर में निश्चय यह हुआ कि जाँच के लिए एक इञ्जीनियर जायगा और उसी की सिफारिश से परिषद् अनुदान स्वीकार करेगी। इञ्जीनियर बोनीविले में पूरे दिन भर रुका। आदमी था दिलचस्प। शैन्तें के साथ भोजन करने का निमन्त्रण उसने बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार कर लिया। चापलूसी के डर से किसी ने उसकी राय जानने की कोशिश नहीं की। लेकिन दावत के वक्त पालिन के साथ उसने ऐसा व्यवहार किया कि उसे भी योजना की सफलता का पूरा विश्वास हो गया। और इस तरह एक पखवारे के बाद, जब लजारे केन के दौरे से लौटा तो सारे घर ने उसके मुँह से खबर सुनने के लिए कान खड़ा कर लिया। गुस्से में उसकी जबान बन्द हो गयी थी। शैतान की औलाद उस इंजीनियर ने एकदम खिलाफ रिपोर्ट दी थी। लकड़ी के एक-एक टुकड़े का उसने मजाक उड़ाया था। किस्सा कोताह यह कि रिपोर्ट के आधार पर परिषद् ने सहायता का आवेदन अस्वीकृत कर दिया था। युवक लजारे को निराशा के एक नये संकट का सामना करना पड़ा। संगमूसे बैठा दिये गये थे। उसे यकीन था कि वे तेज से तेज ज्वार को भी रोक लेंगे लेकिन इससे उसकी बहन का रुपया नहीं लौटेगा। इस आफ़त में उसे समेटने के लिए वह बुरी तरह अपने को कोसने लगा। यों, सारी जिम्मेदारी उसी पर है। खुद उसने ही कर्ज देने की ज़िद की थी। यह परोपकार का काम था। उसे कोई खेद नहीं होगा। अपनी गाँव की रक्षा के लिए वह और दे सकती

थी, फिर भी कारीगर ने जब हिसाब बनाकर भेजा तो उसकी भौहें तन गयीं। पहले कूते गये चार हजार फ्रैंक की जगह करीब आठ हजार फ्रैंक की चपत पड़ गयी थी।

इस वक्त तक पालिन की पूंजी करीब चालीस हजार फ्रैंक तक ही रह गयी थी। इससे दो हजार की आमदनी होती थी, जोकि अगर वह अकेली और बेघर-बार छोड़ दी जाती तो मुश्किल से खाने-पीने भर ही थी। सारा रुपया धीरे धीरे गृहस्थी के कामों में खर्च हो गया था अब तक खुले हाथों लुटाती आ रही थी लेकिन भविष्य में सतर्क होने और संभाल कर खर्च करने की जरूरत थी। शैन्ते परिवार की आमदनी अब प्रतिमास तीन सौ फ्रैंक भी नहीं रह गयी थी। मालकिन की मृत्यु के बाद यह पता चला कि कुछ प्रतिभूतियाँ बेच दी गयी थीं, लेकिन उस रुपये का क्या हुआ, यह कुछ मालूम नहीं हुआ। उनकी आमदनी में अपनी आमदनी मिलाने पर भी करीब चार सौ फ्रैंक होते थे। गृहस्थी का खर्च काफी भारी था। दान-दक्षिणा का रुपया बचाने के लिए उसे आश्चर्यजनक ढंग से मित-व्ययिता बरतनी पड़ती थी। पिछले जाड़े से डाक्टर कैजनोव की अभिभावकता समाप्त हो गयी थी। पालिन प्रौढ़ हो गयी थी और अपने तथा अपनी सम्पत्ति पर उसका पूरा नियंत्रण स्थापित हो गया था। जहाँ तक डाक्टर का सम्बन्ध था, उसने उसके रास्ते में कभी भी कोई रुकावट नहीं डाली थी। कोई राय-सलाह देने से वह हमेशा दूर ही रहा करता था और दोनों के इसका अहसास करने से हफ्तों पहले ही उसकी जिम्मेदारियाँ खत्म हो चुकी थीं। पालिन ने अनुभव किया कि अब वही घर की स्वामिनी है। किसी को लेखा-जोखा देने की जरूरत नहीं थी। उसके चाचा ने अनुरोध किया था—तुम सब काम अपने मन से करो। मुझसे पूछा-पेखी करने की जरूरत नहीं है। लजारे भी रुपये-पैसे के मामलों से बिलकुल दूर ही रहता था। अपनी चाची का स्थान ग्रहण कर घर का सारा कारबार वही चला

रही थी। अद्‌भुत व्यावहारिक कौशल था उसमें। कभी-कभी लजारे और शैन्ते दाँतों तले उंगली दबा कर रह जाते। अकेली वेरोनिक ही नयी स्वामिनी को कृपण समझती थी। क्योंकि हर शनिवार को ये लोग सिर्फ एक पौण्ड की मक्खन पर ही सब्र कर लेते हैं।

एकरस नियमितता के साथ दिन बीतते गये। यह क्रम, दैनिक जीवन का यह अनवरत पटाक्षेप पालिन के लिए सुखद और आह्लाद जनक था, किन्तु लजारे का अवसाद इससे और भी कष्टपूर्ण बन जाता था। प्रत्येक कक्ष में प्रसन्नतापूर्ण शान्ति व्याप्त रहने पर भी उसे अपना घर बहुत सूना-सूना, बहुत उदास और उजड़ा प्रतीत होता था। बाँध का काम पूरा हो गया था। एक काम से बहुत बड़ी छुट्टी मिल गयी थी, लेकिन अब कोई काम न रहने पर उसकी परेशानियाँ बढ़ गयी थीं। प्रत्येक दिन भविष्य के लिए वह नयी-नयी योजनायें बनाता। समाचार पत्र का विचार उसने छोड़ दिया था। यह उसके बूते के बाहर की चीज थी। वह प्रायः अपनी निर्धनता को कोसता रहता। इसी ने उसे शान्तिपूर्वक साहित्य अथवा इतिहास के महान् कार्य में लगने से असमर्थ कर दिया था। अन्ततः उसने अध्यापक बनने की योजना बनायी। आवश्यकता पड़ने पर और परिक्षायें भी पास कर लेनी थीं! इससे जीविका तो चलती ही, साथ-साथ साहित्यिक कार्य भी किया जा सकता था। उसके और पालिन के बीच पुरानी मित्रता के अलावा कुछ भी बचा हुआ नहीं मालूम होता था। दोनों पास पास थे, रात दिन एक साथ, लेकिन उसने कभी भी शादी का ज़िक्र नहीं किया। कारण, या तो इसके बारे में वह सब कुछ भूल गया था या इसको इतनी चर्चा हो चुकी थी कि इसे उसने एक दम निश्चित् समझ लिया था। पालिन, अपनी ओर से, इसके बारे में बोलने से कतराती थी। उसे निश्चय था कि लजारे बात चलाते ही राज़ी हो जायगा। बहरहाल, इस बीच, पालिन के प्रति लजारे की कामना दिन प्रति-दिन घटती जा रही थी, पालिन इससे अवगत थी ; बिना इस

बात का अनुभव किये कि उसे अवसाद से मुक्त करने की उसकी अशक्तता का अन्य कोई कारण नहीं था, इससे भली भाँति परिचित थी।

एक दिन, शाम के धुँधले में जब वह उसे खाने के लिए बुलाने गयी तो नया ही दृश्य देखने को मिला। उसने देखा कि वह कोई चीज जल्दी-जल्दी छिपा रहा है।

"क्या बात है ?" उसने हँसते हुये पूछा। "मेरे जन्म दिन के लिए कोई कविता ?"

"नहीं, नहीं," वह हड़बड़ा कर धीरे से बोला, "कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं !"

यह था एक पुराना दस्ताना, जिसे लूसी छोड़ गयी थी। किताबों के ढेर के बीच से उसे अभी-अभी यह मिल गया था। दस्ताना बहुत ही मुलायम चमड़े का था। बालिका की प्रिय सूर्य कमल की सुगन्ध ने उसके माधुर्य को द्विगुणित कर दिया था। पुष्प और चर्म के मिश्रण ने लजारे का रोम-रोम अभिभूत कर लिया था। दस्ताने को अपनें ओठों से लगा कर मधुर स्मृतियों में खोया हुआ वह स्तम्भित-सा खड़ा था।

माँ की मृत्यु से मिली हुई रिक्तता तो थी ही। उस दिन के बाद से लजारे की एक और चिन्ता बढ़ गयी। लूसी की चाह उसके सीने में पुनः उभर आयी। वह कभी भी उसे भूली नहीं थी। शोक के दिनों में उसकी स्मृति केवल धुँधली ही पड़ गयी थी। इस दस्ताने ने उसका चित्र पुनः सामने स्थापित कर दिया था। अकेला होने पर वह दस्ताना हाथ में ले लेता। उसे सूंघता, चूमता; इस कल्पना के साथ कि वह उसे एक बार पुनः अपने आलिंगन में आबद्ध किये हुये है और उसके कण्ठ से अपना ओठ सटा रखा है। लगातार तनाव और आलस्य की स्थिति ने उसके ऐन्द्रिक उन्माद को उद्दीप्त कर दिया था। अब उसकी निराशा और भी अधिक दुःसह बन गयी। अपने पर, काबू पाना उसके लिए कठिन हो गया। मानसिक विह्वलता इतनी बढ़ गयी कि वह अपनी

बहन के साथ अभद्रतापूर्ण व्यवहार तक करने लगा, मानों वही उसके आभावों की जड़ हो। उसमें उसके लिए शारीरिक आकर्षण नहीं रह गया था। कभी-कभी उसके साथ गप-शप करते हुये वह दबे पाँव अपने कमरे में खिसक जाता, लूसी की विह्वल स्मृतियों में निमग्न होकर अपने को भीतर से बन्द कर लेता। फिर जीवन से थका हुआ सीढ़ियों से नीचे उतरता।

एक ही महीने में वह इतना बदल गया कि पालिन हताश होकर रात भर चिन्ताओं में डूबती-उतारती रहती। दिन में घर की जिम्मेदारियाँ निभाने के लिए उसे अपने को प्रसन्न रखना पड़ता, दिल को मजबूत बना लेना पड़ता। छोटे-मोटे अनेक कार्यों में वह व्यस्त रहती। लेकिन रात में अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लेने पर उसकी वेदनायें उभर आतीं। उसका सारा साहस टूक-टूक हो जाता और वह निर्बल शिशु की भाँति रोने लगती। कोई आशा नहीं रह गयी थी। उसकी उदारता और कृपालता को सदैव क्रूर पराजय मिलती आयी थी। क्या अब यह सम्भव है? उदारता और दानशीलता पर्याप्त नहीं है। कोई किसी को प्यार करते हुये भी अप्रसन्न बना सकता है। भाई अप्रसन्न रहता था। कदाचित् मेरे ही अपराध से वह रूठ गया हो। फिर उसकी अनिश्चयता के भीतर किसी प्रतिद्वन्द्वी के प्रभाव की भी आशंका छिपी हुई थी। लूसी का चित्र अब उसके सामने निखरने लगा, वही चित्र जो कि श्रीमती शैन्ते की मृत्यु के ठीक बाद सामने खड़ा हो गया था, पुनः उभरने लगा।

यह उसका नित्य का ही रवैया बन गया। लालटेन बुझाते ही वह बिस्तर के पैताने थकी और हारी हुई बैठ जाती। कपड़े बदलने की भी हिम्मत न होती। दिन भर प्रदर्शित की गयी प्रसन्नता, दिन भर दिखाया गया धीरज और साहस उसे चारों ओर से नोंचने-चोंथने लगता। यदि इस प्रिय स्थान पर प्रकाश की कोई किरण नहीं ला सकती तो अपने को प्रसन्न रखने की सारी चेष्टा किस काम की है? लजारे के

मुँह से एक बार निकला हुआ कठोर शब्द उसके मस्तिस्क में प्रतिध्वनित होने लगता । हम अत्यधिक एकाकी हैं । मेरी ईर्ष्या का ही सारा अपराध है । इसी ने दूसरों को दूर कर दिया है । वह लूसी का नाम न लेती ! उसके बारे में सोचना भी नहीं चाहती थी । फिर भी वह मन की आँखों से उसका इतराते हुये चलना, लजारे से विजय सूचक मुद्रा में मनोविनोद करना और अपना दामन लहराते हुये चिढ़ाना आदि देखती रहती थी । घण्टों बीत जाते और वह इस चित्र से अपना पीछा न छुड़ा पाती । निश्चय ही लजारे उसके लिए बेचैन है । उसके उपचार के लिए उसे बुलाना होगा । इससे आसान और कुछ भी नहीं हो सकता है । हर एक शाम को पालिन जब अपने कमरे में जाती और थक कर चारपाई पर एक किनारे लेट जाती, तो यही एक कल्पना उसके दिमाग में घूमने लगती । यही विचार उसे पीड़ित करने लगता कि उसके प्रियजनों की प्रसन्नता अब उस दूसरी स्त्री के हाथ में चली जायगी ।

कभी-कभी उसका अन्तःकरण उग्र विद्रोह करने लगता । चारपाई से उठकर वह खिड़की के पास चली जाती । बाहर की हवा लेती रहती । फिर समुद्र को, जिसकी उदास आवाज उसके कानों से टकराती रहती, अनदेखा करते हुये वह घण्टों अँधेरे में खड़ी रहती । नींद एकदम हराम-सी हो गयी थी । समुद्री वायु उसके जलते हुये सीने को और भी धधका देती ! नहीं, मैं इतनी तुच्छ नहीं बनूंगी कि उस लड़की का प्रत्यागमन सहन कर लूँ । क्या मैंने उसे पारस्परिक आलिंगन में आबद्ध नहीं देखा है ? बिल्कुल पास में, मेरे ही बगल के कमरे में, मेरे ही अपने समझे गये घर में किया गया क्या यह अत्यन्त घृणित विश्वासघात नहीं है ? ऐसा घृणित कर्म अक्षम्य है, एक बार पुनः दोनों को पास-पास लाना इसे प्रोत्साहन देना है । इन दृश्यों की कल्पना करने पर उसका ईर्ष्यापूर्ण आक्रोश प्रबल हो उठा । नङ्गी बाहों में मुंह छिपा कर वह सिसकने लगी । दाँतों से अपने ओठ काटने लगी । रात साँय-साँय कर रही थी ? हवा उसके कण्ठ का स्पर्श करती हुई वह

रही थी। उसके बाल बिखर कर लहरा रहे थे। कोई भी ऐसा नहीं था जो कि उसकी शिराओं में प्रवाहित होने वाले क्रुद्ध रात को शान्त कर देता। किन्तु गुप्त रूप से, अप्रत्यक्ष रूप से, अत्यन्त विप्लवपूर्ण क्षणों में भी उसकी करुणा और वासना का संघर्ष छिड़ा हुआ था। एक अपरिचित-सी धीमी आवाज़ फुसफुसाती हुई दानशीलता के आह्लाद का बखान कर रही थी, स्वयं को दूसरों के निमित्त अर्पित कर देने के सुख का उद्देश्य सुना रही थी। उसने इसे शान्त करने की चेष्टा की। इस सीमा तक किया गया आत्म-बलिदान दुर्बलता और मूर्खता का परिचायक है। फिर भी वह उस वाणी को सुन रही थी। उसे अनसुनी करना कठिन था। धीरे-धीरे उसने अपने से ही तर्क करने वाली अपनी अन्तरात्मा को वाणी पहचान ली। मेरी निजी मंत्रणाओं का क्या महत्व है? यदि मेरे प्रियजन प्रसन्न रहते हैं तो मेरे दुःखों की क्या गिनती है? अन्धकार के गर्भ से उठने वाली थकी और अस्पष्ट किन्तु अपराजित वाणी को सुनकर उसकी सिसकियाँ शान्त हो गयीं।

एक रात खिड़की पर बहुत देर तक रोने के बाद वह चारपाई पर गयी। लालटेन बुझा कर अँधेरे में ताकते ही उसने सहसा एक निश्चय किया, अगले दिन सबसे पहले चाचा के पास जाऊँगी। उन्हें चिट्ठी लिख कर एक महीने के लिए लूसी को बोनीविले बुला लेने को कहूंगी। इससे ज्यादा आसान और स्वभाविक और कुछ नहीं हो सकता है। शीघ्र ही वह गहरी नींद में सो गयी, ऐसी गहरी और ख़ामोश नींद में जो कि हफ्तों से कभी भी नहीं आयी थी। लेकिन दूसरे दिन सबके साथ नाश्ते के लिए नीचे आने पर वह सहसा उदास हो गयी। उसकी हिम्मत छूटती हुई-सी मालूम होने लगी।

"तुम खा नहीं रही हो," शैन्ते ने कहा, "क्या बात है?"

"कोई बात नहीं," उसने जवाब दिया। "इसके अलावा रात में मुझे बहुत गहरी नींद आयी।"

लजारे को देखते ही उसका घाव हरा हो गया था। नये दिन के आगमन से ऊबा और थका हुआ वह चुपचाप मुँह चला रहा था। उसे दूसरे के हाथ में देने का उसका साहस चकनाचूर हो गया। कोई दूसरी उसे छीन लेगी, उसे चूमेगी दुलारेगी, यह विचार उसे असह्य था। उसके चले जाने पर उसने अपने निश्चय को कार्य रूप में परिणत करने का उपक्रम किया।

"क्या तुम्हारे हाथों में कुछ तकलीफ है?" उसने अपने चाचा से पूछा।

अपने हाथों को गौर से देखते हुये वह बोला—"नहीं तो, दाहिना हाथ और भी फुर्त लग रहा है। अगर पादरी आ जाता तो हम लोग खेल का मजा ले सकते थे।" थोड़ा रुक कर वह आगे बोला—

"तुम यह किस लिये पूछ रही हो?"

निस्सन्देह पालिन को विश्वास था कि वह पत्र नहीं लिख सकेगा। उसके चेहरे पर ललाई दौड़ गई। पत्र लिखना उसने कल के लिए टाल दिया। कोई बात नहीं, मैं सिर्फ जानना ही चाहती थी।"

उस दिन से उसके मन की सारी शान्ति लुप्त हो गयी। अपने कमरे में बिलख-बिलख कर रोने के बाद वह अपने पर काबू पा लेती और अगले दिन सुबह होते ही अपने चाचा से पत्र लिखवाने की प्रतिज्ञा करती। किन्तु अपने सम्बन्धियों के बीच गृहस्थी के दैनिक कार्यों में हाथ लगाते ही उसकी सम्पूर्ण शान्ति शिथिल हो जाती। मामूली-सी चीजें भी उसका दिल हिला देतीं। घर के पुराने सुपरिचित वातावरण में हम कितने सुखी रह सकते हैं! किसी अजनबी को यहाँ लाने में क्या तुक है? इन मन पसन्द आदतों में, जो कि वर्षों से हमारे जीवन में घर कर गयी है, तबदीली क्यों की जाय? इस कल्पना से कि किसी दिन मैं इस तरह रोटी नहीं करूँगी, कपड़ों को ठीक-ठाक नहीं करूँगी, निराशा की भावना से वह अभिभूत हो उठी। अपने जीवन

का सारा भविष्य उसे काँपता हुआ-सा दिखने लगा। यह व्यग्रता अब उसके सभी व्यस्त दिनों को विषाक्त बनाती जा रही थी।

"मुझे क्या हो गया है ?" कभी-कभी वह खुद अपने से पूछती, "हम एक दूसरे को प्यार करते हैं, फिर भी सुखी नहीं हैं...हमारा स्नेह केवल दुःख ही उत्पन्न करता है। हमारे चारोंओर केवल दुख का ही तांना-बाना रच देता है।"

उसने निरन्तर समझने का प्रयत्न किया। कदाचित् वह उसके भाई के चरित्र के बीच असामंजस्य से उत्पन्न हुआ था। वह हार मानने के लिए तैयार थी, सम्पूर्ण स्वेच्छा का बलिदान करने को तैयार थी। लेकिन वह ऐसा कर नहीं पायी। सब कुछ होते हुये, उसका विवेक विद्रोह करने लगता था। जिन बातों को वह युक्तिसंगत समझती थी, उन्हें चरितार्थ करने के लिए आकुल रहती थी। प्रायः उसका धैर्य उखड़ जाता और वह झुंझला उठती, एकदम बौखला उठती। वह हँसना चाहती थी और इन सब विपत्तियों को हर्ष में डुबा देना चाहती थी, किन्तु वह ऐसा अधिक समय तक कर नहीं सकी, क्योंकि उसमें स्वाभाविक तनाव भी आ गया था।

"अजब हाल है !" वेरोनिक सुबह से शाम तक बकती रहती "घर में तीन ही प्राणी हैं। फिर भी सब एक दूसरे का मुँह नोचने को तैयार रहते हैं ?"

शैन्ते भी स्नेहपूर्ण वातावरण के अभाव का अनुभव कर रहा था ! बीमारी का दौरा आने पर वह जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगता, तरह-तरह की वाहियात बातें बकने लगता। घर की परिस्थितियाँ पुनः असहनीय बनती जा रही थीं।

पालिन अपनी ईर्ष्या की अन्तिम मरोड़ों से लड़ती हुई प्रायः अपने से पूछती—क्या मुझे अपनी प्रसन्नता को लजारे पर थोपने का अधिकार है ? वस्तुतः वह उसे प्रसन्न देखना चाहती थी, अपने आँसुओं के मोल पर भी उसे खुश रखना चाहती थी। फिर उसे मैं इस तरह

अलग क्यों करूँ ? उसे अकेला क्यों करूँ इसमें सन्देह नहीं कि वह अब भी मुझे प्यार करता है। लूसी से तुलना करने पर वह मुझे ही अच्छी पायेगा और मेरे ही पास आयेगा। हर हालत में उसे ही फैसला करने दिया जाय। यही बिल्कुल सही रास्ता है, यही इन्साफ का तकाज़ा है।

हर चौथे महीने पालिन रुपया वसूल करने के लिए केन जाया करती थी। वह सुबह जाती और रात तक थकी-मांदी लौट आती। उस साल जून के महीने की पारी में उसकी वापसी का नौ बजे रात तक इन्तजार होता रहा। शैन्ते घबराने लगा। उसने सड़क तक देख आने के लिये लजारे को भेजा। वेरोनिक ने निश्चिन्तता के साथ सबको बताया कि देर हो जाने से वह रात में वहीं रुक गयी होगी। सब लोग रात भर परेसान रहे। दूसरे दिन नाश्ते के वक्त से ही उसकी घबराहट बढ़ गयी। दोपहर को लजारे ने ऐरोमांसे तक जाने का निश्चय किया, तभी नौकरानी सहसा पुलकित स्वर में चिल्लायी—"छोटी मालिकिन आ गयीं, आ गयीं !"

दरवाजों के सामने गाड़ी रुकी। लजारे आगे बढ़ कर पालिन के पास पहुँचा। वह इठलाती हुई नीचे उतर आई। वह चकित मुद्रा में खड़ा था, तभी उसके पीछे से एक दूसरी लड़की उतरी।

दोनों सहेलियों की तरह हँस रही थीं; लजारे के अचरज का कोई ठिकाना नहीं था। अपने पिता के पास वह जाकर बोला—"वह लूसी को अपने साथ ले आयी है !"

"लूसी ? अहो, क्या ही मजेदार बात है !" शैन्ते चिल्लाया। उन दोनों के पास आने पर वह हर्ष विभोर होकर बोला—"तो तुमने ऐसा कर ही लिया ... यह बात कभी मेरी समझ में नहीं आती थी। क्या यह तुम्हारी शरारत नहीं है ? और लूसी, देख, यह तेरी दुष्टता थी, हम लोग ग़म में हों और उस वक्त तू हमसे नाराज रह, यह कितनी ओछी बात है ! बहरहाल सब रफ़ा-दफ़ा हो गया है। है न ?"

दोनो लड़कियाँ स्तब्ध खड़ी थीं। लज्जा के कारण एक दूसरे से आँख मिलाना उनके लिए कठिन सा हो गया था। लूसी अपनी घबराहट छिपाने के लिए शैन्ते का चुम्बन लेने लगी। "क्या इत्तफाक़ से ही तुम दोनों की मुलाकात हुई?" शैन्ते ने पूछा।

"पालिन मेरे घर गयी थी। रात में मैंने ही रोक लिया था। उसे डाँटने की जरूरत नही है।"

उसने पुनः शैन्ते को चूम लिया। वह पूर्णता अश्वस्त हो गया था।

"और हाँ, लजारे के बारे में तो तुम्हें कुछ कहना नहीं है?" वह आगे बोला।

लजारे धीरे-धीरे मुस्कुराता हुआ पीछे खड़ा था। अपने पिता की बात सुन कर उसका दिल धड़कने लगा था। लूसी उसके पास जाने की चेष्टा नहीं कर रही थी। यह यहाँ क्यों आयी? मेरी बहन अपनी दुश्मन को क्यों ले आयी है? जिसे एक बार बदतहज़ीबी से निकाल दिया था, उसे फिर क्यों बुला लायी है?

"इससे मिलो, लजारे। इसकी हिम्मत नहीं पड़ रही है, इसलिए तुम्हीं आगे बढ़ो!" पालिन धीरे से बोली, यह सब देख कर वैरोनिक रसोई में चली गयी। कोई भी बात उसके समझ में नहीं आ रही थी। सब एक अजीब तमाशा-सा लग रहा था। थोड़ी देर बाद वह बाहर आकर बोली:

"खाना एक घण्टे से तैयार है। कुछ आगे का भी काम देखना है या......?"

सब ने हास उल्लास के साथ भोजन किया। शैन्ते बेहद खुश था। अपने उल्लास के कारण वह अन्य तीनों की बेचैनी को नहीं देख पा रहा था। वे एक-दूसरे के प्रति संयमित स्नेह का व्यवहार करते हुए भी कुछ-कुछ चिन्तित और उदास थे। जैसा कि किसी झगड़े के बाद समझौता हो जाने पर भी हुआ करता है। तीसरे पहर

का समय लूसी के रहने का बन्दोबस्त करने में ही बीत गया। उसे इस बार भी वही पतली मञ्जिल वाला कमरा दिया गया। श्रीमती शैन्ते वहीं से लालटेन लिए भोजन करने को यदि पुनः आ जातीं तो अतीत अपनी सारी घटनाओं के साथ पुनः सामने उपस्थित हो जाता।

प्रायः एक सप्ताह तक संकोच का वातावरण बना रहा। लजारे अपने मन की असाधारण चंचलता का कारण समझने में असमर्थ था। पालिन के बारे में भी उसे विश्वास न होता। अपनी आत्मा की सहज महानता के साथ वह आत्म-बलिदान कर देगी और उसे अपनी ओर से चुनाव करने की छूट देगी, यह समझना उसके बूते के बाहर हो गया था। उसने स्वयं उन आलस्य के क्षणों में भी, जबकि उसकी इच्छायें विद्रोह करने लगतीं, लूसी से विवाह करने का स्वप्न नहीं देखा था। इस प्रकार जब कि वे तीनों पुनः पास-पास आगये थे, एक भ्रान्तिपूर्ण स्थित उत्पन्न हो गयी थी। इससे सभी व्यग्र से थे। उनकी बातें बहुत नपी-तुली होतीं। कुछ वाक्य ओठों पर अधूरे ही रह जाते। पालिन को इस अप्रत्याशित परिणाम से बहुत विस्मय हुआ। पुराना निश्चिन्त और प्रसन्नतापूर्वक वातावरण पुनः वापस लाने के लिये उसे अपनी गरिमा का वृहत कुछ दिखावा-सा करना पड़ता। पहले पहल एक बात से उसे बहुत प्रसन्नता हुई। उसे मालूम हुआ कि उसके प्रति लजारे का प्रेम पुनः लौट रहा है। लूसी की उपस्थिति से वह शान्त और आश्वस्त-सा दिखायी पड़ता था। वह प्रायः उसकी अवहेलना करता रहता, उसके साथ अकेले होने से बचने का प्रयत्न करता रहता, इस आशंका से कि कहीं वह अपनी बहन की प्रतीति को पुनः धोखा न दे दे। पालिन के प्रति उसकी आसक्ति द्विगुणित-सी हो उठी। प्रायः कहता—वह नारियों में सर्व शिरोमणि है, सच्चे अर्थों में सती-साध्वी है। मैं उसके बिल्कुल ही अनुपयुक्त हूँ। उसे लूसी के प्रति अनाकृष्ट देख कर पालिन अपनी विजय का अनुभव करने लगती। सप्ताह के अन्त में इसके लिए वस्तुतः वह उसे उपालम्भ भी देने लगी।

"जब वह मेरे साथ रहती है तो तुम क्यों भाग खड़े होते हो? यह मुझे अच्छा नहीं लगता। वह इसलिये यहाँ नहीं आयी है कि लोग उससे मुँह सिकोड़े रहे।"

लजारे ने कोई उत्तर नहीं दिया। स्तब्ध-सा खड़ा रहा। उसी समय उसने बीते दिनों का जिक्र किया। "अगर मैं उसे यहाँ ले आयी हूँ तो इसलिए कि तुम जान सको, यकीन कर सको कि मैंने बहुत पहले ही तुम्हें क्षमा कर दिया है। मैं उस दुःस्वप्न को भूल जाना चाहती थी। अब उसका कुछ भी बाक़ी नहीं बचा है... और देखो, अब मुझे कोई ख़ौफ नहीं है। तुम दोनों पर मुझे पूरा यक़ीन है।" लजारे ने उसे अपनी बाँहों में समेट कर गले से लगा लिया। इसके बाद उसने पालिन से उदारता का व्यवहार करने का वादा किया।

उसी क्षण से प्रसन्नतापूर्ण मैत्री में दिन बीतने लगे। लजारे अब ऊबा हुआ नहीं दिखता था। किसी सन्त की भाँति मौन और अकेले-अकेले रहने के बजाय उसने नयी क्रीड़ाओं का आविष्कार किया। घूमने का कार्यक्रम पुनः आरम्भ हो गया। सभी ताजी हवा से खुश और हल्के होकर वापस आते। और वास्तव में इसी समय अज्ञात रूप से लूसी का जादू उसके सिर पर पुनः सवार हो गया। उसकी उपस्थिति का उसे अभ्यास हो गया। उसके परिधानों की प्रत्येक फर फराहट से उठनेवाली सुगन्धि से अभिभूत होकर वह उसकी बाँह पकड़ लेता। अपने पास उसे सटा लेता। पहले पहल उसने अपने पर काबू रखने की कोशिश की। इच्छा के प्रथम स्पन्दन का अनुभव करते हुये संयम से काम लेने की चेष्टा की। लेकिन जब चट्टानों पर घूमते समय कोई झरना आ जाता, तो स्वयं पालिन ही लूसी को पार उतारने के लिए उससे अनुरोध करती। वह बालक की भाँति बहादुरी से उछल जाती, जबकि लूसी घायल अबाबील की तरह फुदकती हुई लजारे की बाँहों में सिमट जाती। दोनों की घुस-फुस और हंसी दिल्लगी शुरू हो जाती। पालिन भी इन सब चीजों से

बेख़ौफ रहतीं। उसे यह नहीं मालूम था कि थकने का बहाना न कर और मदद न माँग कर वह अपनी खुशियों को खतरे में डाल रही थी ? अपने सामने वह उन दोनों को हाथ मिलाकर चलने देती। मानों इस प्रकार उनके प्रति अपना विश्वास प्रमाणित कर देना चाहती हो। लूसी पालिन की क्षमाशीलता से बहुत प्रभावित हो उठी थी। वह हमेशा अपने को इसके योग्य बनाने की चेष्टा करती रहती थी। पालिन का अब वह बहुत आदर करती। बार-बार उसे अपनी बांहों में समेट लेती, चुम्बन लेने लगती। तरह-तरह के वादे और प्रतिज्ञायें करती। इतनी प्रसन्न और हँसमुख वह शायद ही कभी रही हो।

किन्तु धीरे-धीरे पालिन की व्यग्रता फिर से बढ़ गयी। उसकी थोड़े समय की आशा, उसकी क्षणिक विजय केवल कटुता का ही बीज बो गयी! उसे अनुभव होता जैसे वह किसी भारी बोझ के नीचे दब गयी है और क्षण प्रतिक्षण नीचे ही धँसती जा रही है। इसके आगे कोई विकल्प सम्भव नहीं था, कोई आशा बाकी नहीं बची थी। उसका दुःख निश्चय ही अपने अधो-बिन्दु तक पहुँच गया था। बात सच थी। लजारे और लूसी का कोई दोष नहीं था। वे वास्तविक आकर्षण के विरुद्ध संघर्ष करते हुये उसके ऊपर अपनी दयालुताओं का बोझ लाद देते थे, और यही दयालुता ही उसे सब से ज्यादा खलनेवाली थी। अब उसके सामने स्पष्ट हो गया कि वे अपने प्रेम से उसे अपरिचित रखना चाहते हैं। उन दोनों प्रेमियों की सहानुभूति असहनीय वस्तु बन गयी। क्या सभी बातों से उनके प्रेम की पुष्टि नहीं होती है ? अकेले होने पर वे जल्दी-जल्दी फुस-फुसाने लगते है। मुझे देखते ही सहसा चुप्पी साध लेते हैं। लूसी जितनी विह्वलता के साथ चुम्बन लेती है। लजारे उसके सामने कैसा बुद्धू सा बना रहता है। मैं उन दोनों का क्या कर सकती हूँ ? मैंने स्वयं ही यह स्थिति उत्पन्न की है।

इस बीच पालिन घर में किसी मां की तरह सारी जिम्मेदारियां निभाने

लगी। बीमारी का दौरा आ जाने पर वह शैन्ते की सेवा-सुश्रूषा करती। वेरोनिक के कामों में हाथ बँटाती। जहां तक लजारे और लूसी का सम्बन्ध था, उनके साथ वह ऐसा व्यवहार करती जैसे वे शरारती बच्चे हों। अन्ततः उसकी हँसी उन दोनों की हँसी से ज्यादा तेज हो गयी थी। सुबह से शाम तक सारे घर में चहल-पहल मची रहती किसी काम के बहाने से वह घर पर ही रह जाती। लूसी लजारे मन-मानी घूमा करते। लजारे बकवादी बन गया था। वह सीढ़ियों पर सीटी बजाता रहता। दरवाजों को भड़-भड़ाता रहता। एक बार पुनः वह दुनिया को जीतने की तैयारी करने लगा। प्रतिदिन भोजन के समय भविष्य के लिए वह किसी असाधारण नयी योजना का समाचार लेकर आता। लेखक बनने के विचार का उसने परित्याग कर दिया था। अध्यापक बनने के लिए परीक्षायें देने का भी इरादा छोड़ दिया था। फिर कभी-कभी वह अपनी मूर्खताओं पर हँसने लगता। कभी उपन्यास लिखने की बात सोचता। कभी नाटक लिखने की योजना बनाता। फिर सहसा राजनीति की चर्चा करने लगता—मैं भी कितना अहमक हूँ। इस तरह बँधे रहने से काम नहीं चलेगा। मैं पेरिस जाऊँगा। वहाँ नेता बनूँगा, नेता। पालिन जब उसे चुप रहने के लिए कहती तो वह उसे चिढ़ाने लगता।

एक दिन, जबकि लजारे और लूसी अपने आप बाहर गये थे, पालिन अपने भाई के आलमारी के पास गयी। वहाँ कागज के पत्रों के बीच वह लूसी का पुराना दस्ताना देख कर दंग रह गयी। हाय राम, वह इस लड़की के आने के पहले से ही उसे चाहता था। इसकी याद उसके दिमाग में बनी हुई थी। वह जोर-जोर से सिसकने लगी। अपने काँपते हुये हाथों में दस्ताना देख कर उसकी आँखों से आँसू छलकने लगे।

शाम को अपने कमरे में जाने पर वह धड़ाम से चारपाई पर गिर पड़ी। मुझे लजारे को लूसी से शादी करने की इजाजत देनी ही होगी।

कोई दूसरा उपाय नहीं है। दिन भर उसके दिमाग में उथल-पुथल मची थी। कोई फैसला करना मुश्किल हो गया था। इस वक्त रात में उसके सामने रास्ता साफ हो गया। उन्हें शादी करने की इजाजत दे देनी होगी। यह विचार एक आदेश की भाँति, तर्क और न्याय की वाणी की भांति उसके मस्तिष्क में प्रतिध्वनित होने लगा। इसे शान्त करना उसके वश के बाहर हो गया। सहसा उसके कान खड़े हो गये। उसे अपनी चाची का आदेशपूर्ण स्वर सुनायी पड़ने लगा। भयभीत होकर उसने अपना सिर तकिये में छिपा लिया। क्या? उसे दूसरे के हाथ में सौंप दिया जाय? कोई दूसरी स्त्री उसे हमेशा हमेशा के लिए अपनी बाँहों में समेट ले? नहीं, यह मुझसे कभी नहीं होगा। जल्दी ही मैं अकेली अपना दुर्भाग्यपूर्ण जीवन बिताने लगूँगी। कोई मुझे अपने पास फटकने नहीं देगा। अपने पास रहने नहीं देगा। बहुत देर तक वह अपने से जूझती रही, फिर शान्त होकर लेट गयी। सारी इन्द्रियाँ अन्ततः शिथिल हो गयीं, जड़ता और अवसाद ने उसे चारोंओर से घेर लिया।

आगे चल कर बिना कपड़े उतारे चित लेटी हुई पालिन बहुत देर तक अपने से तर्क वितर्क करती रही। उसे निश्चय हो गया कि लूसी लजारे को अधिक प्रसन्न रख सकती है। उसे ऐसी ही स्त्री की आवश्यकता है। उसके हाथ उसकी गर्दन से चिपके रहेंगे, उसके चुम्बन उसे चिन्ता मुक्तकर देंगे, मृत्यु से उसका भय दूर कर देंगे। मैं तो बिल्कुल जड़ हूं। मेरे पास क्या है? स्त्रियों जैसा आकर्षण मुझमें कहाँ? केवल अच्छा स्वभाव है, जो कि युवकों को सन्तुष्ट नहीं रख सकता है। एक दूसरे विचार ने उसे और भी अश्वस्त कर दिया। मैं लुट चुकी हूँ। मेरे भाई को अपनी भावी योजनाओं के लिए काफी पैसों की जरूरत है। लूसी धनवान है। वह विशाल सम्भावनाओं का मार्ग मुक्त कर देगी। उसके सारे स्वप्न पूरे कर देगी। सुनने में आता है कि लूसी का बाप अपने भावी दामाद के लिए किसी पद का प्रबन्ध कर

रहा है। यदि यह विवाह होने नहीं दूंगी, तो मुझसे बहुत बड़ा अपराध होगा। यही एक मात्र स्वभाविक और आवश्यक समाधान है। अपना सम्मान खोकर भी ऐसा करना ही होगा।

सारी रात इसी कशमकश में बीती। दिन निकलने पर पालिन ने अपने कपड़े उतारे उसका मन बहुत शान्त हो गया था। यद्यपि नींद अब भी नहीं आयी, तथापि पूर्ण विश्राम का आनंद लेती हुई वह चारपाई पर लेट रही, इतना हल्कापन उसने कभी भी महसूस नहीं किया था। सब चीजें खत्म हो चुकी थीं। अपने आत्माभिमान की शर्तें उसने पूरी कर दी थीं। किसी से कोई उम्मीद उसे नहीं रह गयी थी। अपने हृदय की गहराइयों में वह आत्मोत्सर्ग के आनन्द का अनुभव करने लगी। सूरज निकलते समय वह गहरी नींद में सो गयी।

सुबह पालिन बहुत देर से नीचे आयी। जागने पर पिछली रात के अपने निश्चय पर वह पूर्णतः दृढ़ थी। लजारे और लूसी को एक सूत्र में अवश्य ही बांधूंगी। फिर यहाँ मेरे रहने की कोई जरूरत नहीं रहेगी। कहीं दूर, कहीं अलग चली जाऊंगी। समस्त विदग्ध स्मृतियों के साथ इस घर को छोड़ दूंगी। मेरा सारा जीवन बदल जायगा, एकदम नया और निश्चिन्त हो जायगा।

नाश्ते के वक्त वह खामोश और हँसमुख बनी रही। ऐसी अब उसकी आदत ही बन गयी थी। लूसी और लजारे को पास-पास बैठे हँसते मुस्कुराते देख कर उसे बुरा नहीं लगा। दिल में कुछ कचोट-सी जरूर लगी, लेकिन वह अपने को संयमित किये रही। यह शनिवार का दिन था, सो उसने उन दोनों को सैर करने के लिये भेज दिया। फिर वह डाक्टर कैजनोव का रास्ता देखने लगी। उत्सुकता की स्थिति में वह सड़क तक चली गयी। कैजनोव की गाड़ी देख कर उसका मन बाँसों उछलने लगा। जल्दी-जल्दी वह उससे नीचे उतरने का आग्रह करने लगी। कुछ ही सीधे-सादे शब्दों में पालिन ने अपना हृदय उड़ेल दिया। डाक्टर से उसने लजारे और लूसी की शादी कराने और घर

छोड़ देने की सारी बात कह दी। अपनी सफाई दे देना उसके लिये जरूरी हो गया था, क्योंकि वह कोरी भावुकता में आकर कोई काम नहीं करना चाहती थी और बूढ़ा डाक्टर ही एक ऐसा आदमी था जो कि उसकी सारी बातें सुन सकता था।

कैजनोव सहसा सड़क के बीचों बीच खड़ा हो गया। और उसे अपनी लम्बी और पतली बाँहों के घेरे में खींच लिया। भावाभिभूत होकर उसका शरीर थर-थर काँपने लगा। उसके बालों को उसने बेतहाशा चूम लिया।

"बिल्कुल ठीक, मेरी बच्ची ... मैं इससे बहुत खुश हूँ। ऐसा न करने से कुछ बुरे नतीजे ही सामने आ सकते हैं। मैं महीनों से इससे बहुत परेशान था। यह जान कर कि तुम दुखी हो, तुम्हारे घर नहीं आते बनता था। उफ़ इन लोगों ने, इन भलेमानुसों ने तुम्हारे साथ कैसी गन्दी चाल चली। पहले तुम्हारी दौलत छीन ली और फिर तुम्हारा दिल ...।" पालिन बीच में ही बोल पड़ी—"नहीं, नहीं ऐसा मत कहो। इन लोगों के प्रति इतने निर्दय मत बनो।" "हो सकता है। बहरहाल, मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। जाओ, अपने लजारे का हाथ लूसी के हाथ में पकड़ा दो, इससे बढ़कर तुम कोई दूसरा उपहार नहीं दे सकती हो। ये जवान जो कि हर चीज से थक जाते हैं, ऊब जाते हैं; बहुत कुछ बोझ के मानिन्द होते हैं, तुम्हारे जैसे मजबूत कन्धों के लिए भी वे भारी पड़ते हैं। इसके मुकाबले में तो मैं तुम्हारे लिये किसी कसाई के लड़के को ही पसन्द करता, हाँ, कसाई के लड़के को। वह सुबह से रात तक दिल खोल कर हँसता तो रहता!"

उसकी आँखों में आँसू देख कर वह बोला! "खैर, उससे तुम्हें प्रेम है। अब इसके बारे में और नहीं कहना चाहिये। मान जाओ। वह भी कैसा अहमक है!"

दोनों बातें करते हुये घर की ओर रवाना हो गये। डाक्टर कैजनोव ने पालिन की नौकरी का बन्दोबस्त करने का जिम्मा लिया। सेराटलों में उसकी सम्बन्धिनी एक वृद्ध महिला थी। काफी दौलत थी उसके पास

एक साथिन की जरूरत थी। वहाँ रहते पालिन को हर तरह का आराम मिल सकता था, क्योंकि वृद्धा के पास कोई बाल-बच्चे नहीं थे। आगे चल कर वह पालिन को गोद भी ले सकती थी। सभी बातें पक्की हो गयीं। डाक्टर ने तीन दिन के भीतर निश्चित् उत्तर देने का वचन दिया। दोनों इस बात पर सहमत हो गये कि घर छोड़ने के फैसले वाली बात किसी से कही नहीं जायगी। पालिन ने पहले विवाह का प्रबन्ध करने का निश्चय किया और उसके दूसरे ही दिन शान्तिपूर्वक घर से प्रस्थान कर देने का। उसके बाद वहाँ एक पल भी रुकना व्यर्थ था।

तीसरे दिन पालिन को डाक्टर का एक पत्र मिला। फ़ुर्सत पाते सेएटलो बुलाया गया था। उसी दिन जब कि लजारे कहीं ही उसे बाहर गया था, वह लूसी को लेकर रसोई के बगीचे में गयी। दोनों एक चबूतरे पर बैठ गयीं। वहां आस-पास समुद्र तथा आकाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

"रानी", पालिन अपनी माँ-जैसी आवाज में बोली, "तुमसे कुछ खास बातें करनी हैं। ठीक है न ? ... तुम मुझे थोड़ा प्यार करती हो..."

"हाँ, हाँ," लूसी अपना हाथ उसके गले में डालती हुई बोली।

"ठीक यदि मुझसे तुम्हें प्रेम है तो मुझसे हरएक चीज न बताना तुम्हारी गलती है।"

"तुम मुझसे कुछ भेद छिपा कर क्यों रखती हो ?"

"मेरे मन में कोई भेद नहीं है।"

"हाँ, तुम गहराई से नहीं सोच रही हो ... इधर आओ, मुझ से सब बात बता दो।"

क्षण भर दोनों एक दूसरे की ओर ताकती रहीं, इतने नजदीक होकर कि उनकी साँसें आपस में मिश्रित हो उठीं। लूसी के आँखों में विवशता की एक लहर-सी तैर गयी। दोनों का मौन अत्यन्त असह्य हो उठा।

"मुझे इसके बारे में सब बातें बता दो। मन में जो कुछ हो उसे प्रकट कर देना ही उचित होता है, छिपाकर रखना अच्छा नहीं। है न ऐसी

ही बात ? जिससे हम सब दुखी हैं, उसे बार-बार दुहराना झगड़ा करना होगा।"

लूसी जोर जोर से सिसकने लगी। पालिन को सीने से लगा कर उसने अपना सिर उसके कन्धे से टिका दिया। आँसुओं के बीच काँपती हुई बोली ..." उफ़, उसकी चर्चा मत करो, उसकी बात मत चलाओ। इस तरह मेरा दिल दुखाने के बजाय मुझे अपने घर भेज दो।"

पालिन ने उसे शान्त करने की चेष्ठा की, लेकिन उसका कुछ असर नहीं पड़ा। "नहीं, नहीं, मैं तुम्हारा आशय समझती हूँ ... तुम्हें अब भी मुझ पर भरोसा नहीं है। तुम मेरे भेद की चरचा क्यों करती हो? मेरे मन में कोई बात नहीं है। मैं हमेशा तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार करती हूं कि तुम मेरा कोई दोष न निकाल सको। अगर कुछ चीजें मुझे बुरी लगती हैं तो यह मेरा क़ुसूर नहीं है। मैं अपनी हँसी तक पर संयम रखती हूँ। ... ... अगर तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास नही है तो मैं चली जाऊँगी, अभी अपने घर चली जाऊँगी।"

उन दोनों के अलावा वहाँ और कोई नहीं था। रसोई के बगीचे के पेड़-पौधे पछुआ हवा में लहरा रहे थे। दूर प्रशान्त समुद्र अपनी अनन्तता के साथ फैला हुआ था। "लेकिन, सुनो तो," पालिन उसे झकझोरती हुई बोली।" मैं तुम्हारी कोई ग़लती नहीं निकाल रही हूं, इसके विपरीत, मैं तुम्हें आश्वस्त करना चाहती हूं।"

उसका सिर पकड़ कर ऊपर उठाती हुई, उसे अपनी आँखें उठाने के लिए बाध्य करती हुई वह कोमल स्वर में इस प्रकार बोली, जैसे कोई माँ अपनी बेटी से बात करती है। "तुम लजारे से प्रेम करती हो? ... और वह भी तुमसे प्रेम करता है, मुझे सब मालूम है।"

लूसी के गालों पर ललाई दौड़ गयी। थर-थर उसकी देह काँपने लगी। अपने को छुड़ा कर वह भाग जाना चाहती थी।

"उफ़, मेरी बहन, अगर तुम मुझे समझती नहीं हो तो यह मेरा बहुत बड़ा अपराध है! क्या मैं केवल तुम्हारा दिल दुखाने के लिए ही

तुमसे ऐसा सवाल कर रही हूं ? ... तुम एक-दूसरे को प्यार करते हो। है न यही बात ? ठीक, मैं तुम दोनों की शादी कर देना चाहती हूं। यह तो बिल्कुल सीधी-सी बात है।

लूसी चकित हो कर उसका मुँह ताकने लगी। महान आश्चर्य के कारण उसके आँसू सूख गये और वह स्तब्ध-सी होकर खड़ी हो गयी।

"मेरे लाडली, मैं हफ्तो से इन बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रही थी। खासतौर से रात में मेरे मन में यही ख्याल मँडराता रहता था। मैं अनुभव करती हूं कि लजारे के प्रति मेरी भावना केवल मित्रता की ही थी। क्या तुमने स्वयं इसका निरीक्षण नहीं किया ? हम लोग दो लड़कों की तरह सिर्फ अच्छे साथी भर थे। प्रेमियों जैसी हमारे बीच कोई भी वासना नही थी ..."

वह अपनी झूठ को सत्य-सदृश बनाने के लिये उपयुक्त शब्द खोजने लगी। किन्तु उसकी प्रतिद्वन्दिनी अब भी स्थिर दृष्टि से उसकी ओर निहार रही थी, इस तरह टकटकी लगा कर उसे देख रही थी, मानों उसके शब्दों में छिपे हुये अर्थ का उसने पता लगा लिया हो।

"तुम झूठ क्यों बोलती हो ?" वह धीरे से बोली। "क्या एक बार प्रेम करने के बाद तुम अपना मुँह फेरने में समर्थ हो सकती हो ?"

पालिन ने एक लम्बी-सी साँस ली। "उफ, इसमें क्या धरा है ? तुम एक-दूसरे को प्यार करते हो। यह बिल्कुल सीधी-सी बात है कि वह तुम से शादी कर ले। ... मेरा उसके साथ-साथ ही पालन पोषण हुआ है। मैं फिर भी उसकी बहन बनी रहूँगी। इतनी देर तक इन्तजार करने के बाद लोगों के इरादों का बदल जाना स्वाभाविक ही है ...। और फिर, बहुत से अन्य कारण भी हैं ...।"

उसे मालूम हो गया कि वह अपनी गहराई से दूर खिसकती जा रही है। सहसा बहुत स्पष्ट स्वरों में वह बोली : "उफ़ मेरी लाडली, मुझे ऐसा करने दो। मैं इस लिए उसे तुम्हारा पति बनाना चाहती हूँ कि तुम उसके लिए आवश्यक हो। क्या तुमने इस पर विचार किया

है ? क्या मेरे स्थान पर तुम वही काम नहीं करोगी ? चल, हम दोनों इस पर ठण्डे दिमाग से सोच विचार करें । क्या तुम मेरी चाल में साथ नहीं दोगी ? क्या हम दोनों मिल कर उसे खुश करने की कोसिश नहीं कर सकतीं ? चाहे वह नाराज ही हो, लेकिन ऐसा करना जरूरी है। अगर वह सोचता है कि मेरा उसके ऊपर कुछ ऋण बाकी है, तो तुम्हें उसे समझाना होगा, क्योंकि वह तुम्हें चाहता है, तुम्हें प्यार करता है ... बहन, मेरी अच्छी बहन, मेरा साथ दो, मेरा हाथ बँटाओ । यहाँ कोई और नही है, आ, हम दोनों इसकी पूरी योजना बना लें ।"

किन्तु लूसी से उसकी व्यग्रता ओझल नहीं हो सकती थी । उसकी सभी बातों का विरोध करती हुई वह बोली : "नहीं, नहीं मैं यह नहीं मानूँगी ! ऐसा करना मेरी नीचता का परिचायक होगा । तुम अब भी उसे प्यार करती हो । यह मुझसे छिपा नहीं रह सकता है । तुम ऐसा काम करने जा रही हो, जिससे बाद में और दुख उठाओगी... तुम्हारी मदद करने के बजाय मैं जाकर उसे सभी बातें बाता दूँगी । हाँ, उसके आते ही ..."

पालिन ने उसे अपनी गोद में समेट लिया, उसका सिर अपने सीने में छिपा लिया, ताकि वह कुछ और आगे न बोल सके ।

"हुश, दुष्ट कहीं की ! ... हमें यह करना ही होगा, हर हालत में करना ही होगा ।"

एक बार पुनः खामोशी छा गई । दोनों पारस्परिक आलिंगन में उलझी रहीं । लूसी धीरे-धीरे अपने को छुड़ाने की कोशिश करने लगी । एक बार पुनः उसकी आँखों में आँसुओं की बाढ़ उमड़ आई । वह कुछ बोली नहीं । आपनी सहेली को कस कर छाती से लगा कर वह उसे साधुवाद देने लगी, उसकी कृतज्ञता स्वीकार करने लगी, मानों अब कोई दूसरा विकल्प ही न रह गया हो । पालिन उसे अपने से इतनी ऊँची, इतनी महान् दिखाई पड़ने लगी, कि उससे आँख मिलाना उसे कठिन प्रतीत होने लगा । थोड़ी देर बाद उसके ओठों

पर मुस्कराहट की एक लहर तैर उठी। पालिन को उसने कस कर चूम लिया। दूर निरभ्र आकाश के नीचे समुद्र की निश्चल नीलिमा फैली हुई थी। उनके अनकहे शब्द अपनी सम्पूर्ण पवित्रता और सरलता के साथ अपना अभिप्राय: रह-रह कर स्वयं ही प्रकट कर दिया करते थे।

लजारे जब लौटा तो पालिन उससे मिलने के लिए उसके कमरे में गयी। उसी कमरे में जहाँ कि दोनों साथ-साथ बड़े हुये थे, जहाँ के कण-कण से अनेक प्रिय स्मृतियां जुड़ी हुई थीं। वह उसी दिन अपना काम पूरा कर लेना चाहती थी।

"लजारे," वह बहुत शान्त स्वर में बोली, मुझे तुमसे एक गम्भीर बात कहनी है।"

वह चकित होकर उसके सामने खड़ा हो गया।

"क्या कहना है?" उसने पूछा, "क्या पिता जी की हालत गड़-बड़ हो गयी है?"

"नहीं, सुनो...हमें यह सवाल निबटा लेना है, कतराने से अब ज्यादा काम नही चलेगा। तुम्हें याद होगा चाची ने हमारे बिवाह की योजना बनायी थी। हम इसकी क़ाफी चर्चा करते रहते थे और अब महीनों से इसका कोई जिक्र नहीं हुआ है। खैर, मैं सोचती हूँ कि यह इरादा छोड़ देने में ही हम दोनों की बुद्धिमानी है।"

लजारे हतप्रभ हो उठा। क्रुद्ध होकर बोला "क्यों? तुम कैसी बात कर रही हो?...क्या तुम मेरी पत्नी नहीं हो? कहो तो कल ही पादरी के पास चल कर हम रस्म पूरी कर लें। इसी को तुम इतनी गम्भीर बात कह रही हो?"

उसने बहुत शान्त स्वर में उत्तर दिया: "हाँ, यह बहुत गम्भीर बात है, क्योंकि तुम इससे क्रुद्ध हो उठते हो...मैं कह रही हूँ कि हमें इसपर बात करनी है। सच, हम दोनों पुराने मित्र हैं, लेकिन कभी प्रेमी नही रहे हैं। उस चीज पर अड़ने से क्या फायदा, जिससे हममें से कोई भी खुश नही हो सकता है?"

लजारे की बातें उसके गले में ही अटक कर रह गयीं। क्या यह मुझसे झगड़ा करना चाहती है? बात सही है कि इसे मैं हमेशा अपने गले से नहीं लगाये रह सकता हूँ। अगर शादी हर महीने टलती रही तो यह मेरा कुसूर नही था। यह कहना अनुचित होगा कि मैंने इसे प्यार नहीं किया। इसी कमरे में मैंने इसे इतना प्यार किया है कि बुरे बर्ताव के डर से इसे कभी अपनी उँगलियों के पोरों से छूने का साहस नहीं किया।

पालिन उदास होकर बोली "मेरे भोले प्रियतम, यदि सचमुच मुझसे तुम्हें प्रेम होता, तो इस तरह बहस न कर तुम मेरी बाँहों में अपना सिर छिपा कर रोने लगते और मुझे तसल्ली देने के कुछ दूसरे ही तरीके सोचते।"

उसका मुँह एकदम उतर गया। एक कुर्सी पर धीरे से बैठकर वह पालिन की ओर टुकुर-टुकुर ताकने लगा।

"नहीं," वह आगे बोली, "यह साफ है कि अब तुम्हें मुझसे प्रेम नहीं है...कोई दूसरा चारा नहीं है। शायद हम एक दूसरे के लिए नही बने हैं। बहुत नजदीक आने पर तुम मेरे बारे में सोचने को बाध्य थे, इसके बाद तुम्हारा विचार बदल गया। वह बात नहीं रह गयी है, क्योंकि मुझमें कुछ भी ऐसा नहीं है जो कि तुम्हें मेरी ओर खींच सके।"

"लेकिन कौन-सी नयी चीज हुई? मैं पूछता हूँ, इन सब बातों का क्या मतलब है, मैं सीधे घर आया, अभी आराम से बैठ भी नहीं पाया था कि तुम सिर पर सवार हो गयी...मैं अब तुम्हें प्यार नहीं करता हूँ, हम एक दूसरे के लिए नहीं बने हैं, हमें अपनी शादी का ख्याल छोड़ देना चाहिये...आखिर इन सब बातों का कुछ मतलब भी है।"

पालिन उसके नजदीक जाकर धीरे से बोली: "इसका मतलब है कि

तुम किसी और से प्यार करते हो और मेरी सलाह है कि तुम उससे शादी कर लो !"

क्षण भर के लिए लजारे मूक हो गया। व्यंग्य का स्वरूप उसके सामने बिल्कुल स्पष्ट हो गया। अच्छा, तो अब पुनः कोई अप्रिय घटना होने वाली है। इसकी ईर्ष्या पुनः कोई विनाश-लीला दिखाने वाली है। यह एक दिन भी मुझे चैन की साँस नहीं लेने देना चाहती !

पालिन खिन्न मन से उसकी बात सुनती रही। सहसा उसने अपने काँपते हुये हाथों को उसके कन्धों पर टिका दिया और बिफर कर चीखती हुई बोली—"हाय मेरे प्राण, भला क्या मैं कभी तुम्हारा दिल दुखाने की चेष्टा कर सकती हूं ?...मैं तुम्हारे सुख के अलावा और कुछ भी नहीं चाहती हूँ। तुम इसे समझते क्यों नहीं ? तुम्हारी एक घड़ी की खुसी के लिए भी मैं सब कुछ सहने को तैयार हूँ। तुम्हें लूसी से प्रेम है। है न यही बात ? ठीक यही तो कह रही हूँ कि तुम उससे विवाह कर लो। ...मुझे समझो ? मुझे और कोई शिकायत नहीं है, मैं उसे तुम्हें सौंप रही हूँ।"

वह संत्रस्त होकर उसे निहारता रहा। पलकें भींग गयीं और उसकी आँखों से टप-टप आँसू बहने लगे।

"हाय मैं कितना अभागा हूँ ! इस घर में वर्षों से जो कुछ हो रहा है, उससे मैं अपनी जान छुड़ाता आ रहा हूँ। ...मैं तुम्हारा ऋणी हूँ, इससे इनकार मत करो ! हमने तुम्हारा रुपया लिया मूर्खों की भाँति उसे पानी में डुबा दिया। अब तुम्हारे सामने मैं इतना पतित हो गया हूँ कि तुम दया से विचलित होकर मेरा वचन भी भंग कर दे रही हो। उफ़, तुम मुझे कितना कायर कितना नीच समझती हो।"

"लजारे, लजारे", वह भयभीत होकर उखड़ी हुई आवाज़ में बोली।

वह अपनी छाती पीटता हुआ इधर-उधर चक्कर लगाने लगा।

"मुझे अकेला छोड़ दो, कहीं जाकर मुझे अपनी जान खो देनी चाहिये। इसी का मैं पात्र हूँ। क्या तुम्हीं वह नहीं हो जिससे मुझे प्रेम होना चाहिये ? उस दूसरी लड़की को चाहना क्या अत्यन्त घृणित कार्य

नहीं है ? वह मेरे काम की नहीं है। जितनी नेक तुम हो, उतनी नेक नहीं है; जितनी स्वस्थ तुम हो, उतनी स्वस्थ नहीं है। जब कोई आदमी मेरी तरह इतना पतित हो जाय, तो इसका अर्थ यह है कि वह कहीं भीतर से एक दम सड़ गया है ... मैं कुछ छिपा नहीं रहा हूँ, अपने को निरपराध सिद्ध करने की चेष्टा नहीं कर रहा हूँ।...कान खोल कर सुन लो, तुम्हारा बलिदान स्वीकार करने की अपेक्षा यही उत्तम होगा कि मैं स्वयं ही लूसी को घर से निकाल दूँ और अमरीका चला जाऊँ। तुम में से किसी का भी मुँह फिर कभी न देखूँ। अपने तर्कों द्वारा वह उसे शान्त करने का प्रयत्न करती रही। "क्यों ? क्या तुम वस्तुओं को अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से देखने की अपेक्षा जीवन को उसके स्वाभाविक रूप में ही ग्रहण नहीं कर सकते हो ? देखते नहीं, मैं कितने विवेक के साथ, कितने चिन्तन-मनन के बाद तुमसे बात कर रही हूँ ! ऐसा विवाह सभी के लिए लाभप्रद होगा। इसकी चरचा इतने शान्तिपूर्ण ढंग से मैं इसी लिए कर रही हूँ कि इसे कार्य रूप में परिणत करने के लिए उत्सुक हूँ। और देखो, लूसी के पास दहेज की काफी मोटी रकम है। अगर शादी हो जायगी तो उसका बाप तुम्हें कोई ऊँचा पद भी दिला देगा।"

"अच्छी बात है", वह बौखलाहट के झोंके में बोला, "मुझे बेच दो ! तुम यह सीधे क्यों नहीं कहती कि मैंने तुम्हें तबाह कर दिया है और इसीलिये तुम्हें चाहने का मुझे अधिकार नहीं है। मेरे लिए यही बाकी बचा है कि मैं और नीचे गिरूँ और विवाह करने के लिए कोई धनवान् लड़की खोजूँ। ... उफ़, नहीं, यह सब बहुत भीषण है। कभी नहीं, सुन रही हो ? कभी नहीं !" पालिन ने समझाना-बुझाना बन्द कर दिया, दोनों खामोश हो गये। लजारे क्लान्त होकर अपनी कुर्सी में धँस गया। पालिन धीरे-धीरे कमरे में टहलने लगी। हरएक चीज के पास जाकर वह थोड़ी देर के लिए खड़ी हो जाती। इन सभी पूर्व परिचित वस्तुओं से, मेज, आल्मारी और सभी इधर-उधर बिखरी चीजों से अनेक

मधुर स्मृतियाँ जुड़ी थीं। अतीत उसके सामने झिलमिलाने लगा। उसके हृदय में एक आशा उत्पन्न हुई। लेकिन उसने अपना कान बन्द कर दिया, उसे सुनने की चेष्टा नहीं की, यद्यपि धीरे-धीरे उसके माधुर्य से वह अभिभूत हो उठी! क्या वह सचमुच मुझे इतना प्यार करता है कि दूसरे रिश्ते को खुशी-खुशी नामंजूर कर देगा! किन्तु वह उसके मन की चंचलता से, उसके विचारों की अस्थिरता से परिचित थी। इसके अलावा, किसी आशा के सम्मुख घुटने टेक देने के लिए भी वह तैयार नहीं थी। अपनी दुर्बलताओं से छला जाना उसे मंजूर नहीं था।

"सोच लो", वह उसके सामने खड़ी होकर बोली। मैं तुम्हारे मन को और दुखी नहीं करना चाहती हूँ ... कल मुझे यकीन है कि तुम रास्ते पर आ जाओगे!"

दूसरा दिन भारी तनाव की हालत में बीता। घर में एक बार पुनः प्रच्छन्न उदासी और अन्यमनस्कता का वातावरण उत्पन्न हो गया। लूसी की आँखें लाल हो उठी थीं। लजारे उसकी अवहेलना कर अपने कमरे में ही पड़ा रहता। आगे चल कर धीरे धीरे ऐंठन खत्म हो गई। हँसी दिल्लगी और कानाफूसी फिर शुरू हो गयी। पालिन आगे की बातों का इन्तजार करती रही। इस भीषण अनिश्चयता के पहले उसे कभी भी इतनी पीड़ा का अनुभव नहीं हुआ था। अन्ततः एक दिन शाम के धुंधलके में जब वह लालटेन लेने के लिए नीचे रसोई में गयी तो देखा कि गलियारे में लजारे और लूसी एक दूसरे का चुम्बन ले रहे हैं। लूसी उसे देखते ही हँसती हुई भाग खड़ी हुई। लजारे ने जोश में आकर पालिन को पकड़ लिया और उसके दोनों गालों को हार्दिक एवं बन्धुत्व भाव से चूम लिया।

"मैंने इस पर विचार कर लिया है", वह धीरे से बोला, "तुम सब से ज्यादा नेक और सब से ज्यादा अकलमन्द हो। ... लेकिन मैं अब भी तुम्हें प्यार करता हूँ, अपनी माँ की तरह अब भी तुम्हें प्यार करता हूँ।"

उसने बहुत हिम्मत कर जवाब दिया ! "तो बात तै रही । मैं बहुत खुश हूँ ।"

मूर्छा के भय से उसे रसोई में जाने का साहस नहीं हुआ । उसके चेहरे की जड़ता बता रही थी कि वह कितनी सूख गयी थी । यह कहते हुये कि मैं कुछ भूल गयी हूँ, बिना लालटेन लिये ही वह ऊपर अपने कमरे में चली गयी । वहाँ अँधेरे में उसे ऐसा लगा मानो वह मरने की तैयारी कर रही है । आँसू बहाने का भी उसमें ताब नहीं था । हे भगवान्, क्या उसकी निर्दयता इतनी अधिक बढ़ जानी चाहिये कि मेरे घाव को वह और भी गहरा बनाता जाय ? उसने तुरत उसी दिन बात क्यों नहीं मान ली ? अब बलिदान की कठोरता द्विगुणित हो गयी थी । दोबारा वह उससे छूट रहा था । एक बार पुनः अपना समझ लेने के बाद उससे नये सिरे से अलग हो रहा था । बाप रे बाप ! मुझ में साहस की कमी नहीं है, किन्तु किसी काम को क्या इतना भयानक बना देना भी उचित है ? सभी बातें जल्दी जल्दी तै हो गयीं । वेरोनिक के हाथ-पाँव फूल उठे । कोई माजरा उसकी समझ में नहीं आया । उसका ख्याल था कि मालकिन के मर जाने के बाद सभी बातें उखड़-पुखड़ गई हैं । शैन्ते को इस नये हल से सब से ज्यादा धक्का पहुँचा । पालिन ने स्वयं ही जाकर जब उसे इस नये प्रबन्ध की सूचना दी तो वह पागलों की तरह उसका मुँह निहारने लगा । काँपती हुई आवाज में बोला— "इसमें मेरा दोष नहीं है । मुझे खुद सब बातों का फैसला करना चाहिये था ; रुपये के बारे में भी . . . । लेकिन तुम जानती हो कि मैं किस हाल में हूँ !"

पालिन ने उसका माथा चूम लिया । उसे विश्वास दिलाती हुई बोली—"दोष किसी का भी नहीं है । लजारे और लूसी की शादी रचानेवाली तो मैं हूँ । जान बूझ कर मैं ऐसा कर रही हूँ ।"

बात उसके मन में बैठी नहीं । आँसुओं से नम आँखें मुलमुलाता हुआ बोला : "तुम ऐसा चाहती हो ? सचमुच तुम ऐसा चाहती हो ?"

उसे हँसता हुआ देख कर वह निश्चिन्त हो गया। बाँहें फैला कर उसने राहत की साँस ली। यद्यपि वह कभी इसके सम्बन्ध में मुँह नहीं खोलता था, तथापि यह दायित्व उसके हृदय पर भारी बोझ की तरह सवार था। लूसी को अपने पास बुलाकर उसने बड़े प्यार से उसके दोनों कपोलों पर चुम्बन की छाप लगा दी। भोजन के बाद, खाट पर जाने पर उसने पालिन से दूसरा सवाल किया: "तुम हम लोगों के साथ ही रहोगी? क्यों?"

क्षण भर के लिये वह असमंजस में पड़ गई। फिर अपनी ही झूठ पर लज्जा का अनुभव करती हुई बोली: "हाँ निश्चित रूप से!"

रस्मों ने पूरा एक महीना ले लिया। लूसी का पिता थिबादेर लजारे की प्रार्थना पर तुरत सहमत हो गया। वह युवक उसका धर्म-पुत्र था। उनके बीच बाद-विवाद की नौबत केवल शादी के दो दिन पहले आयी। लजारे ने एक बीमा कम्पनी में जिसमें कि बैंकर मुख्य हिस्सेदार था, काम करने के लिए पेरिस जाने से एकदम इनकार कर दिया। पेरिस की विजय-यात्रा करने से पूर्व वह एक या दो साल बोनीविले में ही रह कर एक उपन्यास लिखना चाहता था। थिबादेर मुस्कुराता हुआ उसे महान् मूर्ख कह कर चुप हो गया।

शादी केन में होने वाली थी। आखिरी पखवारे में आवा-जाही की सरगर्मी मची रही। पालिन ने दौड़ धूप में व्यस्त रह कर अपनी भावनाओं को जड़ बना लिया। पालिन बोनीविले से कहीं जा नहीं सकती थी, इसलिये विवाह में शामिल होने का वादा करने के लिये उसे बाध्य होना पड़ा। अपने चाचा के परिवार की ओर से उसे ही अगुवई करनी थी। दिन नजदीक आ जाने पर वह आतंकित हो उठी। विवाह की रात केन में न बिताने का उसने दृढ़ निश्चय कर लिया। सफाई देने के लिये लोगों से कह दिया कि बीमार चाचा को अकेला छोड़ना ठीक नहीं होगा। शैन्ते की समझाने बुझाने की सारी कोशिश बेकार साबित हुई। सब कुछ होते हुये उसने साफ-साफ कह दिया कि मैं रात में रुकूँगी नहीं,

घर लौट आऊँगी । इस तरह उसे आशा थी कि वह अपना सर-सामान बाँध लेगी और सुबह होते ही ओझल हो जायगी ।

शादी की रात जिस समय मैलीवोरे की पुरानी गाड़ी में पालिन घर लौटी, मूसलाधार पानी बरस रहा था । आधी रात बीत चुकी थी । यद्यपि उसके हाथ गरम थे । तथापि सारा बदन पीला हो गया था और वह सिरसे पाँव तक थर-थर काँप रही थी । रसोई के एक कोने में सोई हुई वेरोनिक उसकी प्रतीक्षा कर रही थी । लालटेन की तेज जलती हुई लौ उसकी आँखों में चकाचौंध पैदा करने लगी ।

अर्द्ध सुसुप्त सेविका से वह कुछ ही असम्बद्ध प्रश्न पूछ सकी । फिर लालटेन लेकर ऊपर चली गयी । घर की नीरवता से उसका हृदय विजड़ित हो उठा । उसकी उदासी और निस्तब्धता से वह मरणकालीन असहनीय शोक का अनुभव करने लगी । दूसरी मंजिल पर वह अपने कमरे में जाने के लिये उतावली हो रही थी । तभी किसी अशक्त प्रेरणा से आविष्ट होकर उसने लजारे के कमरे का दरवाजा फट से खोल दिया । लालटेन ऊपर उठाकर पूरे कमरे का अवलोकन करने की चेष्टा की । ऐसा लगा मानों वहाँ धुँआ ही धुँआ भरा हो । कुछ भी बदला नहीं था । हरएक सामान अपनी जगह पर पूर्ववत् बिखरा हुआ था । फिर भी एक अज्ञात भय का अनुभव कर उसके रोंगटे खड़े हो गये । ऐसा लगा मानो वहाँ कोई लाश रखी हो । बहुत धीरे-धीरे वह मेज के पास गई । उस पर पड़ी हुई दवात, कलम और एक अधलिखे कागज के टुकड़े को देखा, फिर बाहर निकल आई । सब कुछ खतम हो चुका था । बन्द दरवाजा कमरे के सूनेपन को और भी भयानक बना रहा था ।

अपने कमरे में भी उसे वैसा ही अजनबीपन महसूस हुआ । क्या सचमुच यह मेरा ही कमरा है ? ये दीवारें, खिड़कियाँ, पर्दे क्या अपने ही हैं ? कितने दिनों से यहाँ हूँ, तब भी सब इतना पराया—इतना बेगाना क्यों लग रहा है ? हमेशा बनी रहनेवाली उसकी सारी हिम्मत

पस्त हो गयी। लालटेन जमीन पर रक्खे बिना सभी चीजों को ग़ौर से देखने लगी। पर्दे उठा कर, चारपाई और कुर्सियों के नीचे झाँक कर एक-एक चीज़ की निगरानी करने लगी। इतना काँप रही थी, इतनी सशंकित थी कि प्रत्येक वस्तु उसे डराती हुई-सी मालूम हो रही थी। कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि अपना ही घर, अपना ही कमरा इतना दुखदाई बन जायगा ; जिसके कण-कण से परिचय हो, वही ऐसा भयानक बन जायगा। असंख्य स्मृतियों से लदे, किन्तु फिर भी बहुत सूने-सूने घर को इतना भयावह पाकर ऐसा अनुभव करने लगी, मानों केन में ही रुक गयी हो। सोने की कल्पना मात्र असह्य लग रही थी। हैट तक बिना उतारे वह बैठ गयी और थोड़ी देर तक आँखों में धुन्ध पैदा करनेवाली लालटेन की रोशनी को एकटक निहारती रही। सहसा अचकचा कर खड़ी हो गई। मैं यहाँ क्या कर रही हूँ ? एक बज गया है, सो जाना चाहिये। जलते-काँपते हाथों से अपने कपड़े उतारने लगी।

जीवन क्षत-विक्षत हो गया था। फिर भी व्यावहारिक नियमों का ज्ञान बना हुआ था, सावधानी से उसने हैट उतारी, जूतों को खोल कर देखा—वे साबित बने हुये थे। ऊपरी कपड़ों को उसने पहले ही उतार कर एक कुर्सी की पीठ पर रख दिया था। इस वक्त बदन पर था सिर्फ पेटीकोट और शमीज़। दृष्टि अपने ही तुंग उरोजों पर पड़ी, कपोल आरक्त हो उठे लज्जा से। विशीर्ण ध्यान में लजारे और लूसी का चित्र उभरने लगा। अब वे शयनकक्ष में होंगे। कक्ष उसने देखा था। सुबह चुन-चुन कर वहाँ फूल बिछाये थे। दूल्हन अब सेज पर होगी। दूल्हा विहँसता हुआ पास आने को होगा। सोचते-सोचते रोम भरभरा उठे। पेटीकोट कमर से सरक कर पैरों पर आ रहा। शमीज चटपट उतार कर परे फेंकी। नख से शिख तक अपने उघरे रूप को वह निहारने लगी। मुझे प्रेम क्या मिल न सकेगा ? प्रेम की लवनी नहीं कर पाऊँगी ? मेरा ब्याह नहीं होगा ? दृढ़ उरोजों, पीन नितम्बों और उस

उदर को, जिसके भीतर मातृत्व की तीव्र लालसा सुषुप्त थी, वह सजल नेत्रों से निरखने लगी।

उस वर की बाँहों में, जिसकी कि वर्षों मैंने अपने लिये प्रतीक्षा की थी, मैं नहीं, बल्कि वह दूसरी युवती परम सुख लूट रही होगी।

वह और आगे तक झुकी। अपनी जाँघ की बगल में खून की बूँद का लाल दाग़ देख कर कान खड़े हो गये। सहसा बात समझ में आ गयी। जमीन पर पड़ी हुई उसकी शमीज पर भी खून के दाग़ पड़े हुये थे। तो यही वजह थी कि जिससे मैं केन से चलने के बाद से मूर्छा का अनुभव करती आ रही थी? ऐसा इतने शीघ्र होने का उसे अनुमान नहीं था। ऐसा लगा मानों उसके प्रेम की अति ने उसे वहीं, जीवन के मूल स्रोत पर ही विक्षत कर दिया हो। जीवन के व्यर्थ बहे जाने का दृश्य देख कर उसकी निराशा अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गयी। उसे याद हो आया कि उस दिन सुबह-सुबह सब से पहली बार खून का दाग़ देख कर मैं कितना काँप उठी थी! शाम को लालटेन बुझाने के पहले मुझपर बच्चों जैसी सनक सवार हो गयी थी, अपनी शारीरिक और काम-सम्बन्धी परिपक्वता का ज्ञान होने पर मैं मूढ़ की भाँति गर्व से फूल उठी थी। अपने को तरुणी समझ कर हर्ष-विभोर हो उठी थी। हाय, आज मेरी तरुणाई भीतर ही भीतर मेरे कुमारीत्व के अरण्य रोदन की भाँति यहाँ बह रही है। हर महीने ऐसी ही धार बहा करेगी और मैं कभी भी किसी की पत्नी नहीं बनूँगी, बाँझ रह कर ही बूढ़ी हो जाऊँगी।

अपनी क्षयी कल्पना से नये-नये चित्र सामने लाने पर उसके उर-अन्तर में ईर्षा पुनः उद्दीप्त हो उठी। मैं जीना चाहती हूँ, पूरी तरह से जीना चाहती हूँ। मैं जो जीवन को प्यार करती हूँ, जीवन को अर्पित कर देना चाहती हूँ! यदि आत्म-दान नहीं कर सकी तो जीवन का क्या लाभ? लजारे और लूसी का उसे पुनः स्मरण हुआ। अपनी नग्नता का अंग-भंग करने के लिए वह कैंचियाँ ढूँढने लगी। क्यों न वक्षस्थल के टुकड़े-टुकड़े कर दूँ। इन जाँघों को काट डालूँ। इस कोख

को चीर दूँ और इस सारे रक्त को एक दम बह जाने दूँ ? मैं उस दुर्बल और हल्के रंग के बालों वाली तरुणी से अधिक सुन्दर और हृष्ट पुष्ट हूँ। फिर भी उसने उसका वरण किया। अब मैं कभी उसका स्मरण नहीं करूँगी। अब से मेरे शरीर का कोई भी अंग, न मेरी बाँहें, न मेरी जाँघें, न मेरे ओठ, उनके लिये पीड़ा का अनुभव करेगा। तुच्छ चीथड़े की भाँति यह सब फेंक दिया जायगा। क्या यह सम्भव है कि ये अंग साथ-साथ बने रहें ? जब कि मैं अकेली हूँ, इस बेजान घर में ज्वर से काँप रही हूँ, तब भी ये साथ-साथ बने रहें ?

सहसा वह चारपाई पर औंधी लेट गयी। काँपते हुये हाथों में तकिया समेट ली और सिसकियों पर काबू पाने के लिये उसे दाँतों से कुतरने लगी। प्रमथित अंग की पीड़ा शान्त करने के लिए वह उसे बिछौने पर जोर-जोर से रगड़ने लगी। सिर से पैर तक बेतहाशा काँप रही थी। व्यर्थ में ही पलकें मींजने लगी, ताकि कुछ दिखाई न पड़े। अन्धकार में उभरने वाले वे भयंकर स्वप्न अब भी ओझल नहीं हो रहे थे। मैं क्या करूँ ? आँखें फोड़ लूँ, और फिर शायद उन्हें पुनः देखती रहूँ ? हमेशा ही देखती रहूँ ?

पल-पल बीत रहा था। उसे बोध था तो केवल अपनी यंत्रणा की अरुचि का। अकस्मात् चौकन्नी होकर वह चारों ओर ताकने लगी। कोई यहाँ है। मुझे अभी-अभी किसी की हँसी सुनाई पड़ी है। लेकिन वहाँ थी सिर्फ उसकी लालटेन। बहुत धीमे-धीमे जल रही थी। शीशा चटाख से फूट गया था। फिर भी लगा कि किसी ने उसे देख लिया है। उस काल्पनिक हास्य से वह और भी आतंकित होकर काँपने लगी। क्या इस तरह नग्न खड़ी हुई यह सचमुच मैं ही हूँ ? लज्जित होकर अपने उरोजों को उसने दोनों हाथों से ढक लिया, ताकि फिर अपने को देख न पाये। अन्त में रात के कपड़े देह पर डाल कर वह बिस्तर पर लेट गयी। मुँह तक चादर तान ली, लालटेन बुझ जाने पर भी इस अनुभव की लज्जा से घबराई हुई वह अचेत-सी लेटी रही।

सुबह होने पर पालिन ने अपना सामान तो बाँध लिया लेकिन शैन्ते से यह नहीं बता सकी कि मैं यहाँ से जा रही हूँ। आखिरकार शाम को इसका जिक्र करना ही पड़ा। अगले दिन डाक्टर कैजनोव उसे लेने के लिये बोनीविले आने वाला था। यह देख कर कि पालिन अपना इरादा बदलेगी नहीं, शैन्ते खीझ कर अपने दुष्कर्मों को कोसने लगा : मैंने तीतर का गोश्त खा लिया है। जोड़ों में हल्का-हल्का दर्द पहले से ही था। क्या मुझे गोश्त नहीं खाना चाहिये? अब क्या होगा? दर्द कभी घटेगा नहीं? हमेशा मैं कराहता ही रहूँगा? उसने यह सब ढोंग इस लिये शुरू किया कि पालिन इससे निश्चय ही पिघल जायगी। उसे मुसीबत में छोड़ कर जाने के लिये वह कभी भी तैयार नहीं होगी। सुबह करीब छः बजे वेरोनिक घबराई हुई-सी पालिन के पास पहुँची। "चल कर देखो तो सही। तुम्हारे चाचा जी अपने कमरे में बड़ बड़ा रहे हैं। न जाने किस हाल में हैं!"

घर भर में घूम-घूम कर वह भुन भुनाने लगी : "मैं भी यहाँ से चली जाऊँगी। ऐसे बूढ़े मरीज की देख भाल मुझसे बर्दाश्त नहीं होगी।"

सब कुछ भूल कर पालिन अपने-चाचा की तीमारदारी करने लगी। डाक्टर जब बुलाने आया तो वह किं कर्त्तव्य बिमूढ़-सी हो उठी। शैन्ते जोर-जोर से चिल्लाने लगा—"तुम चली जाओ, हिम्मत हो तो मुझे इसी तरह तड़पता हुआ छोड़ कर चली जाओ!" सभी बातें आगे के लिये टाल दी गयीं;

हर रोज पालिन लजारे और लूसी के आगमन से डरती रहती। बिवाह के दूसरे दिन से उनका नया कमरा सजा दिया गया था। वे केन में रुके हुये थे। लजारे ने लिखा कि मैं बोनीविले आकर वहाँ कैद होने से पहले वित्त सम्बन्धी जानकारी इकट्ठा कर रहा हूँ। ताकि अपना उपन्यास आरम्भ कर दूँ और उसमें ब्यापारिक प्रबंधों की सचाई का उद्‌घाटन करूँ। एक दिन सुबह-सुबह वह अकेले ही घर लौट आया।

सब को बताया कि मैं अपनी पत्नी के साथ पेरिस जा रहा हूँ। वहाँ बीमा कम्पनी में काम करूँगा। इस तरह व्यापारिक जगत का व्यावहारिक ज्ञान भी बढ़ेगा। इसके बाद साहित्य में हाथ लगाऊँगा।

लजारे अपने सर सामान के साथ गाड़ी में बैठकर चला गया। पालिन विक्षिप्त सी स्थिति में भीतर लौट आयी। सारे पुराने इरादे ख़ाक हो गये। शैन्ते दर्द से कराहता हुआ बोला : "आशा है तुम अब जाओगी नहीं! जब तक कब्र में दफन न हो जाऊँ मेहरबानी करके यहीं रहो।"

वह कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दे सकी। ऊपर उसकी पेटी अब भी बन्द रखी हुई थी। घण्टों वह उसे निहारती रही। और लोग पेरिस जा रहे हैं। इस हालत में चाचा को अकेला छोड़ना अनुचित होगा। लजारे और लूसी घर आ जायेंगे तो मेरे जाने में कोई बाधा नहीं रह जायगी। डाक्टर कैजनोव ने चिढ़कर जब उससे कहा कि तुम बचपन से ही अपने को धोखा देनेवाले लोगों के फेर में पड़कर बहुत सुनहला मौका खो देने की बेवकूफी कर रही हो, तो वह दृढ़ निश्चय के साथ बोली : तुम इतनी चिन्ता मत करो, जो कुछ कर रहीं हूँ ठीक ही है।"

"जाओ, चली जाओ!" शैन्ते कहने लगा। अगर तुम अपने सुख के लिए इतना धन अर्जित करने जा रही हो तो मैं तुम्हें रोकूँगा नहीं। अपने जैसे विकलांग के साथ बँधे रहने के लिए बाध्य नहीं करूँगा...जाओ, शौक से जाओ!"

एक दिन सुबह सुबह उसने उत्तर दिया : "चाचा, मैं जाऊँगी नहीं, यहीं रहूँगी।"

डाक्टर हवा में अपने हाथ हिलाता हुआ चला गया। "इस लड़की को रास्ते पर लाना नामुमकिन है। यह स्थान भी कैसा नरक कुण्ड है। उसका कभी भी उद्धार नहीं होगा!"

[६]

दिन महीने और वर्ष बीतने लगे। बोनीविले के घरमें न जाने कितने मौसम आये, न जाने कितने गये।

धीरे-धीरे पालिन का संयम लौट आया। समय की मौलिक गति के साथ उसका हृदय भी कदम मिलाकर चलने लगा। रात दिन काम में व्यस्त रहने से उसकी मनोव्यथा की तीक्ष्णता बहुत कम हो गयी। सुबह वह नीचे आती। चाचा का अभिवादन करती। दिन में दो बार भोजन की मेज के पास बैठती! तीसरे पहर सीने पिरोने का काम करती और रात में जल्दी ही सो जाती। अगले दिन भी उसी क्रम की पुनरावृति होती। किसी अप्रत्याशिति घटना से उसकी एक-रसता में बाधा न पड़ती। शैन्ते अपनी चारपाई पर निष्क्रिय पड़ा रहती वेरोनिक की मानों जीभ ही कतर गयी थी। 'केवल शनिवार को भोजन के समय शान्ति में व्यवधान पड़ता। कैजनोव और अबेहार्टर नियमित रूप से भोजन करने आते। दस बजे तक चहल-पहल मची रहती। पालिन का हँसमुख स्वभाव न जाने कहाँ गायब हो गया। अब उसकी न तो वह पुरानी हँसी सुनाई पड़ती, न चुलहता। किन्तु उसकी भलाई और कार्यशीलता में कभी कमी न आती। जीवन से जूझने के नये उत्साह के साथ वह दिन भर काम में लगी रहती। किन्तु वर्ष के अन्त में उसका दिल बैठता हुआ सा मालूम होने लगा। ऐसा महसूस हुआ, मानों घड़ियाँ इसी तरह बीतती रहेंगी और गम की घटा कभी छँटेगी नहीं।

लजारे के जाने के बाद, प्रारम्भ में उसके हर एक पत्र से पालिन विक्षुब्ध हो उठती। मानों वह इन पत्रों के लिए ही रुकी हुई थी। अधीरता के साथ वह उनकी प्रतीक्षा करती रही। उन्हें बार-बार पढ़ती और लिखित शब्दों में अनकही बातों का अनुमान लगाती रहती। तीन महीने तक पत्र-नियमित रूप से हर पखवारे आते रहे। वे कितने

लम्बे विवरणपूर्ण और आशा से छलकते हुये होते। लजारे के रोम-रोम में पुनः उत्साह उमड़ आया था। वह व्यापार में जी-जान से जुट गया था और अकूत धन बटोर लेने के सपने देख रहा था। उसके अनुसार बीमा कम्पनी भारी मुनाफा देने जा रही थी। वह आगे हाथ बढ़ाकर और भी नए धन्धे शुरू करना चाहता था। धन और व्यापार की दुनियां से वह बहुत खुश मालूम हो रहा था। साथ काम करने वाले सभी लोग बहुत खुशमिजाज़ थे। साहित्यिक महत्वाकांक्षाओं से मानों उसने नमस्कार कर लिया था। फिर वह विवाहित्त जीवन के अनेक सुखों का वर्णन करने लगा। पत्नी से चुम्बन-आलिंगन और छेड़-छाड़ की सभी बातों का वह विस्तृत उल्लेख करता। उन्हें पढ़ कर पालिन थर-थर काँपने लगती। कागज मात्र में ऐसी सुगंध मिलती कि उसका सिर घूमने लगता। आँखें बन्द कर लेने पर भी वे पंक्तियाँ आग की तरह जलती हुई दिमाग में घूमने लगतीं। ऐसा लगता मानों वह स्वयं भी उनको सुहाग रात में सम्मिलित है। किन्तु धीरे धीरे ये पत्र दुर्लभ और संक्षिप्त हो गये। अब वह अपने रोजगार का जिक्र न करता और केवल पत्नी का प्यार ही लिखकर भेज देता। किसी बात का वह विवरण न देता। हरएक चीज बताना उसने एक-दम बन्द कर दिया। क्या वह अपने पद से असन्तुष्ट है?

धन से क्या उसे घृणा हो गयी है? मर्द औरत में क्या कोई फर्क पड़ गया है? सही सही वह कोई अन्दाज़ न लगा पाती। अप्रैल के अन्त में चार पंक्ति का एक पुर्जा मिला। लिखा था कि लूसी को तीन महीने का गर्भ है। फिर उसने पुनः चुप्पी साध ली। कोई और खबर नहीं मिली।

मई और जून बीत गये। ज्वार से एक संगमूसा ध्वस्त हो गया। सारी बस्ती में इससे सनसनी फैल गयी। उखड़ी हुई कड़ियाँ मछुवाहे चुरा ले गये। जुलाई में मकान की मरम्मत करनी पड़ी। करीब दस हजार फ्रैंक का हिसाब बैठ गया।

हमेशा की तरह पालिन ने रुपया चुकता किया। उसकी पूँजी अब चालीस हजार फ्रैंक ही रह गयी थी। तीन सौ फ्रैंक की मासिक आय में ही पालिन ने किसी तरह खर्च चलाने का बन्दोबस्त किया। चाचा का पैसा बचाने के लिए उसे कुछ और प्रतिभूतियां बेचनी पड़ी। अपनी पत्नी की तरह शैन्ते भी यह वादा करता कि किसी दिन हिसाब साफ कर दिया जायगा। पालिन अपने दान की रकम में कटौती करने लगी पैसा बचाने का दूसरा उपाय ही नहीं रह गया।

जुलाई के अन्त में पालिन को एक पत्र मिला। यह केन से आया था। कुछ ही शब्द लिखे थे। लजारे ने बिना कोई कारण देते हुये सूचित किया था कि मैं कल शाम की बोनीविले पहुँचूँगा। पालिन ने दौड़कर शैन्ते को यह खबर सुनायी। दोनों एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे।

शाम का सुहाना समय था। पाँच बजे के करीब लजारे दरवाजे पर गाड़ी से उतरा। पालिन ने चकित होकर बिना उसका चुम्बन लिये ही पूछा—"हैं, क्या तुम अकेले ही हो?"

"हाँ," और उसने उसके दोनों कपोलों पर चुम्बन की छाप लगा दी।

"लूसी कहाँ है?"

"क्लेर्मान्त में, अपनी भाभी के पास। डाक्टर ने उसके लिये पहाड़ी हवा की सलाह दी है, ... गर्भ से उसे बहुत कष्ट है।"

अहाते पर दृष्टि डालता हुआ वह सायबान की ओर बढ़ा। रसोई से आकर एक कुत्ता उसके पैर चाटने लगा। चकित होकर उसने पूछा: "यह कौन है?"

"लू, लू" पालिन ने उत्तर दिया। "यह तुम्हें अभी पहचानता नहीं।"

लजारे बीते हुये दिनों और जीवन में आयी हुई नमी, कुरूप वस्तुओं के बारे में सोचने लगा। हसरत भरी निगाह से वह पुनः अहाते की ओर निहारने लगा।

"हाय मेरा मैथ्यू !" वह बहुत धीरे से फुस फुसाया।

सायबान में वैरोनिक ने सिर झुका कर उसका अभिवादन किया। पिता से मिलने के लिए वह सीधे भोजन के कमरे में पहुँचा। पालिन ने दरवाजे से ही पुकारा : "देखो तो सही, यह अकेले ही आया है। लूसी क्लेमोन्त में है।"

शैन्ते बिना उसका आलिंगन किये ही अचकचा कर बोला! "वह यहाँ कब आयेगी?"

"नहीं, नहीं", लजारे ने उत्तर दिया। "मैं पेरिस लौटने के पहले उसकी भाभी के घर जा कर उसे ले लूँगा ...... यहाँ पंद्रह दिन तक रहूँगा फिर कूच कर दूँगा।"

"कैसा दुर्भाग्य है! तुम्हारी पत्नी नहीं आ सकी। उसे देख कर हमें कितनी खुशी होती! दूसरी बार तुम्हें उसे लाना ही होगा!"

पालिन अपना आघात दबा कर शान्त बनी रही। तो सभी चीजें उलट-पुलट गयीं; मैं जाऊँगी नहीं। दूसरों की सेवा के लिए उसने स्वयं को इतना अर्पित कर दिया था कि वह न तो कोई खुशी ज़ाहिर कर सकी और न ग़म। लजारे को बहुत रूखा और कमजोर देख कर उसका मन खिन्न हो उठा। वह भी उसकी ओर निहार रहा था। उसका भराव और दीप्तिमान सौंदर्य देख कर वह दंग रह गया। मुस्कुराता हुआ धीरे से बोला। "मेरे न रहने पर तुम चिन्तित नहीं रही हो ... एक दम भरी-पुरी बनी हो ... पिता जी भी जवान दिख रहे हैं!" चारों ओर निगाह डाल कर उसने भोजन के कमरे का अवलोकन किया बरामदे में जाने पर उसकी निगाह मिनूशी पर पड़ी। मेज पर पंजे सिकोड़ कर वह मस्ती के साथ बैठी हुई थी।

"यहाँ तक कि मिनूसी की भी उम्र नहीं खिसकी वह आगे बोला, "ओ बेवफा जानवर, जरा इधर देख! मुझे पहचानेगी नहीं?"

"उफ, मिनूशी को अपने सिवा और किसी की परवाह नहीं।" पालिन हँसती हुई बोली।

पालिन के प्रयत्नों के बावजूद भी साँझ का समय सुखद नहीं मालूम हुआ। आपस में खुल कर बातें नहीं हुईं। बीच-बीच में लोग कुछ देर के लिये चुप हो जाते। शैन्ते और पालिन ने लजारे से कोई पूछ-ताछ नहीं की। यह जानने की कोशिश नहीं की कि पेरिस में उसका काम किस तरह चल रहा है। कोई सीधा सवाल पूछने पर वह अजीब ढंग से मुँह बना लेता। हाँ, चाय आने पर उसने राहत की साँस ली। यहाँ कितना आराम है! ऐसे शान्त स्थान में बहुत सारे काम किये जा सकते हैं। उसने अपने एक पद्य-नाटक का जिक्र किया। पिछले छः महीनों से मैं इस पर जुटा हुआ हूँ। आशा है यहीं बोनीविले में इसे पूरा कर लूँगा, दस पंद्रह दिन का ही तो काम है। पालिन यह सब बातें सुनकर दंग रह गयी।

दस बजे पालिन यह कहने आयी कि लजारे बाबू का कमरा तैयार है। लेकिन जब नौकरानी पहली मंजिल के पुराने अतिथिकक्ष में ले जाने को कहा तो उसने साफ-साफ सिर हिला दिया। यह कमरा उसके और लूसी के लिए सजाया गया था।

"वहाँ नहीं सोऊँगा। मैं ऊपर अपनी लोहे की छोटी चारपाई पर ही पड़ रहूँगा!"

नौकरानी भुनभुनाने लगी। तुम्हें क्या हो गया है? एक जगह बिछी है। अब दूसरी जगह फिर से बिस्तर लगाना होगा!"

"अच्छी बात है?" उसने उत्तर दिया। "मैं किसी आराम कुर्सी में ही सो जाऊँगा!"

पास के ही बड़े कमरे में लजारे को पाकर पालिन बहुत खुश हुई। "ओफ़, आज पुनः वह मेरे इतने निकट है कि मैं उसके पैरों की आवाज सुन सकती हूँ!"

यादों की दुनियां में खोयी हुई वह भी बहुत देर तक जागती रही।

दूसरे दिन से लजारे पालिन के सामने प्रायः मौन बना रहने लगा। तुरन्त कोई बात प्रकट न होने देता। हैरान होकर पालिन ने उससे

सवाल पर सवाल करना शुरू कर दिया । तुम और लूसी किस तरह दिन बिता रहे हो ! अब भी तुम्हें पूरी खुशी है कि नहीं ? उसने जवाब दिया हाँ । लेकिन उसने छोटे मोटे कई मत भेदों की चर्चा की । उन नगण्य बातों का जिक्र किया जिनसे झगड़े-बखेड़े की नौबत आ गयी थी । पति पत्नी एक दूसरे से मुँह मोड़ लेने की सीमा पर नहीं पहुँचे थे । किन्तु हर्ष और शोक दोनों ही स्थितियों में उनमें सन्तुलन नहीं रह गया था । वे बार-बार एक दूसरे को चोट पहुँचाया करते थे । उनके बीच एक तरह की खाई-सी बन गयी थी । लगता था मानों वे अपनी किसी भूल पर चकित और विक्षुब्ध हों और प्रारम्भिक दिनों की आसक्ति के बाद उन्हें अपना प्रेम बहुत छिछला प्रतीत हो रहा हो । पालिन ने सोचा कि आर्थिक कठिनाइयों से उनके जीवन में कटुता आ गयी है । लेकिन यह बात गलत थी । उनकी दस हजार फ्रैंक की आमदनी काम चलाने के लिए काफी थी । असल चीज यह थी कि लजारे व्यापार से उकता गया था । संगीत, चिकित्सा और उद्योग की भाँति उससे भी ऊब गया था । जैसी बुराई उसे धन दौलत की दुनियाँ में मिली, वैसी और कहीं नहीं मिली थी । रुपये के फेर में अपने को बर्बाद करने के बजाय वह गाँव में मामूली आमदनी से ही गुजर करना बेहतर समझता था । बहरहाल, बात जो भी हो, बीमा कम्पनी अब उसने छोड़ दी थी । अगले जाड़े में पेरिस जाकर वह नाटक कम्पनी खोलना चाहता था । अपने नाटक से उसे सारा घाटा पूरा हो जाने की उम्मीद थी । धन के पक्षाघात से पीड़ित आधुनिक समाज का चित्र वह सबके सामने प्रस्तुत करना चाहता था । इस नयी विफलता से पालिन को बहुत अधिक क्षोभ नहीं हुआ । लजारे के अन्तिम पत्र में ही उसे इसका संकेत मिल गया था । पति और पत्नी के बीच धीरे-धीरे जो अन्तर आ गया था, उसी पर अधिक दुःख हुआ । उसने कारण जानने की चेष्ठा की । यह स्थिति कैसे आ गयी ? भाई से सारी पूछ-ताछ निष्फल सिद्ध हुई । कुछ भी पूछने पर वह घबरा जाता और आंखें नीची कर लेता ।

धीरे धीरे भय और लज्जा की सारी तहें उसके मन में खुलने लगीं। वस्तुतः लजारे के मृत्यु के प्रति भय ने ही यह दयनीय स्थिति उत्पन्न कर दी थी। एक दिन उसे अपने कमरे से आता हुआ देख कर सारा रहस्य स्पष्ट हो गया। वह इतना भयभीत मालूम हो रहा था, मानो भूतों से पीछा छुड़ा रहा हो।

पेरिस में प्रेम के मादक क्षणों में लजारे मृत्यु को भूल गया था। लूसी की बाहों में उसे शरण मिल गयी। थक कर वह बच्चों की भांति सो जाता। सेविका की भाँति वह अपनी सारी ममता उस पर निछावर कर देती। एक दूसरे के आलिंगन में खोकर वे सब कुछ भूल जाते। किन्तु ऐन्द्रिक सुख जब तक मादक और अस्थायी प्रतीत हुआ, तभी तक यह निश्चिन्तता बनी रही। इसके बाद अति तुष्ठि की स्थिति उत्पन्न हो गयी। शारीरिक सुख उसे क्षणिक और सारहीन प्रतीत होने लगा। एक रात लजारे चौकन्ना हो कर जाग पड़ा। रोंगटे खड़े हो गये। थर-थर कांपता हुआ वह फुसफुसाने लगा। "हे भगवान, हे भगवान! मृत्यु से निस्तार नहीं है! लूसी बगल में ही सो रही थी। चुम्बनों के परे उसे मृत्यु का आभास मिल गया था।

पुरानी चिन्ता पुनः लौट आयी। रात में जागता हुआ वह अकस्मात चौंक पड़ता। मृत्यु की छाया पास आती हुई दिखायी पड़ती। स्नायविकता का प्रकोप बढ़ता ही गया। बिना रोशनी के उसे नींद न आती। तकिये के सहारे बैठकर वह लूसी का सोया हुआ मुँह निहारने लगता। एक रात वह भी बीच में जाग गयी। कुछ बोली नहीं। एक टक पति का घबराया हुआ चेहरा निहारती रही। निस्सन्देह उसे भी मृत्यु के स्पर्श का अनुभव हुआ था। घबरा कर वह लजारे के सीने से लिपट गयी। दुर्बलता छिपाने के लिए दोनों ने बहाना बनाया कि अभी-अभी किसी के पैरों की आहट सुनायी पड़ी है और चारपाई तथा पर्दों के नीचे वे कुछ ढूँढ़ने की कोशिश करने लगे।

आगे चल कर दोनों ही प्रेतबाधा से पीड़ित रहने लगे। मुँह

से वे कोई बात प्रकट न होने देते । विस्तर पर चित लेट जाने पर वे एक दूसरे के विचारों से पूर्णतया अवगत हो जाते । लूसी भी स्नायविकता से उतनी ही पीड़ित थी जितना की लजारे । दो प्रेमी जिस प्रकार एक ही बुखार के मरीज हो जाते हैं, उसी प्रकार वे समान बेचैनी के शिकार बन गये थे । अगर लजारे जागता और लूसी को सोयी हुई पाता तो उसकी खामोशी उसे डराने लगती । क्या अभी इसकी साँस चल रही है ? उसे उसकी साँस भी न सुनायी पड़ती । यह भय होने लगता कि वह सहसा मर गई है । कभी कभी वह उसकी नाड़ी देखने लगता । छाती पर हाथ रख कर धड़कन की जाँच करने लगता । उसके जीवित होने का विश्वास हो जाने पर भी उसे नींद न आती । यह ख्याल सताने लगता कि वह किसी दिन मर जायगी और मैं अकेला रह जाऊँगा । किसे पहले मरना चाहिये ? मुझे या इसे ? भाँति-भाँति की दुःशंकायें और कल्पनायें छूने लगता । मृत्यु के समय का पूरा चित्र साकार हो जाता । कभी सोचता, नहीं पहले मैं मरूँगा और तब लूसी के वैधव्य की कल्पना से वह और भी छट पटाने लगता ।

इसी समय लजारे व्यापार से ऊब गया । दिन भर आलस्य छाया रहता । धनपतियों से उसे तीव्र घृणा हो गयी । सचाई यह थी कि मृत्यु के भय के कारण सभी चीजों से उसका मन उच्चट गया था । उत्साह-हीनता की पुरानी प्रवृत्ति ने पुनः अधिकार जमा लिया था । इससे क्या लाभ है ? कल, आज या किसी भी क्षण मैं अन्धकार में विलीन हो सकता हूँ । फिर हाथ-पैर पटकने से, एक को छोड़कर दूसरी चीज की परवाह करने से क्या फायदा है ?

जिस दिन से लजारे ने दफ्तर जाना बन्द कर दिया, उसी दिन से पति-पत्नी में झगड़ा शुरू हो गया । तुनुक मिजाजी इतनी बढ़ गयी कि ज़रा-ज़रा सी बात पर वह आग भभूका हो उठता । एक बार आग के डर से वह इतना घबरा गया कि एक मकान की तीसरी मंजिल से उतर कर पहली मंजिल पर चला आया । हमेशा वह किसी विपत्ति की प्रतीक्षा-

सी करता रहता। दरवाजा खुलने पर चौकन्ना हो कर चारों ओर ताकने लगता। कोई पत्र पाने पर दिल बुरी तरह धड़कने लगता। सभी आदमियों के प्रति अविश्वास हो गया। अपना पैसा थोड़ा-थोड़ा कर वह कई जगह छिपा कर रखता। दुनिया से बेहद नफ़रत हो गयी। प्रायः शिकायत करता रहता कि लोग मुझे ग़लत समझते हैं। दूसरों के कुचक्र से ही मैं किसी काम में सफल नहीं हो पाया हूँ। कोई काम क्यों किया जाय? विज्ञान की अपनी सीमायें हैं। आदमी न तो कुछ बिगाड़ सकता है और न कुछ बना ही सकता है।

स्नायविकता एवं असन्तुलित तथा पित्तोन्मादी स्वभाव के कारण वह निराशावादी बन गया और जीवन की घोर उपेक्षा करने लगा। जीवन स्थायी नहीं है, इसीलिये वह उसे प्रवंचना मात्र मानने लगा। क्या मनुष्य आयु का पूर्वार्द्ध सुख के स्वप्नों और उत्तरार्द्ध अनुतापों तथा भय में ही नहीं बिता देता है? भय का शमन करने के लिये वह जीवन का ही शमन कर देना चाहता था। इसी को वह मुक्ति का एक मात्र उपाय मानता। अशुभ के भय से किसी वस्तु की कामना न की जाय, कष्ट के भय से कर्म से उदासीन रहा जाय और फिर शान्तिपूर्वक मृत्यु का वरण कर लिया जाय। इसी नाजुक मौके पर पत्नी की गर्भावस्था से उसे और आघात पहुँचा। हर्ष और द्विविधा से मिली-जुली अवर्णनीय भावना मन को उद्वेलित करने लगी। पिता बनने, जीवन का निर्माता बनने के विचार से उसे गर्व होता, किन्तु साथ ही यह भी शिकायत रहती कि मूर्ख लोग पिता के अधिकार का दुरुपयोग करते हैं। धीरे-धीरे प्रसन्नता समाप्त हो गयी। शीघ्र ही यह शंका मन में घर कर गयी कि माँ मर जायगी और बच्चा बिना जन्म लिये ही नष्ट हो जायगा। गर्भ के पहले महीने में लूसी बीमार-सी रहने लगी। घर में उथल-पुथल और बार-बार के झगड़ों के कारण उसकी मुसीबत चौगुनी हो गयी। जिस बच्चे से पति-पत्नी में घनिष्ठता बढ़नी चाहिये थी, उसी ने उनके बीच गलतफ़हमी पैदा कर दी। डाक्टर ने जब लूसी के लिये पहाड़ी हवा

की सलाह दी तो उसे बहुत राहत मिल गई। उसे उनकी भाभी के घर छोड़ कर पिता को देखने के बहाने वह एक पखवारे के लिए बोनीविले चला आया। भीतर भीतर अपने पलायन से वह लज्जित था किन्तु ऊपर से यह दलील पेश करता कि थोड़ा-सा बिलगाव दोनों के लिए जरूरी था। इससे एक-दूसरे का मन हल्का हो जायगा !

पिछले अट्ठारह महीनों की पूरी कहानी सुनकर पालिन कुछ क्षणों के लिए अवाक् हो गयी। भोजन के कमरे में ही उसने शैन्ते का बिस्तर लगा दिया। चाय की केतली ठण्डी हो गयी थी और लालटेन में तेल कम होने से उसकी लौ टिमटिमाने लगी।

थोड़ी देर तक मौन रहने के बाद वह बोली। "हाय राम, तुम लोगों के प्रेम का रंग इतनी ही जल्दी उतर गया ?"

लजारे अपने कमरे में जाने के लिए खड़ा हो गया। फीकी हँसी के साथ प्रतिवाद करता हुआ बोला "हम एक-दूसरे को उतना ही प्यार करते हैं जितना कोई कर सकता है, मेरी बच्ची...यहीं कैद रह कर तुम कितनी नादान बन गयी हो ? किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा प्रेम ही क्यों इतना चिरस्थायी बनें ?"

अपने कमरे में जाते ही पालिन को चिन्ताओं ने घेर लिया। क्या हमारा दुर्भाग्य पुनः प्रारम्भ होने वाला है ? मेरा बलिदान कितना निष्फल सिद्ध हुआ ! अब इनमें प्रेम नहीं रह गया है। मेरे त्याग के आँसू व्यर्थ हो गये, शहादत का ख़ून किसी काम का नहीं रहा। वेदना का सचमुच क्या कोई अन्त नहीं है ?

लालटेन की लौ एक टक निहारती हुई वह बैठी रही। यह विचार कि मैं ही सारी करतूत के लिए जिम्मेदार हूँ, उसकी सम्पूर्ण चेतना को पीड़ित करने लगा। बिना यह सोचे कि लूसी मेरे भाई की पत्नी होने के योग्य नहीं है, मैंने ही विवाह कराया। लूसी भी स्नायविकता से उतनी ही पीड़ित है। शारीरिक आकर्षण के अतिरिक्त उसमें कुछ भी नहीं है। यह चीजें सिर्फ आज ही मेरे दिमाग में क्यों आयीं ? पहले मेरा विचार

था कि लूसी ज्यादा लुभानेवाली है। यह आशा थी कि उसके चुम्बन लजारे की निराशा और उदासी को एक फूँक में उड़ा देंगे। कैसी बिडम्बना है! नेकी करते हुये बदी हो गयी। जिन्दगी से इतनी नादान हूँ कि जिनकी मदद करना चाहती थी, उन्हीं को बर्बाद कर दिया। उस दिन इतने आँसुओं के मोल से उनकी खुशी इसीलिए खरीदी कि मैं उदार बनना चाहती थी, अपने त्याग को दृढ़ आधार भूमि पर खड़ा करना चाहती थी। किन्तु मेरी उदारता किसी काम की नहीं रही। कदाचित यह सदैव लाभप्रद होती ही नहीं है। ––

घर नींद में डूबा हुआ था। कमरे की ख़ामोशी में वह दिल की धड़कन के आलावा कुछ भी नहीं, सुन रही थी। धीरे धीरे विद्रोह का मर्मभेदी ज्वार हिलोरें लेने लगा। मैंने लजारे से क्यों नहीं शादी की? वह मेरा था। कभी उसे छोड़ने की आवश्यकता नहीं थी। कदाचित् पहले उसे निराशा होती! किन्तु मैं शीघ्र ही अपने साहस से उसे उत्प्रेरित करती और आगे चलकर दुःस्वप्नों से उसे बचा लेती! मैंने सदैव स्वयं को ही धोखा दिया है! विपत्ति की सारी जड़ यही है। अपनी शक्ति दीप्तिमान स्वास्थ्य और असीम आकर्षण की चेतना उसका विरोध करने लगी। क्या निश्चय ही मैं लूसी से अधिक मूल्यवान् हूँ, मैंने स्वयं को ही मिटाने की मूर्खता क्यों की? अब वह लूसी के प्रेम से भी इनकार करने लगी। अपने हृदय में वह अपरिमित वासना के उद्रेक का अनुभव करने लगी। अपने भाई को वह इतना अधिक प्यार करती थी कि घर छोड़ देना भी उसने स्वीकार कर लिया था। क्या लूसी उसे सुखी बना सकी है? उसे प्रसन्न कर सकती है? यदि वह ऐसा नहीं कर सकी तो क्या मैं अनिच्छा पूर्वक स्वीकार किया गया विवाह भँग नहीं कर सकती हूँ? रोष बढ़ता ही गया। शरीर, वक्ष और उदर की ओर देख कर अपने सौंदर्य और साहस के प्रति वह और सजग हो उठी। रोम-रोम से दृढ़ निश्चय का स्वर मुखर होने लगा। लजारे से विवाह मुझे करना चाहिये था, मुझे......!"

खेद से उसका मन छटपटाने लगा। घड़ी-घड़ी रात बीत रही थी। फिर भी उसे लेटने की सुधि नहीं थी। आँखें खुली थीं, लालटेन की लम्बी लौ उनमें धुन्ध पैदा कर रही थी। फिर भी वह उसे निहारती रही, निहारती रही और बैठे-बैठे एक स्वप्न के ध्यान में खो गयी। अब वह अपने कमरे में नहीं थी। यह कल्पना कर ली कि उसका लजारे से विवाह हो गया है। प्रेम और विवाहित जीवन के दृश्यों की शृंखला के चित्र घूमने लगे। बोनीविले हो, नीले समुद्र का किनारा हो या शोर गुल से भरी कोई पेरिस की गली। कमरा वही है, छोटा-सा, शान्ति पूर्ण, इधर-उधर किताबें पड़ी हैं, मेज पर गुलाब के फूल खिल रहे हैं। सायंकालीन वेला में लालटेन की सुनहली रोशनी जल रही है। क्षण-प्रतिक्षण वे एक-दूसरे के हाथों का सहारा माँगने लगते हैं। लजारे की अल्हड़ जवानी का बाँकापन लौट आया है। वह उसे इतना प्यार करती है कि लजारे जीवन का कभी अन्त होने की बात भूल जाता है। अब वे मेज के पास बैठे थे। अब वे बाहर जा रहे थे। कल वह उसके साथ घर के सामान खरीदने जायगी। इन सुपरिचित घरेलू तफसीलों में उसका मन उलझ गया। उनमें सुख के स्थूल संकेत दृष्टिगोचर होने लगे। प्रातः काल उठने और वस्त्र धारण करने तक वह सुख दृश्यमान् बना हुआ था। गरमी में वे यात्रा करेंगे। और फिर किसी दिन सुबह-सुबह वह अपने को गर्भवती पायेगी...यह क्या? थरथराहट से उसका स्वप्न भंग हो गया। कल्पना आगे नहीं बढ़ी। अपने कमरे में, लालटेन के सामने, जोकि करीब-करीब जल चुकी थी, वह पुनः लौट आयी। गर्भवती, हायराम! लूसी गर्भवती है। यह चीजें मेरे साथ कभी नहीं होगी। मैं कभी नहीं जानूँगी ये खुशियाँ! आघात इतना क्रूर था कि आँसू उमड़ आये और वह बेतहाशा रोती रही। छाती सिसकियों से हिलती रही, ऐंठती रही। लालटेन बुझ गयी, अँधेरे में ही चारपाई पर लेट जाना पड़ा।

उस रात की मनोव्यथा ने पालिन को पूर्णतः संवेगात्मक स्थिति

में डाल दिया। लजारे और लूसी तथा अपने प्रति वह दयनीय करुणा का अनुभव करने लगी। वेदना एक प्रकार की कोमल आशा के रूप में परिणत हो गयी। अस्पष्ट भावनायें हृदय मथने लगीं, किन्तु जिसकी प्रतीक्षा थी, उसे किसी के सामने व्यक्त न कर सकी। आत्म विश्लेषण करने का साहस ही नहीं हुआ। क्यों इतनी पीड़ा सही जाय? क्या मेरे पास कम से कम दस दिन नहीं हैं? इसके बाद बात सुलझा लेने के लिए काफी समय रहेगा। लजारे को मानसिक शान्ति प्रदान करने और बोनीविले में उसके निवास विश्रामपूर्ण और लाभप्रद बनाने में क्या आपत्ति है? आत्मिक प्रसन्नता से उसका मन विहँसने लगा। पुराने ढंग का सुखमय जीवन पुनः आरम्भ हो गया।

जल्दी ही वे दोस्ती के जमीन पर फिर वापस आ गये।

"अपना नाटक उधर फेंको दुष्ट राम! इसे देख कर लोग सी-सी करेंगे, और कुछ नहीं, समझे?"

लजारे कुर्सी पर बैठा था और पालिन पंजे के बल खड़ी थी। दो दिनों से पानी बरस रहा था। बड़े कमरे में ही दोनों कैद रहते थे। बीते दिनों की याद दिलाने वाली खोजों पर आने वाली हँसी से कमरा भरा रहता था।

"ओ हो, यह है तुम्हारी गुड़िया, मेरी पुरानी कमीज फाड़ कर बनाई गई नन्हीं-सी खूबसूरत गुड़िया। ... और यह, जानती हो यह क्या है? तुम्हारी तस्वीर है। मैंने उस दिन खींची जब कि तुम मुझ से कैंची न पाकर गुस्से में गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रही थीं।"

वह डींग भरती कि मैं अब भी एक ही छलांग में मेज कूद सकती हूँ। काम-धाम खुशी खुशी टाल कर वह भी कूदता, छलांग मार कर दिखाता। नाटक ताक पर रख दिया गया। गर्द गुबार में सना हुआ पियानो झाड़-पोंछ कर दुरुस्त किया गया। लजारे मस्ती में झूमता हुआ उसे धुन छुनाने लगता, पालिन कोई गीत छेड़ देती। फिर वे घर के चारों ओर चक्कर लगाते, बच्चों की तरह एक दूसरे का पीछा करते। अतीत की

रंगरलियों की ओर निश्चय ही वे पुनः लौट आये थे। पालिन दस वर्ष की हो गयी थी, लजारे उन्नीस वर्ष का। पालिन पुनः लजारे के प्रति बचपन की अल्हड़ मित्रता का अनुभव करने लगी। कुछ भी बदला नहीं था। वही भोजन का कमरा था, वही उनके फर्नीचर थे। दीवारों पर लगी वही पुरानी तस्वीरें थीं। सिर्फ एक कमरे में खामोश होकर भीतर जाते। वह था श्रीमती शैन्ते का पुराना कमरा। उनकी मृत्यु के बाद से अछूता ही पड़ा था। किसी ने कभी लिखने की डेस्क नहीं खोली, यदा-कदा भीतर धूप पहुँचने से दीवारों का चटक रंग धूमिल पड़ गया था। कभी किसी को बरस गाँठ पड़ती और घर फूलों के बड़े-बड़े गुलदस्तों से भर जाता।

तेज हवा चलने से बारिस थमते ही वे बाहर, छत पर, रसोई के बगीचे में या चट्टानों के रास्ते पर निकल जाते। वहाँ दिन भर जवानी की चुहल बाज़ियाँ होती रहतीं।

नहाने की पोशाक पहन कर वे घर से निकलते। समुद्र के तट पर उन्हीं पुरानी चट्टानों का दृश्य दिखाई पड़ता। जहाँ-जहाँ वे कभी बैठे थे, साथ-साथ बात की थी, एक दूसरे को छेड़ा था, चिढ़ाया था, उन स्थानों को देख कर मन नये उछाह से भर जाता। देर तक वे समुद्री हवा का सेवन करते रहते। लहरों का नर्तन और बुलबुलों का खिलवाड़ देखते रहते। पहले की छोटी-छोटी भूली-बिसरीं घटनायें याद आने लगतीं। लजारे पुनः छब्बीस साल का हो गया, और पालिन सोलह साल की। अनजाने ही जब वह धक्का दे देता तो वह मीठी-मीठी बेचैनी महसूस करने लगती। क्षण भर के लिये रोमांच हो आता। उसके विचार निर्विकार थे, इसलिये कभी प्रतिरोध न करती। नये जीवन की भावना से अभिभूत होकर वे एक-दूसरे से घुल मिल कर बातें करते। बिना किसी बात के ठहाका मार कर हँसने लगते। छोटी छोटी वस्तुयें भी असाधारण रूप से महत्वपूर्ण बन गयीं। खाने के लिये की गई मिन्नत, मौसम के बारे में कोई बात, रात में अपने-अपने कमरों की

ड्योढ़ी से किया गया नमस्कार, सब कुछ महत्वपूर्ण बन गया। अतीत भूले हुये सम्बन्धों के सम्पूर्ण माधुर्य के साथ उनके हृदयों में लहराने लगा।

अमन-चैन से दिन बीतते रहे। लजारे को आये हुये तीसरा हफ्ता शुरू हो गया। अपना सफर वह टाल दिया करता। लूसी के कई पत्र मिले थे। वहाँ वह ऊब गयी थी। लेकिन उसकी भाभी कुछ दिन और उसे साथ रखना चाहती थी। लजारे ने उसे वहीं पड़े रहने के लिए लिख दिया। डाक्टर कैजनोव की भी यही सलाह थी। घर की शान्ति पूर्ण नियमित दिनचर्या का धीरे-धीरे वह आदी बनता जा रहा था। शनिवार की रात में दावतें होतीं। डाक्टर और पादरी के परिचित चेहरे पुनः दिखायी पड़ते। मौसम और दूसरी चीजों के बारे में इधर उधर की अन्तहीन बातें चलतीं। मिनूशी मेज पर पंजे सिकोड़ कर बैठी रहती। तमाम पुरानी चीजों में लू लू के अलावा कुछ भी नया नहीं था। अत्यन्त कुरूप लू लू मेज के नीचे गुड़ मुड़ा कर बैठा रहता और कोई पास जाता तो गुर्राने लगता। लजारे उसके पास शक्कर लेकर जाता। लेकिन वह था कि उधर आँख ही न उठाता। अकेला घर में अजनबी की तरह पड़ा रहता। खामोशी के साथ अपनी मनहूस जिन्दगी बिताने की इजाजत के अलावा शायद वह आदमियों और फरिश्तों से कुछ भी नहीं चाहता था।

कभी-कभी पालिन और लजारे जब लम्बी सैर पर निकल जाते तो कुछ नयी चीजें भी मिल जातीं। एक दिन एक गली में बोटिग्नी से मुलाकात हो गयी। अब वह दौलतमन्द और शरीफ बन गया था। व्यापारिक सोडे के उत्पादन से उसकी किस्मत चमक गई थी। ऐसी नेक औरत से शादी हो गयी थी जो कि परछाई की तरह हमेशा उसके पीछे-पीछे चलती रहती थी। हाल ही में उसने तीसरी औलाद को जनम दिया था। समूचा परिवार नौकर और आया के साथ दो बड़े सफेद घोड़ों की गाड़ी पर सैर करने निकल पड़ा था। क्षण भर के लिए संकोच

की स्थिति उत्पन्न हो गयी। वर्षों से उनमें बोल-चाल बन्द थी। औरत और बच्चों के रहने से परेशानी और बढ़ गयी। आखिरकार उनकी आँखें मिलीं। खामोशी के साथ दोनों ने सिर झुका कर एक-दूसरे का अभिवादन किया। गाड़ी दूर निकल जाने पर लजारे लम्बी साँस लेता हुआ बोला— "तो इन दिनों यह शहजादों जैसी जिन्दगी बसर कर रहा है?"

पालिन ने विनम्र उत्तर दिया, "हाँ इसने मुनाफे का ढेर लगा लिया है...जानते हो, तुम्हारे पुराने तजर्बों से ही यह फायदा उठा रहा है।"

लजारे का दिल झनझना उठा। "बात सही है," लजारे उखड़ी हुई आवाज़ में बोला, "विज्ञान सदैव एक पग आगे ही बढ़ता है। किसी बेवकूफ ने उसे ऐसा धक्का दे दिया है, जो कि बिल्कुल ही बे मानी है।"

सैर का मज़ा किर किरा हो गया। मुँह बाँधे वे आगे बढ़ गये। एक दिन वर्शमान्त की ओर जाते हुये झोंपड़ी से धुँआ उठता देख कर वे हकबका कर खड़े हो गये। उसमें आग लग गई थी। तेज धूप की वजह से लपटें दिखाई नहीं पड़ती थी। खिड़कियाँ, दरवाजे सभी बन्द थे। आग भड़क कर जल रही थी। उसमें रहने वाले किसान पास में कहीं काम पर गये थे। लजारे और पालिन दौड़ते चिल्लाते आगे बढ़े। कहीं कोई आदमी नहीं नजर आ रहा था। आखिरकार दूर से एक औरत रूमाल हिलाती गिरती पड़ती आती हुई दिखाई पड़ी। हाथ जोर जोर से हिलाती हुई वह न जाने क्या बड़बड़ा रही थी। बीच में वह लटपटा कर गिर पड़ी। हिम्मत करके फिर उठी। हाथों से खून बहने लगा। रूमाल हवा में उड़ गयी थी और बाल बेतरतीबी से बिखर गये थे।

"यह क्या बक रही है?" पालिन ने सहमी हुई आवाज में पूँछा!

नज़दीक आने पर उसकी जानवरों की गुर्राहट-जैसी आवाज़ साफ-साफ सुनाई पड़ी "बच्चा!...बच्चा...बच्चा!"

प्रातः काल से पिता-पुत्र करीब तीन मील दूर जई के खेत में काम

कर रहे थे। कुछ मिनटों के लिए ही वह टोकरी भर गाजर लाने के लिये बाहर गयी थी। प्रति दिन की आदत के विपरीत सब सामान घर में बन्दकर बच्चे को सोया हुआ छोड़ दिया था। आग शायद बहुत देर से जल रही थी। इस समय फूस की छत भट्ठी की तरह दहकती हुई जल रही थी। बहुत ऊँची ऊँची लपटें उठ रही थीं।

"क्या तुमने दरवाजों पर ताला लगा दिया था?" लजारे चिल्लाया।

औरत ने उसकी बात सुनी नहीं। वह, पागल हो गयी थी। अकारण झोंपड़ी के चारों ओर दौड़ रही थी, इस उम्मीद से कि शायद भीतर जाने का कोई रास्ता मिल जाय। लड़खड़ा कर वह फिर गिर पड़ी। झुर्रियों से भरे बूढ़े चेहरे पर निराशा और आतंक की झांइयाँ उड़ने लगीं। चिल्लाहट जारी ही रही। "बच्चा, बच्चा!"

पालिन की आँखें डबडबा आयीं। लजारे उस चीख से बौखला कर बोला "मैं उसका बच्चा निकालने जा रहा हूँ।"

पालिन ठिठकी, निगाह से उसे निहारने लगी। हाथ पकड़ कर उसने उसे पीछे खींचने की कोशिश की।

"तुम? तुमसे नहीं होगा...छत गिरने वाली है।"

"देख लेंगे," उसने दो टूक जवाब दिया।

औरत की ओर मुखातिब हो कर वह जोर से चिल्लाया: "तुम्हारी चाभी? चाभी है तुम्हारे पास?"

औरत मुँह ताकती खड़ी रही लजारे ने धक्का दे कर चाभी छीन ली। घर की ओर संजीदगी से चल पड़ा। पालिन उस पर निगाह लगाये रही, लेकिन रोकने की कोशिश नहीं की। चिनगारियों की वर्षा हो रही थी। दरवाजा खोलने के लिए पास तक जाना जरूरी था। जलते हुये पुआल के लुवाठे छत से नीचे गिर रहे थे। चाभी छेद में फँस गयी। अजीब अड़चन खड़ी हो गयी फिर भी उसने कोई परवाह नहीं की। जैसे-तैसे दरवाजा खोल लिया। भीतर धुंये की वजह से कुछ

सूझता ही नहीं था। क्षण भर वह ड्योढ़ी पर खड़ा रहा। खतरे में सूझ और चालाकी अपने आप आ जाती है। गर्दन झुकाकर वह लापता हो गया।

"हे भगवान्, हे भगवान् !" पालिन व्यग्र होकर हकलायी।

छत धराशायी हो रही थी। पहले ही कई जगह से गिर चुकी थी। भाई के बारे में अन्देशा होने लगा। उसे बाहर निकलने का मौका नहीं मिलेगा। जमीन पर बैठी औरत ने उसे कसकर पकड़ लिया!

धुँआ उगलती हुई दीवारों के छत को चरमराती हुई देख कर पालिन बेतहाशा चिल्ला पड़ी, "लजारे !"

वह दरवाजे की चौखट पर पहुँच गया था। बाल झुलस गये थे, हाथों में फफोले पड़ गये थे। काँपता-चिल्लाता बच्चा औरत की गोद में फेंक कर वह पालिन से क्रुद्ध होकर बोला—"हूँ' तुम इतना घबरा क्यों गयी ?"

घर लौटते समय दोनों बहुत प्रसन्न थे। लजारे को ज्यादा तकलीफ नहीं थी, फिर भी पालिन चलते समय उसे सहारा देती रही। किसी के मुँह से बात नहीं फूटी, मुस्कुराते हुये वे एक दूसरे को निहारते रहे। विशेष कर पालिन प्रसन्नतापूर्ण गर्व का अनुभव कर रही थी। मृत्यु के विचार से भयभीत रहते हुये भी वह इतना वीर है, इतना पराक्रमी है! रास्ते भर वह उसके व्यक्तित्व के विरोधाभास का विश्लेषण करती रही। उसने उसे रात भर काम करते हुये और अन्त में महीनों आलसी बनकर बैठे हुये देखा था। प्रत्येक को पूर्णतया भला या बुरा समझ कर जीवन से निराश न होने का उसका दृष्टिकोण उचित ही था। बोनीविले पहुँचते ही उनकी खामोशी का बाँध टूट गया। छोटी-छोटी बातों पर भी जमकर चर्चा छिड़ गयी।

बोनीविले में रहते हुये लजारे को एक महीना हो गया। लूसी का पत्र आया। वह बेहद उकता गयी थी। लजारे ने लिखकर भेज दिया कि मैं अगले सप्ताह के प्रारम्भ में आ कर तुम्हें साथ ले लूँगा। फिर से

खौफ़नाक बारिश शुरू हो गयी। भयंकर तूफ़ान आते और ऐसा लगता कि पल भर में ही दुनियाँ तहस-नहस हो जायगी। लजारे ने गम्भीरता पूर्वक काम में लगकर नाटक पूरा कर लेने की इच्छा व्यक्त की। वह चाहता था कि पालिन बगल में बैठकर उसे प्रेरणा देती रहे। वह कसीदाकारी का सामान लेकर बैठ जाती लेकिन मेज़ के पास अगल-बगल बैठ जाने पर कुछ काम न हो पाता। धीमी आवाज में वे लम्बी-लम्बी वार्तायें करने लगते। एक दूसरे की आखों की ओर निहारते हुये एक ही बात बार बार दुहराई जाती। एक दूसरे का हाथ छू जाने से बचने के लिए वे कोई खेल न खेलते। खामोशी छा जाने पर वे लज्जा का अनुभव करने लगते। एक-एक शब्द तौल-तौल कर मुंह से निकाला जाता।

एक दिन पालिन बुनाई करती हुई आधी रात तक लजारे के ही कमरे में बैठी रही। सारा घर नींद में डूबा हुआ था। यहाँ तक कि वेरोनिक भी जल्दी ही सो गयी थी। लजारे ने अपना दिल खोल कर रख दिया—"मैंने जीवन नष्ट कर दिया। यदि इस समय साहित्य भी साथ न देगा तो किसी अज्ञात स्थान में जाकर संन्यासी बन जाऊँगा!"

"जो कह रहा हूँ, सच मानो," वह मुस्कुराता हुआ बोला, "कई बार मेरा विचार हुआ है कि हमें मां के मरने के बाद देश छोड़ देना चाहिये था!"

"देश छोड़ देना चाहिये था? यह तुम क्या बक रहे हो?"

"हाँ, दूर, बहुत दूर कहीं आक्सीनिया या और किसी द्वीप में चले जाते वहाँ का जीवन कितना सुखमय है!"

"और तुम्हारा बाप? उसे भी ले जाते कि नहीं?"

"हाय, सुनों तो, यह स्वप्न मात्र है...यथार्थ इतना कटु होने पर आदमी भली वस्तुओं की कल्पना करने के लिए विवश हो जाता है।"

वह मेज छोड़ कर पालिन की कुर्सी के हत्थे पर बैठ गया, उसने कढ़ाई बन्द कर दी। उसकी बच्चों जैसी भोली-भाली कल्पना की उड़ानों

पर ठठाकर हँसने लगी। वह उससे इतना सट कर बैठा था कि अपनी जाँघ से उसके कन्धों की जीवन उष्णता का अनुभव कर सकता था।

"तुम पागल हो, मेरे मूरख भाई! भला वहाँ हम क्या करते?"

"क्यों? वहाँ मौज से रहते?...बारह साल पहले जो यात्रा-ग्रन्थ हम पढ़ा करते थे, उसका तुम्हें स्मरण नहीं है? वहाँ के लोग इस तरह रहते हैं, मानों स्वर्ग में निवास कर रहे हों। कभी पतझड़ आता ही नहीं; आसमान हमेशा साफ रहता है। दिन में धूप में रहे, रात में तारों की छाँव तले......वहाँ हमारी एक कुटी होती। हम मीठे-मीठे फल खाते—कुछ भी करने को न होता, कोई भी चिन्ता न रहती!"

"और हम बंजारों की तरह रहते! नाकों में बालियाँ होतीं, सिर पर पंखों का ताज!"

"ठीक क्यों नहीं? हम एक-दूसरे को प्यार करते। दिनों की कभी गिनती न करते, वे इतने बुरे भी न होते!"

वह उसकी ओर निहारने लगी। पलकें फड़कने लगीं। हल्के कम्पन से चेहरा लाल हो गया! प्रेम की मधुर कल्पना हृदय के एक-एक तार को बेधने लगी। लजारे ने उसका हाथ अनजाने में ही अपने हाथ में ले लिया और हँसते हुये पतली-पतली उँगलियों से खेलने लगा। उसे कोई बेचैनी नहीं महसूस हुई। बचपन से ही वे इस तरह खेलते आ रहे थे। सब होते हुये भी उसकी छाती जोर-जोर से धड़कने लगी। आवाज़ लड़खड़ाने लगी।

लेकिन फल-फूल की ही खूराक काफ़ी नहीं होती है। हमें शिकार करना पड़ता, मछली मारनी पड़ती और एकाध खेत भी जोतना बोना पड़ता ... हूँ, जैसा कि लोग कहते हैं, वहाँ औरतें ही सब काम करती हैं। अगर यह सच है तो क्या तुम मुझसे फावड़ा भी चलवाते?"

"तुम, इन नन्हें-नन्हें हाथों से? ... बन्दरों के बारे में क्या ख्याल है? क्या वे आज कल सब काम करते नहीं हैं?"

इस मज़ाक पर वह धीरे से हँसने लगी। वह आगे बोला: "और

हाँ, तुम्हारे नन्हें-नन्हें हाथ बचने भी न पाते,...मैं इन्हें यों खा जाता।"

वह उसके हाथों को झुक कर चूमने लगा। चेहरे पर खून उतर आया। वासना के आकस्मिक तूफ़ान ने दोनों को अन्धा कर दिया। एक दूसरे से सटे हुये वे आगे कुछ बोले नहीं। पालिन ने विरोध नहीं किया। आराम कुर्सी में सरक कर लेट गयी। चेहरा लाल हो उठा। आँखें झिप गयीं। जल्दी जल्दी लजारे ने पहले ही उसकी बाडिस खोल दी थी और पेटीकोट के बन्द भी तोड़ता जा रहा था। अपना ओठ उसने उसके ओठ से लगा दिया। कसकर उसे चूम लिया। हाथों की पूरी ताकत से उसकी गर्दन पकड़ कर पालिन ने भी वैसा ही किया। किन्तु इन्द्रियों की इस नई अनुभूति के झोंके में उसकी आँखें खुल गयीं। देखा कि मैं भद्दे ढङ्ग से फर्श पर लेटी हूँ। वही लालटेन है, वही आलमारी, वही छत। ऐसा लगा मानों वह किसी भयंकर स्वप्न से जाग पड़ी हो। जोर लगा कर अपने को छुड़ाती हुई वह खड़ी हो गयी। पेटीकोट खिसक गई थी। खुली हुई बाडिस से नग्न उरोज दिखाई पड़ रहे थे। सहसा वह जोर से चिल्ला पड़ी। "छोड़ो मुझे जाने दो, यह बहुत ही नीचता है!"

मदोन्मत्त लजारे ने उसकी बात सुनी नहीं। फिर से कसकर उसे पकड़ लिया। बाकी कपड़ों को भी खींच लिया। खुले हुए अंगों पर गरम-गरम चुम्बनों की झड़ी लगा दी। प्रत्येक चुम्बन पर वह सर से पाँव तक काँप उठती। एक बार पुनः वह करीब करीब लेट सी गई थी। आत्म-समर्पण की अज्ञात प्रेरणा से अपने को एकदम ढीला कर दिया। दोनों के अंग एक-दूसरे से गुँथ गये। हाँफते हुये वे मेज के चारों ओर चक्कर लगाते रहे। अन्ततः लजारे ने उसे एक पुरानी चारपाई पर गिरा दिया। पूरे ताकत से वह उसे रोकती रही: "उफ़, सुनो तो, उफ़, मुझे छोड़ दो। तुम बहुत ही खौफ़नाक हरकत करने की कोशिश कर रहे हो!"

लजारे के दाँत चिपके हुये थे, कुछ भी बोला नहीं, उसका ख्याल था कि पालिन अन्ततः काबू में आ गई है। तभी उसने जोर से धक्का

दिया । लजारे मेज पर गिर पड़ा । पालिन मुक्त होकर एक ही छलांग में गलियारा पार करती हुई अपने कमरे में भाग गयी । लजारे भी पीछे-पीछे दौड़ पड़ा । वह दरवाजा बन्द नहीं कर पाई थी, तभी उसने जोर से धक्का दिया । थोड़ी देर तक पुनः दोनों संघर्ष करते रहे । जैसे-तैसे पालिन को दरवाजा बन्द करने का मौका मिल गया । चाभी जोर से कर करायी और लम्बी ख़ामोशी छा गयी ।

भीतर अँधेरे में पालिन खामोश खड़ी रही । उसे मालूम था कि दूसरी ओर लजारे टस से मस नहीं हुआ है । उसके हाँफने की आवाज़ साफ-साफ सुनाई पड़ रही थी । अनुनय के स्वर में वह बोला ! "पालिन, दरवाजा खोल दो ... मुझे मालूम है कि तुम वहाँ हो !"

उसका रोम-रोम झनझना उठा फिर भी बोली नहीं ।

"तुम भी मेरी तरह से बेचैन हो, पालिन ! ... मैं बिनती कर रहा हूँ, दरवाजा खोल दो । इस आनन्द से हम अपने को वंचित क्यों करें ?"

वेरोनिक का कमरा बगल में ही था । उसके जागने का खौफ़ होने लगा । मरीज की कराह की तरह धीमी आवाज में वह अपनी याचना दुहराता रहा ।

"दरवाजा खोलो, खो ... लो ऽऽ !! बाद में तुम चाहोगी तो हम लोग आत्महत्या कर लेंगे—क्या हम बचपन से ही एक दूसरे को प्यार नहीं करते आ रहे हैं ? तुम्हें मेरी पत्नी होना चाहिये था ... किसी दिन होना ही है ... मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, पालिन ... !"

वह और जोर-जोर से काँपने लगी । एक एक शब्द हृदय में कसक उत्पन्न करने लगा । जिन चुम्बनों को उसने कन्धों पर अंकित कर दिया था वे आग की बूँदों की तरह चमक रहे थे । अर्द्ध नग्न देह के स्फुरण से अभिभूत होकर दरवाजे खोलने और समर्पण करने के भय का अनुभव करती हुई और कड़ाई के साथ वह विरोध करती रही । वह ठीक कह रहा है । हम लोग इस आनन्द से अपने को वंचित क्यों करें ? कोई देखने वाला भी तो नहीं । भेद अपने तक ही सीमित रहेगा । घर

नींद में डूबा है। घनी अँधेरी रात है। उफ़, अँधेरे में एक-दूसरे की बाँहों में शयन करना कितना मादक होगा। घण्टे भर के लिये ही उसे अपना बना लूँ। उफ़, जी लूँ, जी लूँ, अन्ततः थोड़ा-सा जी लूँ!

"हे भगवान्! पालिन तुम बहुत बेरहम हो! जवाब भी नहीं दोगी। मैं यहाँ कितनी बेबसी से खड़ा हूँ... दरवाजा खोलो। मैं तुम्हें सीने से लगा लूँगा, बाँहों में भर लूँगा, हम सब कुछ भूल जायँगे... खोलो, खोलो, मैं तुम्हारे पाँव पड़ रहा हूँ...।"

लजारे सिसकने लगा। वह भी रोने लगी। रग-रग में उथल-पुथल के बावजूद अब भी कुछ बोली नहीं। वह एक घण्टे तक खड़ा रहा। मिन्नतें करता रहा। कभी-कभी क्रुद्ध हो जाता, फिर प्यार और दुलार भरे शब्दों में क्षमा माँगने लगता। पालिन टस से मस न हुई। बेबस होकर वह अपने कमरे में चला गया। गुस्से में दरवाजा बन्द करने की आवाज़ सुनकर पालिन अथाह उदासी का अनुभव करने लगी। नाटक का पटाक्षेप हो गया। विजय उसी की हुई थी, किन्तु साथ ही इतनी व्याकुलता और लज्जा की अनुभूति होने लगी कि वह बिना लालटेन जलाये नंगी ही चारपाई पर लेट गई।

सुबह तक पालिन को नींद नहीं आई। जो कुछ हो गया था, रात र उसका खौफ़ सताता रहा। अब वह अपने को क्षम्य नहीं समझ सकती थी। भावनाओं की तीव्रता स्वीकार करने के लिये बाध्य थी। लजारे के प्रति मातृवत् स्नेह, लूसी के प्रति आरोप लगाने का दुराग्रह, पुरानी लालसा के प्रवंचनापूर्ण पुनर्जागरण के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। झूठ के ऐसे जाल में वह फँस गयी थी कि लजारे और लूसी के बीच पैदा हुये मनमुटाव से प्रसन्न होकर उससे लाभ उठाने की आशा करने लगी थी। क्या उसने स्वयं ही अपने भाई को पुराने तौर तरीकों की दुनियाँ में लौट आने के लिए बढ़ावा नहीं दिया था? क्या पहले यह विचार नहीं कर लेना चाहिये था कि इससे पतन की ओर बढ़ाना अवश्यम्भावी है? यह भयानक उपस्थिति अब उनके सामने उपस्थित हो

गयी थी। दोनों के जीवन के बीच सीमा-रेखा खिंच गयी थी। उसने लजारे को किसी और के हाथ में दे दिया था, फिर भी उसे प्यार करती थी और वह भी उसे चाहता था। सभी चीजें उसके दिमाग में बुरी तरह मँड़राने लगीं। प्रारम्भ में उसने अगले दिन भाग जाने का निश्चय किया, फिर ऐसा कार्य कायरतापूर्ण प्रतीत होने लगा। जब वह खुद ही जा रहा है तो क्यों न इन्तजार कर लिया जाय?

दूसरे दिन सुबह होने पर पालिन नित्य के समय से नीचे आयी। केवल उसकी भारी- पलकों से रात की बेचैनी का अन्दाजा लगाया जा सकता था। चेहरा मुर्झाया था और स्वयं बहुत शान्त थी। लजारे अपने समय से नीचे आने पर पिता से रात की थकान की चर्चा करने लगा। पूरा दिन हमेशा की तरह बीत गया। दोनों में से किसी ने भी बीती बातों का जिक्र नहीं किया। अपने साहस में अविचल रहकर किसी ने भी एक दूसरे से कतराने की कोशिश नहीं की। किन्तु सन्ध्या का समय कमरे से बाहर गलियारे में रात्रिकालीन प्रणाम करते हुये वे पारस्परिक आलिंगन में आबद्ध हो गये। विह्वल चुम्बनों का विनिमय हुआ। फिर पालिन घबरा कर अपने कमरे में चली गयी। लजारे भी भाग गया और चारपाई पर जाकर सिसक-सिसक कर रोने लगा।

आगे यही जीवन का क्रम बन गया। धीरे-धीरे दिन बीतने लगे दोनों को सम्भाविक पतन की आशंका बनी रहती। इन बातों के सम्बन्ध में वे कभी एक शब्द भी न बोलते, उस भयंकर रात का कभी जिक्र न करते किन्तु उनके विचार लगातार इन्हीं चीजों के इर्द-गिर्द चक्कर काटते रहते। निरन्तर पतन का भय सिर पर सवार रहता। क्या यह प्रातः काल उठते समय हो सकता है? या रात में जबकि विदाई के नमस्कार किये जाते हैं? क्या यह पालिन के कमरे में हो सकता है या लजारे के कमरे में या घर के कमरे में या घर के किसी एकान्त कोने में? साफ-साफ उन्हें कुछ मालूम नहीं था। इतना होते हुये भी उनकी सूझ-बूझ बनी हुई थी। प्रत्येक आकस्मिक उत्तेजना, क्षणिक उन्माद,

दरवाजों के पीछे विह्वल आलिंगन, अँधेरे में छिपकर लिये गये सुमधुर चुम्बन के बाद वे हृदय विदारक घृणा का अनुभव करने लगते। उनके पैरों के नीचे की धरती घूम रही थी और शान्तिपूर्ण क्षणों में किये गये पतन के गर्त में न गिरने के निश्चयों पर वे अविचल बने रहते थे। किसी में भी मुक्ति का एक मात्र उपाय ढूँढ़ने की शक्ति नहीं थी। पालिन दृढ़ता पूर्वक संकट का निवारण करती रहती। लजारे मन की गुत्थियों में इनता उलझा रहता कि पत्नी के आवश्यक पत्रों का उत्तर भी न दे पाता। बोनीविले में उसे रहते हुये छः हफ्ते हो गये थे और दोनों की धारणा बन गयी थी कि कठोर तथा मधुर उद्वेलन से भरा यह जीवन निरन्तर यों ही चलता रहेगा।

रविवार का दिन था। सब लोग एक साथ भोजन के कमरे में एकत्र थे। शैन्ते आज विशेष रूप से प्रसन्न था। लजारे और लूसी भी उसकी बातों का आनन्द लेते हुए हँस रहे थे। तभी वेरोनिक चिल्लाती हुई आई।

"बहू रानी आ गयीं!"

"बहू रानी! कैसी बहू रानी?" पालिन ने चकित होकर पूछा।

"और कौन? लूसी रानी! मैं देख कर आ रही हूँ।"

हास-परिहास रुक गया। शैन्ते सहम कर लजारे और पालिन की ओर निहारने लगा। लजारे के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। सहसा खड़ा होकर बोला: "क्या, लूसी? लेकिन उसने कभी मुझे लिखा नहीं। मैं उसे आने से मना कर देता ... क्या वह पागल हो गयी है?"

स्वच्छ और सोहानी गोधूलि बेला उतर रही थी। तौलिया फेंक कर लजारे बाहर निकल आया। पालिन भी पीछे-पीछे चल पड़ी। सचमुच लूसी ही थी। मैलीबोरे की गाड़ी से कराहते हुई नीचे उतर रही थी।

"तुम पागल हो गयी हो?" लजारे अहाते के बीच से ही बोला। "बिना मुझे खबर किये तुम्हें ऐसी हरकत नहीं करनी थी!"

उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये। वहाँ उसकी तबीयत बहुत

खराब हो गयी थी। पड़े-पड़े कितना ऊब गई थी। लजारे ने उसके आखिरी दो पत्रों का उत्तर नहीं दिया। बोनीविले देखने की लालसा से उसे स्वयं ही प्रस्थान कर देने का निश्चय करना पड़ा। पति को लिख कर सूचित नहीं किया तो इसी डर से कि वह आने से मना कर देगा।

"मैं तुम लोगों को ताज्जुब में डालने की ही तरकीब सोच रही थी। आज कामयाब हो गयी!" "यह सब बकवास है! तुम्हें कल ही लौट जाना चाहिये!"

लूसी ऐसे स्वागत से मर्माहत होकर पालिन की गोद में जा गिरी। पालिन उसकी भद्दी चाल और भारी देह देख कर अचरज में पड़ गई थी। अब फूले पेट के स्पर्श से भय और करुणा का अनुभव करने लगी। ईर्ष्या दबा कर वह लजारे को शान्त करने लगी।

"इस तरह बिगड़ते क्यों हो? इसका चुम्बन लो, मेरे भाई!"

सभी भीतर गये। वेरोनिक बैठने का इन्तजाम करने के बाद फिर से भोजन परसने लगी। शाम का वक्त अच्छी तरह बीत गया। सभी की आत्म-लीनता बनी रही। अगले दिनों के लिये योजनायें नहीं बनायी गयीं। ऊपर जाने के समय थोड़ी जटिल स्थिति उत्पन्न हो गयी। नौकरानी ने पूछा कि क्या लजारे बहू के कमरे में ही सोयेगा?

"नहीं, नहीं। लूसी मेरे बिना ही आराम से रहेगी", लजारे पालिन की आँख से आँख मिलाता हुआ बोला। "ठीक है, तुम ऊपर जाओ", उसकी पत्नी बोली। "मैं बहुत थक गयी हूँ। पूरी चारपाई अपने लिए ही चाहती हूँ।"

तीन दिन बीत गया। पालिन ने अगले सोमवार को इधर से प्रस्थान करने का निश्चय कर लिया। पति-पत्नी पहले से ही बच्चा पैदा होने तक रुके रहने की चर्चा कर रहे थे। उसके लिए अभी पूरा एक महीना बाकी था। उसे सन्देह था कि लजारे पेरिस से ऊब गया है और अब शायद बोनीविले में ही रहेगा। तुरन्त चल देना ही बेहतर होगा। भावनाओं को वश में रखना कठिन हो गया था। अपनी बहिन का

इरादा सुन कर केवल लूसी ने ही आश्चर्य प्रकट किया। ऐसे कारण बताये गये जिनका कोई उत्तर नहीं था। डाक्टर कैजनोव ने कहा कि सेण्टलो कि महिला पालिन को असाधारण अवसर प्रदान करना चाहती हैं। शैन्ते आँखों में आँसू भर कर अपने आप ही राज़ी हो गया।

शनिवार को डाक्टर और पादरी को आखिरी दावत दी गयी। लूसी की तबियत खराब थी। बड़ी मुश्किल से भोजन की मेज के पास तक गयी। पालिन की सब को देख कर मुस्कुराने की कोशिशों के बावजूद दावत का मजा इससे किरकिरा हो गया। उसके हृदय में अथाह वेदना उमड़ रही थी। वेरोनिक सहमी हुई अपना काम करती रही। शैन्ते ने शराब लेने से इनकार कर दिया। ऐसी सेविका का बिछोह, जोकि अपनी आवाज़ से ही सारा दर्द दूर कर देती थी, उसे बहुत भारी मालूम हो रहा था। लजारे किसी नयी वैज्ञानिक खोज पर पूरे समय तक डाक्टर से झगड़ता रहा। ग्यारह बजे घर में पूरी खामोशी छा गयी। लूसी और शैन्ते पहले ही सो गये थे। नौकरानी रसोई साफ कर रही थी। ऊपर बड़े कमरे के दरवाजे पर लजारे ने हमेशा की तरह क्षण भर के लिए पालिन को रोक लिया।

"अन्तिम प्रणाम कर रहा हूँ।" वह धीरे से बोला।

"नहीं, अन्तिम प्रणाम नहीं", वह हँसने की चेष्टा करती हुई बोली, केवल रात्रि-कालीन प्रणाम, क्योंकि मैं सोमवार तक नहीं जाऊँगी।"

दोनों एक दूसरे की ओर निहारने लगे। आँखें चंचल हो उठीं। पारस्परिक आलिंगन में वे आबद्ध हो गये और अन्तिम आकुल चुम्बन के लिए ओठ ओठों से जा मिले।

[१०]

दूसरे दिन सुबह नाश्ते के बाद लूसी को न देखकर सबको बहुत ताज्जुब हुआ। नौकरानी दरवाजा खटखटाने के लिए जाने ही वाली

थी, तभी वह दिखायी पड़ी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और चलने में तकलीफ मालूम होती थी।

"क्या बात है ?" लजारे ने हैरान होकर पूछा।

"सुबह तक मेरी हालत बहुत खराब थी," उसने जवाब दिया। "पल भर के लिए भी नींद नहीं आयी। घण्टे-घण्टे पर मरोड़ आती रही!"

"लेकिन तुम्हें हम लोगों को आवाज़ देनी थी," पालिन विरोध करती हुई बोली। "कम से कम हम तुम्हारी देख भाल तो कर सकते थे।"

ठण्डी सांस लेती हुई लूसी मेज पर बैठ गयी। "उफ़, तुम लोग कुछ नहीं कर सकती मैं इसका कारण जानती हूँ। लगातार आठ महीने से मैं यह दर्द झेलती आ रही हूँ।"

गर्भ से उसकी तकलीफ बहुत दर्दनाक हो गयी थी। कभी-कभी वह दिन भर शूल से छटपटाती रहती उस दिन जी-मचलाहट कम हो गयी थी फिर भी ऐसा लगता था मानों वह रस्सी से जकड़ कर बाँध दी गयी हो और एक-एक अंग छूटने के लिए कसमसा रहा हो।

"आदमी को दर्द सहने की आदत पड़ जाती है।" शैन्ते धीरे से बोला।

"हाँ, लेकिन मुझे चलते रहना पड़ता है। इसी लिए मैं नीचे आयी...ऊपर मुझसे बैठे भी नहीं रहा जाता है।"

कुछ घूँट काफी के अलावा उसने कुछ नहीं छुवा। दोपहर तक वह इधर से उधर चक्कर लगाती रही। कभी इस कुर्सी पर बैठती, कभी उस कुर्सी पर। किसी की उससे बोलने की हिम्मत नहीं हुई। कुछ कहते ही वह आग भभूका हो उठती। पलभर को भी चैन न मिलता। बहरहाल, दोपहर के पहले तकलीफ कुछ कम हो गयी। थोड़ी देर तक वह मेज के पास बैठी रही। लेकिन दो-तीन बजे के बीच फिर मरोड़ आनी शुरु हो गयी। कराहती हुई वह इधर से उधर चक्कर

लगाने लगी। कभी भोजन के कमरे में जाती-कभी रसोई में। कभी अपने कमरे में जाने के लिए जीने पर चढ़ने की कोशिश करने लगती और फिर जान-बूझकर नीचे चली जाती।

ऊपर की मंजिले पर पालिन अपना सामान बाँध रही थी। अगले दिन ही उसे प्रस्थान करना था जल्दी-जल्दी वह एक-एक चीज इकट्ठा कर रही थी। लूसी के भारी पैरों की आहट सुनकर उसे देखने के लिए वह दो मिनट पर नीचे झाँक आती। चार बजे के करीब लूसी को बहुत अधिक कष्ट में देखकर उसने लजारे का दरवाजा खटखटाने का निश्चय किया। वह बदहवासी की हालत में तकदीर को कोसता हुआ दरवाजा बन्द कर अपने कमरे में पड़ा हुआ था।

"हमें इस हालत में उसे अकेली नही छोड़ना चाहिए" वह समझती हुई बोली। "उससे हमें बात-चीत करते रहना चाहिये तुम मेरे साथ आओ।"

लूसी पहली मंजिल के जीने पर झुकी हुई खड़ी थी। न तो ऊपर आने की हिम्मत हो रही थी और न नीचे जाने की। "मेरी बच्ची" पालिन मुलायमित से बोली, "तुम्हारी हालत से हम लोग बहुत चिन्तित हैं...जल्दी ही हम दाई बुला रहे हैं।"

लूसी नाराज हो गयी। "हाय राम, यह क्या है ? मैं खामोशी के साथ पड़ी रहना चाहती हूँ। आठवें महीने में ही भला दाई क्या कर सकती है ?"

"कम से कम वह तुम्हें देख तो ले !"

"नह, ऐसा नहीं होगा। मैं अपने दर्द की वजह जानती हूँ... भगवान् के लिए मुझ से बात मत करो, मेरा दिल मत दुखाओ !"

लूसी ने ऐसी जिद की, ऐसा गुस्सा दिखाया कि लजारे खीझने लगा। पालिन ने तसल्ली देते हुये वादा किया कि दाई नहीं बुलायी जायगी। यह दाई थी वर्शमान्त की श्रीमती बोलान्द नामक महिला।

अपनी निपुणता के लिए वह चारों ओर विख्यात थी। इसीलिए पालिन उसकी सलाह लेना चाहती थी।

छः बजे तक लूसी को काफी आराम हो गया। थकी-माँदी वह सीधे बिस्तर पर जाकर लेट गयी, सब से कह दिया कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ, चुपचाप सो जाना चाहती हूँ। किसी की मदद की जरूरत नहीं है।

शाम को सब लोग खाना खा रहे थे। शैन्ते गर्भावस्था की कई असाधारण कहानियाँ सुना रहा था। तभी वेरोनिक हाथ पोंछती हुई बोली: "मैं जानती नहीं लेकिन ऐसा लगता है कि वह कमरे में कराह रही है।"

लजारे खड़ा हो गया और गलियारे का दरवाजा खोल दिया। मुंह बन्द कर सब लोग कान लगा कर सुनने लगे। पहले कुछ नहीं सुनायी पड़ा; फिर लम्बी और उखड़ी कराहों की आवाजें आने लगीं।

"दर्द फिर शुरू हो गया है," पालिन धीरे से बोली। "मैं ऊपर जा रही हूँ।"

तौलिया फेंक कर वह लूसी के कमरे में जा पहुँची। चारपाई के एक किनारे नंगे पांव बैठी वह घड़ी के पेण्डलम की तरह इधर से उधर हिल रही थी और असहनीय पीड़ा से जोर-जोर से कराहती जा रही थी।

"दर्द फिर शुरु हो गया?" पालिन ने पूछा।

उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"अब क्या तुम हमें श्रीमती बोलान्द को बुलाने दोगी?"

उखड़ी हुई आवाज में वह बोली: "हां, कोई परवाह नहीं है। शायद उसके बाद कुछ आराम मिले...मैं मरी जा रह हूँ, मरी जा रही हूँ...!"

लजारे-जो कि पालिन के पीछे-पीछे चला आया था और दरवाजे पर खड़ा था, भीतर आकर बोला-"मेरे ख्याल से ऐरोमांशे जा कर डाक्टर कैजनोव को ले आना बेहतर होगा। इसे न जाने क्या से क्या हो जाय। लेकिन लूसी यह सुन कर रोने लगी। "क्या तुम लोगों को

यह ख्याल नहीं है कि मैं किस हालत में हूँ ? तुम लोग इस तरह मेरी फजीहत क्यों कर रहे हो ?"

उन लोगों को मालूम था कि वह बच्चा पैदा होते समय पुरुष की उपस्थिति से घृणा करती थी। उसकी लज्जाशीलता का वार-पार नहीं था। दर्द की हालत में अपने पति और बहन के सामने होने पर भी शरम के मारे गड़ जाती थी और दुखते हुये कूल्हों को चादर से ढक लेती थी। "जैसे भी हो दाई को ले आओ", पालिन ने लजारे से कहा। "मुझे विश्वास नहीं होता है कि बच्चा पैदा होने का समय आ गया है। सवाल सिर्फ इसे खामोश करने का है।"

दोनों पुनः नीचे चले गये। पालिन लजारे से थोड़ा खा लेने का अनुरोध करने लगी। लेकिन वह होश में नहीं था। बेतहाशा वर्श-माउण्ट की ओर चल पड़ा।

"शायद वह मुझे बुला रही है," पालिन दरवाजे की ओर झपटती हुई बोली। "कैसी संकट की घड़ी आ गई ! कुछ उपाय ही नहीं सूझ रहा है।"

ऊपर जाकर उसने देखा कि लूसी एक कुर्सी की पीठ के सहारे झुकी हुई खड़ी है। "बैठने पर दर्द और बढ़ जाता है। मुझे पकड़ कर इधर-उधर घुमाओ !"

"तुम्हें कुछ बोख़ार है। कुछ पीना चाहोगी ?"

लूसी जवाब नहीं दे सकी। थर-थर काँपती हुई पालिन के कन्धों से चिपक गई और सिसक-सिसक कर रोने लगी।

"मैं प्यास से मरी जा रही हूँ", थोड़ी ताकत आने पर वह काँपती हुई आवाज़ में बोली। "मेरी जीभ सूख गयी है, देखो बदन कितना जल रहा है ... उफ़, नहीं, नहीं, मुझे छोड़ कर मत जाओ, गिर जाऊँगी।"

दो घण्टे तक वह लगातार टहलती रही। नौ बज गये, दाई अभी

तक आयी नहीं। इस समय वह उसकी मदद के लिये व्याकुल हो रही थी। थोड़ी देर में उबकाई आने लगी और उसे कै हो गयी।

"हट जाओ, मैं किसी को अपने पास देखना नहीं चाहती हूँ। हाय राम! कैसी घड़ी आ गयी है? आज सभी मुझसे नफरत करने लगे हैं।"

पालिन अत्यधिक चिन्तित हो उठी, दस बज गये, लजारे अभी तक लौटा नहीं। शायद श्रीमती बोलान्द घर पर मिली नहीं। लूसी की हालत क्षण प्रति क्षण बिगड़ती जा रही थी।

अनुनयपूर्ण स्वर में वह बोली—"बहन, सुनो, तुम मुझे देख लेने दो तो कैसा रहे?"

"तुम? हाय राम, कभी नहीं। तुम्हारी शादी नहीं हुई है।"

पालिन भोले-भाले ढंग से हँसने लगी।

"कोई हरज नहीं। मेरी बात मान लो। शायद मैं तुम्हारी तकलीफ दूर कर दूँ।"

"नहीं, मैं शरम से मर जाऊँगी। कभी तुमसे आँख नहीं मिला सकूँगी!"

ग्यारह बज जाने पर सब की चिन्ता पराकाष्ठा पर पहुँच गई। वेरोनिक हाथ में लालटेन लेकर वर्शमान्त के लिए रवाना हो गयी। लूसी के पैर बेहद थक गये थे। दो बार उसने चारपाई पर जाने की कोशिश की लेकिन पैरों को जैसे लकवा मार गया था। दीवार पकड़ कर काँपती हुई खड़ी रही। सारा शरीर पसीने से भीग गया। रह-रह कर अपने नितम्ब पीटने लगती, मानों उन्हें किसी भारी बोझ से मुक्त करना चाहती हो। पालिन उसके लिए कुछ भी करने में असमर्थ थी। लाचार होकर वह बवण्डर का-सा दृश्य देखती रही।

आधी रात के करीब पहियों की खड़ खड़ाहट सुनायी पड़ी। पालिन दौड़ती हुई नीचे आ गयी। "वेरोनिक क्या हुई?" लजारे और दायी को पहचान कर उसने दूर से ही पूछा—"क्या वह तुम्हें मिली नहीं?"

लजारे ने बताया कि मुझे घूम कर दूसरे रास्ते से आना पड़ा है। श्रीमती बोलान्द नौ मील दूर एक मजदूरिन को देखने गयी थीं। घोड़ा या गाड़ी वगैरह कुछ भी पास न होने पर नौ मील की दौड़ लगानी पड़ी। सौभाग्य से श्रीमती बोलान्द की अपनी गाड़ी थी, वर्ना अभी टापता ही रहता।

"उस मजदूरिन का क्या हुआ?" पालिन ने पूछा, "क्या सब ठीक हो गया? ..."

लजारे ने लड़खड़ाती हुई आवाज में उत्तर दिया—"वह औरत मर गयी।"

सभी भीतर आये। जीने पर रखी लालटेन धुंधली रोशनी दे रही थी। सभी खामोश थे। बोलान्द ने अपना लबादा खूंटी पर टाँग दिया। वह काले रंग की पतली और नाटी औरत थी। नाक जरूरत से ज्यादा ही लम्बी थी। हमेशा बुलन्द आवाज में बोलती और निरंकुश ढंग से काम करना पसन्द करती थी। इसीलिये गाँव के किसानों में उसकी काफी इज्जत थी।

"मेहरबानी कर के मेरे साथ चलो", पालिन बोली। "समझ में नहीं आता कि क्या उपाय करूँ? शाम से ही वह लगातार कराह रही है।"

अपने कमरे मे लूसी अब भी आलमारी के सामने खड़ी थी, दाई को देखते ही वह जोर-जोर से चिल्लाने लगी। दाई ने उससे तारीख, दर्द की जगह और उसके ब्योरे के बारे में कुछ सवाल पूछा। फिर थोड़े में बोली—"खैर जैसा है, देखा जायगा ... पूरी हालत जाने बिना मैं कुछ भी नहीं कह सकती हूँ।"

"क्या अब होने जा रहा है?" लूसी सिसकती हुई बोली। "हे मेरे भगवान्! आठवें महीने ही! मेरा ख्याल था कि अभी पूरा एक महीना बाकी है।"

बिना कुछ बोले श्रीमती बोलान्द तकियों को थप थपाती हुई उन्हें

बिस्तर के बीच में रखने लगी। लजारे भी ऊपर आ गया था। ऐसी हालत में वहाँ खड़ा रहने में उसे शरम महसूस हो रही थी। बहरहाल, वह अपनी पत्नी के पास गया और पसीने से तर उसके माथे को चूम लिया।

"इधर आओ, इस तरफ", दाई बोली।

लूसी भयभीत होकर पालिन की ओर निहारने लगी। वह इसका मतलब समझती थी। लजारे को लेकर वह बाहर चली गयी। दोनों आगे जाने में असमर्थ हो जीने पर खड़े हो गये। उनके कान कमरे की ओर लगे हुए थे। जहाँ से धीरे धीरे कराहने की आवाज़ आ रही थी। थोड़ी देर के लिये खामोशी छा गयी। दायी ने दरवाजा खोल दिया। लजारे और पालिन भीतर जाना चाहते थे। तभी दायी उन्हें पीछे धकेलती हुई बाहर आ गई।

"कैसी हालत है?" पालिन ने पूछा।

सीढ़ियों पर आकर वह बोली, "मामला नाजुक मालूम हो रहा है। मेरा फ़र्ज है कि घर वालों को आगाह कर दूँ।"

लजारे का मुँह फ़क हो गया। भर्राई हुई आवाज़ में बोला—"क्या बात है?"

"जहाँ तक मेरा अनुमान है, बच्चा बाँयें कन्धे के बल निकल रहा है। मुझे डर लगा रहा है कि हाथ पहले निकलेंगे।"

"तो?" पालिन ने पूछा।

"ऐसी हालत में डाक्टर का होना बहुत आवश्यक है। खास तौर से आठवें महीने बच्चा निकालने की जिम्मेदारी मैं नहीं ले सकती हूँ।"

थोड़ी देर के लिए सब चुप हो गये। फिर लजारे उदास होकर बोला: "मैं इतनी रात डाक्टर को कहाँ खोजूँ? ऐरोमांसे से तो डाक्टर लाने के पहले ही मेरी पत्नी का प्राण निकल जायगा?"

"मेरे ख्याल से जल्दी कोई खतरा नहीं है।" दाई ने उत्तर दिया। "चटपट चल दो...मैं अपने हाथ से कुछ नहीं कर सकती हूँ।"

सहसा निश्चय करते हुये, इस विश्वास के साथ कि लौटने पर पत्नी मरी हुई मिलेगी, लजारे रवाना हो गया ! जल्दी पहुँचने के लिये दाई का ही घोड़ा ले लिया, टापों की आवाज क्षण भर में ही गायब हो गयी।

रात दो बजने को आ गयी, लूसी ने कई बार लजारे के बारे में पूछा। उसे झूठ मूठ को बता दिया गया कि वह नीचे है। समय का ज्ञान उसे नहीं रह गया था। एक-एक क्षण युग के समान लगता। भीतर केवल वही चेतना थी की पीड़ा का कभी अन्त नहीं होगा और वास्तव में कोई भी उसकी सहायता करने का यत्न नहीं कर रहा है। सब को वह भला बुरा सुनाने लगी। दाई का मजाक उड़ाने लगी, पालिन और वेरोनिक की यह शिकायत करने लगी कि वे चुपचाप मुँह ताक रहे हैं। क्या करना चाहिये यह उन्हें सूझ ही नहीं रहा है।

श्रीमती बोलान्द कुछ बोली नहीं। यह जानते हुये कि डाक्टर अभी एक घण्टे तक नहीं आयेगा। वह बार-बार घड़ी की ओर देख लिया करती। फैलाव करीब-करीब पूरा हो गया था। किसी भी क्षण पानी गिरना शुरु हो सकता था। लूसी को आगाह करती हुई वह बोली— "अचानक भींग जाओ तो घबराना नहीं...और भगवान् के लिए हिलो-डुलो नहीं। अभी बहुत जल्दी कोई चीज नहीं होने वाली है।"

कुछ क्षणों तक लूसी अचेत पड़ी रही। मरोड़ों को सहने में उसे जान की बाजी लगा देनी पड़ रही थी। शिघ्र ही उसका साहस छूट गया। बदन की सारी ताकत लगा कर चारपाई से कूद पड़ी। ज्यों ही पैर जमीन पर पड़े। भीतर से कुछ निकलने की धीमी-सी आवाज हुई और चादर खून से तर हो गयी।

"घबराओ नहीं, धीरज धरो।" दाई दांत पीसती हुई बोली।

लूसी अगरचे पहले से ही आगाह कर दी गयी थी फिर भी चौकन्नी होकर अपने खून से तर दरी और चारपायी को ताकती रही। खून बहना जल्दी ही बन्द हो गया। चटपट वह चारपाई पर लिटा दी गयी।

राहत की साँस लेती हुई वह बोली-"हाय राम, यही मुझे इतनी तकलीफ दे रहा था। अब मेरा दर्द बिल्कुल बन्द हो गया है। जो कुछ होना था, हो गया। मुझे मालुम था कि आठवें महीने बच्चा नहीं होगा! अभी एक महीना बाकी है...तुम लोगों में से कोई भी यह नहीं जानता था।"

श्रीमती बोलान्द ने, यह कहते हुये कि प्रसव की असली पीड़ा तो अभी सामने है, उससे सिर न हिलाने की सलाह दी। पालिन को चारपाई की दूसरी ओर खड़ी रहने को कहा, ताकि लूसी को घबराहट की हालत में उठने से रोका जा सके। लेकिन दर्द फिर से शुरू हो जाने पर लूसी ने उठने की कोशिस नहीं की। अब ऐसा करने की न तो उसमें इच्छा रह गयी थी और न शक्ति उसका चेहरा मुर्झा गया। कुछ बोली नहीं। लगता था, जैसे मरने के लिए तैयार हो गयी हो। उसके उदर की सभी मांश पेशियाँ क्रियाशील थीं। यहाँ तक कि नितम्ब और जाँघें भी फड़क रही थीं। कँपकपी रोकना मुश्किल हो गया। दर्द की बार-बार उठने वाली हूलों से छाती से घुटनों तक का भाग थरथराने लगता।

"क्या कभी यह बन्द नहीं न होगा? हाय राम, कभी बन्द न होगा?" पालिन धीरे से बोली।

हर मरोड़ के बीच मिलने वाले थोड़े से आराम के बीच लूसी पानी पानी चिल्लाने लगती। गला इतना सूख गया कि साँस लेने में भी तकलीफ होने लगीं।

"मैं मर रही हूँ—पानी दो, पानी?"

वेरोनिक थोड़ा-सा नीबू का शर्बत ले आयी। लेकिन प्रायः ज्योंही वह प्याला ओठ से लगाती, पालिन उसे अलग खींच लेती। फिर से मरोड़ शुरू हो जाती और उसके हाथ काँपने लगते। उसे ऐंठन भी होती। बार बार वह उठ कर पेशाब करना चाहती। लेकिन दाई उसे डांटती हुई बोली: "चुप चाप पड़ी रहो। यह तुम्हारी मेहनत का ही

असर है। उठोगी तो कम से कुछ किया नहीं जायगा। फिर ऐसा करने से क्या फायदा है ?"

तीन बजे श्रीमती बोलान्द पालिन से अपनी चिन्ता छिपाने में असमर्थ हो गयी। चिन्ताजनक लक्षण प्रकट होने लगे। लूसी की शक्ति धीरे धीरे घटने लगी। कराहें धीमी पड़ गयीं। क्षण प्रति क्षण का विलम्ब खतरनाक मालूम होने लगा। एक बार पुनः वह बेसुध और यहां तक कि मूर्छित हो गयी।

"हुआ वही जिसका मुझे डर था," श्रीमती बोलान्द बोली, "क्या घोड़े की टांग टूट गयी ? अभी तक वे लोग आये नहीं ?"

होश आने पर लूसी एक नयी बेचैनी की शिकायत करने लगी।

"हाँथ बाहर आ रहा है", श्रीमती बोलान्द फुसफुसाई। "पूरा निकल आया है...लेकिन कन्धा अटक गया है। यह कभी भी बाहर नही आयेगा।"

साढ़े तीन बजे वेरोनिक ने खबर दी कि डाक्टर आ गया है। मरीज को नौकरानी की निगरानी में छोड़ कर पालिन और श्रीमती बोलान्द नीचे चली आयीं। लजारे घोड़े को बुरी तरह कोस रहा था। यह सुनने पर कि पत्नी अभी जीवित है, उसकी जान में जान आ गयी। डाक्टर कैजनोव श्रीमती बोलान्द से पूंछ-तांछ करता हुआ जल्दी-जल्दी जीना पार करने लगा।

"तुम्हारे एकायक सामने जाने पर वह डर जायगी।" पालिन ने उससे जीने पर कहा। "यहीं रुके रहो, ताकि मैं उसे आगाह कर दूँ।"

"लेकिन जल्दी करो, बहुत जल्दी !"

पालिन अकेली भीतर गयी। और लोग दरवाज़े पर खड़े रहे।

"बहन", वह समझाती हुई बोली। "जानती हो, डाक्टर ने कल आकर तुम्हें देखा था। उसे कुछ शक है और वह अभी-अभी आया है ... अच्छा हो कि तुम उसे देख लेने दो !"

लूसी ने मानों कुछ सुना ही नहीं। विक्षिप्त-सी वह तकिये पर इधर

से उधर सिर हिला रही थी, अन्ततः सामने देख कर बोली ? "जैसी तुम्हारी मर्जी । हे भगवान् , अब किस बात की परवाह करूँ ? कुछ भी बाकी नहीं है ।"

डाक्टर सामने आ गया । दायी ने पालिन और लजारे को नीचे भेज दिया । वे चुप चाप चले आये । नीचे भोजन के कमरे में शैन्ते सो रहा था । पालिन ने बुझती हुई लालटेन तेज कर दी । "उसे जगाओ मत", वह फुस फुसाई, "उसके जानने की जरूरत नहीं है ।"

वह चुप चाप कुर्सी पर बैठ गई । लजारे स्तब्ध खड़ा रहा । प्रतीक्षा की भयंकर घड़ियाँ प्रारंभ हो गयीं । दोनों में से कोई कुछ बोला नहीं । नेत्रों में चिन्ता की रेखायें भी नहीं थीं । आँखें मिलने पर वह मुँह फेर लेते । ऊपर से कोई भी आवाज़ नहीं आ रही थी । कान व्यर्थ ही खड़े थे । इस घोर, कठोर शान्ति, मृत्यु की शान्ति, ने ही दीर्घकालिन बन कर उन्हें भय से आक्रान्त कर दिया । क्या हो रहा है ? हमें क्यों दूर कर दिया गया ? सामने कराहें और चीखें ही सुनते ! जीवन का कुछ चिह्न देखते ही रहते ? क्षण पर क्षण बीतते रहे और घर इस शून्यता में और भी गहरे डूब गया । आखिरकार दरवाज़ा खुला और डाक्टर कैजनोव बाहर आया ।

"क्या हुआ ?" लजारे ने व्यग्र हो कर पूछा ।

डाक्टर ने तत्काल उत्तर नहीं दिया । लालटेन की मन्द, धुंधली रोशनी में उसका झुर्रियों से भरा पीला-सूखा चेहरा भी साफ-साफ नहीं दिख रहा था । किन्तु मुँह खोलते ही बेचैनी का कुहरा छँट गया ।

"हूँ, अभी तक मैंने कुछ किया नहीं", उसने उत्तर दिया । "तुम लोगों से बिना पूछे मैं कुछ भी नहीं करना चाहता हूँ ।"

"लेकिन फैसला करने वाले हम लोग नहीं है, डाक्टर", पालिन बोली, "हम लोगों ने उसे तुम्हारे हाथों में सौंप दिया है ।"

वह अपना सिर झटकने लगा । एक दर्दनाक घटना याद हो आयी । नीग्रो औरत थी । उसके बच्चों का भी, इसी तरह, कन्धा पहले

निकला था और हाड़-मांस की उस गठरी को जनम देते समय ही उसकी देह ठण्डी हो गयी थी।

"मैं हर एक बात साफ-साफ बता देना चाहता हूँ," वह आगे बोला, माँ और शिशु दोनों ही संकट में हैं ... कदाचित् इनमें से किसी एक को ही बचाने का समय रह गया है।"

लजारे और पालिन को मानों साँप सूंघ गया। शैन्ते की भी आँख खुल गई थी। चौंधियाई आँखों से आतंकित होकर वह सामने होने वाली बातें गुड़ुर-गुड़ुर सुन रहा था।

"किसे बचाने की कोशिश करूँ?" डाक्टर जिस दयनीय प्राणी के बारे में पूँछ रहा था, उसी की भाँति कांपता हुआ दोबारा बोला, "बच्चे या मां को?"

"किसे? हे भगवान!" लजारे चिल्लाया-"मैं नहीं बता सकता!"

आंसुओं से उसका गला रूँध गया। पालिन इस भयानक विकल्प के उपस्थित हो जाने पर स्तब्ध होकर मौन बनी खड़ी रही।

अगर कुछ और आजमाने की कोशिश करूँगा तो बच्चा शायद रास्ते में ही फँस जायगा। मां पर बोझ डालने से मैं डर रहा हूँ। लम्बे अर्से से वह दर्द बर्दाश्त कर रही है। उसे बेहोश कर देने से बच्चा बच जायगा लेकिन अभागी औरत की हालत देखते हुये ऐसा करने की मुझे हिम्मत नहीं हो रही है। प्रश्न विवेक का है और मैं तुम लोगों से अपनी ओर से राय देने के लिए हाथ जोड़ रहा हूँ।"

सिसकियों के कारण लजारे बोलने में असमर्थ था। शैन्ते अब भी मूढ़ की भांति ताक रहा था। केवल पालिन जैसे-तैसे बोली:

"तुम नीचे क्यों चले आये?...कुछ जानने और करनेवाले जब तुम्हीं अकेले हो तो हमे इस तरह क्यों कुरेद रहे हो!"

उसी समय श्रीमती बोलान्द ने आकर बताया कि हालत बिगड़ती जा रही है।

"फैसला कर लिया? वह और शक्तिहीन होती जा रही है!"

फिर माथे का पसीना पोंछते हुये डाक्टर ने लजारे को अपनी गोद में खींच लिया। उसके बाल सहलाता हुआ बोला :

"सुनो, मैं दोनों को ही बचाने की कोशिश करूँगा, और अगर कुछ अशुभ हुआ तो मुझे तुम लोगों से भी अधिक दुःख होगा। क्योंकि मैं उसे अपनी ही त्रुटि मानूँगा।

संक्षेप में उसने क्लोरोफार्म देने के बारे में विचार विमर्श किया। दवा वह अपने साथ ले आया था किन्तु कुछ खतरनाक अलामतें देखकर उसका इस्तेमाल करने से डर रहा था। मरीज की कमजोर नाड़ी देखकर वह पशोपेश में पड़ गया। इसीलिए वह और लोगों को भीतर आने से रोकने लगा। दाई उसकी इस सलाह का विरोध करने लगी।

"मैं हर साल दो सौ औरतों को बच्चा पैदा कराती हूँ," वह घृणा से अपने ओठ काटती हुई बोली—"क्या उन्हें किसी दवा की जरूरत पड़ती है?...वे दर्द सह लेते हैं। हां, सभी औरतें दर्द सह लेती हैं।"

"आओ, सब लोग ऊपर आओ," डाक्टर बोला, "मुझे तुम लोगों की जरूरत पड़ेगी...और हाँ, तुम लोग मेरे पास खड़े रह सकते हो।"

भोजन के कमरे से सब लोगों के चलते समय शैन्ते अपने बेटे को पुकारता हुआ बोला : "बेटा, आओ मैं तुम्हें प्यार कर लूँ...हाय, बेचारी लूसी का क्या होगा? जिसकी आशा न हो, उसके होने पर कितना दुःख होता है? काश, कि दिन होता! सब ठीक होने पर मुझे बता देना!"

ऊपर जाकर डाक्टर कैजनोव ने बगल वाले श्रीमती शैन्ते के पुराने कमरे में काफी आग जलाने के लिये कहा। बच्चा निकलने के बाद इसकी जरूरत पड़ सकती थी। वेरोनिक फौरन आग जलाने चली गयी। सभी चीजें दुरुस्त की गयीं। अँगीठी के सामने नया परदा टाँग लिया गया। पानी का दूसरा घड़ा मँगाया गया। गरम पानी की केतली,

ब्राण्डी की बोतल और तश्तरी भर सुअर की चर्बी एकत्र की गयी। मरीज को तसल्ली देना डाक्टर का फर्ज़ बन गया।

"प्यारी बच्ची", वह लूसी के सिर पर हाथ रखता हुआ बोला। "घबराओ नहीं, तुम्हारी मदद करना मेरे लिये निहायत जरूरी बन गया है ... हमारे लिये तुम्हारी जान बहुत कीमती है और अगर बेचारा बच्चा खतरे में है तो हम लोग तुम्हें इसी हालत में ज्यादा वक्त तक नहीं छोड़ सकते हैं। ... बोलो, क्या तुम मुझे हाथ लगाने दोगी?"

लूसी मानों अब कुछ भी नहीं सुन रही थी। बिस्तर पर तनी हुई अचेत सी पड़ी थी। सिर बाईं ओर घूम गया था। मुँह खुला था। धीरे धीरे कराहने लगती थी। पलकें खुलने पर वह चौकन्नी होकर छत की ओर देखने लगी। ऐसा लगा मानों किसी अपरिचित स्थान में पहुँच गयी हो।

"मुझे हाथ लगाने दोगी?" डाक्टर ने दोबारा पूछा।

लड़खड़ाती जुबान से वह बोली: "मार डालो चटपट मुझे मार डालो।"

"जल्दी करो, मैं तुम्हारे पाँव पड़ रही हूँ।" पालिन ने डाक्टर से फुसफुसाते हुये कहा। "हम यहाँ सभी बातों के लिए जिम्मेदार हैं।"

फिर भी वह हिचकिचाता हुआ लजारे से बोला: "खून का बहना बन्द हो जाय तो मैं इसके लिए पूरा भरोसा दे सकता हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि बच्चा खत्म हो गया है। इन हालतों में दस में नौ बच्चे तो मर ही जाते हैं, क्योंकि उन्हें बराबर दर्द सहना पड़ता है, चोटें लग जाती हैं और कभी-कभी तो एक दम ही मुरेर उठते हैं।" "अपना काम शुरू करो डाक्टर, अपना काम शुरू करो", लजारे ने उत्तर दिया। "देर करना ठीक नहीं है। जो कुछ करना है, जल्दी करो।"

छोटी चारपाई काफ़ी मजबूत नहीं समझी गयी। जवान औरत बड़े बिस्तर पर लिटा दी गयी। तकियों के सहारे उसका सिर दीवार की ओर

लटका हुआ था। जाँघें फैला दी गयीं और पैर दो छोटी-छोटी आराम कुर्सियों के हत्थों पर रख दिये गये।

"अब ठीक है", इन्तजाम पूरा करता हुआ डाक्टर बोला। "हमें कोई परेशानी नहीं होगी। तुम लोग एक काम करना। यह हाथ पैर हिलाये तो पकड़ लेना!"

लूसी बेहोश हो गई। निश्चल और गतिहीन पड़ी रही। विरोध की शक्ति लुप्त हो गयी। दुर्निवार पीड़ा ने लज्जा और कष्ट की दशा में नग्न देखे जाने के संकोच को आत्मसात् कर लिया। अपनी नग्नता और छूने वाले हाथों का उसे तनिक भी ज्ञान नहीं रह गया। इतनी शक्तिहीन हो गयी कि उँगली तक भी नहीं हिला सकती थी। गले तक की सारी देह नग्न थी। पेट ऊपर से बिल्कुल खुला हुआ था। प्रसव के खुले चिह्न खून के धब्बों को पोंछ कर टाँगें फैला दी गयीं।

"श्रीमती बोलान्द एक जाँघ पकड़ लें", डाक्टर काम जारी रखता हुआ बोला। "और पालिन तुम दूसरी जाँघ पकड़ लो। डरो नहीं। कसकर पकड़ लो। हिलने न पाये ... और लजारे, तुम मुझे लालटेन दिखाओ!"

सब ने उसकी बातों पर अमल किया। लूसी की नग्नता का उन्हें भी ध्यान नहीं रह गया था। प्रेम के सभी भावों की हत्या कर देनेवाले जन्म के नाटकीय संघर्ष के अलावा उन्हें कुछ भी नहीं दिखाई पड़ रहा था। रोशनी में ऐसे पाशविक ढंग से उघाड़ देने से उस कोमल चर्म का, उसके गुप्त स्थान का सारा रहस्य लुप्त हो गया था। पीड़ा सहती हुई मानवता, रक्त और गन्दगी के बीच घटित होने वाले शिशु-जन्म, जननी के फूटने की सीमा पर पहुँचे तने गर्भाशय, किसी पेड़ के तने पर कुल्हाड़ी के घाव की तरह पीड़ा से फैले लाल छिद्र और उससे बहने वाले जीवन-रक्त के अतिरिक्त सामने कुछ नहीं था, कुछ भी नहीं था।

कोट उतारने और बाँयें हाथ के कमीज की बाँह कुहनी के ऊपर चढ़ा लेने पर भी डाक्टर की हिचक अभी बनी हुई थी।

"बहुत देर तक हम रुके रहे हैं। हाथ भीतर ले जाना कठिन होता जा रहा है ... देखो, कन्धा अब भी अटका हुआ है।"

फूले, तने पुट्ठों और माँस की गुलाबी तहों के बीच बच्चा दिखाई पड़ रहा था। लेकिन वह बीच में ही अटक गया था। अंग के सँकरेपन के कारण बाहर नहीं निकल रहा था। मांस पेशियाँ उसे बाहर धकेलने में सक्रिय थीं। यहाँ तक कि अचेत जननी भी ज़ोर लगा रही थी। बच्चे का हाथ छिद्र के बाहर लटक रहा था। नन्हें, काले उस हाथ की उँगलियाँ कभी खुलती, कभी बन्द हो जातीं, मानों वे जीवन को पकड़ने के प्रयत्न में संलग्न हों।

"पैर थोड़ा फैल जाने दो", श्रीमती बोलान्द ने पालिन से कहा। "इसे पकड़े रखने की जरूरत नहीं है।"

डाक्टर कैजनोव दोनों घुटनों के बीच खड़ा था। उसके पीछे लजारे इतना काँप रहा था कि हाथ की लालटेन बार-बार हिल जाती थी।

"प्यारे भाई", डाक्टर बोला। लालटेन मेज पर रख दो। मुझे देखने में अड़चन नहीं होगी। डाक्टर घुटने के बल बैठ गया। दाहिना हाथ पेट के ऊपर रख कर बाँया हाथ भीतर लेजाने की युक्ति करने लगा। अपनी उँगलियों की खातिर जगह करने के लिये बच्चे का हाथ पीछे खिसकाना पड़ा। उसके बाद अपनी उँगलियों को पच्चड़ की तरह फैलाते हुये धीरे-धीरे कलाई तक पूरा हाथ भीतर डाल दिया। बच्चे के घुटनों और फिर पैरों की तलाश में हाथ गहराई तक धँसा दिया। दूसरे हाथ से पेट के निचले हिस्से को मजबूती से दबा रखा। किन्तु सारा प्रयत्न निष्फल रहा।

थोड़ी देर तक खामोशी छाई रही! लूसी यह नहीं बता सकती थी कि उसके ऊपर क्या बीत रही है। चेहरा इतना बदरंग हो गया था कि पालिन उसे बहुत मुश्किल से पहचान सकती थी। लूसी पुनः अचेत हो गयी। लगता था मानों वह मर गयी हो और मांसपेशियों ने काम बन्द कर दिया।

डाक्टर मुस्तैदी के साथ अपने काम में लगा रहा। उसकी जवानी की ताकत और फुर्ती नहीं रह गयी थी, फिर भी निपुणता बनी हुई थी।

"हमारी कामयाबी काफ़ी नजदीक आ गयी है—मेरे ख्याल से कोई गड़बड़ी नहीं है। बच्चे के दिल की धड़कन अभी चल रही है... लेकिन हम अभी उसे पूरा तलाश नहीं पाये हैं।"

क्षण भर बाद वह हँसता हुआ खड़ा हो गया। वेरोनिक से तौलिया माँग कर हाथ पोंछने लगा। चुटकी-सी लेता हुआ लजारे से बोला :

"काम करीब करीब पूरा हो गया है, मेरे बच्चे। भगवान के लिए हिम्मत से काम लो!"

लजारे तनिक भी हिला नहीं, श्रीमती बोलान्द यह देख कर चिन्तित थी कि मांसपेशियां निष्क्रिय हो गयी हैं। दबी जुबान से उसने डाक्टर से इसका जिक्र किया। वह जोर से जवाब देता हुआ बोला :

"मुझे भी यही आशंका थी, इसे सहारा देना होगा।" और वह लूसी से बोला, "बदन ढीला मत करो। मरोड़ के वक्त भीतर से जोर लगाओ। तुम्हारे सहयोग से मेरा काम बहुत आसान हो जायगा।"

किन्तु उसकी मुखाकृति से प्रकट हो रहा था कि वह नितान्त शिथिल हो गयी है। धीरे धीरे वह कराह रही थी; "किसी भी अंग में ताकत नहीं रह गयी है। मैं एक दम थक गयी हूँ।"

"प्यारी बहन," पालिन चूमती हुई बोली, "अब तुम्हारी पीड़ा समाप्त प्राय है, थोड़ा साहस से काम लो!"

डाक्टर पुनः झुक गया। दोनों स्त्रियों ने फिर से जाँघें पकड़ ली! वेरोनिक गरम तौलिया ले आयी। डाक्टर उन्हें बच्चे के पैर में लपेट कर बहुत मुलायमियत से, बहुत धीरे-धीरे उसे खींचने लगा। बच्चे के थोड़ा बाहर आ जाने पर डाक्टर उसके पंजों, घुटनों और क्रमशः बाहर निकलनेवाले एक-एक अंग को फैलाता गया। चूतड़ दिख जाने पर मां के पेट पर दबाव डालना बन्द कर दिया और उसके कूल्हे

सहलाने लगा। लाल माँस की पर्तों को चौड़ा करता हुआ बच्चा धीरे धीरे सरक रहा था। माँ अभी तक शान्त थी। सहसा दर्द तेज हो जाने पर छटपटाने लगी। सारा शरीर थर-थर कांपने लगा। इतने जोर से हिली कि अपनी बहन की गिरफ्त से छूट गयी और बच्चा डाक्टर के हाथ से खिसक गया।

"सावधान!" वह चिल्लाया। "कसकर पकड़ लो! जरा भी हिलने न पाये।"

वह पुनः फुर्ती के साथ बच्चे के निकलने का रास्ता ठीक करने लगा।

"सिर्फ सिर बाकी रह गया है," डाक्टर काँपती हुई आवाज़ में बोला, "माँ जब तक हिल रही है, तब तक मुझे इसे छूने की हिम्मत नहीं हो रही है···मरोड़ फिर शुरु हो गयी है। इस लिये शायद खुद मां ही इसे उगल देगी। थोड़ा-सा इन्तजार करने की ज़रुरत है।"

वह फर्श पर बैठ गया। श्रीमती बोलान्द मां को पकड़े हुये बच्चे पर आँख लगाये रही। खून से लथपथ जाँघों के बीच में वह लटका था। नन्हें नन्हे अवयव धीरे-धीरे काँप रहे थे। फिर सारी हरकतें बन्द हो गयीं। सभी लोग आतंकित हो उठे। डाक्टर खड़ा हो गया। मां का पेट धीरे-धीरे सहलाने लगा। कुछ यातनापूर्ण क्षणों के बाद लूसी इतने जोर से चिल्लायी कि बच्चे का सिर बाहर निकल गया।

"शाबाश!" कैजनोव उछल कर बोला। "यह डींग मार सकता है कि मैं दुनिया में आसानी से नहीं आया हूँ।"

हर्ष-विह्वलता में किसी ने शिशु का लिंग जानने की चिन्ता नहीं की।

"लड़का है, जनाब," श्रीमती बोलान्द ने बच्चे के बाप से कहा।

लजारे दीवार की ओर मुंह फेरकर सिसकने लगा। चारों ओर से निराशा के अथाह अन्धकार ने उसे आत्मसात कर लिया। उसका

विचार था इस नये प्राणी के जन्म से वह मृत्यु की-सी उदासी का अनुभव करने लगा।

पालिन ने दोबारा झुककर लूसी का माथा चूम लिया।

"आओ, इसका चुम्बन लो," वह अपने भाई से बोली।

लजारे लूसी के निकट जाकर उसका मुंह निहारने लगा। गालों को छूते ही वह भयभीत होकर काँपने लगा। सारी देह पसीने से भींग गयी। पत्नी की आँखें मुंदी थीं और सांस बन्द थी। दीवार से सिर टिका कर वह पुनः पागलों की तरह रोने लगा।

"शायद बच्चा मर गया है," डाक्टर दबी जुबान से बोला।

बच्चा पैदा होने पर न रोया था और न उसने हाथ पैर फेंके थे। वह आसमानी काले रंग का था। कहीं कहीं नीलापन लिये हुये था। अठवांसा होने के कारण जरुरत से ज्यादा बड़े सिर के साथ बहुत छोटे कद का था।

"यह जा चुका है, ।" कैजनोव ने कहा। "शायद सहलाने और इसके भीतर साँस फूंकने से कुछ फायदा हो, लेकिन मेरे ख्याल से सब बेकार ही रहेगा।...इसे छोड़कर मां की ओर ध्यान देना बहुत जरुरी है।।"

पालिन सुन रही थी।

"बच्चा मुझे दे दो," वह बोली। "कोशिश करूँगी...इसकी साँस न चली तो समझूँगी कि मुझमें ही सांस नहीं रह गयी है!"

ब्राण्डी की बोतल और कुछ कपड़ा साथ लेकर वह बच्चे को बगल के कमरे में उठा ले गयी। प्रसव के कारण लूसी को नये सिरे से दर्द होने लगा। श्रीमती बोलान्द ने उसकी जांघ धोकर चादर उढ़ा दी। डाक्टर ने देख लिया था कि भीतर खून नहीं रह गया है, फिर भी रक्त स्राव की आंशका उसके मन में बनी हुई थी। इसके अतिरिक्त मरीज की कमजोरी और उसका ठण्डा पसीना भी चिन्ता का विषय बन गया था। मुंह तक चादर ओढ़े वह निश्चेष्ट लेटी थी।

डाक्टर अब भी नाड़ी की परीक्षा कर रहा था।

"यहीं रहो।" वह दाई से बोला। "बिना पक्का यकीन हुये मैं इसके पास से नहीं हटूँगा।"

गलियारे के दूसरी ओर, श्रीमती शैन्ते के पुराने कमरे में पालिन साथ ले आये अभागे शिशु के श्वास-अवरोध से जूझ रही थी। आग के सामने आराम कुर्सी पर उसने बच्चे को लिटा दिया और शराब में डुबाये फाहे से उसके बदन पर मालिश करने लगी। बच्चा इतना कमजोर और दुबला-पतला था कि तेज हाथ चलाने से मर जाने की आशंका थी। प्रत्येक नन्हें अवयव में जीवन का संचार कराने के लिए पेट के बल लिटा दिया। फिर भी उसमें स्पन्दन नहीं हुआ। मालिश से बदन गरम हो गया, लेकिन सीना खोखला ही बना रहा।

चिपचिपे, बिना धोये मुंह के स्पर्श से हिचके बिना उसने अपना मुंह बच्चे के नन्हें मुंह के भीतरी हिस्से से लगा दिया। उसके सँकरे फेफड़े की क्षमता के अनुसार लम्बी और धीमी साँसें छोड़ने लगी। अपनी दम घुटने का अनुभव करने पर कुछ क्षणों को रुक जाना पड़ा, इसके बाद पुनः वही किया आरम्भ कर दी। खून सिर पर चढ़ गया, कान भन्नाने लगे और वह मूर्छा का-सा अनुभव करने लगी। फिर भी प्रयत्न से मुंह नहीं मोड़ा। तनिक भी उत्साहवर्द्धक परिणाम न देखते हुये आधे घण्टे से अधिक समय तक अपनी सांस देती रही। जब सांस फूंकती तो दुर्बल, मृत्यु जैसी रुग्णता के अतिरिक्त और किसी वस्तु के स्वाद का अनुभव न होता। उँगलियों के पोरों से सहलाते हुये बच्चे की बाहों में गति लाने का प्रयत्न निष्फल रहा। कोई भी उपाय काम न आया। अन्य कोई व्यक्ति बहुत पहले ही हार मान कर बैठ गया होता। किन्तु नन्हें से शिशु को जन्म देने के लिए प्रसव-पीड़ा सहन करने वाली जननी की अडिग दृढ़ता के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन करती रही। बच्चे को वह जीवित करना चाहती थी और अन्ततः उसकी अदम्य आकांक्षा की विजय हुई, बहुत धीमे-धीमे बच्चे की सांस

चलने लगी। प्रायः एक घण्टे तक इस संघर्ष की उन्मादक व्यग्रता के अतिरिक्त सब कुछ भूल कर वह कमरे में जमी रही। जीवन के उस क्षीण लक्षण ने उसके रोम-रोम में स्फूर्ति उड़ेल दी। छोटे-छोटे अंगों की पुनः मालिश करने लगी, तनिक सी भी कोताही किये बिना, दान शीलता के उन्माद में अपनी सांसें फूँकती रही। वह चाहती थी विजयिनी बनना, जीवन का निर्माण करना। एक बार ऐसा मालूम हुआ कि गलती हो गयी है, क्योंकि जिन ओठों को अपने ओठों से दबाये थी वे निश्चेष्ट ही बने हुये थे। एक बार पुनः उसे तीव्र ऐंठन दिखाई पड़ी। बहुत धीरे-धीरे सांस भीतर जा रही थी। उसी से यह सांस निकाल रही थी और वही यह सांस ले रही थी। स्वयं अपने सीने के भीतर उसने अनुभव किया कि दिल नियमित रुप से फड़कने लगा है और उसका मुंह बच्चे के नन्हें मुँह के साथ चिपक गया है। नन्हें से प्राणी के जीवन में उसका भी भाग था। विभाजित आत्मा की भाँति उनके बीच एक ही स्वाँस प्रवाहित हो रही थी। पीप और गन्दगी से पालिन के ओठ चिपचिपे हो गये थे, किन्तु बच्चे को जीवित करने की प्रसन्नता ने घिन को दबा दिया था।

क्षीण, दीन रुदन सुन कर वह हर्ष विह्वल हो आराम कुर्सी के सामने फैल कर बैठ गयी। तेज आग की बड़ी-बड़ी लपटें उठ रही थीं। कमरा रोशनी से जगमगा रहा था। पालिन बच्चे के सामने फर्श पर बैठी थी। अभी बहुत ध्यान से उसे नहीं देखा था। कितना मरियल था वह! भाग्यहीन अधबना प्राणी! उसका खून उबलने लगा, लूसी ने लजारे को कैसा बेहूदा बच्चा दिया है! उसका दीप्तमान स्वास्थ्य चारों ओर से विद्रोह करने लगा। अपने कूल्हों और उदर को वह हसरत की निगाह से देखने लगी। हृष्ट पुष्ट शिशु के जन्म देने के लिए उसकी देह कितनी सुघड़ और मजबूत थी! अपने शापित जीवन और वन्ध्या बने रहने का दण्ड पाये हुये नारीत्व का ध्यान आते ही अथाह अनुताप से वह अभिभूत हो उठी। नवजात शिशु को देख कर वही उन्माद पुनः भड़कने

लगा जो कि विवाह की रात को दिल के टुकड़े-टुकड़े कर गया था। प्रातः काल जागने पर उसने देखा था कि मैं खून से भींग गयी हूँ, जीवन की उर्वरता व्यर्थ ही स्खलित हो गयी है। इस समय भी उसने अनुभव किया कि यह भीतर-भीतर गँदले पानी की तरह बह रहा है। मैं कभी माँ नहीं बनूँगी! अच्छा होता कि शरीर का सारा रक्त इसी तरह बह जाता! जीवन के निर्माण में इसका उपयोग तो होगा नहीं! मेरा मांसल यौवन किस काम आयेगा? रस से अप्लावित ये अंग, ये मांस पेशियाँ क्यों हैं? बिना जुते खेत की तरह मैं पड़ी रहूँगी। उपेक्षित रह कर अपने आप ही सूख जाऊँगी। कुर्सी पर पड़े नंगे कीड़े की तरह दयनीय शिशु के स्थान पर वह उस हृष्ट-पुष्ट बालक की कल्पना करने लगी जो कि उसके विवाह के बाद पैदा हुआ होता। निराश होकर वह उस बच्चे के लिए रोने लगी, जिसे कि कभी जन्म नहीं दे सकेगी।

बच्चा अब भी बिलख रहा था। हाथ-पैर फेंकने लगा। पकड़ न लेने पर गिर जाने का भय था। ऐसी असहायता और दुर्बलता का दृश्य देख कर उसकी ममता तिल-मिला उठी। मैं कम से कम उसे शान्त तो कर सकती हूँ, जिस तरह पैदा होने में सहायता की है, उसी प्रकार जीने में भी सहायता कर सकती हूँ। स्वयं को भूलकर उसने बच्चा गोद में उठा लिया, अब भी अपने अतृप्त मातृत्व के लिए विलाप करते हुये और समस्त जीवों की पीड़ा के प्रति करुणा का अनुभव करते हुये, उसे पुचकारने लगी।

श्रीमती बोलान्द खबर सुनते ही बच्चे को नहलाने में मदद करने के लिए दौड़ पड़ीं। गरम कपड़े से पहले उसे लपेट दिया, फिर नहला धुला कर और नये वस्त्र पहना कर बड़ी चारपाई पर लिटा दिया। बच्चे को अब भी जीवित देख कर दाई चकित हो उठी। अच्छी तरह जाँच भाल करने के बाद बताया कि दुर्बलता के कारण उसका पालन-पोषण करने में बहुत कठिनाई होगी। फिर वह लूसी के पास चली गयी।

पालिन बच्चे के पास लेट गयी। उसकी करामात की खबर पाकर

लजारे भी कमरे में पहुँचा। "आओ, इसे देखो तो," वह गद्गद् होकर बोली।

नज़दीक जाने पर उसके पैर काँपने लगे: "हाय राम! तुमने इस चारपाई पर इसे लिटा दिया है?" उसके माथे पर पसीने की बूंदें चमकने लगीं। यह वीरान कमरा, कभी-कभी ही जिसमें कोई प्रवेश करता था, जिस पर अब भी शोक की छाया मँडरा रही थी, विश्रामदायक और चमचमाते हुये स्थान के रूप में परिणित हो गया था। सामान अब भी उसी स्थान पर पड़े थे, घड़ी अब भी सात बज कर सैंतीस मिनट का समय बता रही थी और श्रीमती शैन्ते की मृत्यु के बाद किसी ने भी उसमें निवास नहीं किया था। इसी चारपाई पर उसने आखिरी साँस ली थी और आज इसी पर उसका नवजात पुत्र लेटा हुआ था।

"बुरा मान गये?" पालिन ने हैरत से पूँछा।

उसने सिर हिला दिया। भावावेश के कारण उसकी वाक् शक्ति लुप्त हो गयी थी। अन्ततः हकलाता हुआ बोला, "मैं मां के बारे में सोच रहा हूँ।... वह चली गई, अब यह दूसरा जीव भी उसी की तरह चला जायगा। यह ... यह दुनिया में क्यों आया?" सिसकियों से उसका गला रुँध गया। लूसी की बीमारी के बाद से जीवन के प्रति उसका भय और अनुताप उसे भीतर ही भीतर तोड़ता आ रहा था। शान्त बने रहने की चेष्टा के बावजूद अन्तर्मन की ज्वाला बराबर धधकती आ रही थी। बच्चे के सिकुड़े माथे पर ओठ रखते ही, उसकी कोमलता के विचित्र अनुभव से वह पीछे हट आया। "चिन्ता मत करो", पालिन उसे आश्वासन देती हुई बोली। "हम इसे हृष्ट पुष्ट बना लेंगे...इसके इतना छोटा होने से कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।"

क्षण भर वह अपलक पालिन की ओर निहारता रहा।

"इसके जीवन के लिए हम तुम्हारे ऋणी हैं! मुझे सदैव तुम्हारा ऋणी बना रहना है।" "मेरा ऋणी! मैंने तो केवल वही किया जो खाली रहने पर दाई किये होती।"

लजारे उसे चुप रहने का संकेत करता हुआ बोला : "क्या मैं इतना नीच हूँ कि तुम्हारा उपकार भी भूल जाऊँगा ? जो कुछ मेरे पास है, तुम्हारा ही दिया हुआ है ... इस घर में पाँव रखते ही तुम निरन्तर, बलिदान करती चली आ रही हो। तुम्हारे रुपयों के बारे में कुछ और नहीं कहूँगा, लेकिन मुझे लूसी के हवाले करते हुये भी तुम्हारे दिल में मेरे लिये प्रेम बना हुआ था। यह रहस्य मुझ पर अब प्रकट हुआ है। ... काश, तुम यह जान सकती कि तुम्हारी ओर देखने पर, सब बातें याद करने पर, मैं कितनी शर्म महसूस करता हूँ। जिस वक्त मैं तुम्हारा दिल तोड़ रहा था, उस वक्त भी तुम अपना खून बहाकर दयालु और प्रसन्न बनी रह सकती थी। उफ़, तुम्हारा ही कहना ठीक है। दयालुता, और प्रसन्नता के अतिरिक्त सब कुछ नगण्य है, दुःस्वप्न मात्र है।"

पालिन ने बीच में बोलना चाहा, किन्तु वह कहता गया। "अपनी उद्धत अकर्मण्यता और वृथा अभिमान तथा कायरतावश अन्धकार में अकड़ते रहने की मनोवृत्ति के साथ मैं कितना मूर्ख रहा हूँ। यदि हमारा जीवन मटियामेट हो गया है, तुम्हारा, मेरा और समूचे परिवार का जीवन मटियामेट हो गया है तो सब मेरा ही अपराध है...हाँ, केवल तुम्हीं बुद्धिमान रही हो। सभी यदि अच्छे स्वभाव के हों और लोग एक दूसरे के लिए जियें तो जीवन कितना सरल बन जाता है!...संसार दुर्गति से विदीर्ण हो सकता है, किन्तु इस पर दया करते हुये इसे साहस और प्रसन्नता के साथ विदीर्ण हो जाने दो!"

उसके विचारों की उग्रता पर पालिन मुस्कुराने लगी और दोनों हाथों से उसे पकड़ लिया।

"आओ, विश्राम करो...अब अगर यह मान रहे हो कि मैं सही हूँ तो तुम अपने तौर तरीके बदल दोगे और सब काम अच्छी तरह चलने लगेगा।"

"उफ़, हां मैं अपने तौर तरीके बदल दूँ! मैं इसे ठीक अब कह रहा हूँ क्योंकि समय-समय पर सत्य प्रकट हो जाता है। किन्तु कल मैं

पुनः अपनी पुरानी दुर्गति की ओर लौट आऊँगा। क्या लोग बदल सकते हैं ? नहीं, चीजें बेहतर नहीं बनतीं; इसके खिलाफ वे बदतर से बदतर बन जाती हैं। यह तुम जानती हो और मैं भी...मुझे भड़कानेवाली चीज खुद मेरी बेवकूफी ही है !"

प्यार से उसे अपने निकट खींचती हुई वह संजीदा होकर बोली : तुम न तो बेवकूफ हो और न नीच, केवल अप्रसन्न हो...मुझे चूमलो, लजारे !"

अभागे छोटे प्राणी के सामने, जो कि सम्भवतः सो गया था, ओठ ओठों से मिल गये।

यह चुम्बन था एक बहन और भाई का, जहाँ वासना का वह तनिक भी पुट नहीं था जिसने अभी कल ही उन्हें लोलुप बना दिया था।

अरुणोदय की सुनहली किरनें फूट रही थीं। कैजनोव बच्चे को देखने आया, उसे ऐसी अच्छी हालत में पाकर दंग रह गया। उसने उसे दूसरे कमरे में ले जाने की सलाह दी क्योंकि उसका विश्वास था कि लूसी अब खतरे से बाहर हो गयी है। बच्चा जब मां के सामने लाया गया तो उसने फीकी मुस्कुराहट के साथ उसका स्वागत किया, फिर आँखें मूँदकर वह गहरी नींद में डूब गयी। खून की गन्ध बाहर निकालने के लिए खिड़की जरा सी खोल दी गयी थी। लूसी की चारपाई के पास सभी थके-माँदे प्रसन्न मुद्रा में चुपचाप खड़े थे। अन्ततः भारी कदमों से सब बाहर चले गये। उसके साथ सिर्फ दाई रह गयी।

डाक्टर ने आठ बजे तक वहां से प्रस्थान नहीं किया। उसे बहुत भूख लगी थी। लजारे और पालिन भी उपासे थे। वेरोनिक को उनके लिए काफी, दूध और आमलेट तैयार करना था। शैन्ते खर्राटे ले रहा था। कुछ भी बदला नहीं था। सिर्फ कमरा लालटेन के धुँआ से भर गया था पालिन ने देखा कि मेज पहले से ही सजी हुई थी। क्योंकि उस पर पिछले रात की तश्तरियाँ अब भी पड़ी हुई थीं। उसने मेज-

पोश खींच कर दुरुस्त कर दिया। अब खतरा पार हो गया था। इसलिए सभी का दिल बच्चों की तरह हल्का हो गया था।

"हो सके तो मेरा यकीन करो" शैन्ते खुशी के लहजे में बोला, "सचमुच मैं सोया नहीं था...इस बात पर मुझे गुस्सा हो रहा था कि कोई मुझे हाल-खबर देने के लिए नीचे नहीं आया। फिर भी मैं एक दम परेशान नहीं था। क्योंकि ख्वाब में मैंने देखा था कि सब कुछ ठीक चल रहा है।"

डाक्टर कैजनोव जिस समय चलने लगा, घर के बाहर का सहन चमचमाती धूप से झिलमिला रहा था। लजारे और पालिन उसे विदा करने बाहर तक चले आये थे। पालिन से उसने फुसफुसाते हुये पूंछा। "क्या तुम आज नहीं जा रही हो?"

पल भर वह खामोश खड़ी रही। बड़ी-बड़ी विचारशील आँखें भविष्य की ओर देखती हुई दूर क्षितिज पर टिकी हुई मालूम हो रही थीं।

"नहीं," उसने उत्तर दिया। "अभी प्रतीक्षा करनी है।"

[११]

मई भर मौसम भयंकर बना रहा। फिर बढ़िया, गरम दिनों के साथ जून का आगमन हुआ। पिछले तीन हफ्तों से पछुवा हवा चल रही थी। तूफानों ने समुद्रतट को उद्वेलित कर दिया था। चट्टानें तितर-बितर हो गयी थीं, नावें डूब गयी थीं और मनुष्य काल कवलित हो गये थे। अब विशाल नीलाकाश, दानवीय समुद्र और उष्ण बड़ी ऋतु अपार मधुर प्रतीत हो रही थी।

तीसरे पहर पालिन ने शैन्ते की आराम कुर्सी बरामदे में खींच

लाने और बच्चे को उसके पास लाल कम्बल पर लिटा देने का निश्चय किया था। नन्हा पाल अट्ठारह महीने का हो गया था। वह उसकी दाई मां थी।

"धूप तुम्हें खलेगी, चाचा?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं! युग बीत गया इसका दर्शन किये!...और हां, क्या तुम पाल को नहीं सुलाना चाहती हो?"

"हाँ, हाँ, हवा उसे फायदा करेगी।"

कम्बल के सिरे पर झुककर वह, सफेद फ्राक पहने, खुले हाथ-पैर वाले बच्चे को निहारने लगी। उसकी आँखें बन्द थीं और नन्हा, शान्त गुलाबी मुंह ऊपर की ओर उठा हुआ था।

"सच, यह ताबड़ तोड़ ही सो गया!" वह महीन स्वर में बोली। "इधर से उधर लुढ़कते-लुढ़कते थक गया था।...देखो तो, ये जानवर भी उसे तंग नहीं कर रहे हैं।"

मिनूशी को उसने उँगली के इशारे से चेतावनी दे दी। भोजन के कमरे की खिड़की के पास वह गुड़मुड़ाई हुई बैठी थी और टुकुर-टुकुर झाँक रही थी। थोड़ी दूर पर लू लू रेत पर पसरा हुआ था। रह-रह कर खौफनाक आँखें चमकाने लगता, मानों गुर्राने और पंजा मारने के लिए प्रतिक्षण तत्पर हो।

पालिन उठकर चलने को हुई। शैन्ते धीरे-धीरे कराहता हुआ बोला। "पाल जाग गया क्या?"

"नहीं तो, बड़े मजे में मीठी नींद ले रहा है!"

शैन्ते की हालत अत्यन्त दयनीय बन गयी थी। धीरे-धीरे दीर्घ-स्थायी गठिया ने उसके सभी जोड़ों को एक दम बेकार कर दिया था। पैर किसी बीमार चिड़िया के पंजों की तरह लटके रहते थे। हाथों की कुरुपता और भी भयानक थी। एक-एक जोड़ सूज आया था। उँगलियाँ बेहद भद्दे ढंग से मोटी हो गयी थीं। बाँयें कन्धे पर बड़ा-सा नासूर हो गया था। सभी अंग तन गये थे। न तो हाथों से काम ले सकता था न

पैर से। अब भी थोड़ा काम करने वाले कुछ जोड़ इस तरह चरचराते और बजते थे मानों कंकड़ों से भरी कोई बोतल हिलाई जा रही हो। पूरा शरीर पत्थर बन गया था। हमेशा दर्द बना रहता। मौसम में तनिक भी परिवर्तन होने अथवा पथ्य छोड़कर जहाँ भी शराब या कौर भर गोश्त लेने से सूजन नये सिरे से हमला बोल देती थी।

"एकाध प्याली दूध पियोगे ?" पालिन ने पूछा ! "ताज़गी आ जायगी !"

"उफ़, दूध !" वह दो कराहों के बीच बोला, "नहीं, नहीं, कुछ नहीं लूँगा ! कोई भी चीज मुझे फायदा करनेवाली नहीं है !"

बहरहाल, उसने अपना बांया पैर खिसका देने की याचना की। क्योंकि स्वयं उसे हिलाने-डुलाने में असमर्थ था।

आँखें असीम क्षितिज पर टिका कर वह अशात रूप से कराहता रहा ! पीड़ा की कराह श्वास-क्रिया के समान ही स्वाभाविक बन गयी थी।

पालिन ने नन्हें पाल के खुले पैर से चिन्तित होकर उसे कम्बल की छोर से ढक दिया। तीन महीनों से वह हर हफ्ते अगले सोमवार को प्रस्थान करने का संकल्प करती आ रही थी, किन्तु बच्चे के दुर्बल हाथ अजेय चिपकाव से उसे जकड़ लिया करते थे। पहले महीने तक लोग दिन भर भयभीत रहते कि वह शाम तक जिन्दा नहीं रहेगा। अकेली वही अपनी करामात के साथ बच्चे को जिलाने में लगी रहती, क्योंकि माँ अब भी खाट पर पड़ी हुई थी। अण्डा देनेवाली मुर्गी की तरह पालिन अनवरत दृढ़ता के साथ उसकी देखभाल करती रहती। भाग्यवश पहले महीने के अन्त तक वह काफी हृष्ट-पुष्ट हो गया। धीरे-धीरे भराव आ गया, किन्तु अब भी बहुत नन्हा था कभी क्षण भर के लिए भी वह साथ न छोड़ती। बच्चा मां के दूध से वंचित था, इसलिए सावधानी से उसकी देख भाल और भी जरूरी हो गयी थी।

"उसे इस तरह सर्दी नहीं लगेगी।" पालिन बोली, "चाचा, देखो,

लाल कपड़े पर कितना सुन्दर लग रहा है। एक दम गुलाबी रंग का दिखने लगा है।"

शैन्ते ने क्लेशपूर्वक सिर घुमाया। शरीर का यही एक मात्र ऐसा अंग था जिसे वह हिला-डुला सकता था! महीन फुसफुसाहट के स्वर में बोला : "चुम्मा लोगी तो वह जाग जायागा। अकेला ही पड़ा रहने दो नन्हा-सा देवदूत है यह!"

"हाय, तरकारी जल रही है," रसोई घर में जाने के लिए वह मुड़ती हुई बोली। किन्तु ज्योंही आगे बढ़ी, पहली मँजिल से आवाज़ आयी। "पालिन!"

यह वाणी थी लूसी की, श्रीमती शैन्ते के पुराने कमरे की खिड़की से वह झाँक रही थी। बाल आधे ही सँवारे गये थे और सिर्फ कमीसोल पहने थी। महीन आवाज़ में वह आगे बोली, "लजारे वहाँ हो तो ऊपर भेज दो!"

"नहीं, अभी वह लौट कर नहीं आया है।"

लूसी का पारा गरम हो गया : "जानती हूँ, शाम के पहले उसकी सूरत नहीं दिखाई पड़ेगी। क्या पता, तब भी आये या न आये!... उसने वफ़ादारी के साथ वादा किया था, फिर भी पिछली रात रुक गया!...उफ़, अजीब आदमी है! केन जाता है तो वहाँ से लौटने का नाम ही नहीं लेता है।"

"जल्दी लौटने में कुछ बाधायें थीं," पालिन ने नम्र स्वर में उत्तर दिया। "खाद के कारोबार में काफी वक्त लग गया होगा...डाक्टर के घर से भी शायद न्यौता मिल गया हो।"

बोनीविले आने के बाद से लजारे और लूसी का कलह बराबर बढ़ता ही जा रहा था। स्पष्ट झगड़े न होते। सिर्फ वे हमेशा आपस में जलते-भुनते रहते। बीमारी के बाद लूसी की तन्दुरुस्ती बहुत धीरे-धीरे, बहुत तकलीफ़देह ढँग से ठीक हो रही थी और अब वह हमेशा थकी-थकी-सी रहती थी। घर के काम के डर से या तो वह पढ़ने में वक्त

गुज़ार देती या दिन भर कपड़े ही पहनती रहती। लजारे पुनः अपार क्लान्ति का शिकार बन गया था। किताब तो छूता न, बस दिन भर व्यग्रता में डूबा रहता। यदा-कदा केन भाग जाता और लौटने पर थकान और बढ़ जाती। घर की देखभाल अकेले पालिन के ही जिम्मे थी। वह उनके लिए अनिवार्य बन गयी थी, क्योंकि हर रोज़ तीन बार उसे पति-पत्नी में सुलह करानी पड़ती थी।

"अच्छा हो कि तुम कपड़े पहन कर तैयार हो जाओ," वह आगे बोली, "पादरी जल्दी ही आने वाला है और तुम उसके और चाचा के साथ बैठ सकती हो। मेरे जिम्मे बहुत काम है!"

लेकिन लूसी का गुस्सा अभी उतरा नहीं था। "वह इतने अर्से तक कैसे रुक सकता है? मेरे पिता ने इसके बारे में कल ही मुझे लिखा है। हमारा सारा पैसा मजे में उड़ाया जा रहा है।"

बात यह थी कि लजारे इन दिनों दो धन्धों में जुटा हुआ था। पालिन बच्चे के लिए चिन्तित थी और अपने बचे हुये रुपयों का दो-तिहाई हिस्सा उसके लिए सुरक्षित रखना चाहती थी। उसकी आमदनी अब घटकर पाँच सौ फ्रैंक तक आ गयी थी। किन्तु उसे खेद केवल दान-पुण्य में कमी कर देने का ही था।

"खाद का कारोबार महज़ मज़ाक है", लूसी पुनः बोली। "मेरे पिता ने उसे अवश्य ही इससे रोका होगा। उसके अब तक न आने का मतलब यह है कि कहीं गुलछर्रे उड़ा रहा है ... कोई बात नहीं, उसकी कोई बात नहीं, उसकी यही मर्जी है तो मनमानी घूम ले!"

"ठीक, तो फिर क्यों तुम इतनी नाराज हो?" पालिन ने समझाया। "उसके लिए कोई खतरा नहीं है। तुम नीचे आओ। न जाने क्या हुआ कि वेरोनिक रसोई का सारा काम मेरे सिर पर डालकर आज शनिवार को ही गायब हो गयी।"

पिछले दो घण्टों से सब इस रहस्य में उलझे हुये थे। नौकरानी सब्ज़ी ले आयी थी, एक बत्तख को भी पकड़ कर बाँध दिया था। यहाँ

तक कि एक तश्तरी में गोश्त तैयार भी कर दिया था ; फिर सहसा इस तरह गायब हो गयी थी मानों धरती में समा गयी हो। आगे कुछ भी खबर नहीं मिली। पालिन चकित थी। आखिरकार खुद ही तरकारी बनाने का फैसला करना पड़ा था !

"आयी नहीं ?" लूसी अपना गुस्सा भूल कर बोली।

"क्यों, नहीं", पालिन ने उत्तर दिया। "जानती हो मेरा सब से ताजा अनुमान क्या है ? दरवाज़े पर आयी एक औरत से उसने चालिस सू (सिक्का) में एक बत्तख ली। मैंने उससे जिक्र किया कि वर्शमान्त में इससे बढ़िया बत्तखें तीस सू में मिल जाती हैं। तुरन्त ही उसका भाव बदल गया और एक बार मेरी ओर जली निगाह से देखा ...ठीक, मेरा एलान है कि वह वर्शमान्त गई है, इस बात की जाँच करने कि मैं झूठ तो नहीं कह रही थी।"

वह हँसने लगी। उसकी हँसी में उदासी का भी पुट था। वेरोनिक की अपने प्रति अकारण कठोरता और निर्दयता से उसे बहुत आघात पहुँचा था। श्रीमती शैन्ते की मृत्यु के बाद से ही उसके मन में उत्पन्न होने वाला वैमनस्य धीरे धीरे इतना बढ़ गया था कि वह पालिन से हमेशा खार खाये बैठी रहती थी।

"एक हफ्ते से ज्यादा हो गया। उसके मुँह से एक भी शब्द सुनने को नहीं मिला", लूसी ने कहा। "इस तरह के मिजाज़ की हालत में वह कोई भी ग़लती कर सकती है।"

पालिन ने सब्र की साँस ली। "खैर, उसे अपनी सनक पूरी कर लेने दो। जल्दी वह लौट आयेगी और हम लोग इस वक्त भूख से मरने वाले नहीं हैं।"

लेकिन बच्चा कम्बल पर हाथ-पैर फेंकने लगा था। उसे गिरने से बचाने के लिए वह बेतहाशा दौड़ पड़ी। "माजरा क्या है, मेरे लाल ?"

मां खिड़की के पास से क्षण भर यह दृश्य देखती रही। फिर कमरे के भीतर चली गई। लू लू की गुर्राहट सुन कर शैन्ते सिर्फ अपना सिर

घुमा कर रह गया। वस्तुतः कुत्ते ने ही अपनी बहन को चेतावनी दी, "पालिन, यह रही तुम्हारी टोली।"

सामने से दो फटे हाल बच्चे आ रहे थे। पहला प्रत्येक शनिवार को आया करता था। नन्हा पाल पुनः सो गया था, अतः वह यह कहती हुई खड़ी हो गयी : "वाह, इन लोगों ने भी अच्छा वक्त चुना है! दम भर के लिए भी फुर्सत नहीं मिलती है...यहीं खड़े रहो या बेंच पर बैठ जाओ...चाचा, और कोई आये तो उसे इनकी बगल में बैठने के लिए कह देना। मुझे सब के पहले अपनी तरकारी देख लेनी है।"

थोड़ी देर बाद जब वह लौटी तो बेंच पर बैठे दो लड़कियां और दो लड़के दिखाई पड़े। ये निर्बल बच्चे अब बड़े हो जाने पर भी भिखमंगे ही बने हुये थे।

बोनीविले में हाल ही में विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा था। मई महीने के तेज़ तूफ़ानों के दौरान में आखिरी तीन घर भी धराशायी हो गये थे। यह उसके दुर्दिन की चरम सीमा थी। बसन्त ऋतु के ज्वारों से रही-सही कमी भी पूरी हो गयी थी। समुद्र तट पर अब केवल विजयिनी तरंगों का ही साम्राज्य रह गया था। ध्वंसावशेषों के चिन्ह भी साफ हो गये थे। मैछुवाहों को समुद्रतट से हटकर ऊँचे स्थानों पर जाने के लिए बाध्य होना पड़ा था। वहाँ वे मिल-जुलकर एक नये बोनीविले की नीव डाल रहे थे।

"यहाँ क्या कर रहे हो?" पालिन हूटलार्ड के लड़के को देखकर चिल्लायी। "मैंने तो तुम्हें आने से रोक दिया था?"

करीब उन्नीस साल के उस भद्दे लड़के ने आँख झुकाकर उत्तर दिया—"देवी जी हम पर दया कीजिये। पिता के मर जाने से हम कहीं के भी नहीं रह गये हैं!"

हूटलार्ड एक तूफ़ानी रात में समुद्र की ओर गया था और फिर कभी वापस नहीं आया था न तो उसकी लाश का पता चला और न नाव का ही। किन्तु पालिन ने, जो कि इन दिनों अपने दान-पुण्य के प्रति सतर्क

हो गयी थी, पुत्र और उस विधवा को तब तक कुछ भी न देने की प्रतिज्ञा करली थी जब तक कि वे खुले रूप में साथ-साथ रहते आ रहे थे। पिता की मृत्यु के बाद सौतेली मां ने, जोकि पहले नौकरानी रह चुकी थी, बेटे को अपना पति बना लिया था। सारे गाँव में इस नयी व्यवस्था की हँसी हो रही थी।

"जानते हो, मैं तुम्हारी सूरत यहाँ क्यों नहीं देखना चाहती," पालिन बोली। "अपनी चाल सुधार लेने के बाद ही तुम यहाँ आ सकते हो।"

विनीत वाणी में वह सफाई देने लगा : "उसने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर कर दिया। बात न मानता तो फिर मार खानी पड़ती। अब वह मेरी मां नहीं है। जो बात मेरे साथ हुई वही किसी दूसरे आदमी के साथ हो सकती थी। फिर मैंने क्या बुराई की ?...देवी जी, मुझे कुछ दीजिये। हम एक दम लुट गये हैं। मैं अपना इन्तजाम कर सकता था। लेकिन यह उसके लिए करना पड़ रहा है! कसम खाकर कह रहा हूँ, सच मानिये वह बीमार है!"

पालिन का हृदय द्रवित हो उठा। रोटी और एक कुल्हड़ शोरबा देकर उसे विदा किया। यहाँ तक कि बीमार औरत को जा कर देखूं और उसे दवा देने का भी वादा किया।

बगल में प्राउने खानदान की लड़की खड़ी थी। उसके गाल में सख्त चोट लग गयी थी।

"यह कैसे हुआ ?"

"मैं पेड़ से गिर गयी, देवी जी।"

"पेड़ से ?...लगता तो ऐसा है कि कुर्सी या चारपाई से टकरा जाने से यह खरौंच लग गयी है!"

अब वह बड़ी हो गयी थी। गाल उभर आये थे। आंखों में वही स्वप्निलता बनी हुई थी। व्यर्थ में ही सीधे खड़े होने की चेष्टा कर रही थी। पैर लड़खड़ा रहे थे और हकलाहट के कारण साफ-साफ बोल

नहीं पाती थी। पालिन उसकी ओर ताकती हुई चिल्लायी "लेकिन अभागी बच्ची, तुम्हारी शराब नहीं छूटी है !"

"हाय, देवी जी, आप यह कैसे कह सकती हैं ?"

"तुम नशे में हो। घर जाते-जाते गिर पड़ोगी। न जाने तुम लोगों को क्या हो गया है ?...बैठ जाओ। मुझे दवा और कपड़ा ढूँढना पड़ेगा !"

घाव पर उसने पट्टी बाँध दी। साथ ही ऐसी झिड़कियां सुनाती गयी कि लड़की अपने किये पर लज्जित हो मरहम पट्टी पूरी हो जाने पर हकलाती हुई बोली: "पापा अपने दर्द की शिकायत करते रहते हैं। अगर थोड़ी-सी स्प्रिट मिल जाय तो उनके बदन की मालिश कर दूँ !"

पालिन और शैन्ते ठहाका मार कर हँसने लगे। "नहीं, मुझे मालूम है कि उसका क्या होगा। तुम्हें सिर्फ एक टुकड़ा रोटी मिलेगी। तब भी यकीन है कि तुम लोग उसे बेच कर शराब पी जाओगे।"

बच्चों से फुर्सत मिले देर नहीं हुई थी कि बरामदे में पालिन की मुलाकात एक अन्य स्त्री से हुई। यह गोनिन परिवार की लड़की थी। साथ में बीस महीने की अपनी बेटी भी ले आयी थी। जवान मां, जो कि सिर्फ सोलह की थी, इतनी कोमल थी की बच्ची की बड़ी बहन-जैसी मालूम होती थी। बेटी को गोद में लेकर चल नहीं पाती थी, फिर भी जैसे-तैसे अपने साथ घसीट लाई थी क्योंकि उसे मालूम था कि छोटी मालिकिन बच्चों को बहुत प्यार करती हैं और उनके लिए किसी भी चीज से इनकार नहीं कर सकती हैं।

"बाप रे बाप, यह कितनी बड़ी हो गयी !" पालिन नन्हीं बच्ची को गोद में लेती हुई बोली !"मजे की बात तो यह कि हमारे पाल से छः महीने से ज्यादा बड़ी नहीं है !"

अचानक उसकी निगाह लड़के की ओर घूम गयी। वह अब भी कम्बल के बीच में सो रहा था। इस बच्चे की मां इतना हृष्ट-पुष्ट शिशु

उत्पन्न करने में कितनी भाग्यशालिनी थी। इतने पर भी वह बोली : "बीबीजी, जानती हो यह कितना खाती है ! मेरे पास कपड़ा-लत्ता नहीं है। समझ में नहीं आता कि इसे क्या पहनाऊँ?...बाप के मरने के बाद से मां—बेटे भी मेरे सिर पर सवार हो गये हैं। वे मुझे धूल समझते हैं, कहते हैं, जो लड़कियां शराब पीने जाँय उन्हें रुपया खर्च करने के बजाय ले आना चाहिये !"

"बहन," पालिन महीन स्वर में बोली। "तुम्हारी बच्ची के लिए मैंने कुछ सामान रख छोड़ा है। उसके लिए मोजे भी बुन रही हूँ।—तुम प्रायः इसे यहाँ ले आया करो। दूध वगैरह हमारे पास हमेशा मौजूद रहता है। तुम्हारी मां से भी मुलाकात करूँगी। तुम्हें डराती-धमकाती है इसलिए उसे समझाने-बुझाने की भी कोशिश करूँगी।" तभी बाहर के सहन में अबेहार्टर दिखाई पड़ा। "लो भाई, लजारे और डाक्टर आ गये," उसने घोषणा की।

ठीक उसी क्षण गाड़ी की आवाज़ सुनायी पड़ी। बरामदे में आकर कैजनोव पुकारता हुआ बोला—"मैं इस भगोड़े जवान को साथ लिये आ रहा हूँ। इसका सिर कलम तो नहीं कर दिया जायगा ?"

पीछे-पीछे फीकी मुस्कुराहट के साथ लजारे आता हुआ दिखाई पड़ा। बहुत जल्दी-जल्दी वह बूढ़ा होता जा रहा था। कन्धे झुक गये थे। चेहरा काला पड़ गया था। मानों आन्तरिक क्लान्ति से दिन प्रतिदिन झुलसता जा रहा हो। वह अपने विलम्ब का कारण बताना चाहता था, तभी पहली मंजिल के कमरे की खिड़की फट से बन्द कर ली गयी।

"लूसी तैयार नहीं है," पालिन ने समझाया। "अभी मिनट भर में ही नीचे आ जायगी।" धड़ाके के साथ बन्द होने वाली खिड़की झगड़े की प्रस्तावना थी। सब लोग चकित होकर एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे।

लजारे ने जीने की ओर एक कदम बढ़ाया। फिर विचार बदल

गया और आगे की बातों का इन्तजार करना ही बेहतर मालूम हुआ। अपने पिता और नन्हें पाल का उसने चुम्बन लिया, फिर बहन के नजदीक जाकर धीरे से बोला। "जल्दी-जल्दी इस कूड़ा-करकट से फुर्सत लो। जानती हो, मुझे अपने रास्ते में इनका मिलना अच्छा नहीं लगता है।"

उसका संकेत तीन लड़कियों की ओर था, जो कि अब भी बेंच पर बैठी हुई थीं। पालिन ने गोविन परिवार की लड़की के लिए जल्दी-जल्दी गठरी बाँधी। "अब तुम चलो," वह बोली।" अपनी सहेली की देखभाल करती रहो। वह फिर गिरने न पाये—अपने बच्चे से भी होशियार रहो। रास्ते में उसे मत छोड़ा करो।"

"हाँ, मेरे भाई, जरा यह तो बताओ," डाक्टर ने चुटकी लेते हुये पूछा—"क्या तुम अपना मशहूर बाँध फिर से बनाने जा रहे हो?"

लजारे आग भभूका हो गया। समुद्र से अपनी हारी हुई लड़ाई की कोई भी चर्चा सुन कर वह उत्तेजित हो उठता था। बिगड़ कर बोला, "मैं?—मैं तो चाहूँगा कि समुन्दर की लहर ठीक यहाँ तक आ जाय। उसे रोकने के लिए झाड़ की डण्डी की भी आड़ नहीं लगाऊँगा।...उफ़ नहीं, बिल्कुल नहीं। मुझसे बेवकूफ़ी हो गयी! आदमी को ऐसी बेवकूफी दोबारा नहीं करना चाहिये। बाढ़ के दिन ये बेहूदे गाँववाले किस तरह नाच रहे थे! जानते हो, मुझे क्या शक है? उस दिन ज्वार के पहले शायद गाँव वालों ने मेरी बल्लियों को चीर दिया था, वर्ना वे इतनी आसानी से गिर नहीं सकती थीं।"

"इतने बेरहम मत बनो," पालिन खामोशी के साथ बोली। "केवल गरीबों को ही ईर्षालु होने का अधिकार है...कोई बात नहीं, तुम अपना बाँध फिर से बना सकते हो।"

"नहीं, नहीं," वह भुन भुनाया। "ऐसा करने में कुछ मज़ा नहीं आयेगा...लेकिन तुम ठीक कह रही हो। किसी चीज पर गुस्सा करने

से कोई फायदा नहीं है। गाँव वाले चाहे डूबें या बचे रहें। मुझे क्या पड़ी है ?"

थोड़ी देर के लिए शान्ति छा गयी। शैन्ते अपने पुत्र का चुम्बन लेने के लिए एक बार सिर उठाने के बाद पुनः सो गया था। पादरी अपना अँगूठा उमेठ रहा था और डाक्टर हाथ-पीछे बाँध कर इधर से उधर चहल कदमी कर रहा था। इस समय सबकी दृष्टि सोते हुये बच्चे की ओर लगी हुई थी। पालिन उसके बाप के दुलार से भी उसे सुरक्षित रखना चाहती थी, क्योंकि इस वक्त उसे जगाना ठीक नहीं था। जबसे सब लोग पहुँचे थे तभी से वह उनसे धीरे-धीरे बोलने का अनुरोध करती आ रही थी। लू लू को गुर्राता हुआ देख कर उँगली के इशारे से वह उसे भी धमकाने लगी।

"क्या सोचती हो कि वह इससे चुप हो जायगा," लजारे बोला : "इसी तरह अभी एक घण्टा और वह हम लोगों का कान खाता रहेगा...इससे बेहूदा कुत्ता अभी तक मैंने कहीं नहीं देखा।"

"मिनूसी कितने दिन की हो सकती है ?" कैजनोव ने पूछा। "मैं बहुत दिनों से इसे देखता आ रहा हूँ।"

"सोलह से ऊपर है।" पालिन ने उत्तर दिया। "फिर भी अभी बूढ़ी नहीं हुई है।" डाक्टर के मुँह से अपना नाम सुन कर बिल्ली सिर उठाकर देखने लगी।

"ओ हो, यह बाहरी नहीं है," पालिन ने कहा। "मेरे ख्याल से इसकी आँख कुछ कमजोर हो रही है। किन्तु इससे इसकी दुष्टता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने वाला है...शायद किसी को यकीन न हो, एक हफ्ते से कम ही हुआ जबकि हमें इसके सात बच्चों को जल-समाधि दे देनी पड़ी। इतने बच्चे देती जाती है कि जान पर आ बीतती है। अगर सभी जिन्दा रहने दिये जाते तो पिछले सोलह वर्षों में पूरा गाँव भर गया होता।"

शैन्ते की आँख खुल गयी थी और वह भी बिल्ली की ओर निहार

रहा था। थोड़ी देर में उसने एक लम्बी साँस ली। इन दिनों उसे अपनी कराहों का भी कम ज्ञान रहता था।

"बहुत तकलीफ़ में हो ?" डाक्टर ने पूछा।

"हाँ, आज बहुत जोर का दर्द हो रहा है," आँखें मींचता हुआ वह बोला। "मेरा ख्याल था कि धूप से कुछ फायदा होगा, लेकिन यह बर्दाश्त नहीं होती है। एक भी जोड़ ऐसा नहीं है, जिसमें जलन न हो।"

कैजनोव उसके हाथ देखने लगा। सड़े-कटे भागों को देख कर सब के रोंगटे खड़े हो गये। पादरी ने अपनी निगाह की दूसरी बारीकी ज़ाहिर की।

"इस तरह की उँगलियाँ ड्राफ्ट खेलने लायक नहीं रह गयी हैं।... इन दिनों तुम्हारा खेल-तमाशा शायद बिल्कुल ही बन्द हो गया होगा।"

"अपने भोजन के प्रति सतर्क रहो," डाक्टर ने सुझाया। "तुम्हारी कुहनी बुरी तरह सड़ गयी है, नासूर बढ़ता ही जा रहा है।"

"अधिक सतर्क कैसे रह सकता हूँ ?" शैन्ते लम्बी साँस लेता हुआ खीझ कर बोला। "मेरी शराब नापी जाती है, गोश्त तौला जाता है। क्या खाना-पीना एकदम छोड़ ही दूँ ? सच, ज़िन्दगी जीने लायक नहीं रह गयी है...काश, कि मैं अपने हाथ से खा सकता ! लेकिन मेरी उँगलियों के फोड़ों के कारण यह कैसे सम्भव है ? मुझे खाना खिलाने वाली पालिन तुम लोगों को बता सकती है कि मैं कोई भी चीज बहुत ज्यादा नहीं खाता हूँ।"

पालिन मुस्कुराने लगी; "हाँ, हाँ, तुमने कल बहुत ज्यादा खाया.... कुसूर मेरा ही है, यह देखते हुये कि अपने लोभ के कारण तुम अप्रसन्न हो जाते हो, मुझसे इनकार नहीं करते बनता है।"

सभी हँसते हुये उसके व्यसन का मजाक उड़ाने लगे। किन्तु उसे देखकर सहानुभूतिवश सब की वाणी मूक हो गयी। स्थिति कितनी

दयनीय बन गयी थी। शरीर सड़े-गले और सूजे हुये अंगों की गठरी मात्र रह गया था। मानों पीड़ा सहने के लिए ही जी रहा हो।

"मिसाल के तौर पर," पालिन आगे बोली, "आज हम लोग एक भुनी हुई बत्तख का जायका ले सकेंगे..." बात काट कर उसने पूछा: "वर्शमान्त से आते हुये क्या तुम्हें वेरोनिक नहीं मिली?" नौकरानी के गोल होने की वारदात उसने सबको सुना दी। लजारे और डाक्टर में किसी ने भी उसे नहीं देखा था। थोड़ी देर तक उसकी बदगुमानियों की चर्चा होती रही। इतने में पालिन हँसती हुई बोली: "अच्छा, मैं चली। आज रसोई में तैनात हूँ। तरकारी जल जायगी या बत्तख कच्ची रह जायगी तो मेरा चाचा मुझे एक हफ्ते की इत्तला दे देगा।"

अबेहार्टर ठहाका मार कर हँसने लगा। डाक्टर भी अपनी मुस्कराहट नहीं रोक सका। तभी पहली मंजिल की खिड़की के झटके के साथ खुलने की आवाज आयी। लूसी सामने नहीं आयी। अधखुली खिड़की से संक्षेप में बोली: "लजारे, ऊपर आओ"

उसका पति गुस्से से भरे इस बुलावे को सुनने के लिए तैयार नहीं था। लेकिन पालिन आँखों में अनुरोध भरकर उसकी ओर ताकने लगीं। वह यह नहीं चाहती थी कि सब के सामने कोई काण्ड खड़ा हो जाय। आगा-पीछा सोचता हुआ वह ऊपर चला गया। लोगों पर अप्रिय प्रभाव न पड़े, इस उद्देश्य से पालिन थोड़ी देर तक बाजे पर खड़ी रही। शान्त और विस्मित होकर सब लोग समुद्र की ओर निहारने लगे। तिरछी पड़ने वाली सूर्य की किरणों के प्रकाश में समुद्र सोने की चादर की तरह झिलमिला रहा था। दूर पर क्षितिज पीले रंग का बन रहा था। मनोरम दिवस अपनी सम्पूर्ण निर्मलता के साथ समाप्त हो रहा था। न तो बादल थे और न नावें।

"यह बात है," पालिन मुस्कुराती हुई बोली। "वह बाहर रातें बिताता आ रहा था इस पर थोड़ा-सा उलाहना तो मिलना ही चाहिये।"

डाक्टर उसकी ओर देख रहा था। वह भी मुस्कुराने लगा।

"हाँ, मुझे जाना है। तुम लोग आपस में रंग जमाओ...और चाचा, मेहरबानी करके पाल जागे तो मुझे बुला लेना।"

रसोई में जाकर वह बटलोई चलाने लगी। ऊपर के कमरे से लजारे और लूसी की आवाजें सुनायी पड़ रही थीं। उनकी उग्रता बढ़ती ही जा रही थी। यह बात सोच कर कि बरामदे तक शोर पहुँच रहा है, वह बड़े असमंजस में पड़ गयी। यह वस्तुतः न्यायसंगत नहीं था कि वे बहरे आदमियों की तरह चिल्लायें और सबको उनके कलह का पता चल जाय। फिर भी वह ऊपर नहीं जाना चाहती थी, एक तो खाना तैयार करना था। दूसरे, उनके सोने के कमरे में जाकर बीच-बचाव करना भी उसे नापसन्द था। नीचे सबके साथ होने पर सुलह करा देना दूसरी बात थी। क्षण भर के लिए वह भोजन के कमरे में गयी और मेज को जोर जोर से थप थपाया। लेकिन शोरगुल अब भी जारी था। यह बात असह्य हो गयी कि वे इस तरह एक दूसरे की धज्जी उड़ा दें। उसी सक्रिय करुणा की प्रेरणा से, जिसने उसके सम्पूर्ण जीवन को दूसरों की प्रसन्नता का आश्रित बना दिया था, वह ऊपर चली गयी।

"प्यारे बन्धुओं," सहसा कमरे में प्रवेश करते हुये वह बोली, "तुम लोग कह सकते हो कि इससे मेरा कोई सरोकार नहीं है, लेकिन सच मानो, बड़ा शोर हो रहा है...इस तरह तुम लोगों का झगड़ना और घर भर में हंगामा मचा देना अच्छा नही लगता है।"

बढ़ कर उसने खिड़की बन्द कर दी : सौभाग्य से बरामदे में न तो डाक्टर ही रुका हुआ था और न पादरी ही। सोते हुये बच्चे की बगल में सिर्फ शैन्ते ही झपकियाँ ले रहा था।

"नीचे तक तुम लोगों की आवाज़ सुनायी पड़ रही थी," वह बोली, "आख़िरकार बोलो तो सही, इस वक्त क्या बात हुई?"

लेकिन वे लोग गुस्से में भरे हुये थे और उसके आने की ओर भी ध्यान न देकर झगड़ते जा रहे थे। उनके शयन-कक्ष में एक बार पुनः बेचैनी अनुभव करती हुई वह गतिहीन खड़ी रही। हरे फूलोंवाली पीली छींट, लाल कपड़े और महोगनी वृक्ष की लकड़ी के फर्नीचर हटा दिये गये थे। उनके स्थान पर स्त्रियों की दुराराध्य रूचि से मूल्यवान ऊनी पर्दे और फर्नीचर आ गये थे। स्वर्ग सिधारने वाली मां की कोई भी निशानी बाकी नहीं रह गयी थी। शृंगार की मेज पर सुगन्धित इत्र और तेल पड़े हुये थे, इधर-उधर तौलिये बिखरे थे। इत्र से उसकी जान घबराने लगी और आँखें अनिच्छा पूर्वक सारे कमरे में घूमने लगीं। प्रत्येक वस्तु उनके दाम्पत्य जीवन का स्मरण दिला रही थी। अन्ततः वह उनके साथ रहने के लिए राजी हो गयी थी। जो कुछ होता चुपचाप सह लेती, ताकि रात में, यह जानते हुये कि वे लोग बगल के कमरे में ही हैं, एक दूसरे की बांहों में हैं, किसी तरह सो जाया करे। उनके कमरे में जाने का, उनकी पारस्परिक घनिष्ठता का दृश्य देखने का यह पहला ही अवसर था। कपड़े इधर-उधर बिखरे थे, चारपाई पर रात के लिए बिस्तर लग गया था। सिर से पांव तक पूरा बदन झनझना उठा, पुनः पुरानी ईर्ष्या के आवेग में काँपने लगी।

"तुम लोगों को क्या हो गया है ?" थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद बहुत मुलायमियत से वह बोली, "समझदारी से काम नहीं ले सकते हो ?"

"क्यों, नहीं," लूसी चिल्लायी, "मैं इससे बहुत आजिज़ आ गयी हूँ। क्या तुम्हारा ख्याल है कि यह अपनी ग़लती मान लेगा ? बिल्कुल नहीं ! मैं सिर्फ इतना बोली कि कल तुम्हारे न आने से हम लोग बहुत परेशान हुये। इतने में ही यह बदज़ात की तरह मेरे ऊपर बरस पड़ा। यह शिकायत करने लगा कि मैंने इसकी जिन्दगी बर्बाद कर दी है, इसीलिए यह अमरीका भाग जाने की धमकी दे रहा है।"

लजारे बीच में दखल देता हुआ बोला : "तुम झूठ बोल रही

हो !...अगर तुम शराफत के साथ मुझसे पेश आती तो मैं तुम्हें चूम लेता और सब चीजें खत्म हो जातीं, लेकिन तुम शिकायत करने लगीं कि मैंने तुम्हारे सिर पर मुसीबत लाद दी है। हाँ, तुमने धमकी दी कि अगर मैं तुम्हें तबाह करता गया तो तुम समुन्दर में कूद पड़ोगी !"

पुनः वाग्युद्ध प्रारम्भ हो गया। दिल में जमा सारे गुरेज़ खुल कर बाहर निकाले जाने लगे।

पालिन उनकी बातें सुनती रही। वह उनसे भी अधिक दुखी थी। उनका प्रेम किस प्रकार का है, यह समझने में वह असमर्थ थी।

"मैं तुम्हें अपने धन के अपव्यय के लिए नहीं धिक्कार रही हूँ," लूसी आगे बोली। "यही तुम्हारा आखिरी बार होता !" लजारे चिल्लाया। "अगर मै ठगा गया तो इसमें मेरा कुसूर नहीं था।"

"हाय, हाय, तुम जरूर ठगे गये ! इसके अलावा, हमारी आमदनी अब चार या पाँच हजार ही रह गयी है। इतने से इस गुफा में भी गुज़र होना मुश्किल है। अगर पालिन न होती तो हमारा बच्चा भी इन दिनों नंगा घूमता। क्योंकि तुम अपनी उठाईगीरी में ही लगे रहते, एक के बाद एक योजनायें बनाते और उससे कुछ भी मिलना-मिलाना न होता !"

"कहती चलो, तुम्हारे बाप ने कल ही मुझे इन सब के लिए बधाई दी है ! मेरा अनुमान है कि तुमने उसे चिट्ठी लिखी होगी। इसीलिए मैंने खाद का धन्धा ठप कर दिया। अगरचे इससे सौ फीसदी फायदा ही फायदा था। लेकिन मैं भी तुम से कम नहीं हूँ। अब और कुछ करना बेवकूफी ही होगी। हम यहीं रहेंगे...यहीं...!"

"मेरी जैसी उम्र की औरत के लिए क्या ही बढ़िया जिन्दगी है यह ! बिल्कुल जेल ! बाहर जाने और लोगों से मिलने-जुलने का ज़रा-सा भी मौका नहीं। सामने सिर्फ यह शैतान समुन्दर है, जोकि जिन्दगी को और भी सड़ियल बनाता रहता है।...हाय, काश कि मुझे यह पहले से ही मालूम होता।"

"और क्या तुम सोचती हो कि मैं जिन्दगी का मजा ले रहा हूँ ?... अगर शादी न हुई होती तो मैं नहीं रहता, काम धन्धे की तलाश में कहीं देस परदेस चला जाता। मैंने ऐसा बीसों बार करना चाहा है। लेकिन अब सभी चीजों पर पानी फिर चुका है। इस नरक कुण्ड में मैं कैद हो गया हूँ। सोने के अलावा मेरे लिए कुछ भी करने को नहीं रह गया है। तुमने मुझे तबाह कर दिया है। मैं इससे अच्छी तरह वाकिफ़ हूँ !"

"मैंने तुम्हें तबाह किया ?...क्या मैंने तुम्हारा मूँड़ बाँधकर तुमसे शादी की ? कहाँ चली गयी थी तुम्हारी आँख क्या देख नहीं सकते थे कि हम एक दूसरे के क़ाबिल नहीं हैं ?...हमारी जिन्दगी चौपट हो गयी तो यह तुम्हारा ही क़ुसूर है।"

"हाँ, हाँ, हमारी जिन्दगी चौपट हो गयी और तुम हर रोज इसे और भी असह्नीय बनाती जा रही हो ?"

पालिन ने यद्यपि इससे किनारे रहने की प्रतिज्ञा की थी, लेकिन मामला बर्दाश्त के बाहर होता जा रहा था। वह डाँटती हुई बोली ! "चुप रहो, बदमाशों ! यह बिल्कुल सच है कि तुम अपने को मटियामेट करते जा रहे हो, वर्ना जीवन कितना सुखी होता ! क्यों तुम लोग एक दूसरे को ऐसी बातें कहने को भड़काते हो, जिन पर बाद में पछताना पड़े ? नहीं, नहीं मुंह बन्द करो। अब मैं एक भी शब्द नहीं सुनना चाहती हूँ।"

लूसी रोती हुई कुर्सी में धँस गयी, लजारे दाँत पीसता हुआ कमरे में इधर से उधर टहलने लगा।

"चिल्लाना अच्छा नहीं है, भाई !" पालिन बोलती गयी, "सच, तुम लोगों को और सहिष्णु बनना चाहिये। तुम्हारे दोषों की गिनती नहीं है...और लजारे, तुम इसके साथ ऐसा भद्दा बर्ताव कैसे कर सकते हो ? बहुत खतरनाक है यह। कम से कम मेरा अनुमान था कि तुम सहृदय हो...हाँ, तुम्हारी जोड़ी नटखट बच्चों-जैसी है। गलती दोनों की है।

अपनी परेशानी बढ़ाने के लिये कुछ भी करने से तुम लोग बाज़ नहीं आते हो। लेकिन सुन लो, कान खोलकर सुन लो, मुझसे यह सब नहीं सहा जायगा। सड़ियल आदमियों के साथ मैं नहीं रहना चाहती हूँ... मेहरबानी करके हाथ मिलाओ और उसका चुम्बन लो?"

वह हँसने का उपक्रम करने लगी। ईर्ष्यापूर्ण कम्पन के वे सारे चिन्ह लुप्त हो गये। उन्हें पारस्परिक आलिंगन में देखने की उत्कण्ठा प्रबल हो उठी, ताकि यह विश्वास हो जाय कि विवाद समाप्त हो गया है।

"इसका चुम्बन लूँ? नहीं, बिल्कुल नहीं!" लूसी बोली। "यह मुझसे बहुत अभद्र व्यवहार करता आ रहा है।"

"कभी नहीं," लजारे चिल्लाया।

वह खिलखिला कर हँसने लगी। "झिझको नहीं, आगे बढ़ो। जानते हो मैं कितनी शैतान हूँ...मेरा खाना जल रहा है, सब लोग इन्तजार कर रहे हैं...लजारे, मेरा कहना नहीं मानोगे तो मैं तुम्हें ढकेल दूँगी। चलो, इसके सामने घुटने टेको, दोनों हाथ फैलाकर गले लगो... चलो, चलो, देर मत करो!"

प्रेमियों जैसे आलिंगन में उसने उन्हें धकेल दिया, हर्ष विभोर होकर उनका एक-दूसरे का चुम्बन लेना देखती रही। आँखों से चिन्ता की रेखायें लुप्त हो गयीं। मन में धधकती आग की तरह आह्लाद जगमगाने लगा। वह उनसे अपने को बहुत ऊपर उठी हुई अनुभव करने लगी। पश्चात्ताप की विह्वलता के साथ उसके भाई ने अपनी पत्नी को गले से लगा लिया। वह भी नये आँसुओं की बाढ़ के साथ उसके दुलार का प्रत्युत्तर देने लगी।

"देखो न, क्या यह लड़ने से बेहतर नहीं है," पालिन ने कहा। "अब मैं चली; सुलह कराने के लिए अब मेरी ज्यादा जरूरत नहीं है।"

नीचे रसोई में पालिन तरकारी चलाते हुये गुनगुनाने लगी। फूंक कर लकड़ी जला दी। बत्तख का मांस भूनने के लिए कड़ाही चढ़ा दी।

सेविका का यह कार्य करने में उसे अपार आनन्द का अनुभव हो रहा था। बड़ा-सा सफेद लबादा पहने थी। लघु से लघु और निम्नतम काम करते हुये हर एक की सेवा में योग्य बनने के सर्वाधिक प्रसन्नता का अनुभव करने लगी ताकि वह इस योग्य बन सके कि अपने आमोद-प्रमोद और कुशल-क्षेम के लिए वे उसका ऋण मान सकें। उन्हें हँसा दिया था, इसलिए अब बढ़िया दावत देने का ख्वाब देखने लगी, ताकि वे मेज के चारों ओर बैठें, हास-परिहास की बातें करते हुये मधुर भोजन का स्वाद लें।

अपने चाचा और नन्हें बच्चे की याद आ गयी और वह चटपट बरामदे की ओर दौड़ पड़ी। बच्चे के पास अपने भाई को बैठा हुआ देखकर उसका रोम-रोम पुलकित हो उठा।

"यह क्या ?" वह चिल्लायी। "तो तुम पहले से ही नीचे आ गये हो ? मेरा ख्याल है कि मेरी पीठ पीछे तुम लोगों ने पुनः दंगा-फसाद नहीं शुरू किया ?"

"नहीं, नहीं," उसने उत्तर दिया। "कपड़े पहन कर वह नीचे आ रही है...हमने एक दूसरे को क्षमा कर दिया है। लेकिन यह कुछ चले तब तो ? कल दूसरा काण्ड प्रारम्भ हो जायगा ! इसी तरह हर रोज़, हर घड़ी लगा रहेगा। क्या आदमी बदल सकता है ? कोई चीज रोकी जा सकती है ?"

पालिन गम्भीर हो गयी थी। उदासी के साथ उसने निगाह नीची कर ली। लजारे ठीक ही तो कह रहा है। आने वाले उन दिनों की वह कल्पना करने लगी, जब कि उसे ऐसे ही झगड़ों को शान्त करते रहना होगा। अपने भी निर्विकार रहने का, ईर्ष्यापूर्ण क्षोभ के सम्मुख कभी भी घुटने न टेकने का उसे विश्वास नहीं था। हाय, दिन प्रति दिन की दुर्गत की इसी प्रकार पुनरावृत्ति होती रहेगी। किन्तु तत्क्षण ही उनकी आँखें पुनः ऊपर उठ गयीं। न जानें कितनी बार मैंने अपने पर विजय पायी है। निश्चय ही इन्हें शान्त करते हुये मुझे थक जाने के

पहले ये झगड़ते रहने से थक जायँगे। इस विचार से उसका रोम-रोम पुलकित हो उठा। हँसते हुये लजारे से उसने इसका ज़िक्र किया। यदि घर के सभी लोग अत्यधिक प्रसन्न रहेंगे तो मुझे करने को ही क्या रह जायगा ? मैं अब जाऊँगी, अवश्य ही ये मुझे छोटे-मोटे घाव देते रहें और मैं उनका उपचार करती रहूँ !

"पादरी और डाक्टर कहाँ चले गये ?" बहुत देर से उन्हें न देखने से विस्मित होकर उसने पूछा !

"वे लोग रसोई के बगीचे में होंगे," शैन्ते ने उत्तर दिया। "पादरी डाक्टर को हमारी नासपातियाँ दिखाना चाहता था।"

पालिन बरामदे के एक कोने से उन्हें देखने जा रही थी, तभी वह सहसा नन्हें पाल के सामने खड़ी हो गयी।

"शाबाश, यह जाग गया है," वह चिल्लायी। "देखो न, किस तरह फरी मार रहा है !"

पाल लाल कम्बल के बीचों बीच घुटनों के बल बैठ गया था और चोरी-चोरी रेंगने की कोशिश कर रहा था। लेकिन थोड़ा आगे बढ़ते ही कम्बल की परत में वह बुरी तरह फँस गया था और पीठ के बल गिरा हुआ इधर-उधर हाथ-पैर मार रहा था।

"बहुत अच्छे। यह हम सब को दिखा रहा है कि मैं उठ गया हूँ," वह हँसती हुई कहती गयी। "देखो, कल से ही इसने किस तरह चलना सीख लिया है।"

पास बैठ कर वह उसे अपने पैरों पर खड़ा करने की कोशिश करने लगी। पहले किसी समय सबको भय था कि उसके पैर स्थायी रूप से दुर्बल हो सकते हैं। अब उसे पहला कदम रखता हुआ देखकर परिवार के लोग खुशी से झूमने लगे।

"खिलवाड़ बन्द करो," पालिन ने उससे कहा। "नहीं, मामला नाजुक है। इन्हें दिखा दो तुम आदमी हो ... हूँ, जमे रहो, आगे बढ़ो, पापा को चूमो और तब चल कर बाबा का चुम्मा लेना है !"

शैन्ते ने तमाशा देखने के लिए सिर घुमा लिया। लजारे भी खिन्नता के बावजूद खेल में हाथ बँटाता रहा।

"चलो," उसने बच्चे से कहा।

"उफ़, तुम्हें अपने हाथों से उसे सहारा देते रहना है," पालिन ने समझाया! "हाथ पकड़े बिना उससे चला नहीं जायगा। कुछ ऐसा होना चाहिये जहाँ वह गिर सके। चलो मेरे राजा, बहादुर लड़के बनो...!"

तीन कदम रखना था। रस्सी पर डगमगा कर चलने वाले नौसिखिये बाजीगर की तरह पाल ने सँकरा रास्ता पार करने के लिए कमर कस ली। हिलता-डुलता आगे बढ़ा। फड़फड़ा कर बाप की प्रतीक्षा रत गोद में गिर पड़ा। झूम-झूम कर वह बच्चे के महकते हुये बालों को चूमने लगा।

"अभी खेल खत्म नहीं हुआ," पालिन बोली। "उसने चल कर बाबा का चुम्मा लेने की प्रतिज्ञा की है...आ हा, अबकी बार का कैसा सफर है?"

लजारे की कुर्सी और शैन्ते की आराम कुर्सी के बीच आठ कदमों का फासला था। पाल ने दुनिया में अभी तक इतनी बड़ी साहसिक यात्रा नहीं की थी! जोखिम जैसा साबित हो रहा था यह। पालिन बाधायें दूर करने के लिए रास्ते में खड़ी हो गयी। बच्चे को खड़ा होने में पूरे दो मिनट लग गये। आखिरकार वह काँपता हुआ और हाथ हिलाता हुआ आगे बढ़ा। बहादुरी के साथ पैर रखता गया और अन्ततः शैन्ते के घुटनों के पास भहरा कर गिर पड़ा।

"देखा न, कैसी घसीट मारी इसने? वाह, एक दम निर्भय दिख रहा था। निश्चय ही यह वीर बनेगा!"

इसके बाद एक दर्जन मर्तबा उससे सफर करायी गयी। दम भर की भी वह फ़ुर्सत न लेता। इशारा मिलते ही बाबा के पास से बाप के पास पहुँचने और फिर बाबा के पास लौटने के लिए रवाना हो जाता।

"पापा के पास एक बार और!" पालिन चिल्लायी।

लजारे इससे ऊबता जा रहा था। बच्चों से, चाहे वे अपने ही हों, वह बहुत जल्दी तंग आ जाता था। बच्चे को सुरक्षित, मजबूत और इतना प्रसन्न देख कर सोचने लगा कि यह नन्हा प्राणी अपनी जिन्दगी शुरु करने जा रहा है और इसमें सन्देह नहीं कि मेरी मृत्यु के समय उपस्थित रहेगा। यह विचार आते ही उसे कँपकपी छूटने लगी। जब से बोनीविले में रहने का इरादा कर लिया था, इस विचार से अभिभूत रहता था कि मैं उसी कमरे में मरूँगा, जिसमें मेरी माँ मरी है। बिना अपने से यह कहते हुये कि निश्चय ही मेरा जनाज़ा एक दिन इसी कमरे से निकलेगा, सीढ़ियों के ऊपर कदम नहीं रख पाता था। गलियारे में प्रवेश करते समय बोतल की गर्दन जैसा एक कोना था। वह सदैव व्यग्र और चिन्तित रहता कि लोग उसे धकेले बिना वहाँ से कैसे निकालेंगें। समय प्रतिदिन उसके जीवन का थोड़ा-थोड़ा अंश कम करता जा रहा था और इस तरह मृत्यु का यह विचार जल्दी-जल्दी उसके व्यक्तित्व को खण्डित करने में लगा हुआ था। अपने मानवत्व के अन्तिम चिन्हों तक का विनाश कर देने की सीमा तक वह पहुँच गया था। जैसा कि कहा करता था, इसके बाद से उसका जीवन समाप्त हो गया था। अपने को प्रोत्साहित करने में, क्लान्त अस्तित्व की व्यर्थता में दिन प्रति दिन खोखला होते जाने में उसे कोई सार नहीं दिखायी पड़ता था।

"बाबा के पास एक बार और," पालिन चिल्लायी।

नन्हें पाल को पकड़ने और गले से लगाने के लिए शैन्ते अपना हाथ तक बढ़ाने में असमर्थ था। व्यर्थ में ही घुटने फैलाये हुये था। पैजामे से चिपकी भुरभुरी उँगलियां देखकर लम्बी आहें भरने लगता था। बूढ़े की संगति में रहते हुये बच्चा अनन्त कराहों से अभ्यस्त हो गया था। सम्भवतः अल्प जाग्रत बुद्धि से कल्पना कर ली थी कि सभी पितामह इसी प्रकार रुग्ण रहा करते हैं। आज चमकती हुई धूप में बूढ़े के पास हिलते-काँपते आने पर अपना नन्हा-सा मुंह उठा कर वह हँसते हुये

उसे टुकुर-टुकुर निहारने लगा था। दोनों विद्रूप हाथ हाड़-माँस के भयानक कुन्दों जैसे मालूम होते थे। लाल झुर्रियों से खुदा हुआ मुँह दाहिने कन्धे पर वीभत्स ढंग से मुड़ा हुआ था। सम्पूर्ण शरीर किसी पुराने और टूटे हुये पत्थर के सन्त की भाँति दरक गया था। धूप में उसे इतना रुग्ण और इतना बूढ़ा देखकर पाल की आँखें फटी फटी रह गयी थीं।

"एक बार और! एक बार और!" पालिन का खेल चल रहा था।

"कदाचित् इसकी पीढ़ी कम मूर्ख मनुष्यों की होगी।" सहसा उसके मुँह से निकला। "यह अपने जीवन के विनाश के लिए रसायन शास्त्र को दोषी नहीं ठहरायेगा, इस सत्य में विश्वास करेगा कि किसी दिन मृत्यु निश्चित् होने पर भी जीवित रहना सम्भव है।"

लजारे लज्जित होकर हँसने लगा। "यू...!" वह भुनभुनाया।

"मेरे पिता की भांति इसे भी गठिया होगा। और शिरायें मेरी शिराओं से अधिक निर्बल होंगी...देखो, कितना कमज़ोर है! पतन का यही सिद्धान्त है।"

"चुप नहीं रहोगे?" पालिन चिल्लायी। "मैं इसे बड़ा करूँगी और देखना कि कैसा आदमी बना देती हूँ!"

सब खामोश हो गये। पालिन ने बच्चे को माँ की तरह गले से लगा लिया।

"बच्चों का इतना शौक है, तो तुम शादी क्यों नहीं कर लेतीं?" लजारे ने पूछा। वह आँखें फाड़ कर उसकी ओर निहारने लगी। "लेकिन मुझे बच्चा मिल गया है! तुमने एक दे नहीं दिया है क्या?... शादी कर लूँ? नहीं, बिल्कुल नहीं!"

आह्लाद की उमंग में हँसती हुई वह पाल को अपनी बाँहों में झुलाने लगी: "मेरे भाई, तुमने मुझे महान् सन्त शॉपेनहार के

धर्म में दीक्षित कर लिया है। मैं अकेली ही रहना चाहती हूँ, ताकि सम्पूर्ण मानवता की मुक्ति के लिए कार्य कर सकूँ !"

सच, वह आत्म-त्याग, दूसरों के प्रति प्रेम और सम्पूर्ण पाप-ग्रस्त मानवता तक फैली हुई भलाई की प्रतिमूर्ति बन गयी थी। अनन्त पारावार में सूर्य तिरोहित हो रहा था, रंग बदलता हुआ आकाश निर्मलता का वातावरण उत्पन्न कर रहा था। जल और सागर की निस्सीमता ने समाप्त होते हुये दिवस की मनोरम मृदुता धारण कर ली थी। दूर, बहुत दूर एक छोटी-सी तरणी सूर्यास्त के पश्चात विलुप्त हो जाने वाले अन्तिम स्फुलिंग की भाँति आलोकित हो रही थी। क्षण भर में प्रशान्त जल राशि पर धीरे-धीरे उतरने वाली गोधूलि वेला के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं रह गया। सन्ध्याकालीन प्रांगण में श्यामल परछाइयों के साथ उदासी में डूबे अपने भाई और पीड़ा से क्रन्दन करते हुये पितृव्य के बीच वीरतापूर्वक हँसती और बच्चे को दुलराती हुई वह अब भी खड़ी थी। प्रत्येक वस्तु से वह निग्रिहीत हो गयी थी फिर भी उसकी गूँजती हुई हँसी प्रसन्नता का विज्ञापन कर रही थी।

"हम लोग आज रात खाना नहीं खायेंगे ?" भव्य भूरे रेशमी परिधान में प्रकट होती हुई लूसी ने प्रश्न किया।

"ठीक, मैं तैयार हूँ;" पालिन ने उत्तर दिया। "समझ में नहीं आता कि वे लोग बगीचे में क्या कर रहे हैं ?"

उसी क्षण अवेहार्टर आत्म-केन्द्रित मुद्रा में प्रत्यावर्तित हुआ। उत्सुकता पूर्वक पूछने पर, आघात का शमन करने के लिए किसी वाक्यांश की खोज करने के बाद पाशविक तीक्ष्णता के साथ अन्ततः उसने घोषणा की : "तुम्हारी अभागी वेरोनिक अभी-अभी हमें तुम्हारे नासपाती के एक पेड़ से लटकी हुई मिली है।"

वायु के शीत झोंके की भाँति गमन करती हुई मृत्यु के अनुभव से स्वयं को सन्तुलित करते हुये सब के सब विस्मय और भय से चिल्ला पड़े।

"लेकिन क्यों ?" पालिन ने चीख कर पूछा। "इसका कोई कारण नहीं था, यहाँ तक कि वह रसोईं में हाथ लगा चुकी थी...ओफ़, हाय राम, क्या यह इसलिए तो नहीं हो सकता कि मैंने उसे बत्तख के लिए दस सू ज्यादा दे देने का जिक्र कर दिया था ?"

तब तक डाक्टर कैजनोव भी आ गया। मार्टिन की सहायता से अस्तबल में ले आने के बाद पिछले चौथाई घण्टे से वह उसे जिलाने की व्यर्थ चेष्टा कर रहा था। किसी झक्की पुरानी नौकरानी के सिर में क्या घुस गया, इसे कोई कैसे बता सकता था ? अपनी मालिकिन की मृत्यु वह कभी भी भूल नहीं पायी थी।

"इसमें अधिक समय नहीं लगा होगा," उसने बताया। "अपनी ही साड़ी लपेट कर वह लटक गयी थी।

भय से विजड़ित लजारे और लूसी कुछ नहीं बोले। चुप होकर सुनते रहने के बाद शैन्ते सहसा भोजन के रंग में भंग होने की शिकायत करने लगा। और, हाथ-पैर से हीन इस अभिशप्त प्राणी ने, जिसे बच्चों की तरह खिलाया और सुलाया जाता था, मानवता के इस शोचनीय अवशेष ने, जिसका बुझा हुआ जीवन पीड़ा के दीर्घ क्रन्दन के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह गया था, विक्षुब्ध घृणा के साथ चिल्लाया : "कोई इतना मूढ़ कैसे हो सकता है कि अपने आप को ही मार डाले !"